मैथिली शब्द-सञ्चय

डा. रामदेव झा

पोथीक सन्दर्भमे

मैथिली शब्द-सञ्चयक प्रयोजन अछि मैथिली शब्दकोष परम्परामे अद्यतन ओ श्रेष्ठतर प. श्री गोविन्दझा कृत कल्याणी कोशमे अगृहीत शब्द, शब्दक वैकल्पिक रूप, शब्दक छूटल अर्थ, भ्रान्त वा अशुद्ध अर्थक मार्जनबला शब्द सभक सञ्चय । एहि दृष्टिएँ ई शब्दकोष नहि प्रत्युत् आंशिक रूपमे शब्दक संकलन मात्र थिक । लगभग सात हजार मैथिली शब्दक एहि सञ्चयमे शब्दकोषक अनुशासनक पालन नहि कयल गेल अछि । एहिमे शब्द सभक व्याकरणिक स्वरूप, आगम-स्रोत, व्युत्पत्ति, साहित्यिक प्रयोग इत्यादिक सूचना नहि देल गेल अछि । एहि शब्द-सञ्चयक स्रोत, पूर्वक प्रकाशित शब्दकोष अथवा पोथी सब नहि अपितु सञ्चयकारकेँ अपना जीवनमे गाछी-बिरछी, खेत-पथार, उपजा-बारी, गाम-समाज, लोक-व्यवहार इत्यादिसँ सम्पृक्त रहने जे अनुभव होइत रहलनि, समाजक उच्च-मध्यम ओ निम्न वर्गक लोकक जे बोली-वाणी सुनैत रहलाह आ स्वयं बजैत रहलाह तकरहि स्मृति एहि शब्द सञ्चयक आधार स्रोत थिक जे दीर्घ कालसँ जमा होइत रहल । एहि शब्द-सञ्चयक उद्देश्य कल्याणी कोश अथवा पूर्वक कोनो कोषक खिधांस कऽ कऽ कोषकारक बहुमूल्य श्रमकेँ नकारब वा हतोत्साहित करब कथमपि नहि अछि, अपितु भविष्यमे जँ कोनो अन्य मैथिली शब्दकोषक निर्माण हो तँ से निर्दुष्ट भऽ सकय तथा ओकर शब्द-भण्डारकेँ औरो बेसी समृद्ध करबामे ई शब्द-सञ्चय अपन योगदान कऽ सकय ।

मैथिली शब्द-सञ्चय

अंगरेजी भाषाऽभिज्ञ
आयुष्मान् विजयदेव झा (राजू)
कें
"एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः
सुष्ठु प्रयुक्तः
स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति"
सन्देश सहित
पिता दिस सँ -

डा.रामदेवझा

रा. झा
24.11.2014



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
लहेरियासराय, दरभंगा

MAITHILI SHABD SANCHAYA *(A Collection of Maithili Words)*
By **Dr. Ramdeo Jha**; Mithila Research Society; Darbhanga; (2014) ₹ 500.00

प्रकाशक : **मिथिला रिसर्च सोसाइटी**
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001
मो. 09430639249
email- mithilaresearch@gmail.com

पुस्तक प्राप्ति स्थान : **डा. शंकरदेवझा**
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा-846001

संस्करण : 2014

मूल्य : **₹ 500.00 (पाँच सय टाका मात्र)**

मुद्रक : प्रिंटवेल
टावर, दरभंगा

पूर्वाभास

सन्दर्भ अछि प. गोविन्दझा द्वारा सम्पादित 'कल्याणी कोश'क । नवम्बर 1999मे जखन ई कोष प्रकाशित भेल तँ एकर एक प्रति कीनल । सामान्य रूपमे ओकर अवलोकन-अध्ययन कयल । नीक लागल छल । उपयोगी छल ।

शब्दकोष सर्जनात्मक अथवा वर्णनात्मक साहित्य तँ थिकैक नहि जे एक पाठकक रूपमे आदिसँ अन्त धरि पढ़ल जाय । अत: कखनो काल कोनो-कोनो शब्द देखबाक लेल अथवा मैथिली शब्दक अंगरेजी पर्याय देखबाक लेल उनटा लैत छलहुँ । अवश्य एहि क्रममे हमरा एकटा प्रयोग सबसँ पहिने आ सर्वाधिक आकृष्ट ओ प्रभावित कयने छल । छात्रावधिमे बायोलोजी हमर मुख्य विषय छल आ ओकर अंग वनस्पति विज्ञान (Botany) हमरा बेसी प्रिय छल । से, कल्याणी कोशमे मैथिली क्षेत्रक पैघ-छोट गाछ-वृक्ष, लत्ती-फत्ती, साग-पात, कन्द-मूल आदि (Flora)क वनस्पति-शास्त्रीय पारिभाषिक अभिधान (Botanical names) नीक लागल सैह नहि, अपितु अँकटा, अमरलत्ती, अमरोड़ा, अरिकोँच, आक/अकओन, ओल, तिलकोड़, पिड़ार, पोरो, भङरिया, भाङ, भाँटि आदि सन ठेठ शब्द जकर साधारणत: अंगरेजी पर्याय नहि भेटैछ, तकर सभक पारिभाषिक अभिधान देखि एकटा सुखद आश्चर्य सेहो भेल छल । बस ।

2000क जनवरीक पूर्वार्द्धमे एक दिन कोनो प्रसंगमे आदरणीय गोविन्दबाबू फोन कयलनि । ओही क्रममे पुछलनि 'हमर पत्र भेटल ?' हम कहलियनि– 'नहि, कहाँ भेटल अछि ?' ओ कहलनि– 'दु-एक दिनमे भेटि जायत ।' फेर पुछलनि जे- 'कल्याणी कोश देखल ? केहन लागल ?'

ओकर सामान्य विशेषताक उल्लेख करैत कहलियनि जे- नीके लागल । एखन धरि जतेक मैथिली शब्दकोष प्रकाशित भऽ सकल अछि, ताहि सबसँ विशिष्ट अछि । सबसँ बेसी महत्त्वक अछि अंगरेजीमे देल गेल पर्याय एवं अर्थ......' इत्यादि इत्यादि ।

गोविन्द बाबूक कथनानुसार ठीके दू-तीन दिनक बाद दस जनवरी 2000क लिखल हुनक पूर्वोक्त पत्र भेटल । पत्रमे कल्याणीकोषक प्रसंगमे हुनक की आदेश-निर्देश छल से द्रष्टव्य अछि-

पटना
10.1.'00

स्नेहि, नमस्कार ।

नमस्कारक अन्तमे दरभङ्गा गेल रही कल्याणी-कोशक विमोचन-क्रममे । अहाँक भेट करब सेहो एक लक्ष्य छल, किन्तु अहाँ कतहु अन्यत्र गेल रही, तैं भेट नहि भेल । पटनाक अनुवाद-कार्यशालामे अहाँक अनुपस्थितिक कारण ?

कल्याणी-कोश दृष्टिगत भेल होएत । कोनो काज सम्पन्न भेलापर आ [illegible] विद्वान एहि श्लोकक [illegible] अहाँ मन पड़ि जाइत छी । जिज्ञासा अछि, अहाँकें केहन लागल । विशेष रूप जिज्ञासा अछि जे कोनो-कोन त्रुटि रहि गेल । से अहाँ छाड़ि आन के कहत ?

एक आत्मकथामूलक विचित्र उपन्यास लिखि रहल छी - कालयापनार्थे बूझू ।
कुशलजानब ओ लिखब ।

अशोक
गोविन्द झा

गोविन्द बाबूक पत्र भेटलाक बाद सतर्क भऽकऽ कल्याणी कोश देखऽ लगलहुँ । किछु किछु बिन्दु सभ जे दृष्टिमे आबय से नोट करैत जाइत छलहुँ । कतोक छूटल शब्द सभ सेहो कल्याणी कोशमे यथा स्थान अंकित कऽ देल करी । किन्तु अनेक प्रकारक कार्यव्यस्तता ओ पारिवारिक विघ्न-बाधाक कारणे कल्याणी कोशक सम्यक् समालोचना ओ छूटल शब्द वा अर्थ आदिक संचयक गति मन्द रहल । समय बितैत गेल, गोविन्द बाबूक आदेशक पालन नहि भऽ सकल ।

मैथिलीक पोथी बिकाइत नहि छैक । पोथी, की तँ सादर, सविनय, सप्रेम, सस्नेह उपहारमे देल जाइछ अथवा मोफतमे बाँटल जाइछ । तथापि, पोथी केहनो महत्त्वपूर्ण रहओ, लिखित रूपमे ओकर सम्यक् समीक्षा-समालोचना, महत्त्वक मूल्यांकन, अथवा गुण-दोषपर विचार-विमर्शक कोन कथा, जे, ओकर चर्चो करबासँ बचल जाइत अछि । एहन स्थितिमे लेखकक मनमे विषाद आ निराशाक भाव उत्पन्न होइत छैक- 'कापर करब सिङार पिया मोर आन्हर हे !' कल्याणी कोशहुक यैह परिणति भेल छल ।

पुन: एक बेर 19अप्रैल 2005क लिखल गोविन्दबाबूक एकटा पत्र भेटल जाहिमे मूल प्रसंगक अतिरिक्त अवान्तर विषयक रूपमे विषाद ओ निराशाक भाव व्यक्त करैत लिखने छलाह-'पत्र लिखबाक काल किछु उलहन-उपराग फुरल, मुदा कलम रुकि गेल । कलम कहलक, 'कतबो हमरा फेरबह, ताहिसँ केओ नाम नहि लेतहु ।... बहुत बनओलहुँ दिबड़ाक भीड़ । आब कलमकेँ विश्राम देअए चाहैत छी, आब सभ दार-मदार अहाँ सभपर छोड़ए चाहैत छी । हमर अन्तिम कृति 'आत्मालाप' मैथिली जगत्मे अचर्चित रहि गेल । सएह हाल भेल 'कल्याणी कोश'क ।'

श्रीगोविन्दबाबूक 'उलहन-उपराग'क मर्म बूझि शब्दकोष सन नीरस वस्तुमे सरसताक अनुभूति आरोपित करैत तीव्र गतिसँ 'कल्याणी कोश'क अध्ययन करऽ लगलहुँ । 'अ' सँ लऽ कऽ कोशक अन्तिम 'ह्री' धरिक एक-एक शब्द एवं ओकर अर्थक गम्भीरता पूर्वक अध्ययनक प्रतिफल थिक 'कल्याणी कोश'क वस्तुनिष्ठ समालोचना ओ लगभग सात हजार शब्दक ई 'मैथिली शब्द सञ्चय' ।

दीर्घकालमे सम्पन्न 'कल्याणी कोश'क समालोचना तथा ओकर परिशिष्ट शब्द-सञ्चय एकटा अनुसन्धानात्मक निबन्धक रूप धारण कऽ लेलक । अनेक बन्धु एहि निबन्धकेँ उत्सुकतापूर्वक देखलनि । एकर मौखिक चर्चा सेहो होबऽ लागल । ओही क्रममे डा. वीणाठाकुर, (तत्कालीन अध्यक्षा, मैथिलीविभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय) देखलनि । ओ अपन विभागक शोध-पत्रिकामे ओ निबन्ध प्रकाशित करबाक इच्छा व्यक्त कयलनि । निबन्धक दीर्घताकेँ देखैत ओकर एक अंश देब गछलियनि । परन्तु ओ अत्याग्रह पूर्वक समग्र निबन्ध लऽ लेलनि आ विभागक शोधपत्रिका 'मैथिली'क आठम अंकमे समस्त निबन्धकेँ 'मैथिली : परिशिष्ट शब्द सञ्चय [सन्दर्भ: कल्याणीकोश]' शीर्षकसँ प्रकाशित करबाक साहस देखौलनि । मानक ओ राष्ट्रिय, अन्तरराष्ट्रिय ख्यातिक रिसर्च जर्नल सभमे सुदीर्घ अनुसन्धानात्मक निबन्ध प्रकाशित करबाक पुरान परिपाटी रहल अछि, अपितु एहि प्रकारक रचना 'जर्नल'मे प्रकाशित करब प्रतिष्ठाक वस्तु बुझल जाइत रहल अछि ।

शोध-पत्रिकामे प्रकाशित उपर्युक्त निबन्धक हेतु कतेको सुधी जन मुखोत्तर अथवा फोनपर अपन प्रसन्नता व्यक्त करैत एहि विषयक एकटा स्वतन्त्रे पुस्तकक रूप दऽ

प्रकाशित करयबाक आग्रह कयलनि । ओहि आग्रहक सम्मान करैत उक्त निबन्धकेँ, संशोधित, परिमार्जित तथा प्रचुर अभिनव सामग्रीसँ संवर्द्धित कऽ नवीने 'मैथिली शब्द सञ्चय'क रूपमे प्रकाशित कयल जा रहल अछि ।

कल्याणी कोशक जे समालोचना वा त्रुटि-निदर्शन भेल अछि अथवा ई जे **शब्द-सञ्चय** प्रस्तुत कयल जा रहल अछि तकर उद्देश्य खिधांस कऽ कऽ कोषकारक बहुमूल्य श्रमकेँ नकारब वा हतोत्साह करब कथमपि नहि अछि, अपितु भविष्यमे कोनो मैथिली शब्दकोषक निर्माण हो वा **कल्याणी कोश**क पुनर्मुद्रण हो, तँ ओ निर्दुष्ट भऽ सकय तथा ओकर शब्द-भण्डार और समृद्ध करबामे ई शब्द-सञ्चय किछु योगदान कऽ सकय ।

आशा करैत छी जे मैथिलीक भावी शब्दकोषक निर्माणमे ई शब्द-सञ्चय एकटा योगदान सिद्ध होयत ।

एहि अनुपूरक शब्द-सञ्चयक सौभाग्य कहक चाही जे श्रद्धेय पण्डितजी (पण्डित श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर') एकरा आदिसँ अन्त धरि गम्भीरतापूर्वक पढ़ि कऽ अनेक संशोधन-परिवर्द्धनक सुझाव देलनि ।

एहि शब्द-सञ्चयमे त्रुटि भऽ सकैत छैक जकर समाधान भविष्यमे कयल जा सकत ।

श्रीरामदेवझा
पूर्वविश्वविद्यालय प्राचार्य
स्नातकोत्तर मैथिली विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
दरभंगा

कबिलपुर
लहेरियासराय
दरभंगा- 846001

मैथिली शब्दकोष-समीक्षा

शब्दकोष

कोनहुँ भाषाक लेल शब्दकोष अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होइत अछि । ओहिमे अतीत कालमे प्रचलित किन्तु समकालमे अप्रचलित तथा समकालमे लिखित ओ कथित रूपमे सकल शब्दक स्वरूप, अर्थ ओ प्रयोगादि सहित सञ्चयकेँ **शब्दकोष** कहल जाइत अछि। वास्तवमे शब्दकोष ओ दिव्यचक्षु थिक जाहिसँ अनभिज्ञात शब्दक स्वरूप एवं ओकर अर्थक अभिज्ञान होइत अछि । शब्दकोष साहित्य तँ नहि थिक परन्तु कोनहुँ भाषाक अभिव्यक्ति-सामर्थ्य ओ ओकर साहित्यकेँ हृदयंगम करबाकलेल अद्वितीय साधनक काज करैत अछि ।

साम्प्रतिक कालमे उन्नत भाषा सभमे शब्दकोष-निर्माण ततेक विकसित रूप धारण कऽ लेने अछि जे भाषाक शब्द-संग्रह-सम्बन्धी कार्यकेँ विज्ञानेक रूप दऽ देल गेल अछि आ एकरा **शब्दकोष-विज्ञान**क अभिधान दऽ देल गेल अछि । कोनहुँ उन्नत भाषाक पूर्ण शब्दकोषमे ओकर सकल कथित-लिखित शब्दक स्वरूप, वाच्यार्थ, लाक्षणिक अर्थ, आगमस्रोत, व्युत्पत्ति, साहित्यमे भेल प्रयोगक निदर्शन अथवा लौकिक प्रयोगक निदर्शन इत्यादि देल जाइत अछि ।

शब्दकोष-निर्माणक क्षेत्रमे नित्य नव-नव प्रयोग होइत जा रहल अछि जाहिमे दू गोट प्रयोग प्रमुख अछि । पहिल अछि- विशिष्ट विषय ओ समयानुसारी शब्दकोष तथा दोसर अछि बहुभाषिक शब्दकोष । एहि दुनूमे बहुभाषिक शब्दकोषक बहुत महत्त्व अछि। पूर्वहुमे उन्नत भाषा सभमे बहुभाषिक शब्दकोषक निर्माण होइत रहल अछि । परन्तु साम्प्रतिक कालमे जखन कि वैश्वीकरण अपन चरम बिन्दुपर पहुँचि गेल अछि, तखन विश्वक विभिन्न देशसँ सम्बन्ध-सम्पर्क प्रगाढ़ बनयबाकलेल, वैचारिक ज्ञान-विज्ञानक आदान-प्रदानक हेतु बहुभाषिक शब्दकोषक महत्त्व बहुत बढ़ि गेल अछि ।

मैथिली शब्दकोषक प्रयत्न-परम्परा

मैथिलीमे एखन धरि सकल शब्दक सञ्चयो सम्भव नहि भऽ सकल अछि,

तखन सर्वांगपूर्ण ओ समृद्ध बहुभाषिक शब्दकोष कोना सम्भव भऽ सकैत अछि ? जे किछु योग-प्रयोग एखन धरि भेल अछि से बड़ छुछुन्न कहल जा सकैत अछि ।

मैथिली भाषाक शब्दावलीकेँ स्वतन्त्र रूपेँ अर्थ सहित कोशबद्ध करबाक महत्त्वपूर्ण कार्यक आद्य अधिष्ठाता जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन भेलाह जे विभिन्न ग्रन्थक अंगभूत रूपमे मैथिली शब्दावलीक संग्रह कयलनि । **मैथिली क्रेस्टोमैथी** (1882) तथा मनबोधकृत **कृष्णजन्मक** अंगरेजी अनुवादक (1884) परिशिष्टक रूपमे मैथिली शब्दावली देल गेल अछि । पश्चात् ओ ए.एफ.आर. हार्नलेक संग **ए कम्पैरेटिव डिक्शनरी ऑफ दि बिहारी लैंग्वेज पार्ट**-1(1885) एवं पार्ट-2(1889) प्रकाशित करौलनि जाहिमे भोजपुरी-मगहीक शब्द सम्मिलित रहितो मैथिली शब्दावलीकेँ प्रचुर संख्यामे स्थान देल गेल छल । गियर्सनक एहने महत्त्वपूर्ण कृति 'बिहार पीजेण्ट लाइफ' 1885मे तथा पुनः 1920मे प्रकाशित भेल छल ।

ग्रियर्सनक पश्चात् बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्ध धरि विभिन्न विद्वान मैथिली शब्दावलीपर अपना-अपना दृष्टिएँ कार्य करैत रहलाह । यद्यपि ओकरा मैथिलीक सम्पूर्ण शब्दकोष नहि कहल जा सकैत अछि, तथापि भावी शब्दकोष-निर्माणक लेल महत्त्वपूर्ण शब्द-सञ्चय अवश्ये मानल जा सकैत अछि ।

ग्रन्थाकार मैथिली शब्दकोष

1950 इ.मे प. दीनबन्धुझा द्वारा संकलित **मिथिला भाषा कोष** प्रकाशित भेल । एहि कोषमे अकारादि क्रमसँ मैथिली शब्द एवं मैथिलीमे शब्दक अर्थ देल गेल अछि । अत: बहुत वृहत् नहियो होइत ई मैथिलीक पहिल शब्दकोष होयबाक गौरव पयबाक अधिकारी अछि । कतोक दशक धरि प.दीनबन्धुझा कृत **मिथिला भाषा कोष** मैथिलीक एकमात्र शब्दकोषक रूपमे प्रतिष्ठित रहल ।

दीर्घ अन्तरालक बाद डा. जयकान्तमिश्रक **वृहत् मैथिली शब्दकोशक** खण्ड-I (1973) ओ खण्ड-II (1995) इण्डियन इन्स्टीच्यूट ऑफ एडवान्स्ड स्टडी, शिमलासँ प्रकाशित भेल जकर कुल पृष्ठ संख्या 420 अछि । एहिमे स्वरादिवर्णक शब्द संकलित अछि । शेष व्यञ्जनादि शब्दक कोष तेसर-चारिम खण्डमे लगभग 600 पृष्ठमे प्रकाशित होयबाक छल, जे दुर्भाग्यवश नहि भऽ सकल । एहि शब्दकोषक तीन गोट महत्त्वपूर्ण विशेषता अछि- 1. मिथिलाक्षरक प्रयोग 2. शब्दक व्युत्पत्ति ओ 3. मैथिली साहित्यमे ओहि शब्दक प्रयोग सहित सन्दर्भ सूचना । **वृहत् मैथिली शब्दकोशमे** पहिने मिथिलाक्षरमे शब्द देल गेल अछि, तदुत्तर देवनागरी रूप प्रदत्त अछि । देवनागरीएमे मैथिलीमे शब्दक अर्थ वा व्याख्या, व्युत्पत्ति एवं साहित्यिक प्रयोग-सन्दर्भ देल गेल अछि । अन्तमे मैथिली शब्दक रोमन लिप्यन्तर ओ अङ्गरेजीमे अर्थ देल गेल अछि । एहि

शब्दकोषक उपोद्घात (Foreword) डा. सुनीतिकुमारचटर्जी लिखने छथि जकर सारतत्त्व प्रकाशक संस्था द्वारा एहि रूपमे देल गेल अछि :

It has been conceived scientifically and excuted most assiduously, following the tradition of the great pioneer dictionaries in different Indian language. It gives full explanation of the words in Maithili as well as their equivalants in English. Moreover, it traces the etymology of native words, through their social and cultural milieu and established relationships with cognate words in Maithili and other Indo-Aryan laugueges.

1984मे आयलिस आइ. डेविसक **बेसिक कोलकियल मैथिली : ए मैथिली-इंगलिश-नेपाली वोकैबलरी** प्रकाशित भेल। नामेसँ एहि शब्दकोषक सीमा-विस्तारक सूचना भेटि जाइछ। 1991मे उमेशचन्द्रझाक बनाओल एकटा लघु शब्दकोष **संक्षिप्त शब्द भारती** नामसँ प्रकाशित भेलनि जाहिमे मैथिली शब्दक क्रमश: संस्कृत, हिन्दी ओ अङ्ग्रेजीमे अर्थ देल गेल छल। एकरहि विशद रूप **चातुर्भाषिक शब्दकोश** नामसँ 2007मे प्रकाशित भेल जे अनुवादक ओ छात्र लोकनिकलेल अत्यन्त उपयोगी अछि।

मैथिली अकादमी, पटना अपन स्थापना-कालहिमे मैथिलीक एकटा पूर्ण शब्दकोषक निर्माण ओ प्रकाशन हेतु संकल्पित छल। अकादमीक संस्थापक-अध्यक्ष श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार मैथिली शब्दकोषक निर्माण ओ प्रकाशन हेतु अत्यन्त सचेष्ट छलाह।

मैथिली शब्दकोषक निर्माण हेतु **एकटा निर्माण योजना समिति** बनल छल जकर संयोजक छलाह आचार्य सुरेन्द्रझासुमन, मूल संग्रहकर्त्ता युगलकिशोरमिश्र; सहयोगी शब्द-संग्राहकमे छलाह मार्कण्डेयझा गोस्वामी, काञ्चीनाथझाकिरण, चन्द्रनाथमिश्रअमर, रामदेवझा तथा रमेन्द्रनारायणचौधरी। शब्द-संख्याक अनुसार पारिश्रमिकक आधारपर किछु अन्यहु व्यक्ति शब्द-संग्रह हेतु प्रेरित कयल गेल छलाह। शब्द-संग्राहक लोकनिमे के, कतेक शब्द-संग्रह कऽ समर्पित कयलनि, से तँ ज्ञात नहि अछि। परन्तु हम अपन कोटाक विशद शब्द-संग्रह मैथिली अकादमीकेँ समर्पित कऽ देने छलिऐक जाहिमे किछु स्वर वर्णक ओ किछु व्यञ्जन वर्णक शब्द छल। शब्द-संग्राहक लोकनि द्वारा समर्पित शब्द-संग्रहक की दशा भेल, ओकर उपयोग भेल वा नहि से कहब कठिन अछि।

मैथिली अकादमीक मैथिली शब्दकोषक संयोजक/सम्पादक बनाओल गेलाह श्रीगोविन्दझा। अनेक विघ्न-बाधाकेँ पार करैत पहिने एकर पहिल खण्ड प्रकाशित भेल जाहिमे अ सँ थ धरिक शब्द सम्मिलित छल। पश्चात् अवशिष्ट खण्डकेँ मिलाय सम्पूर्ण रूपमे 1993 मे **मैथिली शब्दकोशक** नामसँ प्रकाशित भऽ सकल। किन्तु एतेक प्रयत्न ओ दीर्घ प्रतीक्षाक बाद जाहि रूपमे ई शब्दकोष प्रकाशित भेल से कोनहु रूपमे सन्तोषजनक नहि कहल जा सकैत अछि।

1997मे मतिनाथमिश्र कृत **मैथिली शब्द कल्पद्रुम** प्रकाशित भेल किन्तु ओ सहज रूपमे पाठककेँ उपलब्ध नहि भऽ सकल ।

एमहर हालक वर्षमे तीन गोट महत्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित भेल अछि- डा. योगानन्दझाक **मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली**, डा.ललिताझाक **मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली**, तथा डा.कमलाचौधरीक **मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन-सम्बन्धी शब्दावली** । तीनू ग्रन्थ विषय-विशेषक वर्णनात्मक पारिभाषिक शब्दकोषे थिक । एहि तीनू ग्रन्थमे मैथिलीक वृहत् ओ पूर्ण शब्दकोषक निर्माण हेतु प्रभूत ओ प्रामाणिक शब्द ओ शब्दार्थ सञ्चित भेल अछि ।

कल्याणी कोश : सामान्य परिचय

मैथिली शब्दकोषक परम्परामे सभसँ नवीन ओ समृद्ध योगदान अछि श्रीगोविन्दझा द्वारा सम्पादित द्विभाषिक **कल्याणी कोश** जकरा **Maithili English Dictionary** सेहो कहल गेल अछि । एकर प्रकाशन 1999मे भेल ।

एहि कोषमे चालिस हजार मैथिली शब्दक समावेश होयबाक सूचना कोषक भूमिकामे देल गेल अछि । कोषक आरम्भमे अङरेजी ओ मैथिलीमे उपयोगी प्रस्तावना देल गेल अछि जाहिमे कोष सम्बन्धी आवश्यक सूचना सब समाविष्ट कयल गेल अछि । मैथिली-लेखनमे व्यवहृत लिपि, क्रमशः तिरहुता, नेवारी, देवनागरी ओ ओकर रोमन लिप्यन्तर देल गेल अछि (उचित छल जे एकरा संग कैथी लिपि सेहो देल जाइत) जे मैथिली-अङरेजी शब्दकोषक हेतु आवश्यके अछि । कोषमे प्रयुक्त व्याकरणिक शब्दक अङरेजी सङ्केताक्षर, ओकर पूर्ण शब्द तथा मैथिली प्रतिशब्दक सूची देल गेल अछि । किछु सङ्केताक्षर देवनागरीमे सेहो अछि, ओकरहु पूर्ण रूप देल गेल अछि ।

शब्दकोषमे किछु प्रतीक चिह्नक प्रयोग कयल गेल अछि । ओकरहु पूर्ण व्याख्या आरम्भेमे दऽ देल गेल अछि । बहुत ठाम तिरहुताक भेड़बा सन आकृतिबला एपॉस्ट्रॉफी (Apostrophe) चिह्न (')क प्रयोग भेल अछि, जेना- **अ'ढ़, अम'ट, ग'र, च'र, म'स, म'हु, र'ही, र'हु, ल'ङ, ल'डु, ल' पड़ौआ, स'ख** आदि (यद्यपि एही प्रकारक उच्चारणबला अन्य शब्द सबमे एहि चिह्नक प्रयोग नहि कयल गेल, यथा- **गह, चह, जढ़, जर, दढ़, बह** इत्यादि) । किन्तु ई चिह्न मैथिलीक कोन वर्ण वा ध्वनिक प्रतीक थिक से व्याख्या प्रतीक-चिह्नक परिचयमे नहि देल गेल अछि ।

वास्तवमे मैथिलीमे जे अ केर रेघायल सन अर्थात् विलम्बित उच्चारण होइत छैक, ओहि हेतु अङरेजीक एपॉस्ट्रॉफी चिह्नक प्रयोग कयल गेल अछि । किन्तु एहि चिह्नक प्रयोग अन्धानुकरण मात्र कहल जा सकैत अछि । एकरा पाँछाँ कोनो सैद्धान्तिक आधार नहि अछि । अङरेजीमे ई चिह्न वर्णलोप सूचित करैत अछि । कोनो स्वरक

अस्तित्व वा ओकर दीर्घत्व नहि सूचित करैत अछि । अङरेजीक (') चिह्नक स्थानमे अपन वर्णमालामे परम्परासँ प्रयोगमे चल अबैत विकारी (ऽ)क प्रयोग किएक ने कयल जाय जे वास्तवमे **अ** स्वरक अस्तित्वबोधक चिह्न अछि । कविवर जीवनझाक रचना ओ **मैथिल हितसाधन**मे एकर प्रयोग देखल जाइत अछि आ तहियासँ प्रयोग होइते रहल अछि । नव रूपमे प्रकाशित **मिथिला मिहिर** विलम्बित **अ** स्वरक लेल विकारी (ऽ)क प्रयोग सिद्धान्त ओ व्यवहारमे स्वीकार कयने छल । एकटा स्थापित उपयुक्त परिपाटीक विरोध कऽ एकटा नव चिह्न (')क प्रयोग कतेक उचित ओ संगत भऽ सकैछ से विचारणीय ।

कोषक अन्तमे परिशिष्टक रूपमे क्रमशः क्रियापदीय प्रत्यय, नामप्रत्यय (कृत एवं तद्धित)क सूची देल गेल अछि जे कोषमे प्रदत्त शब्दक रूप-विस्तार बुझबामे सहायक अछि । एकरा अतिरिक्तो अनेक उपयोगी सारणी सब देल गेल अछि जकर उपयोगिता निःसन्दिग्ध अछि ।

कल्याणी कोषक संरचनात्मक स्वरूप

शब्दकोषक मुख्य भागमे प्रविष्टि रूपमे गृहीत शब्द सभक अर्थ सहित अन्यान्य सकल परिचयात्मक सूचनामे एक सुनिश्चित प्रक्रियाक अवलम्बन कयल गेल अछि, जाहिमे विशेष रूपें उल्लेखनीय अछि– 1. मूल शब्द देवनागरीमे 2. ओकर रोमन लिप्यन्तर 3. संस्कृत स्रोत, 4. अन्य स्रोत आदि अङरेजीमे 5. व्याकरणिक स्वरूपादिक निर्देश अङरेजी संकेताक्षरमे 6. शब्दक अर्थ मैथिलीमे 7. मैथिली शब्दक अर्थ अङरेजीमे 8. प्रयोजनवशात् वाक्य-प्रयोग मैथिली ओ अङरेजीमे अथवा केवल अङरेजीमे 9. मूल शब्दक आनुषङ्गिक शब्दक प्रसङ्गमे सेहो मूल प्रविष्टिक शब्दहिक प्रक्रियाक अनुसरण कयल गेल अछि ।

ई थिक **कल्याणी कोषक** संरचनात्मक स्वरूप जे सर्वथा उपयुक्त ओ प्रशंसनीय अछि । भविष्यमे यदि मैथिली शब्दकोष-निर्माण हो तँ ताहिमे एहि पद्धतिक प्रयोजनानुसार अनुसरण कयल जा सकैत अछि । पूर्वकालमे प्रकाशित मैथिली शब्दकोष सभक अपेक्षा अधिक शब्द-सञ्चय (चालिस हजार) ओ संरचनात्मक स्वरूपक विशेषताक कारणे **कल्याणी कोश** अत्यन्त उपयोगी अछि । एहि हेतु कोषक सम्पादक श्रीगोविन्दझा ओ प्रकाशक महाराजाधिराज कामेश्वरसिंह कल्याणी फाउण्डेशन, दरभंगा अशेष साधुवाद ओ धन्यवादक पात्र अछि ।

आदर्श शब्दकोषक अर्हता ओ कल्याणीकोष

शब्दकोषमे शब्दक सञ्चय एवं ओहि शब्द सभक अर्थ-निर्वचन एहि दुहू पक्षक सम्यक् समावेशसँ उत्तम ओ विश्वस्त शब्दकोषक संरचना सम्भव होइत छैक । एहि दुहूमेसँ कोनो पक्षमे त्रुटि वा भ्रान्ति भेलापर शब्दकोष अविश्वसनीय भऽ जा सकैत छैक । अतः कोनहुँ शब्दकोषक परीक्षण-मूल्याङ्कन ओकर संरचनात्मक स्वरूपक आधारपर नहि, अपितु उपर्युक्त शब्द-पक्ष ओ अर्थ-पक्षक गुण-दोषक आधारपर कयल जायब आवश्यक अछि ।

कोनहुँ भाषाक प्रतिनिधि ओ मानक शब्दकोषक सर्वप्रथम आवश्यक विशेषता होइत छैक लक्ष्य भाषामे प्रयुक्त-प्रचलित सकल शब्द-राशिक सञ्चय । दोसर विशेषता होइछ प्रत्येक शब्दक वास्तविक ओ समीचीन अर्थक निर्वचन । सम्प्रति मैथिलीमे **कल्याणी कोश** प्रतिनिधि ओ मानक शब्दकोषक रूपमे प्रतिष्ठित भऽ गेल अछि । स्वदेशीसँ लऽ कऽ विदेशी विद्वान्-अध्येता-छात्र लोकनि अपन अभीष्ट शब्द एवं ओकर अर्थक अभिज्ञान हेतु एही कोषकेँ देखैत छथि ।

अत: **कल्याणी कोशक** शब्द-संग्रह एवं अर्थादिक गम्भीर समालोचना पल्लव-ग्राहिताक रूपमे जतऽ-ततऽ दू चारिटा शब्द एवं ओकर अर्थक आधारपर नहि कयल जा सकैत अछि । ओहि हेतु कोषक आरम्भसँ लऽ कऽ अन्त धरि प्रत्येक शब्द एवं ओकर अर्थकेँ नीक जकाँ पर्यालोचन करब आवश्यक । एहि हेतु समय ओ धैर्य आवश्यक ।

मैथिली शब्दावलीक प्रति हमरहु अभिरुचि रहल अछि । एहि क्षेत्रमे हमहूँ किछु-किछु करैत रहलहुँ अछि । अत: बड़ तेजीसँ तँ नहि, प्रत्युत मन्थर गतिसँ कल्याणीकोशक अध्ययन हमरासँ सम्भव भऽ सकल ।

शब्द-च्युति

अध्ययन क्रममे देखल गेल जे मिथिलाक सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक, कृषि, सामान्य व्यावहारिक जीवन एवं आचार-विचारसँ सम्बद्ध शब्दावलीमे सहस्रश: मूल शब्द सब एहि कोषसँ बहिर्भूत रहि गेल अछि । मूल शब्दक सङ्गहि कतेको तद्धितान्त ओ कृदन्त शब्द सेहो छूटल अछि । बहुतो शब्दक वैकल्पिक रूप छोड़ि देल गेल अछि ।

उपर्युक्त त्रुटिक सम्बन्धमे कहल जा सकैत अछि जे कोषक शब्द-संग्राहक सहयोगी लोकनिक अक्षमता वा समाजक सब स्तरक लोकसँ सम्पर्क पूर्ण रूपेँ नहि होयबाक कारणे शब्द सब छूटि जायब सर्वथा सम्भव अछि । परन्तु ओहन शब्द सब जे प्रविष्टिक मूल शब्दक पर्याय, परिभाषा, अर्थक व्याख्या स्पष्ट करबामे प्रयुक्त भेल हो, सेहो शब्द सब मूल प्रविष्टिमे छूटि जायब स्पष्टत: सम्पादक अथवा व्याख्या कयनिहारक दोष मानल जायत । **कल्याणी कोशक** अध्ययन करबामे एहन बहुतो शब्द देखल जाइत अछि । एकर सभक किछु उदाहरण देखल जा सकैत अछि–

क.को.मे **'अजोह'**क अर्थ **'बिनु जुआएल'** कहल गेल अछि । **'जुआएल'**क मूल क्रिया होइछ **'जुआएब'** जे मूल प्रविष्टिमे अछि तँ अवश्य, किन्तु ओकर अन्य अर्थ कहल गेल अछि । **'अजोह'**क सन्दर्भमे **'जुआएल'**क मूल क्रिया **'जुआएब'**क एकटा अर्थ होइत अछि **'बतियाक खिज्जा अवस्थासँ परिपक्वता अवस्था दिस वृद्धि होयब'**- ई अर्थ नहि देल गेल अछि । ई भेल अर्थच्युति । आब शब्द-च्युतिक किछु उदाहरण देखल जा सकैछ, यथा **क्वाथ-** 1. काढ़ा 2. <u>कोआथ</u>, विद्वेष । **गेँठिआ-**<u>*आमवात*</u> । **डोरी-***बाटल*

ताग /जौर । **तेसारि**-*तेफसिला खेत* । **तीरब**-*घीचिकँ नमडाएब* (क.को. मे नमड़ब/नमरायब सेहो अनुपस्थित) । **पलड़ब**-*शिथिलता वश नीचा दिस नबडब* । **बतरसाह**-*बातरस रोगसँ ग्रस्त* । **फसिल**-*कृषिक उपजा, जजात* । **मकड़ी**-*मकड़ाक आकारक मूठि वा छिपकिल्ली जे एँ ठिकँ कल चलाओल/बन्द कएल जाइत अछि* । **लटबेल**-*चारू कातसँ बान्हू कएल साड़ी* । **लहरिआ**- *बान्हू, एक साड़ी* । **सरीफा**-*सीताफल* । **साइ**-*बयाना*, अगाउ । **सुच्चा**-*शुद्ध, बिनु फेँटल, निराल, खाँटी* ('**खरौटा**' तथा '**शुद्ध**'क पर्यायमे सेहो खाँटी शब्द कहल गेल अछि) इत्यादि ।

उपर्युक्त उदाहरण सबमे रेखाङ्कित शब्द सब मूल प्रविष्टिमे अनुक्त रहि गेल अछि । आब केओ यदि रेखाङ्कित शब्दक अर्थ स्वतन्त्र रूपमे जानऽ चाहय तँ ओ कतऽ ताकत ? जेना, हमही '**छिपकिल्ली**' शब्द सुनने नहि छी, ने '**बान्हू**' शब्दक किछु अर्थ बुझैत छिऐक ।

शब्द-च्युतिक एहूसँ अधिक गम्भीर दोष **क.को.**मे ई अछि जे कोनो प्रविष्टिक शब्दक अर्थ-परिचय हेतु कोनो अन्य शब्द देखबाक निर्देश देल गेल अछि किन्तु ओ निर्दिष्ट शब्द मूल प्रविष्टिमे अछिए नहि । एकरहु किछु उदाहरण देखल जा सकैत अछि, यथा–

1. छयाह/छाया[2] (सामान्य छाह अर्थसँ भिन्न अर्थकलेल)-See क्षयाह 2. गढ़िआएब-See गढाएब 3. गोपाल खत्ता-See गतालखत्ता 4. जानतब/जानतबे-See जनतब 5. नबाज-See नमाज 6. निमाज-See नमाज 7. पनुघी-See पनगी 8. लेधारब- See लेभारब 9. हुरिया लेब-See हुरा लेब इत्यादि ।

उपर्युक्त रेखाङ्कित शब्द सब एहि कोषमे अछिए नहि ।

एहिना तकबाक लेल निष्फल घुरमनतेरिक दू-एकटा और उदाहरण देखल जा सकैत अछि–

'**चुक्का**' शब्द क.को.मे छूटल अछि । अवश्ये **चुकड़ी** शब्द छैक जकर अर्थ कहल गेल अछि '**माटिक पुड़ी**' । '**पुड़ी**'क अर्थ नहि लागल तँ '**पुड़ी**' शब्द तकलहुँ । **पुड़ीमे** कहल गेल **See सराइ** । *सराइ* देखने भेटल-**See सराए** । **सराए** देखलापर अर्थ भेटल-'अति छोट थारी, जेना पूजा करबाकेँ' । आब **चुकड़ीकेँ** सराइ सन आकारक अति छोट माटिक थारी कोना मानल जाय ?

क.को. '**फड़ी**' केँ '**महावृक्षक फल रूप उपज**' कहि एकर विपरीतार्थक शब्द **कहैछ**- '**तरी**' । '**तरी**'क एकटा अर्थ '**गाछी आदिमे जमीनक उपजा**' तथा विपरीतार्थक **शब्द '**फरी**' कहैत अछि आ यथास्थान '**फरी**'क अर्थ कहल गेल अछि-' (माछ गनबामे) गोट, अदद' । आब *तरी*, **फड़ी** आ **फरीक** अर्थक ओझरओटकेँ के सोझराओत ?

ड़-र केर द्वन्द्व

मैथिलीमे वर्त्तनीक ओ कतोक शब्दक हिज्जेक समस्याक सङ्गहि **र** ओ **ड़** क रड़धुम्मस, झंझटि-झमेला बहुत बेसी अछि । लिखबा काल बहुतो शब्दक सम्बन्धमे दुविधा उत्पन्न भऽ जाइछ जे एहि ठाम **र** हो वा **ड़** ? आशा कयल जाइत छल जे प. गोविन्दझा सन विशिष्ट भाषा-मर्मज्ञ एहि समस्याक किछु ने किछु अवश्ये सैद्धान्तिक समाधान देताह । **कल्याणी कोशमे**- से तँ नहिएँ भेल, अपितु किछु गड़बड़ी बढ़िए गेल अछि । किछु उदाहरण देखल जा सकैत अछि ।

क.को.क मतेँ '**आड़ा**-ऊँच आरि ।' '*आरि*-खेतक चारू कात माटिक बान्ह ।' *एकारि*-जकर चारू कातक जजाति कटि गेल छैक एहन असुरक्षित खेत ।' एहि ठाम *एक तथा आरिमे* सन्धि भेलासँ *एकारि* बनल अछि । परन्तु *उपर तथा आरि*मे सन्धि भेलासँ बनल *उपरारि*क स्थानमे क.को.मे '***उपराड़ि***-उँचगर खेत' किएक ? '***आड़ा***' मे ड़ तँ ओकर लघु रूप '***आरि***' ओ '***एकारि***' मे ड़ किएक नहि हो ?

क.को.मे एकटा प्रविष्टि अछि-'गरसामूर देब- लाभार्थ मूड़ी घुसिआएब' । संस्कृत 'मुण्ड'सँ व्युत्पन्न मैथिली शब्द सब अछि मूड़, मूड़ब, मूड़ा, मुड़िया, मुड़ियारी, मूड़ी इत्यादि । हम देखैत छी जे 'गरसा-मूर'क अर्थ-कथनमे सेहो 'मूड़ी' प्रयुक्त भेल अछि (*गरसा*-*मूर* देब- लाभार्थ *मूड़ी* घोसिआएब) । एहनमे **क.को.**क 'गरसा-मूर' मे 'ड़' किएक ने हो ?

अत्रत्य शब्द-सञ्चयमे तीन गोट समानार्थक शब्द आयल अछि- **एकपैरिया, खुरपैरिया** आ **खुरबट्टी** । **क.को.**मे देल गेल '**खुड़ुरबट्टी**' ओ '**खुरुड़बट्टी**' । एहू दुनू शब्दक वाच्यार्थ ओ लाक्षणिक अर्थ वैह अछि जे '**खुरपैरिया**' वा '**खुरबट्टी**'क अछि । वास्तवमे मालजालक निरन्तर '**खुर**'क आघातसँ एहन पातर बाट बनि जाइछ । अतः '**खुड़ुरबट्टी**'क स्थानमे '**खुरुड़बट्टी**' रूप मान्य किएक ने होयबाक चाही ?

ई तँ भेल ध्वनिक विकासक आधार पर ड़/ र केर निर्धारण सिद्धान्त ।

आब स्वैच्छिक ड़/र केर प्रयोगक दृष्टिएँ **क.को.**मे बहुरूपता वा अराजकताक किछु उदाहरण देखल जा सकैत अछि । **क.को.**मे दुइ गोट प्रविष्टि अछि-

1. **खखोरब**- खोँचाह वस्तु रगड़ि तह क्षत करब । **खखोरनी**-ओ हर जाहिसँ माटि केवल खखोरल जाए कोड़ाए नहि ।

2. **खोखड़ब**- **खखोड़ब**, घर्षणसँ उखाड़ब; **खोखड़न**-खखोड़िकेँ हटाओल अंश; खोखड़ना/नी- खोखड़बाक उपकरण । (एहि ठाम क्रमांक-2 केर अर्थ कथनक **खखोड़ब**मे ड़ क प्रयोग ध्यान देबाक योग्य अछि ।)

ई दुनू शब्द वास्तवमे एकहि अर्थक द्योतक शब्दक वैकल्पिक रूप थिक । अतः

दुनू शब्दमे प्रयुक्त ड़/र मे सँ कोनो एकटाक प्रयोग होयबाक चाही। यदि दुनू मे ड़/र यथावते राखल जाय तँ अन्य शब्दक अर्थकथनमे तकर निर्वाह होयबाक चाही। किन्तु **क.को.**मे से भेल नहि अछि। प्रविष्टिक '**खखोरब**' केर प्रयोगक वाक्यमे '**खखोड़ब**' रूप सद्यः ऊपरमे विद्यमान अछि। '**खोखड़ब**' प्रविष्टिक '**ड़**' **क.को.** केर कतोक प्रयोगमे '**र**' बनि गेल अछि, जेना किछु उदाहरण द्रष्टव्य-

1. **खुरचन**- खोखरबाक उपकरण।

2. **छोलब**- खोखरिकेँ उपरका तह हटायब ।

3. **डाढ़ी**-........खोखरिकेँ खाएल जाइछ।

4. **नोचब**-खोखरब।

'नह सँ क्षत करबा'क अर्थमे एहने वैकल्पिक शब्द अछि **नछोड़ब / नछोड़** आ **नोछरब/नोछर**। एहि दुनूमे एक ठाम '**ड़**' आ दोसर ठाम '**र**'क प्रयोगमे कोन सैद्धन्तिक आधार कहल जा सकैछ ?

मूल प्रविष्टिमे अछि- '**नमरब**- 1. नत होएब, झुकब, 2. ओलरब, लटकब 3. रबड़ जकाँ तनलासँ पैघ होएब।' परन्तु अन्यत्र अन्य शब्दक अर्थ-कथनमे '**र**'क स्थानमे '**ड़**' प्रयोग देखल जाइछ, जेना- '**झोलर**-तानल नहि रहने बीचसँ नमड़ल।' '**ओलड़ब**-पात्रसँ नमड़ि खसब'। '**तीरब**-घीचिकेँ नमड़ाएब।'

एहि क्रममे उदाहरणीय अछि '**ओलड़ब**-पात्रसँ नमड़ि खसब।' किन्तु देखैत छी जे '**नमरब**'क अर्थ कहबा काल '**ओलरब**' रूपक प्रयोग भेल अछि।

मूल प्रविष्टिमे अछि '**खखड़ी**-फोँक/ दानाहीन धान'। परन्तु ओकर बादक शब्द '**खखाह**'क अर्थ-कथनमे अछि-' जाहिमे खखरी बेसी हो'।

मूल प्रविष्टिमे अछि- '**चिपड़ी**-पाथिकेँ सुखाओल गोबर' किन्तु '**गोइठा**'क अर्थ-कथनमे देल गेल अछि- 'सुखाओल गोबर, **चिपरी**'। 'पथार-**चिपरी** पथबाक स्थान।' '**चिपड़ी**' आ '**चिपरी**'मे '**ड़**' ओ '**र**' केर भिन्नता द्रष्टव्य अछि।

'**झँखुड़ी**'क अर्थ लेल निर्देश अछि- See '**झाँखुड़**'। ओहि ठाम प्रविष्टिमे रूप अछि- '**झाँखुर**'।

'**चफर**' शब्दक अर्थ लय कहैत अछि- 'See **चरफड़**'। ओहि ठाम प्रविष्टिमे अछि- '**चरफर**'। ओही ठाम संज्ञा रूप अछि- '**चरफड़ी**'। प्रविष्टिमे '**चड़फड़**' सेहो अछि।

एहन स्थितिमे प्रश्न उठैत अछि जे कोन प्रविष्टिकेँ प्रमाण मानल जाय कि प्रयोगेकेँ प्रमाण मानल जाय ? एकर समाधान के करत ?

अर्थच्युति ओ अर्थभ्रान्ति

कल्याणी कोशक अर्थ-पक्षक गम्भीर दृष्टिसँ अवलोकन कयने अर्थ-सम्बन्धी बहुतो भ्रान्ति ओ दोष सब देखि कऽ चकित ओ क्षुब्ध भऽ जाय पड़ि सकैछ। शब्दक अर्थ देबामे कतहु अव्याप्ति दोष अछि तँ कतहु अतिव्याप्ति दोष। बहुतो शब्दक तँ सर्वथा असङ्गत अर्थ दऽ देल गेल अछि।

भगिना/भगिनी/भागिनकें सोझे 'बहिनिक बेटा/बेटी' कहि देल गेल अछि, जखन कि पुरुषक बहिन आ स्त्रीक ननदिक बेटा/बेटी भगिना/भगिनी/भागिन होइत छैक। स्त्रीक बहिनिक बेटा **'बहिनौत'** ओ बेटी **'बहिनधी'** होइछ। सुगरक बच्चाकें **'पाहुड़'** कहल जाइछ किन्तु **क.को.**मे एकर अर्थ सीमित कऽ 'बलिदान करबाक सुगरक बच्चा' कहि देल गेल अछि। '**कदै**' होइछ' पानिक सतहपर छाल्ही जकाँ जमल गन्दगी', **क.को.**एकरा कहैछ 'पानिमे बहि बहिकें आएल कादो' (कदैमे कादोक भ्रम)। साँढ़/बड़दक कुल्हाक सोझमे पीठपर स्थित मांसपिण्डकें कहल जाइछ '**किलहोरि**' किन्तु **क.को.** एकरा '**चिलहोरि**' (चिल्ह नामक पक्षी) कहैछ। मिथिलामे जे भोज कयने अछि, जे भोजमे सहयोग देने अछि आ जे भोज खयने अछि से नीक जकाँ जनैत अछि जे भोजमे भिन्न भिन्न खाद्य-पदार्थ परसनिहार '**बारिक**' कहबैछ। परन्तु **क.को.**क मतें '**बारिक** होइछ- 'मुखिआ, घरक मुखिआ, भोजमे परसबाक व्यवस्था कयनिहार व्यक्ति'! **क.को.**क विचारें '**बिड़ार**' होइछ 'बीआ पारबाक हेतु पोसल खेत' परन्तु जे किसान अछि, खेती करैत अछि, खेत रखनिहार, खेतपर जा कऽ उपजा-बारी समटनिहार अछि से नीक जकाँ जनैत अछि जे 'उपाड़ि कऽ पुनः रोपबाक हेतु घनगर कऽ छीटल ओ जनमल धानक बीयाकें **बिड़ार कहल जाइछ**'।

मुहमे जीहसँ सतत निःसृत होइत द्रवकें **थूक** कहल जाइछ। **क.को.**क मतें '**थूक**' थिक- 'थू ध्वनिक सङ्ग फेकल मुहक लेर-पोटा'। '**लेर**' थू ध्वनिक सङ्ग फेकल नहि जाइछ अपितु अनायास 'मुहसँ (बहल) बहरायल पातर द्रव' होइछ जे **क.को.**ए मे कहल गेल अछि। पोटा मुहसँ नहि प्रत्युत नाकसँ बहरायल कफ होइछ। मुहसँ 'खखार' फेकल जाइछ।

कल्याणी कोषमे 'उबटन'क अर्थ कहल गेल अछि– 'देह उङारबाक एक लेप जे दालि पीसिकें बनैत अछि।' कथीक दालि ? से अस्पष्ट अछि। हँ, अंगरेजीमे कहल गेल अछि Lentil-paste for cleaning skin. अर्थात् 'मसुरी दालिक लेप'। 'उबटन'क अधिक प्रचलित पर्यायवाची शब्द अछि '**उकटन**' जाहिसँ क.को. अपरिचित अछि। अतः '**उकटन**'क मिश्रणक उपादान सबसँ सेहो अनभिज्ञ अछि। '**चिकस**'कें कहल गेल – सोहारीक हेतु पीसल चाउर, आँटा'। 'चिकस' पर चाउरक एकाधिकार नहि छैक। जँ से, तँ रोटीक लेल मकै, मड़ुआ, जओ, गहूम, जबुट्टाक पीसल चूर्णकें की कहबैक ? 'बेसन'कें कहल गेल 'घाठि, दलिहनक चूर्ण' तथा **घाठि**कें सेहो कहल गेल अछि–

'दलिहनक चूर्ण' । परन्तु सब दलिहनक बेसन / घाठि नहि बनैछ, जेना– राहड़ि, कुरथी आदि । दोसर दिस जाहि दलिहनक बेसन/घाठि बनैत छैक तकरा 'घठिहन' कहल जाइछ । '**भाड़**' शब्दक व्याख्या करैत कहल गेल अछि– 'भूजा भुजबाक पारिश्रमिक जे भूजल अन्नक अंशरूपमे लेल जाइत अछि ।' परन्तु वास्तविकता ई जे अन्न भुजबासँ पूर्वहि बिनु भूजल अन्नक एक अंश 'भाड़' रूपमे लेल जाइत अछि ।

कल्याणी कोषक अनुसार 'तारब–भिजाओल धानकेँ चूराक हेतु भुजब' तथा 'भाँडब-भीजल धान खापड़िमे भुजब' होइत अछि । 'चुरकुट्टी'क प्रक्रियाक चारि चरण होइत छैक– धानकेँ (i) तारब (ii) भाड़बं (iii) भुजब तथा (iv) कूटब । क.को. 'तारब' आ 'भाँड़ब'क समाने अर्थ कहैत अछि परन्तु दूनू क्रियाक अर्थमे भिन्नत छैक । 'तारब' होइछ धानकेँ कोमल बनयबाक लेल पानिमे दू-तीन दिन धरि फुलायब अथवा आँचपर चढ़ाय किंचित् उसिनब । भाँड़ब अथवा भाड़ब होइछ तारल धानकेँ खापड़िमे दऽ कऽ मन्द आँचपर ओकर आर्द्रताकेँ सुखाय धानकेँ रुख करब । तकरा बादे भाँड़ल/भाड़ल धानकेँ भुजल जाइछ उखरिमे कुटबाक लेल ।

'सुड़कब' क्रियाक अर्थ कल्याणी कोषमे उचिते देल गेल अछि– 'सुड़ सुड़ ध्वनि करैत श्वासक झोँकसँ मुह/नाकमे लेब, जेना माँड़, नोसि आदि' । किन्तु ओही ठाम दोसर अर्थ सेहो कहल गेल अछि 'नाक झाड़ब' जे पहिल अर्थक एकदम विपरीत एवं असंगत अछि । 'नाक झाड़ब' लेल क.को. स्वयं दोसर क्रिया 'सुकरब' (उचित सुकड़ब) कहैत अछि जकर अर्थ-'झोँकसँ साँस छाड़ि नाक झाड़ब' कहल गेल अछि ।

'ससरफानी' क.को.क विचारेँ 'एक प्रकारक बन्हन जे एक ओरक घिचलासँ फूजि जाइछ' । ई ससरफानीक सम्पूर्ण अर्थ नहि कहल जा सकैछ । ई एक प्रकारक एहन बन्धन (फन्ना/फानी/फनकी) होइछ जकरा आगाँ ससारने बान्हल वस्तु कसा जाइछ आ पाछाँ ससारने ढील भऽ जाइछ । फँसरी/फाँसीमे येह बन्धन रहैछ । क.को.मे कहल गेल अछि 'सहकब-कोनो काज दिस बेर-बेर प्रवृत्ति होयब ।' परन्तु 'सहकब' क्रिया अधलाहे काज दिस बेर-बेर प्रवृत्ति होयबा'क बोध करबैछ । 'लजबिज्जी' होइत अछि एक लघु घास । झारखण्डक इलाकामे छोटका झाड़ होइत अछि । किन्तु क.को. एकरा 'लत्ती' कहैत अछि ।

'अन्है'क सम्बन्धमे क.को. अद्‌भुत विचार दैत अछि जे– 'एक विषहीन साप जे माछ जकाँ खायल जाइछ ।' मुदा 'अन्है' सर्वथा अखाद्य जलचर अछि । कोषकारकेँ प्राय: बामी माछक भ्रम भऽ गेलनि अछि, कारण ओकरहु आकृति अन्हैसँ मिलैत छैक । तेँ बहुत लोक बामी माछ सेहो नहि खाइत अछि । क.को. 'कटिआ'केँ 'दूध रखबाक बासन' कहैत अछि । किन्तु माटिक जाहि छोट बासनमे ताड़ी राखल जाइछ तकरो 'कटिआ' कहल जाइत अछि । दूध रखबाक माटिक बासन सब होइत अछि– चपै,

झबहा, डाबा आदि। र'ही (रऽही) केँ कहल गेल अछि– 'दूध मथबाक डण्टा'' किन्तु 'र'ही' सोझे डण्टा नहि होइत छैक, ओकरा नीचाँमे काठक एकटा ठोस गोलार्द्ध सेहो ठोकल रहैत छैक। एहिसँ दूधे नहि, मक्खन सेहो मथल/महल जाइत छैक। यैह र'ही/रऽही दालियो घोंटबाक/मिलयबाक उपकरण होइछ जकरा 'दलिघोटना' सेहो कहल जाइछ।

सांस्कृतिक-सामाजिक पक्षक दुर्बल अभिज्ञता

कल्याणी कोशक सांस्कृतिक-सामाजिक अभिज्ञता बड़ दुर्बल प्रतीत होइत अछि। '**लगपाँचे**' एकटा तद्भव शब्द थिक। **क.को.** एकरा लेल कहैछ 'See नागपञ्चमी', आ 'नागपञ्चमी'क परिचय **क.को.** दैत अछि–'श्रावणशुक्ल वा भाद्रकृष्ण पक्षक पञ्चमी तिथि जहिआ नागपूजा होइत अछि, cf मधुश्रावणी'।

कोषकार '**लगपाँचे**'केँ नागपञ्चमी मानैत छथि किन्तु से श्रावण शुक्ल पञ्चमीकेँ होइछ कि भादवक कृष्णपञ्चमीकेँ से विश्वस्त नहि छथि। यद्यपि स्मरण भऽ जाइत छनि '**मधुश्रावणी**'। परन्तु 'मधुश्रावणी'क अर्थ– 'विवाहक एक विधि जे विवाहोपरान्त पहिल श्रावणमे होइत अछि; एहिमे नागक पूजा पति-पत्नी मिलि करैत छथि।' से कहबा काल '**लगपाँचे**' वा '**नागपञ्चमी**'क स्मरण कोषकारकेँ नहि रहैत छनि। वास्तविकता ई अछि जे भादवमे कोनो नागपञ्चमी नहि होइछ। श्रावणकृष्ण ओ शुक्ल दुनू पक्षक पञ्चमीकेँ नागपूजा होइछ। परन्तु मिथिलामे श्रावण कृष्णपञ्चमीकेँ '**मोना पञ्चमी**', '**नागपञ्चमी**', '**लगपाँचे**' कहल जाइछ। एही तिथिकेँ विविध विधिसँ नागपूजा होइछ। एही दिनसँ नवविवाहिताक मधुश्रावणी व्रत ओ पूजा आरम्भ होइछ आ श्रावण शुक्ल तृतीयाकेँ सम्पन्न होइछ।

क.को. 'चान्द्रमास'मे पड़िबा/पड़ीब/प्रतिपद/प्रतिपदाकेँ 'चान्द्रपक्षक पहिल तिथि' कहैत अछि। परन्तु शुक्लपक्षक संगहि कृष्पपक्षहुक पहिल तिथिक यैह अभिधान थिक से छोड़ि दैत अछि। 'चैत्र कृष्ण त्रयोदशी'केँ वारुणी कहैत अछि किन्तु वारुणी योग (बारनी/चैतबारनी) उक्त तिथिमे शतभिषा नक्षत्र रहलेपर होइछ। 'सामा खेलाएब'क सप्रसंग व्याख्या करैत क.को. कहैत अछि जे 'महिला-मण्डली...कार्तिकी पूर्णिमाक राति जोतल खेतमे करैत अछि।' वस्तुत: कार्तिक शुक्ल सप्तमीसँ पूर्णिमा धरि रातिमे आङन, दलान, खरिहान, इनार, मन्दिर आदि प्रशस्त स्थानमे सामा-चकेबा खेलायल जाइछ। पूर्णिमाक रातिमे जोतल खेत/धनखेती (कूर खेत)मे अथवा जलाशयमे बेड़पर चढ़ा कऽ विसर्जित वा भसाओल जाइछ। क.को.मे वैशाखमे भेनिहार 'मेष सङ्क्रान्ति'केँ 'तिला सकराँति' कोना कहि देल गेल जे मकर सङ्क्रान्ति (माघ)मे होइत अछि। क.को.क अनुसार 'मड़र भाङब' होइत अछि 'चौड़चनमे नैवेद्य परसब।' परन्तु थिक ई ओहिमे कर्त्तव्य कोटिक विधि ! सकल पदार्थ युक्त डाली ओ दहीक मटकूड़ी चन्द्रार्पित

कयलाक बाद खीर-पूरी वा भात-पूरीक साँठल नैवेद्यकेँ बीचसँ विभक्त करब होइछ 'मड़र भाङब' । क.को. 'वैद्यनाथ धामक यात्री'केँ 'बम' कहैत अछि । किन्तु वैद्यनाथधामक सकल यात्रीकेँ नहि, अपितु केवल 'कमरथुआ/कमरिया'केँ बम कहल जाइछ जकर अनेक कोटि अछि, जेना- डाक बम, मासिक बम, लालबम आदि । क.को.क दृष्टिमे 'बद्धी' होइत अछि 'गेँठिआओल कारी तागक हार' । किन्तु बद्धीक प्रशस्त रंग लाले होइत अछि । छठि पाबनि ओ वैद्यनाथ धामक बद्धी लाले-पीयर होइत अछि । अर्थक स्खलन औरो गम्भीर भऽ जाइत अछि जखन 'पातड़ि'केँ 'पतौड़ा' आ 'पातिल'केँ 'पाकपात्र' कहि देल जाइत अछि आ संन्यासी जातिक एक उपाधि 'गिरि'केँ 'ब्राह्मणक एक वर्गक कुल नाम' कहि देल जाइछ ।

'झिझरी'क अर्थ कहबाक क्रममे **क.को.** 'झिझिआ' शब्द देखऽ कहैत अछि (See झिझिआ) आ **'झिझिआ'**क व्याख्यामे कहैत अछि-'एक व्रत जाहिमे छिद्रमय घैलमे जरैत दीप माथपर लए भरि राति घुमल जाइछ अछि ।' सामान्यो लोक जनैत अछि जे झिझिया एकटा तान्त्रिक नृत्य थिक जे आश्विनक शुक्ल पक्षमे भरि दसहराक रातिमे महिला समूह छिद्रमय तौलामे दीप बारि गाम भरि नृत्य करैत भ्रमण करैछ । एहि सङ्ग तथाकथित डाइनि-जोगिनक भर्त्सनामूलक गीत सब गबैत अछि । एहिमे कोनो व्रत-उपवास नहि कयल जाइछ । ध्यातव्य जे **'झिझरी'**क एक अर्थ **'जलक्रीड़ा'** अनुक्त अछि ।

'निछाउर' आ **'निहुँछब'** शब्दसँ मिथिलाक कोन वर्ग आ कोन परिवार अपरिचित होयत ? परन्तु **क.को.** जेना एहि दुनू शब्दक प्रयोगक निहितार्थसँ अनभिज्ञ बूझि पड़ैछ । **क.को.**क अनुसार **'निछाउर'**क अर्थ अछि- कारनीकेँ छुआए देवताकेँ चढ़एबाक हेतु वा ब्राह्मणकेँ देबाक हेतु राखल वस्तु' । वास्तवमे नवजात शिशुक छठिहार एवं अन्य विधिमे, मूड़न ओ उपनयनमे बड़आक देह/माथक चारू दिस घुमाय उत्साह पूर्वक देल राशिकेँ **निछाउर** कहल जाइछ जे सम्बद्ध पौनी-पसारीकेँ इनाम-बकसीसक रूपमे देल जाइछ, देवता वा ब्राह्मणकेँ नहि । तहिना **'निहुछब'** क्रियाक अर्थ बिकछा कऽ विस्तारसँ कहल गेल अछि- 'जकर कल्याणक कामना हो तकरा देहमे दानवस्तु छुबाए आ आरती देखाए देवता/ब्राह्मणकेँ देबाक हेतु संकल्प करब' । एहि अर्थकेँ वास्तविकतासँ कोनो छूति नहि छैक । **'निहुछब'** थिक दृष्टिदोष/नजरि-गुजरि निवारणार्थ विशेष प्रकारक टोना (एक प्रकारक तान्त्रिक उपचार) जाहिमे राइ-जमाइन-मिरचाइ बाम हाथेँ कारनी नेनाक देह/माथक चारू दिस घुमाय आगिमे धऽ देल जाइछ । विवाह-द्विरागमनमे विदा होइत काल वरकेँ सेहो एहिना निहुछल जाइछ किन्तु केवल राइ-जमाइनसँ ।

कल्याणी कोशकेँ जते बेर गम्भीर दृष्टिसँ देखैत छी तँ किछु ने किछु असंगति-विसंगति बहराइये जाइत अछि। एहिनामे नजरि पड़ि गेल **'बगिआ'** आ **'पुसबगिआ'** पर । **क.को.**मे **'बगिआ'**क अर्थ कहल गेल अछि- गुड़क फूँटि दए

बनाओल पीठ'। **क.को.**मे **पीठ** शब्दक अनेक अर्थ देल गेल अछि, किन्तु ओहिमे खाद्य पदार्थसँ सम्बद्ध कोनहु अर्थ देल नहि अछि ।

बगिया एक प्रकारक पिट्ठीकेँ कहल जाइछ जे केवल चाउरक चिक्कसक अनोन, नोनगर, दालि अथवा गुड़क फूँटि दऽ कऽ पानिसे सिझा कऽ बनाओल जाइछ । **क.को.** चिक्कसक प्रकारक उल्लेख नहि कऽ अतिव्याप्ति दोष कऽ बैसल तँ दोसर दिस केवल 'गुड़क फूँटि' दऽ कऽ अव्याप्ति दोष कऽ देलक । '**पुसबगिया**'केँ **क.को.** कहैत अछि- एक प्रकारक बगिआ जे पूस मासमे बनैत अछि ।' क्रम एहन सन जेना बगिया तँ भरि साल बनैत छैक किन्तु पूस मासमे बनल बगिया खास प्रकार होइछ । वास्तविकता ई अछि जे अगहन-पूसमे नव धानक फसील होइछ जकर चाउरक चिक्कससँ विशेषत: पूसे-माघमे बगिया बनाओल जाइछ । तेँ '**पुसबगिआ**' शब्दे कल्पित प्रतीत होइछ ।

क.को.मे बहुतो श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्दमे अर्थभ्रान्ति देखल जाइछ, जेना जट-जटिनक '**जट**'मे 'नट' जातिक भ्रम, '**भतोल**' (कबकबीसँ रहित ओल)मे भकोल/भकलोलक भ्रम, '**हाहि काटब**'मे 'काहि काटब'क भ्रम, '**जाहिल**' मे 'काहिल'क भ्रम, '**बाहुड़ कीचब**' केँ 'पाहुड़ कीचब' कहबाक भ्रम, **फेँफ** (सापक फण/फेँच)मे फाँफ (सूतलमे नासा-ध्वनि/ठड़र)क भ्रम । '**ओहासी**'क अर्थ होइछ- 'गामसँ सटल लेआ खेत/आन खेतसँ निचाँस खेत/निचाँस खेतमे आन खेतसँ बहि कऽ आयल उर्वरक युक्त पानि ।' एहि अर्थ हेतु **क.को.**मे भ्रमसँ '**ओहासी**'सँ मिलैत 'मोहासी' शब्द गढ़ि लेल गेल अछि । क.को.क अनुसार 'निरस'क अर्थ 'आधासँ कम' तथा ओकर विपरीत 'सरस'क एक अर्थ 'आधासँ अधिक भाग' 'बहुलांश'- किन्तु एहन अर्थ कतहु ने पढ़बामे भेटल अछि ने सुनबामे एखन धरि आयल अछि ।

अङरेजीक शब्दकोशमे एकटा शब्द भेटैत अछि Ghost word अर्थात् प्रेतशब्द । **चैम्बर्स डिक्शनरी**मे एहि शब्दक अर्थ देल गेल अछि– Ghost word- A word that has originated in the blunder of a seribe or printer (प्रेतशब्द- लिपिकार अथवा मुद्रकक मूर्खतापूर्ण गलतीसँ उत्पन्न भेल शब्द)

कल्याणी कोशक सन्दर्भमे Ghost word (प्रेतशब्द)क संगहि Ghost Meaning (प्रेत अर्थ)क सेहो अस्तित्व मानल जयबाक चाही । **क.को.**मे अर्थभ्रान्तिक जे उदाहरण सब देल गेल अछि ताहिमे अर्थक दृष्टिएँ कतोक प्रविष्टिक शब्द Ghost word अछि तँ कतोक प्रविष्टिक शब्दक लेल प्रदत्त अर्थ Ghost meaning कहल जा सकैछ ।

समालोचनाक दृष्टिएँ बेसी विवेचन-उदाहरणक प्रयोजन नहि । जतबा कहल गेल अछि ताही आधारपर **कल्याणी कोश**क प्रामाणिकता, विश्वसनीयता ओ मानकताक मूल्यांकन कयल जा सकैत अछि ।

शब्द-सञ्चयक रीति ओ आधार

एहि ठाम **कल्याणी कोश**मे अगृहीत शब्द, शब्दक वैकल्पिक रूप, शब्दक छूटल अर्थ, भ्रान्त वा अशुद्ध अर्थबला शब्द सभक जे सञ्चय प्रस्तुत कयल जा रहल अछि, से शब्दकोष नहि थिक अपितु आंशिक रूपमे शब्दक संकलन मात्र थिक। तेँ एहिमे शब्दकोषक अनुशासनक पालन नहि कयल गेल अछि। एहिमे शब्द सभक व्याकरणिक स्वरूप, आगम-स्रोत, व्युत्पत्ति, साहित्यिक प्रयोग इत्यादिक सूचना नहि देल गेल अछि। एहि शब्द-सञ्चयक स्रोत, पूर्वक प्रकाशित शब्दकोश अथवा पोथी सब नहि अपितु अपना जीवनमे गाछी-बिरछी, खेत-पथार, उपजा-बारी, गाम-समाज, लोक-व्यवहार इत्यादिसँ सम्पृक्त रहने जे अनुभव होइत रहल, समाजक उच्च, मध्यम ओ निम्नवर्गक लोकक बोली-वाणी सुनैत रहलहुँ आ स्वयं बजैत रहलहुँ तकरहि स्मृति एहि शब्द-सञ्चयक आधार स्रोत थिक जे दीर्घ कालसँ जमा होइत रहल अछि। ओहि सबमे कतोक शब्द तत्काल स्मरण नहि होयबाक कारणे एखनो छुटले होयत जे प्रसंग अयलापर अनवधानमे मोन पड़ि जा सकैत अछि।

एहिठाम य, व, एवं श वर्णसँ आरब्ध शब्द नहि ग्रहण कयल गेल अछि। एकर कारण ई जे एहि वर्णक शब्द केवल संस्कृतेक होइछ। जाहि लेल संस्कृत शब्दकोष छैके।

संकेत-निर्देश

अं-	अंगरेजी
अपि च-	कल्याणी कोशमे छूटल औरो अन्य अर्थ
क.को-	कल्याणी कोश- पं.गोविन्दझा
दे.-	देखू
पुं.-	पुंल्लिंग
प्रा.-	प्राचीन शब्द
ला.-	लाक्षणिक अर्थ
वि.-	विपरीतार्थक शब्द
स्त्री.-	स्त्रीलिंग

चिह्न-प्रयोग

ऽ-	विकारी, दीर्घ/विलम्बित 'अ' स्वर
/-	वैकल्पिक शब्द, वैकल्पिक शब्द-रूप
( )-	वर्ण-विकल्प, संगति-शब्द, प्रयोग-निदर्शनादि
[ ]-	कल्याणी कोशक शब्द-समीक्षा ओ उद्धरणादि

मैथिली शब्द-सञ्चय

[अ]

अओँज-गओँज-घोरमट्ठा, फेटफाँट, गीज-मथ

अकनाहि- अकान स्त्री, मटसुन्न स्त्री

अकलेल- अकान, बकलेल, (युग्मक-अकलेल-बकलेल)

अकरकण्ड (काज)- निरुद्देश्य कयल गेल क्षति होअऽबला (*काज*)

अकट्ठी- ककरो खौँझयबाक लेल उकठ कयनिहार

अकिद्दा- साहस, बल

अकुआयब- चकुआयब, चकित होयब, आश्चर्यित होयब

अँकुरी- *अपि* च- विशेषतः फुलाओल/अँकुरल केराओ (पितृकर्म ओ किछु पाबनिमे प्रयोज्य)

अकौ (बाजब)- मिथ्या लांछन (*देब*)

अक्कत-तीतक प्रविशेषण, तिक्त>तीत स्वादक आत्यन्तिकता-व्यंजक

अक्खज- *अपि* च- मरणासन्न होइतो नहि मुइनिहार प्राणी, नहि सुखयनिहार गाछ

अँखिदेखार- आँखिक सोझा, प्रत्यक्षे, दिनादिनिस

अखीन- अमनियाँ, पाबनि-पूजादिक निमित्त पवित्रतापूर्वक राखल अन्न/व्यंजन, नैवेद्य-सामग्री; (*छठिक लेल अखीन गहूम-चाउर राखल अछि*) *[क.को.- अछिञ्जल, पूजाक हेतु राखल जल-अव्याप्ति]*

अखोर-बखोर- अनुपयोगी वस्तु सब

अख्यास/अख्यासब- स्मरण, मोन पाड़ब, अभ्यास करब

अगड़धत्त-*अपि* च- विशालकाय, धताल

अगतीया- अगता, सबसँ पहिने भेल

अगधायब- *अपि* च- अति सन्तुष्टि होयब (*महीस चरि कऽ अगधायल अछि ।*), अधिक प्राप्तिक अनिच्छा होयब

अगधैनी- अगधयबाक भाव, अनिच्छा

अगब-अमिश्रित, छेहा

अगबे (*अगब+ए*)-अत्यधिक संख्यामे (*चाउरमे अगबे सूड़ा; चूड़ामे अगबे धान*)

अगरजीत- *अपि* च- बतकट्ट, स्वैच्छिक स्वभावक

अगरैल/अगरैलही- *अपि* च- विशेष आकारक थारी/लोटा

अगहरी- केराक भालरिक उपरका भाग

अगाड़ी- *अपि* च- बाँसक छिपाठी

अगात- सबसँ पहिने भेल फसील, अगतीया

अगिआस- आगिक धाह, आगिसँ सेदनाइ

अगिआसब- आगिसँ सेदब, आगि तापब,

अगिलका/अगिलकी- आगाँबला, सामनेबला

अगिलेस- अगुआ, कोनो उत्तेजक घटनामे आगाँ रहनिहार

अगिलेसना/नी/अगिलेसुआ- उत्तेजक बात पसारनिहार, चुगली कयनिहार

अगिलै/अगिलोइ- सूपसँ अन्न फटकबामे तथा निछड़बामे सूपक अग्रभागमे जमा भेल अवांछित अंश

अगुऐ- घटकैती, वरतुहारी

अग्गह(सँ)बिग्गह- दूर धरि पसरल

अघनुआ- अगहनमे भेनिहार फसील, अगहनुआ

अघनू- अगहनमे जनमल (व्यक्तिक नाम)

अङ्घस-मङ्घस (करब)- काजमे आलस (*देखायब*)

अङनजना- प्रत्येक आङनसँ एक गोटाकेँ देल नोत

अङोछ- *अपि* च- शरीरक प्रकृति (*घाओ-घासक सन्दर्भमे*)

अङोछ-पङोछ- अर्द्धस्नान

अङ्कुरी (महादेव)- भूमिसँ बहरायल शिवलिंग

अँचओना- हाथ-मुँह अँचयबाक स्थान, ऐँठार

अचक- *अपि* च- अकस्मात्

अचानचक- सहसा

अचारी-रामानुज वैष्णव सम्प्रदायक अनुयायी

अचीन- सिन्दूरक एकटा प्रकार

अच्छर- अक्षर, आखर

अछरकट्टू- अखरकट्टू, अर्द्धशिक्षित

अछेट (जोड़ब)- लांछन, कलंक, मिथ्या आरोप

अछेप (लागब)-1. छोट लांछन (*आक्षेप*) 2. किंचित् आघात

अछोर- हल्लुक चाँछ, छोट नछोड़, आक्षेप

अजनास- *अपि* च- विलक्षण, अद्भुत (वस्तु)

अजस्तर- अजस्र, प्रचुर, यत्र-तत्र प्राप्य

अजाद- स्वतन्त्र

अजादी- स्वतन्त्रता

अजूबा- विचित्र, अद्भुत, आश्चर्यजनक

अञ्जल- मृत्यु, मरण, जीवनान्त

अझाइ (*प्रा.*)- ओझाइनक पुरान रूप

अझुका- आजुक

अञ्चित- अनुचित

अञ्जनी- हनुमानक माय

अञ्जल- न्यूनतम आहार (*अन्न-जल > अन्‌जल > अञ्जल*)

अँटकाओ- ठहराओ, यात्रामे विश्राम

अटाबेस/अँटाबेस- समावेश

अँटेङ्ब- एकपर दोसरकेँ राखि ढेरी लगायब

अटोरब/अँटोरब- अन्दाज करब, विचारब

अट्ठे- कोनो अंकक आठ गुणा, आठसँ गुना, गुणे आठ

अठदरब- आठ धातुक मिश्रण, अष्टद्रव्य

अठबारा- आठ दिन(वार)क अवधि

अठमस्सू- गर्भक आठम मासमे जनमल

अठमा- आठम

अठरहा- अठारह नहबला कुकुरक प्रजाति

अठरहिया- आठ दिनपर नियमित

अठहत्थी- आठ हाथक धोती/साड़ी/कपड़ा

अठोतर सय- एक सय आठ (*बारह नमा अठोतर सय*)

अठैसा सय- एक सय अठाइस (*सोलह अठे अठैसा सय*)

अड़कस- अड़ारि, कोनो बहाने झगड़ा ठनैत रहब

अड़का- पैघ चेपा, बोल्डर (Bolder)

अड़गड़िया (मारब)- स्वार्थवश ककरो ओहि ठाम बेसी काल धरि बैसल रहब

अँड़पेङा- बड़दकेँ तेजीसँ चलबालय उत्तेजित करबाक हेतु पछिला पैरक काछमे पेनासँ हुतकारनाइ

अड़सद्ठा लागब- कार्य सिद्धिमे अकस्मात् बाधा (आबि जायब), पचीसी खेलमे भेल एक विशेष स्थिति जाहिमे अपना घरमे पहुँचल पक्की गोटी लाल नहि भऽ कऽ उनटा मुहेँ चलबाक लेल विवश भऽ जाइछ आ उनटा मुहेँ अड़सठि घर पार कऽ पुनः अपना घरमे लाल होयबा लेल अबैछ। [क.को.- *'अड़सठि घरक एक राजस्व विवरण जे बनएबामे बड़ समय लगैत छैक।'-व्याख्या अवास्तविक आ कल्पित*]

अड़सब- दे. अरसब

अड़सल- लम्बित, अपूर्ण (कार्य)

अड़ाँच- *अपि* च- खाटक (दे.)अदबाइन ओ गोड़थारीक पासिकेँ जोड़ि कऽ तनबाक रस्सी

अड़ेर- एक प्रकारक खढ़

अड़्वाल- बहुत अधिक, बड़का ढेरी, अम्बार, आडम्बर

अड्डेबाज- अधलाह वृत्तिक अड्डापर गेनिहार (*निन्दात्मक*)

अढरनढरन- अत्यन्त दयालु, आशुतोष, महादेवक विशेषण

अढ़ाइ- दू ओ आधाक जोड़

अढ़ैकुड़्वा- अढ़ाइ कूड़ीक हिस्साबला अचल सम्पत्ति (*खेत, गाछी, पोखरि आदि*)

अढ़ौनी- अढ़यबाक काज, अढ़ौलापर कयल गेल काज

अण्टाह-कनेकोटा त्रुटि भेलापर क्रुद्ध भऽ गेनिहार (*देवी-देवता*)

अतरबाती/अँतरबाती- घर छारबामे एक बाती छोड़ि कऽ (छारनाइ)

अँतरायब- *अपि* च- बोली लटपटायब

अतल- अथाह

अतिरेक- अतिशयता

अतिसी- तीसी (*अतिसी कुसुम गात समतूल-मनबोध*)

अतू- कुकुरकेँ सोर करबाक शब्द

अतेव कऽ-खास कऽ (*अत+एव*)

अथउथ- दुविधा/अनिर्णय

अथरबन- बहुत अधिक संख्यामे पसरल, अलेल

अदक / अदक्क लेब- आतंक, आकस्मिक भय

अदखोइ-बदखोइ- निन्दा, चुगली

अदबऽ- तारतम्य, इतस्ततः, अनिर्णय

अदबाइन/अदमाइन- खाटक गोड़थारी (*पौथान*) दिसक पासिसँ लगभग गोटेक हाथ छोड़ि पँजरबाहिबला दुनू पासिकेँ जौरक अनेक भत्ता दऽ कऽ बनाओल गेल मोट रस्सा जाहिमे एक दिससँ खाट घोरबाक जौर फँसाओल जाइछ ओ दोसर दिसक छूटल पासिसँ अड़ाँच कसल जाइछ। दे. अड़ाँच

अदरस- काठक तकथाक बिनु रन्दा कयल पृष्ठ भाग

अदरायब- अगरायब

अदाप/अदाब- मुसलमानी अभिवादन, नमस्कार

अदुर जो/अधुर जो- घृणा ओ अग्राह्यता सूचक शब्द (*शब्दार्थ*-दूर *हो : स्त्रीभाषा*)

अधओखा- अधवयसू, अधेड़

अधखिज्जू- *अपि* च- आधा अजेह, आधा खिज्जा

अधगेँड़- कोनो नाम वस्तुक मध्य बिन्दु, गाछ वा काठक आधा भाग

अधजरुआ/अधजरू- आधा जरल

अधम उधोरनि- अधमक उद्धार कयनिहारि, गंगाक विशेषण

अधमोनी- आधा मनक बटखारा, आधमनक नाप बला ढाकी

अधापन- कष्टसाध्य निम्नकोटिक काज

अधोखा/अधौखा- अपि च- दे. अधओखा

अनकुट- कार्त्तिक शुक्ल प्रतिपदाकेँ भगवानकेँ छप्पन प्रकारक भोजन भोग लगयबाक पर्व, अन्नकूट

अनगनित मास- गर्भक आठम मास

अनचिन्ह- अपरिचित, अनचिन्हार

अनचोका- असावधानता, अकस्मात् होयबाक स्थिति

अनजनुआँ- आन पुरुषसँ जनमल, जारज

अनजल- अन्न-जल, भोजन, उपवासोत्तर ग्रास, अञ्जल

अनठीया- आन स्थानक लोक, आन गामक लोक, अनचिन्हार लोक

अनथिताह- अस्थिर चित्तक लोक, अव्यवस्थित व्यक्ति जकर बातक ठेकान नहि

अनबिसबासू- जकरापर विश्वास नहि हो, अविश्वसनीय

अनमठ (काटब)- कृत्रिम निद्रा, कृत्रिम निश्चेष्टता, सूतल रहबाक बहाना करब, अचेत होयबाक बहाना करब, दम साधि कऽ पड़ल रहब

अनमनायब- *अपि* च- कनेक अस्वस्थ सन होयब

अनमाना- मन बहटारबाक साधन

अनरनेबा- पपीता, अँड़रनेबा

अनसथरि- *अपि* च- अनुपयुक्त स्थान, अपरिचित स्थान, अन्यस्थान

अनसर्ध- असर्ध

अनामति- यथावत् सुरक्षित

अनायब-मङबायब, आनब क्रियाक प्रेरणार्थक

अनुष्ठा- अत्युत्तम, अतिविशिष्ट, दुर्लभ खाद्य पदार्थ

अनेरुआ- *अपि* च- स्वत: उत्पन्न (*वनस्पति*)

अनेस/सा- अन्देशा, आशंका, कोनो अनहोनीक भय

अन्तह- अन्यत्र, अन्य स्थान

अन्तहिया- आन स्थानक (लोक), अनठीया

अन्ती- कानक गहना विशेष

अन्दाजी- अन्दाजसँ, अनुमानसँ

अन्दाजीफिकेसन-(*फारसी+अंगरेजी - संकर*) बिना सोचने-विचारने, अनुमानत:

अन्नय- *(अन्वय)*, दूरक कौलिक सम्बन्ध-अनुबन्ध

अन्नय- फन्नय-उपेक्षणीय अन्नय

अन्हरमारि-आन्हर द्वारा कयल गेल मारि/अन्हारमे मारि जाहिमे मारनिहारकेँ बोध नहि होइछ जे ककरा मारि रहल छी। (*ला.*)- बिनु बुझनहि-सुझनहि अनकापर आरोप लगायब

अन्हागाहिस/अन्हागाही- बिना विचार कयने, बिना अन्दाज कयने

अन्हारी (देव)- चोर द्वारा चोरि कयल सम्पत्तिमेसँ संरक्षककेँ देल जायबला नियत भाग

अन्हेरबाँट- 1. एकटा पशुरक्षक लोकदेवता 2. असन्तुलित बँटबारा

अपकर्मी- कुकर्मी

अपखँत- अल्पाहारी (*व्यंग्यार्थ; तकर विपरीत-खाधुर*)

अपङ- विकलांग, काजमे अक्षम, अकर्मण्य

अपजल/अफजल- अपरोजक, अपचेष्ट, निर्घिन आचरणबला व्यक्ति

अपनुक (*प्रा.*)- अपन, निज (*अपनुक आनन आरसि हेरि-उमापति*)

अपरतिबायब- निठोहर भऽ जायब, लिलोह भऽ जायब, अप्रतिभ होयब

अपरहान/अपरहान्त- दिनमे भेल अबेर, मध्याह्नक उपरान्त, अपराह्ण

अपसव्य- वामक विपरीत, दहिन कान्हपर ओ वाम हाथक नीचाँ जनउक स्थिति

अपसोआरथी- अपनहि स्वार्थ सिद्ध कयनिहार

अपहित- अपचेष्ट

अपामार्ग- एक वनस्पति, चिरचीरी

अपाहिज- अपङ्ग, विकलाङ्ग

अप्पा- आजी, बाबी, मैयो, मैयाँ

अफजल- अपचेष्ट, अपरोजक, घिनाओन

अफीम- हफीम

अफिमची- अफीम सेवन कयनिहार

अबडेरब- 1. महत्त्व देब, मोजर देब, मान्य करब 2. उपेक्षाकरब, असम्मान करब

अबरपनी- अबाराक आचरण

अबारा- *अपि* च- चरित्रहीन, अनुशासनहीन

अबाह- *अपि* च- भूत-प्रेतक सन्दिग्ध वास-स्थल

अबैया- अयबाक सम्भावना

अभगदसा/अभगदासा- दुर्भाग्यक अवस्था, अभाग्यदशा

अभगली/अभागलि- भाग्यहीना स्त्री

अभाँत (लागब)- अप्रिय, अनसोहाँत, अरुचिकर (होयब)

अभिचंक- आतंक, भय

अभिरोख- अभिरोष, तामस

अभोगिया- अभोग होयबाक शाप, स्त्री-प्रयुक्त पुरुषक हेतु गारि

अमझोर/रा- काँच आमकेँ उसीनि कऽ बनाओल गेल नोनगर शर्बत

अमधुर- लताम

अमबसिया- अमावास्या, कृष्णपक्षक अन्तिम तिथि

अमरित- अमृत

अमला ओछ (होयब)- पदक अनुरूप सम्मानमे न्यूनता, [*क.को. अधीनस्थ कर्मचारी सभक प्रति अनुदार-अर्थ सन्दिग्ध*]

अमला-फैला- हाकिम-कर्मचारी इत्यादि

अमलो पीब- नान्हिटा बात लय क्रोधेँ बजैत रहब, क्रुद्ध होयब

अमाठी- आमक गाछमे स्वतः सुखायल छोट-छोट डहुरी जकर प्रयोग होममे कयल जाइछ [*क.को. आमक आँठीक भितरका गूदा जे रोटी बनाए खाएल जाइत छल- अर्थानभिज्ञता। आमक जाहि सुखायल आँठीक गुद्दाक रोटी बनैछ तकरा पाको/पकोहा कहल जाइछ*]

अमोबसिया- अमावास्या

अम्मा- अम्बा, माता

अरकच-अन्नमे मिश्रित अखाद्य कदन्न/अपपदार्थ

अरकचाह-अरकच मिश्रित (अन्न)

अरजा- नाप-तौल इत्यादिक सारणी, क्षेत्रफल निकालबाक लेल पुरान पद्धतिक गुणन-सूत्र

अरदारा- आर्द्रा (एकटा नक्षत्र), आद्रा नक्षत्रमे कयल जायबला पार्वण/पितृकर्म/कुल देवताक पानड़ि

अरधना/अरधाना- आराधना

अरबद्धल- हठी, जिद्दी, अभागल

अरबैठल- ऐँठल स्वभावक, घमंडी

अरमज- झंझटि, बाधा, अवरोध

अरमेठब- कोनो काजमे अकारण बाधा उत्पन्न करब, झंझटि सोझराय नहि देब

अरसब/अरसायब- बाधित, होयब (*बहुत काज अरसा जायत। बहुत काज अरसल अछि*)

अरसल- अपूर्ण, रुकल, बाधित, दे. अड़सल

अराहब- *अपि* च अफार खेतमे पहिल बेर हर जोतब

अरिआनँघान- अतिशय वर्षा जाहिमे पानि खेतक आरि टपि कऽ बहय

अरिआयब- *अपि* च 1. अकच्छ होयब, 2. अकच्छ करब, 3. खेतक आरिकेँ सोझ-साझ करब

अरिका पर- हालमे, हेबनिमे, (*अरिका परक जोगी*)

अरुआ- कन्द विशेष, आरु

अरुऐनी- अरुअयबाक स्थिति, बासि सिद्धान्नक लसियायब/ गन्धयुक्त होयब

अरोठल (बोल)-रुच्छ, बेलसि

अर्र- बकरीकेँ सोर करबाक शब्द

अर्रा कऽ (खसब)- पैघ गाछ/मकान/देबालक कम्पन ओ तेज ध्वनिक संग एकाएक खसब

अर्राहटि (मारब)- 1. मृत्युशोक जन्य चीत्कार 2. असह्य कष्ट जन्य चीत्कार

अलगट- अकस्मात् स्वार्थक काज कऽ लेबाक स्थिति [क.को.- अँटकर-अर्थभ्रान्ति]

अलगटेंटी- बिनु सोचने आगाँ भऽ कऽ बाजि देनिहार

अलगनी- कपड़ा रखबाक लेल टाङल बाँस अथवा डोरी

अलग-बलग- *अपि* च- कात-करओट, उत्तरदायित्वसँ छिटकल (*अलग-बलग खाँओँ, ढ़ेरी लग नै जाँओँ*)

अलना- कपड़ा सब सैंति कऽ राखऽबला काठक वा लोहक उपकरण

अलपजिबाह- अत्यन्त दुर्बल, कनेको रौद-बसात लगलापर लटुआ गेनिहार

अलबत्त/अलबत्ता- 1. वाह, खूब 2. अद्‌भुत, विचित्र, विस्मयकारक

अलबौक- बकलेल, बुड़बक (*ई किसान अलबौकक टारी, पम्पिंग सेटक करथि पुछारी-श्रीअमर*)

अलर-बलर- 1. अनुपयोगी वस्तुक ढेरी 2. निरर्थक गप्प

अलहकरनी- खूब गहना पहिरनाहरि, विन्याससँ रहनिहारि

अलहगरजी- आनक बेगरता नहि बुझनिहार, मनमौजी (*नाउ, धोबी, दरजी, ई तीनू अलहगरजी*)

अलह लरैनी- अलहनरैनी

अलापी/अलापी मैयो- नेप चुऔनिहारि, देखौआ रुदन कयनिहारि, बढ़ा-चढ़ा कऽ बजनिहारि (*अलापी मौगीकेँ नौ मोनक बुलाकी*)

अलारि/री- अत्यन्त दुलारू बेटी, दुलारी (*लोकगीतमे प्रयुक्त-ककर अलारी* हे गौरी)

अलोक- मूर्ख, अपटु, अवढंग

अलोधन/नि- अत्यन्त दुलारू बेटा/बेटी, दुलारेँ बहसल

अलोपित- लुप्त, गायब भऽ गेल, अलोप

अल्ल-बल्ल- निरर्थक गप्प

अल्लू- आलू

अल्लो-मल्लो (करब)- अत्यन्त प्रेम, सौहार्द वा दुलारक व्यवहार, आत्मीयताक प्रदर्शन

अल्हा- 1. एकटा लोकगाथाक नायक अल्हा, अल्हा-रूदलक लोकगाथा 2. घुच्ची-पिलौअलि खेलमे निशानापर मारबाक लेल खेलाड़ीक विशेष गोटी

अष्टयाम- आठ पहरक (अहोरात्र) सेकल्पित नाम-संकीर्तनक धार्मिक अनुष्ठान

असकतियाह- आलसी, आसकती

असधनी- *अपि* च- बाँसक सीढ़ी/सिड़ही

असज्जाति- दुष्ट, बदमाश

असथीर- स्थिर, शान्त, अचंचल

असपताल- चिकित्सालय, रोगी सभक उपचारक सार्वजनिक स्थान

असभगनी- आशा भग्न कयनिहारि, प्रत्याशित पुत्रक बदला जनमलि बेटी

असमाहि- खूब नमहर, अत्यन्त विस्तृत

असम्भय- असम्भव

असरा- *अपि* च- 1. असार, काठक सारिलसँ इतर दुर्बल अंश 2. प्रत्याशा

असरेस/असरेसा- आश्लेषा नक्षत्र

असलका/असली- शुद्ध, अकृत्रिम

असहज- असह्य, नहि सहबाक योग्य

असहनि- असहिष्णु, ईर्ष्यालु, दुष्ट

असिरवाद- आशीष, आशीर्वाद

असिरबादी- आशीर्वादक रूपमे देल टका/वस्तु

असीआ सय- एक सय अस्सी

असीस- आशीष (*जतबे चुमायब आमाँ ओतबे असीस हे*)

असीहति- ताकछेम

असुरारि- एकटा कीट विशेष, झिंगुर

असूल/असूली- खदुका वा देनदारसँ प्राप्य राशि माङि कऽ प्राप्त करब

असेआस- रुग्णतामे श्रमजन्य थाकनि

असेध- ताकछेम

असेधब- ताकछेम करब

असोसारि- रंग-विरंगक व्यवधानक कारणे सामान्यो सन काज लम्बित होयब

असौजन-दुइ सम्बन्धीक मध्य परस्पर सिद्धान्नक भोजन करबाक-करयबाक व्यवहारक अभाव

असौजनियाँ- जकरासँ असौजनक व्यवहार हो

अस्यास- दे. असेआस

अस्सब- जल्दी नहि छूटऽबला (घाओ), जल्दी नहि सुखाय / उपटऽबला (वनस्पति, गाछ), अक्खज

अहमाद- अहंकार, घमण्ड, घनमद, अहम्मद

अहरी- *अपि* च- ऊँच स्थानक किनार

अहलायब- गहदायब, घमण्डसँ अनिच्छा/उदासीनता देखायब

अहलायल-अनिच्छुक, उदासीन, उपेक्षाभावयुक्त

अहलायल-बहलायल- उदासीन, धन सन

अहिना-एहिना

अहिपन- अरिपन, ऐपन

अहियासब-थाहब, भारक अन्दाज करब, अपन क्षमताक अन्दाज करब

अहिला-1. गौतम ऋषिक पत्नी अहल्या 2. ऐला, एक प्रकारक मसुबिर्ध

अहुना-एहुना

अहू-एहू, इहो

अहूनाती- एहू प्रकारेँ

[आ]

आँड़-बाँड़- असम्बद्ध गप्प, अण्ट-सण्ट

आइस- अहाँ, अपने (*आंचलिक प्रयोग*)

आउन- कठही गाड़ीक पहिआक नाहकेर मध्य भागमे पैसाओल लोहाक गोल फोँफी जाहिमे धूरी पैसाओल जाइछ

आकबति- पारलौकिकता, मनुष्यक मरणोत्तर स्थिति

आँखु- कुसियार, आलू आ अल्हुआक ओ स्थान जाहि ठामसँ पनकी निकलि कऽ गाछ बनैछ

आगु/आगू- आगाँ

आजाद- स्वतन्त्र

आजादी- स्वतन्त्रता

आड़ाहिस्सी- अड़ारि, हिस्सा-बखरा लय बलहुँ झगड़ा

आँती (उठब) *अपि* च- माल-जालक एक प्रकारक घातक बिमारी जाहिमे ओ टाङ छिड़िआय मूड़ी पटकऽ लगैछ

आथरि- भोजनक हेतु विन्यासपूर्वक पसारल, प्रचुर सरंजाम

आदीगुदी/ही- दुर्बल व्यक्ति, साधारण सामर्थ्यक व्यक्ति

आधा-छिधा- आधासँ किछु कम वा बेसी, अपूर्ण, असम्पन्न, आंशिक

आनसी-मानसी- परोक्ष रूपमे आलोचना/निन्दा

आनेमाने (बाजब)- बिनु नाम लेने आक्षेप

आपठ (खसब/ खसायब/होयब)- हठ, भभटपन, झंझटि, बाधा

आपरूपी-(*अपि च*)- स्वत: उद्भूत, अनायास, बिना कारणहि

आफदि- विपत्ति, आपदा, झंझटि

आबरजात- आबा-जाही, आवागमन

आबाकाबा- आडम्बरपूर्ण पोशाक

आमवात- गेठिया नामक रोग

आमा- अम्बा, माय (लोकगीतमे प्रयुक्त)

आमामाइ- छठि ब्रतकथाक एक पात्री (*आमामाइक खिस्सा, आमामाइक पहिल जाग*)

आरबल- आयुर्बल, औरदा, आयु

आरोतोरी/आरोत्तोरी के- आश्चर्यमय हर्षसूचक उद्गार (*वाह वाह* !)

आरिज- अकच्छ, आजिज

आलन- *अपि* च- 1. गोइठा-गोड़हाक हेतु गोबर वा भीतक लेल माटि सनबामे मिलाओल जायबला खढ़-कुरकुट, भुस्सा आदि, 2. लत्तीकेँ बढ़बाक लेल देल जायवला छोट साङह

आला- *अपि* च- श्रेष्ठ, उदार, विलासी

आसकोट- बिनु बाँहिबला कोट, जवाहरकट, बण्डी

आसखास- आवश्यक आवासीय उपकरण

आसठि- ओ ऊँच छोट चौकोर स्थान जाहिपर पैर राखि ओसारापर चढ़ल जाइछ, लतमारा

आह- *अपि* च- किंचित् ताप (*रौदक आह*)

आहर- *अपि* च- आहार, चिड़ै चुनमुन्नीक आहार

आँहाँ- अहाँ, मध्यम पुरुष आदरार्थक सर्वनाम

आहाहा- संवेदना सूचक अव्यय

आहि- *अपि* च- मनक व्यथा

आहि-अलम/आलम- कमो पीड़ाकेँ बढ़ा-चढ़ा कऽ व्यक्त करब

आँहिऊँहि- पीड़ा व्यंजक शब्दक अनुकरण

आहिन/आँहिन- 1. गीजल-गाजल थाल-कादो 2. भीत देबाक लेल भुस्सा आदि दऽ कऽ गील कऽ सानल माटि

आहुल- हाथक औंठा ओ शेष आङुर मध्य गसि कऽ अँटाओल तृण-शस्यादि

[इ]

इकड़ी- *अपि* च- पानक लत्तीक साङहमे प्रयुक्त खड़हीक डाँट

इङुर- सिन्दूर, दे. हिङ्गुर

इच्चा- इचना माछ, झिंगा माछ

इजोरिया- *अपि* च- शुक्ल पक्ष

इटहर- ईंटक घर (अप्रचलित पुरान प्रयोग)

इटेबा- ईंट, पजेबा

इण्डा- इनार

इतरनी- दे. इत्तर

इतरैनी- इतरायब

इत्तर- निष्ठुर, अदत्त, [क.कों. *निर्लज्ज, घृणित– ?*]

इदगाह- मुसलमानक प्रार्थना स्थल

इनरा- इनार

इनरासन- इन्द्रलोक, स्वर्ग

इनरासनक परी- स्वर्गक अप्सरा, दिव्य सुन्दरी, अति रूपवती

इनाम-मकराम- बकसीस रूपमे देय/देल गेल राशि ओ अन्य वस्तु

इन्द्रासन- इन्द्रलोक, स्वर्गलोक [क.को. *स्वर्गक राजा सन- ?*]

इन्द्रासनक परी- स्वर्गलोकक अप्सरा, दिव्य सुन्दरी

इन्नऽ- एमहर

इमन्दार- निष्कपट, शुद्ध, छल रहित

इमलिया- इलमलिया, बाकस आदिमे ताला लगयबाक हेतु ठोकल लोहक अर्द्ध वलय

इमली- तेतरि

इरदप- *अपि* च- बलजोरी दाबा

इरिङ्ग-भिरिङ्ग- अनटोटल/असम्बद्ध बात

इलबाइस- अतिशय फैशन, विलासिताक विविध साधन

इलाइची/इलैंची- अड़ाँची, दछिनी

इलोह- लालटेम आदिक इजोतसँ आँखिपर पड़ऽबला चमक

इसकुलिया- इसकुलक छात्र, इसकुलसँ सम्बद्ध

इसतिहार- विज्ञापन

इसर- 1. ईश्वर, महादेव, 2. मैथिल ब्राह्मणक एकटा उपाधि

इस्स- काँट आदि गड़ने पीड़ा व्यंजक मुख-ध्वनि

इस्सूसँ बिस्सू (पहलमान)- उपर्युपरि, केओ ककरोसँ कम (उद्दण्ड/उत्पाती) नहि

[ई]

ईंट- पजेबा, ईंटा

ईसू (शू)- ईसामसीह, इसाइ धर्मक संस्थापक

[उ]

उकटन- मेथी, सरिसो, हरदि, उसना चाउर आ दूभिक मिश्रणकेँ पीसि कऽ बनाओल लेप जे शिशु, बड़ुआ ओ अनेक वर्गमे विवाहसँ पूर्व वर/कनियाँक देहमे लगाओल/उड़ारल जाइछ [क.को.- *See उबटन । उबटनक अर्थ- देह उड़ारबाक एक लेप जे दालि पीसिकँ बनैत अछि- दालिक लेप अनभिज्ञता-सूचक*]

उकटी- उकटनिहारि, उलहन देनिहारि (*हकटी हाथक खाइ, उकटी हाथक नैं खाइ*)

उकट्ठ- उकठ, उपद्रव

उकट्ठी- उकठ कयनिहार, उपद्रवी

उकठी (लाड़ब)- चुगली (कऽ झगड़ा लगायब) [*नारद देत गए उकठी लाड़ी-मनबोध*]

उकबत्ती- दाह संस्कारक ऊक

उकबा- झूठ अपवाद, अफवाह

उकरीन- उऋण, ऋणमुक्त

उकस-पुकस- कछमछायब

उकसोबास-विवश भऽ एक स्थानसँ दोसर स्थानपर बसब, कष्टकर स्थिति, उछन्नर

उकाठी- *अपि* च- ऊकक अवशिष्ट भाग

उक्का- ऊक

उक्खी-विक्खी-तीव्र उत्सुकता, उत्कट इच्छा, व्यग्रता

उखेलब/उखेहब- उखाही करब, निन्दा करब, उलहन सहित गारि पढ़ब

उगरास- *अपि* च- मुक्ति, समाप्ति, बदरीक बाद उबेर होयब

उघनि- उगहनि, इनारसँ पानि भरबाक हेतु डोलमे लगाओल डोरी

उघब- उगहब

उघरा-भाँड़- *अपि च-* प्रयोजनवशात् वस्तु-जात सब अस्त-व्यस्त रूपमे उकटल-राखल

उचन्त- अनियत, अनायास

उचन्त/उचन्ती खाता- अनियत आयक बही

उचन्ती- अनियत/अनायास प्राप्त (आय)

उचरिङ/उचरिन- 1. एकटा कीट 2. अस्थिर स्वभावक माउगि

उचित-विहित- उपयुक्त ओ विधिक अनुरूप व्यवहार

उचिङल-चौंकल, चंचल चित्त (मन), आशंकित मन

उचितन- उचितरूपमे, समीचीन रूपमे, व्यावहारिक रूपमे, न्यायसंगत

उचिला-चाल- *अपि च-* मानसिक चंचलता

उचेङब-उचङब, लपकि लेब, उपरे-उपर हथिया लेब

उछन्नर- उपद्रव, उकठ [*क.को.मे अर्थ- 'अनुशासनहीन'- अशुद्ध*]

उछाहब- 1. चार परक पुरना खढ़कें उकटि कऽ हटायब 2. धानक दाउनिमे खोहकें उकटि कऽ निचला भागकें ऊपर आनब

उछेहब- उछाहब

उजड़ब- उपटब, ध्वस्त होयब

उजड़ी-उपटी- उजड़ल स्थान/बासडीह

उजबुज- प्रचुरता देखि अनिर्णयमे पड़ल (मन:स्थिति)

उजबुजायब- प्रचुरता देखि अनिर्णयक मन:स्थिति होयब

उजमाहल- अगुतायल, उताहुल, आतुर

उजाड़- उजड़ल स्थान, ध्वस्त स्थान

उजाड़नि- उजाड़निहारि, बदमास स्त्री (*लंकउजाड़नि*)

उजोर- अनियन्त्रित, निर्बन्ध, विनुजौर/चरवाहक (*माल-जाल*)

उज्झट- असंगत, अनुचित

उझकब- पात्रक/ठोसवस्तुक आधारक एक भाग किछु ऊपर उठि जायब [*क.को. 'कोनो पात्रक आधार अनुकूल नहि रहने टगब'- मुदा उझकब क्रियाक परिणाम होइछ टगब*]

उझकायब- पात्रक एक भाग किंचित् ऊपर उठायब (*उझकब/उझकायब धातुसँ व्युत्पन्न कृदन्त बनल अछि चूल्हिक 'उझकुन'*)

उझकुन- *अपि च- (ला.)* अकान, बकलेल

उटकरी- अन्दाजी, बिना आकलनक, अनठेकानी (*उटकरी पचें डेढ़ सय*)

उठब- *अपि* च- मादा पशुक कामोत्तेजित होयब

उठ-बैस- अकुलाहटि, कछमछी

उठाब- प्रथाक अप्रचलन

उठती- समाप्तिकाल

उठान- उत्थान

उठान हारब- उठबा-बैसबामे अशक्त होयब

उड़न्तबाज- 1. खूब उड़निहार चिड़ै 2. (*ला.*) खूब चतुर-चलाक, धूर्त

उड़बड़ेरा- अव्यवस्थापूर्ण हलचल

उड़ी-बीड़ी- मानसिक अस्थिरता, उचाट, उच्चाटन

उढ़की- सतहसँ कनेक उठल अंश

उढ़बड़ेरा- दे. उड़बड़ेरा

उढ़मब- मनमे कोनो विचार उत्पन्न होयब [*क.को. उरम्हब- See उरँघब । उरँघब- पलटि जाएब- अर्थ अनुपयुक्त*]

उढ़ार- उढ़रबाक कार्य, परपुरुषक संग स्त्रीक पलायन

उढ़ार नाच- प्रेमकथापर आधृत एक प्रकारक लोकनाट्य, विदेसिया नाच

उतफाल- *अपि च-* (संज्ञा) अतिशय अदम्य उपद्रव [*क.को.क विचारेँ ई शब्द लुप्त- से अमान्य*]

उतार- *अपि च*- अति साम्य, प्रतिकृति, अनुकृति

उतारन- परित्यक्त, पहिरल पुरान वस्त्र

उत्तिम- उत्तम, सुन्दर, नीक

उथरब- बाहलि गाय-महिसिक गाभ (*गर्भ*) नष्ट होयब, गाभ नहि रहब

उदगार- प्रसन्नता (*मन उदगार तैं गाबी गीत*)

उदबेग- मानसिक व्यग्रता, चिन्ता (*बनियाँकेँ घेघ-गैँहिकीकेँ उदबेग*)

उदस्त- उदासीन, निरपेक्ष

उद्वेग- मानसिक व्यग्रता, चिन्ता

उध/उधबिलाड़- बिलाड़क आकारक मत्स्यजीवी जलजन्तु

उध चढ़ब- धुनि चढ़ब, कोनो उद्देश्यक सिद्धि हेतु एकाग्र भऽ प्रयत्नशील होयब

उधब-बधाबा- माङ्गलिक उत्सवादि

उधम (मचायब)- कूद-फान, तोड़फोड़, उत्पात

उनटन- भूकम्प

उनटा-पुनटा- उनट-पुनट

उनटी-पुनटी- हेराफेरी

उनमुनी- उत्सुकता जन्य संचार, उन्मुखता

उनरब- धातुक पत्तर, लोहक वक्र काँटी आदिक विपरीत दिशामे बल लगौला पर मोड़ायब/सोझ होयब [क.को. *-तनएलासँ फान (व्यास) बढ़बाक अर्थभ्रम*]

उनारब- धातुक पत्तर, लोहक वक्र काँटी आदिकेँ विपरीत दिशामे बल लगा कऽ मोड़ब/सोझ करब [क.को.क *अर्थ पूर्ववत् जाहिमे अर्थभ्रम*]

उनहब- बेर बीतब

उनैस- *अपि च*- *(ला)* सापेक्ष रूपमे किछु न्यून

उपछिया- पानि उपछबाक काज

उपर-झापर- उपरे-उपर, बहुत थोड़, यत्किंचित्, अलग-बलग

उपरदम्मा- खोंखीक एहन बिमारी जाहिमे साँस ऊपर खीचऽ पड़ैछ

उपरबला- निचलाक उनटा

उपरबाइली- नियत वेतनसँ इतर आय

उपरला- उपरबला, निचलाक उनटा

उपाड़- उपड़बाक वा उपाड़बाक कृत्य, सामासिक पदमे उत्तरपदमे विशेषत: प्रयुक्त (*यथा- केशउपाड़ घाओ, खुट्टाउपाड़*)

उप्पा- नोनियाह भीतपर रहनिहार अत्यन्त सूक्ष्म कीट जे मच्छड़ जकाँ कटैत छैक

उफाँटू- समूहसँ फराक, विजातीय, बाहरी, सबसँ भिन्न

उफान- उधिआन

उबार/उबारा- मुक्ति, निवृत्ति

उब्भी- झाँझक टाटमे क्षैतिज बातीकेँ कसबाक लेल बाँसक फट्टा जाहिमे बनल छेदमे बाती पैसाओल रहैछ

उभब- उबहब

उमडाम- किनहेरि धरि पानिसँ भरल नदी/पोखरि/इनार, द्रवसँ कानो-कान भरल (पात्र)

उर-फुर- दे. फुर-फाँइ

उरबिस्सी- जलाई भूमिमे उत्पन्न एक प्रकारक गाछ जे देहमे सटलापर कुड़िऐनी उठि जाइछ

उरीन- उकरीन, उरिन, उऋण

उरेहब- *अपि च*- समतल आधार/वस्तुपर रंगसँ आकृति बनायब, चित्रण करब

उर्र-फुर्र- दे. फरफाँइ

उलटी- वमन, ओक

उलका- *अपि च*- उलाओल अन्न/अन्नक चिकस

उलाउ-चुलाउ करब- नंगो-चंगो करब, दु:ख देब

उलूआ- उल्लू सन मूर्ख

उलू-धुतू/धुथू करब- बुड़बक बनायब, मुँह दूसब,

उलेँच- उलोँच, ओछाओनक चद्दरि

उलेन- ऊनसँ बनल

उसरठ- रुच्छ, नीरस, उसठ

उसरन- निर्वंश, वंशोच्छेद

उसरनमाडीह- ओ डीह जाहि ठामक निवासी निर्वंश भऽ गेल होइक

उसरागा- उत्सर्ग कयल, उसरगल

उसिझब- आधा सीझब, कम सीझब

उसिझल- कम सीझल, कुसिझल, अधसिज्झू

उसिनिआ- उसिनबाक काज विशेषत: धानक

उहे- कूकुरकेँ हुलकयबाक शब्द

[ऊ]

ऊखा- उषा

ऊघनि- उगहनि, उबहनि

ऊघब- उगहब

ऊठब- उठब

ऊड़ब- उड़ब

ऊड़बड़ेरा/ऊढ़बड़ेरा- दे. उड़बड़ेरा

ऊध- दे. उध

ऊपर-झापर- दे. उपर-झापर

ऊभर-खाभड़- ले-ऊँच, असमतल सतह

ऊल- ऊन

ऊलेन- ऊनी, ऊनसँ बनल

ऊहे- वैह, अन्यपुरुष सर्वनाम

[ए]

एकगच्छा- एकटा गाछबला स्थान, एगच्छा

एकघारा- अन्य स्ववर्गीय परिवारसँ रहित परिवार

एकछेहा- एकछाहा, शुद्ध, अमिश्रित

एकजुटिआ- एक जुट्टीबला (केश)

एकजुनिआँ- एक जुन्नासँ बान्हल बोझ

एकटकही/एकटकिया- एक टकाक मूल्यबला धातुक सिक्का, एक टकाक मूल्यबला कागतक नोट, एक टकाक मूल्यक कोनो वस्तु

एकठहुरी- एके ठाम, सर्वैकत्वेन, सब जोड़ि-जाड़ि कऽ कुल

एकनिआँ- एक आना मूल्यक

एकपनिआँ- एक पन्नाबला (एकपनिआँ एकबार)

एकपलिया- *अपि* च- एक पल्लाबला केबाड़

एकपिद्ठा- कागतक एक पृष्ठपर लिखल आ दोसर सादा

एकपैरिया-पैरेँ चलऽबला संकीर्णबाट, एक पैर रखबाक योग्य बाट

एकपोरा- एक पोरबला, एक पोटबला (लहसुन) गाछक बिन गीरहबला घड़/डारि

एकमुहाँ- एकमुहबला (घर/कोठी आदि)

एकबएग- एकाएक, अकस्मात् (एक-ब-एक)

एकबद्धू- दुइ गामक खेत एकहि बाधमे होयबाक सम्बन्ध

एकबयसू- एक वयसक, समान वयसक, दतरी

एकभिण्डा- एक भीड़बला पोखरि

एकभुगुत- एकभुक्त, एक अहोरात्रमे एकहि बेर सूर्यास्तपूर्व भोजन

एकमण्ट (*अं*)- एकाउण्टेण्ट, लेखापाल

एकमान- एक्का हँकनिहार

एकमुखी- एकमुहबला (रुद्राक्ष)

एकमुहड़ी- अधिक लोकक एकहि मतक भऽ जायब,

एकलक्खति- निरन्तर, निर्बाध

एकसलगी- अखण्डित, बिनु जोड़ल वस्त्रादि

एकसलिआ/एकसल्ला- एकसाला, एक वर्षक

एकहत्थी- एक हाथक नापबला

एकहन्त- टालि-गुल्ली खेलमे छओ संख्या-जे भेलापर दहिना हाथक लुल्हुआपर गुल्ली राखि ऊपर फेकि टालिसँ आघात कऽ गुल्लीकेँ उड़ाओल जाइछ

एकहारा- *अपि* च- एक पत्तीक धारीबला फूल (*तीरा, तग्गर, गेना, ओड़हुल आदि*)

एकाएक- एकाँएक, अकस्मात्

एकाढ़- एककात, सबसँ फराक स्थान, एकान्त स्थल (*एकढ़बा बानर*)

एकात- एक कात, किनारमे, सभसँ फराक

एकान्त- *अपि* च- एकभुक्त (करब)

एक्का- एक घोड़ासँ चलऽबला एहन गाड़ी जाहिपर एक व्यक्तिक बैसबाक स्थान होइक, [*क.को.*- 1. *एक घोड़ाबला गाड़ी-अर्थक अतिव्याप्ति*]

एकोँढ़- दे. एकाढ़

एखन्ते/एखुन्ते- एखनहि

एगोटा(टे)/एगोड़ा (ड़े)- एक व्यक्ति, एकटा लोक

एड़ा/एँड़ा- *अपि* च- बैलगाड़ीक पछिला भाग

एँड़ियायब- एँड़ीसँ आघात करब

एँड़ी-दोड़ी (लागब)- *अपि* च- एक पैरक एँड़ी आ दोसर पैरक औंठाक स्पर्श, अगिला व्यक्तिक एँड़ीमे पछिला व्यक्तिक औंठाक स्पर्श होयब (*श्मशानसँ आपसी बेरमे ई अशुभ मानल जाइछ* ।)

एतद्धि- समापन, सम्पूर्ण, समाप्त

एत्ता- अति, एतेक, बहुतो, प्रचुर, सीमा, असीम (प्रयोगाश्रित)

एन्नऽ/एन्नी- एमहर, एहि दिस

एन्नी-ओन्नी तथैव च- दुनू दिस समाने, उभय पक्ष सामने (निन्दात्मक)

ए बकचैआ/ए बक्का- घृणासूचक शब्द, अव्यय, ए छीया !

एबरी/एमरी- एहि बेर, एहि बरख, एहि साल

एसगरूआ- दोसराइतसँ रहित, दोसर सहायकक अभाव

[ऐ]

ऐ- *अपि* च- 'एहि' सर्वनामक चलित रूप

ऐकार- वर्ण 'ऐ'; 'ऐ'केर मात्रा 'ै' अर्थात् दोलेँ

ऐजग/ङ- एहि ठाम, एहि जगह

ऐँठचट्टा/ऐँठचट्टी- ऐँठ चटनिहार, परोपजीवी

ऐँठ-जूठि- ऐँठ एवं तत्सदृश उच्छिष्ट

ऐठाँ- एहि ठाम, एहि स्थानपर

ऐनि- कयदा-कानून, कुतर्क, (आइन)

ऐनि बघारब- आडम्बरपूर्वक कयदा-कानून देखायब, कुतर्क करब

ऐन्द्रजालिक- इन्द्रजाल कयनिहार, जादूगर

ऐबाह- ऐबयुक्त, आंशिक दोषयुक्त

ऐरिङ(अं.)- कानक गहना विशेष, (*अंगरेजी-ईयररिंग*)

ऐरिन-बैरिन- शत्रुता रखनिहारि, डाइनि-जोगिन (*ऐरिन-बैरिन पैर तर शिव-महादेव माथपर*)

ऐलाइन- किञ्चित तीत स्वाद

ऐश- विलासिता

ऐश-तैश/ऐसी-तैसी- रोआब, उद्धतापूर्ण धमकी, अवज्ञापूर्ण व्यवहार

ऐहब-सुहब- सधबा महिला वर्ग, (अविधवा-सुधवा)

[ओ]

ओइजग/ङ- ओहि स्थानपर, ओहि ठाम

ओइठाम (-ठाँ,-ठिआ,-ठिन,-ठिना,-ठिनी,-ठीं,-ठुन,-ठुना) -ओहि ठाम, ओतऽ

ओकादि- ओकाति (औकात), क्षमता, सामर्थ्य

ओकिल- ओकील, ओकिलक काज, ओकिलक सन स्वभाव (निन्दामे)

ओकिलनी- ओकिलक पत्नी, महिला वकील

ओगर- मौंड़ (*माय दिअय ओगरेमे सासु दिअय डगरेमे*)

ओगरबाहि/ओगरबाही- 1. ओगरबाक काज 2. ओगरबाक काजक निमित्त देय पारिश्रमिक, रखबारी

ओँघड़ान- ओँघड़िया, ओँघड़यनाइ

ओछाहि- नीच स्वभावक स्त्री

ओजनगर/ओजनदार- भरिगर

ओजह- कारण

ओझाइ- तन्त्र-मन्त्र ओ झाड़-फूकसँ रोगक उपचार, तन्त्र-मन्त्र ओ झाड़-फूकसँ उपचार करबाक वृत्ति

ओझाइन/नि- ओझा उपाधिक स्त्रीलिंग

ओझाइ-वैदाइ- झाड़-फूक ओ औषधिसँ उपचार

ओँटब- *अपि* च- एकहि बातकेँ बेर-बेर कहब

ओटिआयब- प्रयोजनार्थ इन्तजाम करब, ठिकिआयब, ठेकना कऽ राखब

ओठगन(घन)/ओठँगन(घन)- ओठङन, भोरमे गृहीत भोजन, व्रतपूर्व भोरुक ग्रास विशेषत: जितियामे

ओठङ्गर- अठोङर, विवाहमे आठ गोट व्यक्ति द्वारा धान कुटबाक एक विधि, (*बरक पते नहि ओठङ्गर लय मारि*)

ओठपातरि (*प्रा.*)- ठोराहि स्त्री

ओत- इरोत, अऽढ़

ओत्तऽ- ओहि ठाम, ओतऽ

ओत्ती- ओतेक (ओत्ती काल, ओत्ती बेर)

ओदाउद/दि- स्पर्द्धा

ओधबाध- निर्मम भऽ कऽ सर्वाङ्गपर आघात

ओनहुना- सामान्यत:, साधारण रीतिएँ, ओहुना

ओनामासी- आरम्भिक अक्षर-ज्ञान (ओनामासीधं < ओम् नम: सिद्धम्)

ओनाहिते-1. ओहिना, ताही जकाँ 2. अकारणहि

ओनाहू- ओहुना, सामान्यो रूपेँ

ओन्नऽ/ओन्नी- ओमहर

ओफा- 1. कार्यव्यस्तताक बीचमे पलखतिक किछु क्षण 2. सावकाश

ओम्- ॐ, प्रणव

ओर- *अपि* च- सुरू

ओर-पाहि- आरम्भ एवं क्रमिकता

ओरब- याचनामे हाथ/पात्र पसारब; माङब- (*हाथ ओरब*); चोट सहबालेल देहकेँ निश्चेष्ट छोड़ि देबि- (*देह ओरब*)

ओरे- सम्बोधन शब्द, गीतक भासपूरक स्तोभ

ओरिआनी- *अपि* च- ओरिऔनिहार, ओरिअयबामे पटु

ओलड़ब- *अपि* च- 1. जजातिक ढरहा कऽ खसि पड़ब 2. थाकनिसँ निश्चेष्ट भऽ पड़ि रहब 3. अत्यन्त दुलारेँ छिड़िआयब

[क.को.मे 'पलड़ब' अर्थ देल अछि जे अनुपयुक्त]

ओल-पालि/ओलि-पालि- विभिन्न प्रकारेँ नेनाक प्रबोधन

ओल-बोल/ओली-बोली- व्यंग्यवचन, कटु बोली

ओसरि- बिन बाहल बाछी/पाड़ी

ओसूली- ओसूल, ओसुलबाक कार्य

ओस्ताद- गुरु, शिक्षक, आचार्य, मर्मज्ञ, कला सिखौनिहार, चलाक, धूर्त्त

ओस्तादी-चलाकी, धूर्त्तता

ओहर-ठोहर- तामस मिश्रित बोली, गोँहछल बोली

ओहसब- मौलायब, लटब, दुर्बल होयब

ओहासी- *अपि* च- गामसँ सटल लेआ खेत, आन खेतसँ निचाँस खेत

ओही नाती- ओही प्रकारेँ, ओही जकाँ, तत्सदृश

ओहुना- ताहू प्रकारेँ, बिना कारणहु

ओहू- ओ सर्वनामक तिर्यक् रूपमे 'अपि' बोधक प्रत्ययक योग

ओहे- वैह

ओहो- ओ सेहो

[औ]

औक-बौक- बकलेल, बलेल, अकान

औंघायब- अर्द्ध निद्रावस्था होयब, तन्द्रा होयब

औंघी- अर्द्धनिद्रा, तन्द्रा

औँठा छाप- हस्ताक्षरक स्थानमे औंठाक छाप देनिहार, निरक्षर, मूर्ख

औंढ़ि मारब- 1. मनक बात प्रकट करबाक व्यग्रता होयब, 2. वमनक हेतु पेट हौंड़ब

औनी-पथारी- तक्का-हेरी (उठब)

औरत/औरति/औरतिया- सामान्य स्त्री, घरबाली, पत्नी

औरदा- आयु

औला-बौला- गरमी ओ गुमकीसँ मोन व्याकुल होयब

[क]

कऽ- करब धातुक पूर्वकालिक असमापिका रूप

कऽन(करब)- खेतमे लागल जजातिक तौलक अनुमान, कोनहुँ वस्तुक अनुमानित तौल

कऽर- *अपि* च- राड़ीक फुलकीक फुलयबासँ पूर्वक घोघ जाहिसँ डाली-मौनी आदि बनाओल जाइछ; सरपतक फुलकीक घोघ/मूँज

कएथा- *अपि* च- काएथक दीर्घ रूप

कओर-घोंट- हथउठाइ अल्प भोजन (भेटब वा देब)

कओरा- कओर बराबरि खाद्य (विशेषतः कुकुरकेँ देय/देल खाद्य पदार्थ)

कंस/कंसा- *अपि* च- दुष्ट, क्रूर निर्दय, नृशंस

कंसिनिया/कंसिनी- क्रूर स्त्री, निष्ठुर स्त्री, दुष्टा

कँकड़ौड़- काँकोड़ द्वारा अपन बिलपर जमा कयल गेल माँटिक जाल

कँकुड़िया केश- औंठिआ केश

कँकुड़ी- काँकोड़ सन आकृति, लत्ती-फत्तीक एकटा रोग

कँकुड़ी लागब- कँकुड़िआयब

ककोटब-कसि कऽ सटल रहब

कक्का- काका, पितृव्य, पिताक भाइक हेतु सम्बोधन

कखनि/कखनी-कखन, कोन समयमे

कखारा-ककहरा, 'क'सँ 'ज्ञ' धरि सस्वर वर्णमाला

कगजिआ/कगतिआ- 1. कागत/ज पर लिखबा लेल (पिन्सिल) 2. कागत व्यवसायसँ सम्बद्ध मुसलमानक एकटा जाति

कच- *अपि* च- 1. कचुरी सदृश छानल ओ झोराओल व्यंजन 2. कन्द-व्यंजनादिक छोट-छोट काटल (*कचल*) खण्ड

कचकोँड़ा- कचकारा

कचनारी- *अपि* च- पानक एक प्रजाति

कचनी- मिथिला चित्रकलामे पाड़ल जायबला तिरछा रेखा

कचबाबध- एहन मारि जाहिमे अंग-भंग भऽ जाय, कचिकचि कऽ कयल गेल हत्या

कचुरी- कतरल पियाजुकेँ बेसनमे सानि कऽ छानल टिकड़ी

कचौड़ी- फुलकी, घीमे छानल छोट आकारक पातर सोहारी [*क.को.-नोन आ फूँटि दए बनोअल पूरी; बेसनमे काँच तरकारी सानि बनाओल बड़ी-* दुनू *अर्थ अशुद्ध*]

कच्ची- *अपि* च- विन्याससँ व्यंजनादिक काटल गेल छोट-छोट खण्ड

कच्ची सेर- चौंसठि तोलाक पुरना सेर

कछबी- पेटक एकटा रोग

कच्छी- *अपि* च- कच्छ प्रदेशक निवासी

कज्छी- किनार, एकदम कोर, कनछी

कज्छी काटब- छीह काटब, काजसँ छिटकब, लाजसँ कोनो व्यक्तिक नजरिसँ सप्रयास बचैत रहब

कजरी- *अपि* च- 1. एक प्रकारक धान 2. एक प्रकारक वर्षाकालीन गीत-प्रभेद

कजरौटा- काजर पाड़ि कऽ सुरक्षित रखबाक लोहाक एक उपकरण

कञ्चर- अतिकृपण

कटब- *अपि* च- (समय) बीतब

कटमटी- नित्य भोजनादिमे सिकस्ती

कटबी- *अपि* च- समानान्तर चतुर्भुज आकारक काटि कऽ बनाओल गेल एकटा मिठाइ, बर्फी

कटहर चम्पा- पाकल कटहरक कोआ सन गमक ओ रंगबला एकटा फूल, चम्पा फूलक एक प्रकार

कटहरिया (फूल)- एक प्रकारक श्वेत फूल जकर गाछक पात कटहरक पात सन होइछ [*क.को. कटहरक को-सन फीका पीअर रङ्गक । कटहर-सन सौरभ बाला एक फूल-* दुनू *अर्थ अनुमानित*]

कटहिया- दे. कठहिया

कटाउन्ह- अप्रिय, अरुचिकर, तीख, तीक्ष्ण

कटित- क्षरित (*दोष, पाप कटित होयब*)

कट्टिस- मैत्रीक समाप्ति, छुट्टा-छुट्टी, (विशेषतः बच्चा सभ द्वारा प्रयुक्त)

कट्टिस-कुट्टिस- आरम्भिक कक्षाक छात्रक द्वारा कापीपर खेलायल जायबला एकटा खेल

कट्टुक/कट्टुक मसल्ला- टुकड़ी कयल नारियर-छोहाड़ा एवं अन्य मेवाक मिश्रण

कट्ठम- आम-कटहर आदि फलक पाकि कऽ गुलगुल होयबासँ पूर्वक किछु कठोर स्थिति

कट्ठमोन/कट्ठेमोन- प्रति कट्ठा जमीनमे एक मनक उपजा

कट्ठिल- अल्प गील, रुक्ख कऽ सानल चिक्कस/माटि आदि

कठकी-छोट काठी

कठकीड़ा/ड़ी- *अपि* च- थेत्थर, जाड़-ठारसँ अप्रभावित रहनिहार

कठघारा- काठक बनल घरक आकारक दोकान

कठपाज- कुतर्क कयनिहार, दुष्ट, लंगट

कठपिङ्गल/कठपिङ्ल- अनसोहाँत बातकेँ रचि-रचि कऽ कहनिहार

कठबोगना- इनार-पोखरिक यज्ञमे स्थापित कयल जायबला काठक मानवाकृति

कठमस्त- खूब स्वस्थ, सुडौल देहबला

कठसार- *अपि* च- सारक सार

कठहिया- 1. गाछ कटबाक काज कयनिहार 2. काठक व्यवसाय कयनिहार, कटहिया

कठही गाड़ी- काठक पहियाबला बैलगाड़ी

कठिआयब- साग (बूट, खेसारी, केराओ, मटरक)मूड़ीक काठी सन कठोर भऽ जायब

कठिआरी- *अपि* च- मृतकक दाहक्रियाक स्थल

कठौता- काठसँ बनाओल पैघ अढ़िआ, कठौत, (*ला कठौता देख तमासा...*)

कठौतिया- कठौतक आकारक गहींर (थारी), कठौतिया थारी

कठौती- छोट कठौत, कठुली

कड़कड़ौआ- खूब कड़गर, तीक्ष्ण, चरम स्थिति (*कड़कड़ौआ रौद, कड़कड़ौआ जाड़, कड़कड़ौआ नोट*)

कड़करेज- एक प्रकारक औषधीय गाछ ओ तकर फल

कड़री- कदली वृक्ष, केराक थम्ह (*कड़री थम्हपर सितुआ चोख*)

कड़सी- थरि/बथानपर माल-जालक लतखुरदनसँ गिजायल गोबर संग घास-भुस्सा, एकरहि सुखायल रूप, दे. गोबर-कड़सी

कड़ाचूर- एकदम ठीक-ठीक, ने बेसी ने कम

कड़ेकमान- काज करबामे/करयबामे सतत कड़ा/मोस्तैद/ चुस्त-दुरुस्त

कण्टिर- *अपि* च- बेटा

कण्टिरबी- बेटी

कण्ठा- *अपि* च- कण्ठमे सटल एकटा स्वर्णाभूषण

कण्डल-झगड़ा, झंझटि, (*प्राचीन रूप कन्दल-'कन्दल खञ्जरीट अइसन लोचन' -वर्णरत्नाकर*)

कतऽ-कहाँ- अज्ञात स्थान

कतबहि/कतबै- कातबला स्थान

कतबो- बहुतो

कतला- 1. कातबला, कतका, 2. पैघ जुआयल कतरी माछ

कतिआयब- कातमे राखब, उपेक्षा करब, एक दिस टारब, स्वयं कात भऽ जायब, हारि जायब

कते- कतेक, की परिमाण

कतौ- कतहु, कोनहु ठाम

कत्तल- मूस आदि द्वारा कुतरल गेल

कत्तहु- कोनहुँ ठाम

कत्ता- *अपि* च- कतेको, बहुतो

कत्ते-कतबा, बहुतो

कत्थब/कथब- बात बघारब, अनसोहाँत बात बाजब

कदै- पोखरि-डबरा इत्यादिमे पानिक सतहपर छाल्ही जकाँ जमल अपपदार्थ, [*क.को.क अर्थ-पानिमे बहिकँ आबि जमल कादो-भ्रान्त । वास्तवमे ओ पदार्थ 'गादि' कहल जाइछ ।*]

कनखा- फूटल घैल-तौलाक मुँहबला भाग, [*क.को.- फूटल भाँड़क टुकड़ी-असंगत*]

कनगोज- दे. कनबोज

कनचट्टक- *अपि* च- पुरान आमक गाछमे कानक आकारक उत्पन्न गोबरछत्ता जकर औषधीय उपयोग कनचट्टक घावमे होइछ

कनछी- कंछी, ऊँच सतहक एकदम किनार

कनटोप- कनतोप, टोप, अंगरेज सभक शिरस्त्राण

कनठेक्कर- जकर कानमे ठेकी पड़ल होइक, (*ला.*)- बात सुनियो कऽ अनठौनिहार, कनगब्बर, ढीठ

कननी-खिजनी- नेनाक कनैत-खौंझाइत रहबाक स्वभाव

कनबुच/कनबुच्च/कनबुच्चा- सामान्यसँ अत्यन्त छोट कानबला

कनबोज/झ- कानक जड़ि, कनपट्टी

कनसतर/कनस्तर- कण्टर, टीन वा लोहक चदराक बनल घनाकार डिब्बा

कनसो(धरब)-गुप्त रूपसँ कान पाथि कऽ ककरो बात सुनब

कनहा- *अपि* च- 1. कान्ह, स्कन्ध; 2. उत्तरा नक्षत्र

कनही/कनाहि- एक आँखिक आन्हरि स्त्री

कनिआइन- कनिआँ

कनिआँ-मनिआँ- कनिआँ एवं तत्सदृश स्त्रीगण

कनिआरि- धानक एक प्रकार

कनिक- *अपि* च- कने

कनिकटा- अति छोट

कनिके/कनेके- कमे, अत्यल्पे

कनी- *अपि* च- अल्प, थोड़, कनेक, कम

कनीमनी/कनेक-मेनक/कनेमने- अत्यल्प, किंचित्

कनुनियाँ- कानूजातिक स्त्री, कनसारमे अन्न भुजनिहारि

कन्दा- कन्द कोटिक एकटा व्यंजन

कन्ना-रोहटि- एकहि संग अनेक लोकक क्रन्दन

कन्हेटब- कान्ह लगायब, कान्हपर उठायब

कपटी- 1. छली, छल कयनिहार 2. माटिक छोट पेआली

कपड़कोट- कपड़ाक घेराबा, कनात

कपरफोड़ा- कपार फोड़ऽबला, सक्कत, कठोर माँटि

कबाछुनी- कवाछु सन उकट स्वभावबाली, बदमास स्त्री

कबाबचीनी- एक प्रकारक मसाला

कबिलताइ/कबिलती/कबिलपनी- चतुरता, बुधिआरी, (*सामान्यत: व्यंग्यात्मक प्रयोग*)

कबिलाह/कबिलाहा- जे काबिल अछि, चतुर

कबीला- *अपि* च- पत्नी, घरबाली

कमखर्चीं- 1. कम खर्च कयनिहार, मितव्ययी 2. जाहिमे कम खर्च लागय, (*कमखर्ची हो, खुबसुरती हो, मजगूती हो*)

कमखोराकी- अल्पभोजी, कमभोजन कयनिहार, (व्यंग्य) वि. खाधुर

कम-बेस- किछु कम कि किछु बेसी

कमलदह- कमलक फूलबला पोखरि/चओर

कमला- *अपि* च- लक्ष्मी

कमसम- किछु न्यून, किछु अल्प

कमाइल- कमोट, पौनी-पसारीकेँ अन्न रूपमे देय वर्ष भरिक बोनि

कमौआपुत/कमौआपूत- धनोपार्जन कयनिहार समाङ, कमाइ कयनिहार पुत्र

कम्मल- भेड़ीक ऊनसँ बनल ओढ़ना, ऊनक मोटगर ओढ़ना, कम्बल

कऽर- मूज/सरपत/राड़ी आदिक बीड़ जाहिमे फुलकी रहैछ

करकट- *अपि* च- घरक चारक रूपमे प्रयुक्त टीन वा सीमेंटक चदरा

करकटि कऽ धरब- लसिगर पदार्थक सुखाय कसि कऽ तेना सटब जे छोड़ौने नहि छुटय

कर-कटुक- दे. कट्टुक

कर-कुटुम- सम्बन्धी लोकनि

कर-कुशल- दे. कल-कुशल

करछुल्ली- 1. छोट करछु 2. कजरौटी

करता- मृतकक श्राद्ध कयनिहार

करताइ- 1. कर्त्ता, कयनिहार, 2. नुका कऽ कयल गेल अधलाह काज (व्यंग्यमे)

करतापूत-करतौत, पुत्रहीन व्यक्ति द्वारा नियोजित श्राद्ध कयनिहार

करनमूल-कानक जड़िमे भेनिहार गूर/व्रण

करनी- *अपि* च- चालि, स्वभाव

करनी-धरनी- काज-धन्धा, अर्थोपार्जनक छोटो काज

करम- अपि च- श्राद्ध-क्रिया

करपरदाज- कारपरदाज,

करमकीट-हीन स्वभावक लोक

करम कुटब- रुचिक प्रतिकूल हीन कोटिक वृत्तिमे रहब

करमहीन- अभागल

करमाति- करामति, चमत्कार

करमाती पोटरी- चमत्कारक स्रोत

करसमा- डाइन द्वारा कयल गेल रोग (करिश्मा)

करह-बाती- कोँढ़ी-बतिआ

करिअम्मा- गाढ़ हरियर रंगबला आमक एक प्रकार जे पकलो पर ओही रंगक रहैछ

करिऔटी- लसिगर कारी माँटिक प्रकार

करिक्का- कारीरंगबला

करिखा-कारी रंग

करिया कामोद- एक प्रकारक गमकौआ धान

कर्णमूल- द. करनमूल

कर्म- *अपि* च- द. करम

कर्महीन- 1. कर्त्तव्य रहित, 2. अभागल

कर्रा- *अपि* च- वनमे पड़ल गाय, बड़द आ महींसक सुखायल गोबर

कर्रा (पड़ब)- *अपि* च- कन्ना-रोहटि, शोकजन्य चीत्कार

कल-कुशल- निर्विघ्न, निकेँना

कलटी हर- विशेष प्रकारक चाकर फारबला लोहाक हर

कलटेन- ठीक-ठीक, शुद्ध, सही, एनमेन

कलन्दर- दरिद्र, भिखमंगा, कल्लर

कल पड़ब- बड़ देरीसँ हल्लुक निन्न होयब

कलपाना-कलपना, अकारण देल गेल प्रताड़ना-जन्य व्यथा

कलपाना पड़ब- शाप पड़ब

कलबल- *अपि* च- स्थिरतासँ, चंचलता रहित

कलम- अपि च- आमक गाछी

कलमच- स्थिर, अचंचल, संचमंच, बिनु हाथ-पैर डोलौने

कलमत- ओकारक मात्रा (ो)

कलमी- कलम प्रक्रिया/गाछसँ उत्पन्न (आमक गाछ/फल)

कलस- 1. जलपूर्ण घैल 2. आमक नव पल्लव, [*क.को. करहकेँ कलश त्युपति-संकेत संग अर्थ दैछ 'कोंढ़ी, कनोजरि' मुदा कलशक अर्थ- कथनमे नहि*]

कलसगर- *अपि* च- कलसयुक्त, नवपल्लव युक्त गाछ

कलसथापन- आश्विन शुक्ल प्रतिपदाकेँ दुर्गापूजाक जलपूर्ण घटक स्थापन, कलशस्थापन

कलसायब-गाछमे नव नव पल्लव होयब

कलहन्त- अत्यन्त अभावग्रस्त, लल, विकल, [*क.को.-झगड़ा- अर्थ सर्वथा असंगत*]

कलानोन- द. कालानोन

कलायल- रकटल, ललचायल, अतृप्त, कोनो वस्तु विशेषक नितान्त अभावसँ ग्रस्त

कलौआ पोखरि- ओ पोखरि जतऽ तीर्थयात्री आ बनिजार कलौ खाय

कल्लर- *अपि* च- भिखमंगा, मड़नचन कयनिहार

कल्ला-मुँहक भीतर दुनू गलफड़ दिसक भाग, [*क.को.-हनु-दाढ़ीक हाड़-अर्थ असंगत*]

कल्लादराध/कल्लादराधनी- मुँहक जोरगर, अत्यन्त मुखर (पुं.+स्त्री.)

कल्हा- अत्यन्त पीयर, रक्ताल्पता जन्य विवर्णता, (पीयर-कल्हा)

कविकाठी- 1. कवि बनबाक लौल कयनिहार, 2. रचि-रचि कऽ बात बजनिहार

कसती- 1. कठोर नियन्त्रण 2. कड़ा अनुशासन

कसबिन- कसबामे रहनिहारि वेश्या

कसमकस- खूब गस्सल

कसिनिआँ- 1. कसाइक स्त्री 2. निष्ठुर स्त्री

कसुरबार- दोषी, अपराधी

कसौँझी/कसौन्ही- काँच आमसँ बनल अँचारक एक प्रकार, आमकेँ कूचि कऽ बनाओल गेल अँचार

कहकह- अत्यन्त गाढ़ (पीअर रंग)

कहबित- लोकोक्ति, कहबी

कहबैका- नामी लोक, प्रतिष्ठित व्यक्ति

कहुँ-कतहु, किनसाइत, प्राय:

का- नामान्तमे जोड़ल जायबला 'कका/काका'क संक्षिप्त रूप

काँइ-कटकट- सतत कटु बाता-बाती ओ झगड़ा-झाँटी

काँइ-काँइ- दे. काँहि-काँहि

काँच-कुमार- अनुपनीत बालक ओ अविवाहित पुत्र-पुत्री इत्यादि

काँच-कोचिल- 1. अजोह/अपक्व फल 2. असिद्ध/उसिझल रान्हल भोज्य पदार्थ

काचर-पिचर- आकाशमे छिटकल-छिटकल मेघ

काज- *अपि* च- 1. कुर्त्ता-कमीज आदिमे बट्टम पैसयबाक हेतु बनाओल भूर 2. श्राद्धादि कर्म

काँटा- *अपि* च- काँट, कण्टक

काँटा करब-तौलब

काटि-तेलक गादि, [क.को.- *पेनीमे जमल मल- अतिव्याप्ति*]

काँटो-काँट- क्षीण काया, रोग किंवा अन्नाभावसँ भेल दुर्बल (देह)

काना-खिज्जी- कानब-किचकिचायब

कान्ह छीपब- सहयोग करबासँ पाछाँ हटब, अकस्मात् काजक मध्यमे विरत होयब

कान्हू लागब- असमर्थताक बोध होयब, अशक्य लागब

कापुत-कपूत, कुपुत्र

काबू- *अपि* च- बल, तागति

काम- *अपि* च- काज

कामिल- काजयोग्य, उपयोगी, उपयुक्त

कारण/न- *अपि* च- 1. रोग 2. तान्त्रिक प्रयोगसँ उत्पन्न कयल व्याधि वा अन्य शारीरिक उपद्रव

कारणी- रोगी, दे. कारण/कारन

काल- *अपि* च- 1. पैघ बाधक 2. प्राणघातक कारण 3. अनिष्टकर तत्त्व

कालानोन-बीट नोन

काह-कूह- गन्दगी, मैल

काहत- अकाल, दुर्भिक्ष, (*काहत दूर करू भारतसँ, कोटि कोटि जन करथि विनतिया-चन्दाझा*)

काहती- अकाल-पीड़ित

काँहि-काँहि- निरर्थक बाजब, रोगजनित पीड़ासँ कराहब

किकिहारि (काटब)- पीड़ाक कारणे चीत्कार करब, कष्ट भोगब

किचकाहिन- पैरसँ मथायल थाल-कादो

किच्चिन- स्त्री प्रेत

कित्ता- जमीन ओ मकान आदिक एकाइ/अदद

कित्ती- माटिपर वर्गाकार-आयताकार खानाबला आकृति पाड़ि खपटाक गोटीसँ खेलायल जायबला एकटा खेल

किनसाइत/किन्साइत- प्राय:, सम्भवत:, किंस्यात्

किमखाप/किमखाब- कीमती धातुक तारसँ कसीदा कयल वस्त्रक एकटा विशेष प्रकार

किरतिम कऽ- (कृत्रिम), जानि-बूझि कऽ

किरपिन्नी- कृपण, किरपिन

किरिया-करम- श्राद्धकर्म इत्यादि

किलहोरि/किल्होरि- साँढ़ ओ बड़दक कान्हपर उठल मांस-पिण्ड, कन्हेली, [क.को. क *अर्थ चिलहोरि वा किलोल- भ्रामक*]

किशोरी-तरुणी

किशोरीजी-जनकक पुत्री, जानकी, सीता

किसनौत- यादव जातिक एकटा उपवर्ग

की-कहाँ- 1. असत्य/अनुचित/अप्रासंगिक कथन सभ 2. अकाजक, अनावश्यक वस्तुजात

कीचक- महाभारतक एकटा खल पात्र, राजा विराटक सार जे द्रौपदीपर कुदृष्टि देबाक कारणे भीमक द्वारा मारल गेल

कीड़ी- छोट कीड़ा, कीट

कीत-कीत- बालवर्गक कबड्डी सदृश एकटा खेल, बुढ़िया कबड्डी

कीनब- क्रय करब

कीन-बेसाह-कीनब ओ तत्सदृश कार्य

कुकड़ाहा- अगिलग्गीमे उड़निहार आगिक लुक्का

कुकरम-कुकर्म, अपकर्म, निन्दनीय काज

कुकरमी- कुकर्म कयनिहार

कुकरौँढ़- घास कोटिक एकटा गन्धयुक्त वनस्पति जकर पातक रसक प्रयोग कटि-कुटि गेलापर शोणित-स्रावकेँ बन्द करबा लेल कयल जाइछ

कुचरब- *अपि* च- विशिष्ट लाभपर खुशीसँ बाजब

कुचकुचायब- *अपि* च- उक्खरिमे अन्नकेँ हल्लुक चोट दऽ कऽ छाँटब

कुन्जर- अर्द्धसिद्ध (व्यंजनादि)

कुन्जा- माटिक छोट पात्र

कुटकुट काटब- अनुपयोगी लागब (नकारात्मक प्रयोग)

कुटकुटा कऽ लागब/कुटकुटायब- आँखि ओ श्वासनलीमे धुआँ वा कटु गन्धक कड़ुऐनीक अनुभव होयब

कुटनपन- व्यभिचारमे सहायता करबाक आचरण

कुटनी- *अपि* च- जाँत/सिलौट आदिपर छेनीसँ कूटि कऽ बनाओल गेल खरखर सतह

कुटमारय- कुटुम्ब/कुटुमक सम्बन्ध

कुटमैता- कुटुम्बक गाम/वासस्थान

कुटमैती- दे. कुटमारय

कुटान-पिसान-कुटबाक ओ पिसिआक व्यवसाय, (*माय करय कुटान-पिसान बेटाक नाम दुर्गादत्त*)

कुटिचालि/कुटीचालि-कूट आचरण करबाक स्वभाव, फरेब

कुटिचाली/कुटीचाली- कूट आचरण कयनिहार, फरेबी

कुटिया- *अपि* च- खढ़-पातक खोपड़ी, साधु-सन्तक स्थल

कुदुर-कुदुर/कुदुर-मुदुर- सक्कत खाद्यवस्तु (काँट सहित माछ/मांसक सहरी) रुचि सहित दाँतसँ काटि-कुटि कऽ खयबाक ध्वनि

कुड़बार- *अपि* च- सोझ कानबला चैल जकर प्रयोग भार-दोरमे चूड़ा-चाउर-मखान भरि कऽ पठायबमे होइछ; छठिक अर्घ्यमे दीपाधारक रूपमे प्रयुक्त होइछ

कुतकुत-कुकुरक बच्चाकेँ सोर करबाक शब्द

कुतरब- मूसद्वारा दाँतसँ काटि खुण्डी-खुण्डी करब

कुतरुम- *अपि* च- सन वा पटुआक गाछ

कुत्था/कुथौनी- कुथनी, मल त्याग कालमे अधिक बल लगनाइ

कुदकान-कुदान, कुदकनाइ

कुदीन-अधलाह समय, शुभलग्न विरहित समय

कुन्ती- 1. खोभी 2. पाण्डुक पत्नी

कुन्ह-द्वेष, प्रतिशोध

कुन्हरब- मोने-मोन क्रुद्ध होइत रहब, हिन्दी-कुढ़ना

कुबड़ी- कुबड़ाक स्त्रीलिंग

कुबिआयब- कुब्बी/केहुनीसँ धक्का देब/ठेलब/मारब

कुबेर- *अपि* च- धनक देवता, रावणक वैमात्रेय भाइ

कुब्बड़- टेढ़ रीढ़, पीठपर ऊठल रीढ़ वा मांसपिण्ड

कुब्बति- बल, शक्ति, सामर्थ्य, (कूबत)

कुब्बी- *अपि* च- केहुनी, मोड़ल हाथ ओ बाँहिक कोणाग्र भाग

कुमकुम- *अपि* च- बरिसातमे पीसल एवं दड़रल अन्नमे आबि जायबला एकटा विशेष गन्ध

कुमकुमाइन- कुमकुम गन्धसँ युक्त पीसल-दड़रल अन्न

कुमकुमायब-बरिसातमे पीसल-दड़रल अन्नमे कुमकुम गन्ध होयबाक क्रिया

कुमरठिल्ला/ल्ली-बेसी वयस भेलहुपर अविवाहित (*निन्दामे*)

कुमरायब- गाभिन गाय-महिसिक बिअयबासँ पहिने योनिक फलकब

कुमरि- राजपुत्री

कुमार- *अपि* च- अनुपनीत/ अविवाहित बालक

कुमार-बार- अनुपनीत/अविवाहित बालक

कुमारि- अपि च- अविवाहित कन्या

कुमारि-बारि- अविवाहिता बालिका

कुम्मरि- राजपुत्री

कुम्मल- कोमल

कुम्हड़ा- कदीमा

कुम्ही- पानिक सतहपर जनमि कऽ पसरल एक प्रकारक जलीय घास

कुरकुट- *अपि* च- पुरान खढ़क बुकनी

कुरसी- *अपि* च- देबालक चौड़गर आधार, नेँओ(plinth)

कुरसीनामा- वंशावली, वंशवृक्ष

कुरुस (*अं.*)- क्रोशिया, तागक जाली वा जालीदार पट बीनऽबला सुइ / काँटा

कुर्रा- मुहमे पानि लऽकऽ खँघारि कऽ फेकब, कुड्डुर

कुलकुलायब- पेटमे तीव्र भूखक संवेदना होयब

कुलखूट- समस्त कुल/वंश

कुलहरि- कुड़हरि

कुलारू-दुलारक आधिक्यसँ बिगड़ल/बहसल (नेना)

कुल्लम- सकल, सब मिला कऽ

कुल्हिआ- माँटिक चुकड़ी

कुशक कलेप-कुशक काप, लघुतम नछोड़

कुसंयोग- अधलाह संयोग

कुसिझल-कम सीझल, कुज्जर

कुहकुह- किंचित् औंटल

कुहकुहायब- पानि/दूध आदि तरल पदार्थकेँ किंचित् गरम करब

कुहब- भितरिआ कष्ट देब, अप्रकट रूपमे सतायब, तेहन भितरिया मारि मारब जे आहत व्यक्ति कानियो नहि सकय

कुहरायब- कुहरबाक लेल विवश करब, अप्रत्यक्ष रूपमे पीड़ित करब

कुहरैनी- कुहरबाक स्थिति

कूँड़ा- *अपि* च- द. कुड़बार

कूबा- बल, सामर्थ्य

कूहब- द. कुहब

कूही- अव्यक्त व्यथा, निःशब्द कष्ट, आन्तरिक शोक, [*क.को. -चीत्कार वा क्रन्दन-अर्थ असंगत*]

कृष्णपक्ष- पूर्णिमाक अन्तसँ अमावास्याक अन्तधरिक अवधि, अन्हरिया

के-कहाँ- अपरिचित/अनठीया लोकसभ

केँकेँ (करब)- अत्यधिक पीड़ासँ विवश चीत्कार (करब)

केँचुआयब- सापक त्वचा-त्यागक अवस्था होयब

केटली/केतली (*अं.*)- चाह बनयबाक टोटी लागल पात्र

केत्था- सुजनी

केथड़ी/री- केथराक लघु रूप

केन्नऽ/केन्नी- कोमहर

केप्फा- रोआबक गप्प, (*फारसी-कैफा*)

केर- सम्बन्धकारकक विभक्ति, षष्ठी विभक्ति, -क

केरबनी- केराक बगान, करजान

केरबा/केरबी- केरा सन नाम आकारबला, आमक एक प्रकार

केलाइ- उड़ीद सन एक दलिहन

केहुनाती- कोनहुना, कोनहु रीतिएँ

केहुनियाँ (देब)- केहुनीपर भार दऽकऽ बैसब/पट भऽ पड़ब

केहुनियाँ खाजा- बान्हल मुट्ठीसँ केहुनी धरिक नमतीबला खाजा, पैघ आकारक खाजा

कैयना/नि- कतेको, अनेक

कोआ- कटहर/ताड़ आदि फलक गुद्दाबला भाग

कोआथ- 1. अन्तर्व्यथा, अव्यक्त वेदना 2. द्वेष, आन्तरिक डाह

कोइलपत- चोट लगलासँ रोगायल (आम)

कोजगरा- आसिन मासक पूर्णिमा, कोजागरा

कोठि- अत्यन्त फूलल-सूजल (शरीर)

कोठी- *अपि* च- बाँसक बीट (*चारि कोठी बाँस*)

कोढ़ि- *अपि* च- कुष्ठ रोग (*कोढ़ि फूटब*)

कोढ़िया- *अपि* च- एकटा गारि

कोढ़िआठ- आलसी

कोँढ़िआयब- गाछमे फूलक कली होयब

कोढ़िभच्छ- कोनो आलसी/अकर्मण्यकेँ तिरस्कार पूर्वक देलजायबला भक्ष्य/भोजन

कोढ़िल- सड़ि कऽ निस्सार भेल अन्न, कोढ़िला सदृश

कोतर- अपि च- विकलाङ्ग

कोँती- एकेटा पातर नोकवला बरछी

कोथ- *अपि* च- 1. पेट, 2. उक्खरिक पेटक बीचमे बनल छोट खोधली

कोथगर- बेसी अँटऽबला

कोदरिपाड़ा (जन)- कोदारि तमबाक वृत्ति कयनिहार (जन)

कोन-सान्हि- घरक कोन ओ कोठी इत्यादिक संकीर्ण दोग

कोना- *अपि* च- कोण, कोन (*झिझिर कोना झिझिर कोना कोन कोना जाउ*)

कोना-कोनी- एक कोनसँ ओकर सामनेक दोसर कोन धरि, कोनसी

कोनियाँ- *अपि* च- चौघारा हवेलीमे कोन बला घर/जगह

कोनी- *अपि* च- नमरल कोन, नोक

कोन्नऽ/कोन्नी- कोमहर, कोन दिशामे

कोपड़ी- 1. घावक खैंठीक भीतर चोखायल अंश, 2. अप्रस्फुटित आँकुर वा कनोजरि

कोपला- देबालक नीचाँसँ ऊपर धरि छूटल कम चाकर अंश

कोपिन- भगबा, बिष्ठी

कोबियौड़ी- कोबीक पकौड़ी

कोरज्जा- जाति विशेषमे बरियातीकेँ चूड़ा-दही आ पूरी-तरकारी एक संग मिला कऽ खोअयबाक परिपाटी

कोरबाही- बच्चाकेँ सदिखन कोरामे रखने रहब/ कोरबाहिक हेतु बोनि

कोरसिस- प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश

कोराइ- दड़रल दालिक खोँइचा आ दलिहनक गरदीक मिश्रण

कोरी- अपि च- बीस संख्याक समूह (गुड्डी ओ धोबीक कपड़ाक गनतीमे प्रयुक्त

कोरैला/कोरैली- अपि च- सन्तानमे सबसँ छोट (बेटा/बेटी)

कोशिश- प्रयत्न, चेष्टा

कोसा- *अपि* च- आँखिक निचला पऽलक कोर

कोसायब- आमक आँठीक जुआयब

कोसिस- दे. कोरसिस

कौँआँ- बाड़ी-झाड़ीमे जनमनिहार एक गोट वनस्पति जकर पातक तरुआ होइछ

कौआ- *अपि* च- कौआक लोल सन मुह आ गैंची माछसन देह बला एकटा माछ

कौआ डारि- सौंसे गाछमे गोटेक डारिमे भेल फल

कौआ नहान- कौआ जकाँ अल्प पानिमे गोटेक डूब दऽ नहायब

कौखन- कखनहुँ, कखनो

कौचर्ज- कुचेष्टा, निन्दा, उपहास

कौड़/र- कपर्दक, सिक्काक अर्थमे कौड़ीक प्राचीन रूप (*जोंग लियऽ कौड़ दियऽ*)

कौड़िआ- *अपि* च- 1. गिलटी 2. बड़दक बाइत्याग

कौमिक (*अं.*)- प्रहसन

कौलति- आर्त्त याचना, कोनो वस्तु बेर-बेर दीनतापूर्वक माङब

कौल्हा- चूल्हा

क्षयाह- दे. छाया

क्षयिष्णु- निरन्तर क्षीण होइत गेनिहार

क्षोद-क्षेम- छिन्द्रान्वेषण, दोष-आविष्कार, टीका-टिप्पणी

[ख]

खकहा- नाम नहि लेबा योग्य अघलाह रोग, एकटा शिशु-रोग, खल्ला

खखनब- दीन भावसँ माङब, सतत अभाव ग्रस्त रहब

खखनर- दरिद्र, अभावग्रस्त, सतत याचना कयनिहार, लालायित

खखना/नी/नू- बड़ खखनि कऽ भेल सन्तानक अभिधान

खखोरन- खखोरि कऽ जमा कयल अपशिष्ट

खखोरन-बटोरन- खखोरि-बटोरि कऽ जमा कयल गेल अवशिष्ट

खगित- 1. अभाव 2. अभावग्रस्त

खँघटल- अभाव ग्रस्त

खङ्गट- लङ्गट, लण्ठ

खङदल- दे. खँघटल

खच दऽ/सँ- चोख धारसँ एकहि तेज छओमे काटि देबाक ध्वनि

खचरपाल/खचरेट- महादुष्ट, बदमास, लण्ठ, लङ्गट

खँजनचिड़ैया/खँजनी- खञ्जनपक्षी

खजूर-*अपि च*- एक प्रकारक पकमान, टिकड़ी

खञ्झ-खौहड़- अकार्यक लोकक समूह

खटका- *अपि* च- अशौच, अशौचजन्य बाधा

खटखट- अपि च- 1. जल्दी जल्दी, 2. कारी रंगक अतिशयता (कारी खटखट)

खटतुरुस- अल्प खट्टा, किञ्चित अम्मत (फल)

खटनगरि- कठिन श्रम कयनिहारि स्त्री

खटबास, खटबास-पटबास- कोप/शोकसँ खाट/पटियापर निश्चेष्ट पड़ल रहनाइ

खटहट- पहिरबामे ओछ परिधान, नियत आकारसँ छोट वस्तु (*खटहट खटिया बतकट बोहु*)

खटाक-खटाक- जल्दी-जल्दी, खटाखट

खटाल- अपि च- दूध-व्यवसायीक गाय-महीँसक बथान

खटारा- पुरान, जर्जर (गाड़ी)

खट्टिक/खटिक- फलक व्यवसाय कयनिहार एक जाति

खँड़गटल/खँड़गट्टल/खड़ड्टल- 1. क्षुद्रस्वभावक, छुद्धर 2. लल, लालायित, खगल, कलहन्त, अभावग्रस्त

खड़चाल- बालु इत्यादि चालबाक लेल लोहाक तारक जालीसँ बनल बड़का चालनि/चलना

खड़ञ्जा- ईंटकेँ करओट (खड़ा) कऽ पाटल (*सड़क, सहन आदि*), *वि.*-दे. पटञ्जा

खड़बड़- महामारीक प्रसारक लक्षण

खड़बड़ायब- *अपि* च- महामारीक पसरब

खड़होरि- खढ़-डाभी मात्र उपजऽबला क्षेत्र

खड़ाखड़ी- तुरन्त, अविलम्ब, चटपट, ठाढ़े-ठाढ़

खड़ुहान-अवाञ्छित धियापुताक हेँज, (*मुँह बओने सगरक खड़ुहान-कण्टक*)

खढ़ही- मोटगर डाँट ओ बेसी लम्बाइबला विशेष प्रभेदक खढ़, खड़ही

खढ़होरि- दे. खड़होरि

खढ़ुहान- दे. खड़ुहान

खढ़ू- अवाञ्छित सन्तान सब

खढ़ू-टीड़ी- दे. खड़ुहान

खढ़ोरि- दे. खड़होरि

खण्डा- 1. काता 2. काठक पट्टीपर ठोकल ऊपरसँ नीचाँ दबा कऽ घासक कुट्टी काटऽ बला गड़ाँस 3. काठक आधारबला सरोता

खत- *अपि* च- खति कऽ बनाओल सङ्केत-चिह्न

खतमी लाट- अन्तिम खेप, समाप्त

खतरी- एक जाति विशेष

खतियानी- खतियानमे उल्लेखक आधारपर अधिकारमे स्थित जमीन, मरौसी जमीन

खदकायब- बरकायब, अल्पमात्रामे रान्हब

खदनचिड़ैया- खञ्जन, खँजनचिड़ैया

खधिया- खाधि, खत्ता, निचाँस भूमि

खधोरब- मूस चिड़ै-चुनमुन्नी द्वारा फल आदिकेँ खोधब

खधोरि- खधोरलासँ बनल खाधि, खधोरल फल आदि

खनदान-वंश, कुल

खनदानी- 1. वंशानुगत, कौलिक 2. कुलीन, उच्चवंशीय

खनब- खुनब, कोड़ब

खनसामा- भनसीया, रसोइया

खन्दान- दे. खनदान

खन्दानी- दे. खनदानी

खपड़भुज्जा-खापड़िमे भूजल (*तेल आदिमे छानल/सिझाओल/तरल नहि*)

खपड़सुक्खू- पकयबा काल बिनु फुलले शुष्क भऽ गेल रोटी

खप दऽ- तीव्र गतिक एकहि आघातमे काटि देबाक ध्वनि, छोपबाक ध्वनि

खपब- *अपि च*- 1. सानल माटिकेँ अधिक मोलायम बनयबा लेल कमचीसँ कतरब, कुम्हारक एक क्रिया 2. उपरे उपर कनेक कनेक छिलब, गदिआयब 3. बिकायब

खपाखप- तीव्र गतिएँ अनवरत छोपबाक ध्वनि, खपखप

खपिआयब- दे. खपब-1-2

खबसा- खबासक निरादर रूप

खबसिनियाँ- खबासिनीक निरादर रूप

खबीस- 1. झनकटपन, 2. झनकटाह

खबौनी-नेना-भुटकाकेँ अल्प भोजन रूपमे देल जायबला पनपियाइ, रिन्हुका, (*पिपरक पातपर खबौनी देबौ रे...*)

खम्हा- खाम्ह, खम्भा

खँरगाह- तुनुकाह

खरजितिया- शनि वा मङ्गल दिन पड़ल जितिया व्रत (*पहिले-पहिल जितिया व्रत टेकनिहारि खरजितियेसँ व्रत टेकैत अछि*)

खरपा-रबरक फीता लागल खड़ाम, बधहा, बधा

खरबका- जे खराब भऽ गेल हो से

खरभुजबा-खारभुजा सन आकृतिबला (*आम/लोटा*)

खरभुजिया- नगण्य, महत्त्वहीन, अत्यन्त साधारण, खरभुसिया

खरमण्डल- दुर्घटनाकारक दुर्योग

खरमास- *अपि* च- शुभ कर्म ओ यज्ञादि अनुष्ठानक हेतु वर्जित मास-मुख्यत: भादव, पूस, चैत [क.को.- *'2.(षण्मास) साओनसँ पूस धरि छओ मास जाहि बीच भगवान सूतलरहैत छथि'- अप्रमाणिक । भगवान तँ देवोत्थाने दिन जागि जाइत छथि ।*]

खरल- पाथर / लोहक कुण्डी जाहिमे आयुर्वेदिक दबाइ/मसाला इत्यादि कूटि/चूरि कऽ बुकनी बनाओल जाइछ, खल

खरहा- छोट आकारक एक वन्य पशु, शशक, खढ़िया

खराज- *अपि* च- राजस्वक दृष्टिसँ विशेष कोटिक करमुक्त कृषि भूमि

खराद- काठ/लोहकेँ नचा कऽ छिलऽबला औजार, खराज

खरादब- खरादऽबला औजारपर नचा कऽ काठ/लोहकेँ प्रयोजनानुसार छिलब, खरादपर चढ़ायब, खराजब

खरायब- अत्यन्त सुखा कऽ आर्द्रताहीन/कड़ा भऽ जायब (खढ़-पात इत्यादि अथवा नाक खरायब)

खरियारब- स्पष्ट करब, स्पष्ट कहब, फड़िछा कऽ कहब

खरिहन्ना/खरिहाना- खेतक उपजा काटि कऽ जमा करबाक स्थान, खरिहान

खरुहन- पुन: उपाड़ि कऽ रोपबाक लेल पूर्वहि रोपल धानक बीया, खारु

खरुहान- दे. खड़ुहान, खढ़ुहान, खढ़ू [क.को. *खारु'क पर्याय- भ्रान्ति मूलक । 'खरुहन' 'खरुहान' श्रुति-सम होइतहुँभिन्नार्थक*]

खर्च- खयन-भोजनादिक निमित व्यय

खर्रा- 1. एकटा चर्म रोग 2. स्वउपयोग हेतु लिखल गेल हस्तलेख 3. ठाँहि-पठाँहि कहनिहार, उचित वक्ता 4. करची/राहठ आदिसँ बनाओल बाढ़नि

खल- *अपि* च-समपरिमाण / समकोटिक कूड़ी

खलओदार- सटकाक चोट/गँहीर चाँछसँ ओदरल खाल/चर्म

खलपट- भूखसँ सटकल पेट [*क.को. खल्वाट- जकर चानि परक केश उड़ल हो- भ्रामक अर्थ*]

खलिया- रिक्त, खाली (*खलिया बन्दुक भड़ाभड़ी*)

खलियाहा- जे खाली हो से

खलेरा/री- खाला (मौसी)क बेटा-बेटी, मसियौत भाइ/बहीन (मुसलमानमे)

खलोदार- दे. खलओदार

खसता- *अपि च*- घी आदिक मेन दऽ कऽ खूब मर्दन कऽ कऽ कोमल बनाओल (पकमान)

खसतायब- दुक्खित पड़ब, बिमार पड़ब

खसा-पड़ा कऽ- विवशतामे कम मूल्यपर (क्रय-विक्रय)

खहखह- अत्यन्त धाह ओ लालिमासँ युक्त (आगि)

खहेटब- खेहारब

खाँइ-खाँइ (करब)- सतत खाइत रहबाक चेष्टा (करब)

खाउ- बहुत खयनिहार, खाधुर; कर्ज पचौनिहार, घुसखोर

खाँउ-खाँउ (करब)- तमसा-तमसा कऽ बजनाइ

खाक-छाउर- शिशु/अवयस्क मृतकक मृत्युक चारिम दिन धरि सम्पादनीय क्रिया-कर्म, तेराति (भूमि निक्षेप/दाहादि)

खाँखी (ढुकब)- अधिक काल खाइत रहबाक रोग (*ममरखा रोगक एक लक्षण*)

खाँट- उचितसँ छोट, ओछ, छुछुन

खाँटी- शुद्ध, अमिश्रित, सुच्चा, फेँट-फाँटसँ रहित [*क.को. खरौटा/शुद्ध/सुच्चाक पर्याय 'खाँटी'कहैछ किन्तु मूल प्रविष्टिमे अभाव*]

खाँड़- *अपि* च- शक्कर, गूड़

खाँत/खाँति- एकसँ बीस धरिक संख्याक क्रमशः एकसँ दस तथा एगारहसँ बीस धरि परस्पर गुनाक गुणन-फलक सारिणी । पारम्परिक शिक्षा- प्रणालीमे प्राथमिक वर्गक छात्रकेँ सवा (1¼), डेढ़ (1½) आदि सहित साधारणतः एकसँ बीस धरिक संख्याकेँ क्रमशः एकसँ दस पर्यन्त तथा एगारहसँ बीस धरिक संख्याकेँ क्रमशः एगारहसँ बीस पर्यन्त गुणन-क्रियाक गुणन-फलक सारिणी लिखबाक ओ कण्ठस्थ करबाक, अभ्यास करयबाक परिपाटी रहल अछि । एहि गुणन फलक सारिणीकेँ खाँत/खाँति कहल जाइछ । [*क.को. एहि गुणन सारिणीकेँ 'खात' आ 'खाँत'केँ 'खाँझ' कहैछ । ई दुनू अशुद्ध*]

खान- *अपि* च- धरतीक भीतर उपयोगी खनिज पदार्थक प्राकृतिक सञ्चय

खाला- 1. खल्ला (एकटा शिशु रोग), 2. मौसी (मुसलमानमे)

खिक्खिर/खिखिर- नढ़िया सदृश किन्तु ओहिसँ छोट आकारक वन्य जन्तु (*छोट खिक्खिरक मोट नाङड़ि*)

खिखिरक मानि पूजब- उपनयनमे रातिम दिनक रातिमे खिखिरक मानि लग खीर-पूरी चढ़यबाक विधि

खिचकाहिन- दे. किचकाहिन

खिचड़िया बियान- बेटा आ बेटीक क्रमशः पार लगा कऽ जन्म देब

खिजनी- नेनाक तमसाइत कननाइ, (*कननी-खिजनी पाछू जाय, हँसनी-खेलनी आगू आबय*]

खिजब- *अपि* च- 1. रोष/विलाप सहित कानब 2. हल्लुक छाँट दऽ कऽ चाउरक लालीकेँ साफ करब 3. जनौक तागकेँ सोँटि कऽ चिक्कन करब

खिजमति- सेवा, टहल-टिकोरा

खिज्जा- अजोह, बिन जुआयल (फल-तरकारी आदि)

खिदमति- खिजमति, सेवा, (*खिदमत*)

खिनखिन- रोगाह, रोगसँ दुब्बर

खिनहरि- डाभी/साबेसँ बनाओल चटाइ

खियौटी- खियायल वस्तु, अत्यन्त घसयलाक बाद अवशिष्ट रूप/अंश

खिरखुऔनी- विवाहक बाद चतुर्थी धरि वर-कनियाँकेँ खीर खुअयबाक विधि, महुअक

खिरब- पसरब, विस्तृत होयब

खिरायब- पसारब, विस्तृत करब

खिरिया-पुरिया- एक प्रकारक गाछ

खिल-परती भूमि

खिसनी-खिस्सा कहनिहारि (*खिस्सा कहय खिसनी, सुन भाइ मकड़ा*)

खिसरब- कपड़ाक तानी-भरनीक सूत सब ससरि गेलासँ जाल जकाँ फाँक सब बनब

खिसियायब- *अपि* च- विनोदार्थ ककरो कचकचायलेल उत्तेजित करब

खिसियौनी (जोड़ब)- व्यक्ति विशेषकेँ खौँझयवा लेल बेर-बेर कहल जायबला शब्द/वाक्य

खिसोरब- उघारि कऽ देखायब, कृत्रिम हँसी सङ्ग दीनता प्रदर्शन करब, दीन भावेँ याचना करब, दाँत निपोड़ब

खीजब- दे. खिजब

खीप- डगमग करैत वस्तुकेँ गऽर बैसयवा लेल फाँकमे देल जायबला काठ/ईंटक पातर टुकड़ी/खपटा

खील- *अपि* च- बाछाक दुद्धा दाँत

खुआयब- भोजन करायब, अन्यक मुँहमे कओर देब

खुखना- खूब मोटायल, बौकार

खुचखुच गड़ब-गड़ल खैँक बिसबिसायब

खुचखुची- कने-कने कऽ बेर-बेरक दस्त

खुज्झा- माल-जालक खुरक एकटा रोग

खुटखुट करब- मनमे सन्देह/उद्विग्नता होइत रहब

खुटखुटी- सन्देह, उद्विग्नता, अन्देसा

खुटजना- भोजमे एक खुटसँ एक व्यक्ति मात्रकेँ निमन्त्रण

खुटमुटार- लम्बाइ छोट मुदा मोट देह/आकारबला

खुट्टा-उपाड़- 1. उपटल बथान, माल-जालसँ रहित बथान, 2. निर्वंश, निर्मूल

खुट्टाठोक- स्थिर, अड़ल, अडिग, अविचल

खुट्टाफाँस- खुट्टामे डोरीक एक प्रकारक बन्धन

खुड़हा- वंश, कुल, खूट

खुण्डी- छोट-छोट टुकड़ी

खुदगास- निर्बाध, बेरोक-टोक

खुदिया/खुदिया-चमकी- स्त्री-प्रसाधनमे केशक पाटी ओ मुखमण्डलपर लगाओल जायबला चमकदार बुकनी आ पत्ती

खुदिआयब- *अपि* च- दूधमे खुद्दी सन-सन आकृति बनब जे दूध विकृत होयबाक/फटबाक लक्षण होइछ, दूधक मसकब

खुदुर-बुदुर- *अपि* च- बुनका सन-सन असंख्य खाधिबला सतह

खुभिया-बेँट लागल टाकु/सूआ जाहिसँ मकैक सीससँ दाना छोड़ाओल जाइछ

खुमारी- निसाँक दीर्घकालिक प्रभाव/भकुआयल मन:स्थिति

खुरखुन/खुरखुन्न (कऽ ताकब)- उद्दिष्ट स्थलपर सकल वस्तुकेँ उधेसि-पुधेसि कऽ (अन्वेषण करब)

खुरखुर करब- अनावश्यक किछु-किछु करब

खुरखुरायब- *अपि च*- सिराउर छिटका कऽ उपरे-उपर हर जोतब

खुरजी- *अपि च*- तकथाक छोट-छोट खण्डकेँ एक दोसराक गऽहमे जोड़ि बनाओल जायबला केबाड़मे क्षैतिज रूपमे लागऽबला काठक खण्ड

खुरपैरिया- माल-जालक नित्य चलने ओकर खुरसँ बनल सङ्कीर्ण बाट, एकपैरिया

खुरफात- उत्पात, उपद्रव, उकठ

खुरफाती- उकट्ठी, उत्पाती, उपद्रवी, खुरलुच्ची

खुरबट्टी- दे. खुरपैरिया

खुर्री-खुर्री- माल-जालक खुरसँ धाङल गेलासँ तहस-नहस भेल

खुलस- स्पष्ट (कथन)

खुलासा- *अपि च*-1. कब्जक बिना मल-विसर्जन 2. स्पष्टीकरण

खुल्ला- 1. निर्वस्त्र, नग्न 2. निर्बन्ध, मुक्त, अनुशासन रहित

खुल्लाराज- स्वेच्छया अनुचित उपभोगक सुविधा, बेरोक-टोक लाभ उठयबाक अवसर

खुष्टमखेयाल- व्यक्ति विशेषकेँ सतत बाधा / उत्पीड़न देबाक मनोवृत्ति [क.को.- *विनोदार्थ कृत्रिम उत्पीड़न-असंगत अर्थ*]

खुसनामा- *अपि च*- हर्षप्रद घटनाक उछाही इनाम-बकसीस

खुसफैल- बिनु असौकर्यें निर्वाह योग्य, पर्याप्त (परिमाण / जगह)

खुसरजाइ- स्वेच्छासँ,

खुसीनामा- दे. खुसनामा

खुसुर-फुसुर-अस्पष्ट स्वरमे एकान्ती (करब)

खुहरी-काठकेँ कुड़हरि/टेङारीसँ कटला/ फाड़लापर छिटकल छोट-छोट दुकड़ी

खूट- *अपि च*- 1. काटल गाछक ओधि 2. कुलक शाखा/अङ्ग (कुल-खूट) 3. कपड़ाक कोन

खूबी-विशेषता, गुण

खूर- पशुक टाङक निचला कड़ा अङ्ग, खुर

खूरी- छोट पशुक खूर (बकरी, छागर आदिक), खूरक चेन्ह

खेँघटब/खेँघारब- खेहारब

खेड़ि-खेल, क्रीड़ा

खेतारी-निजी/वैयक्तिक (सम्पत्ति), स्व-अर्जित सम्पत्ति, जाहि सम्पत्तिमे आनक हिस्सा नहि होइक

खेधा- जजाति इत्यादिकेँ क्षति कयनिहार पशु/ लोककेँ धपा कऽ पकड़बाक/बैलयबाक काज

खेप-खेपा (करब)- भाँति-भाँतिक बहाना बना कऽ टारैत रहनाइ

खेपी- *अपि च*- खेप, बेर, आवृत्ति

खेरही-मूङ

खेलड़पन/खेलबड़पन- प्रपञ्च, धूर्त्तता, ठकपनी (*सब खेल खेलयलहुँ खेलबड़पन नहि खेलयलहुँ*)

खेलड़ी- धूर्त्त, प्रपञ्ची स्त्री (*खेलड़ीक खेल किछु कहलो ने जाय, अदहन चढ़ा खेलड़ी पानि आनऽ जाय*)

खेलाड़- *अपि च*- धूर्त्त, प्रपञ्ची,

खेलाड़ि- दे. खेलड़ी

खेसरा- *अपि च*- एकटा छोट माछ

खेहटब- खेहारब, खहेटब

खैमस्ती- अनायास भोजनादिक पर्याप्त सुविधा भेटि गेलाक कारणे उत्पन्न उद्धतपन

खैँरी- फलक खोँइचापर पड़ल कारी दाग

खोआ-मलिद्दा/खोआ-मलीदा- गाढ़ औँटल दूध ओ छाल्ही, दूधसँ निर्मित नीक-निकुत खाद्य पदार्थ

खोँइछ/खोँछि भरब- महिला द्वारा भगवतीक विशेष रीतिक पूजन

खोखबा- मोटायल (लोक)

खोँघ- गाछ/काठक सिलमे बाहर दिस बहकल नोक/चोँच

खोँघी- मलाहक माछ रखबाक लेल भौकी सन आकारबला बाँसक नमहर पथिया

खोँघैला- खोँघी

खोङ्‌ह- दे. खोँघ

खोङ्‌ही- दे. खोँघी

खोङ्‌हैला- दे. खोँघैला

खोँचार- 1. खोँचारनाइ 2. अप्रिय उत्प्रेरण

खोँची (काढ़ब)- *अपि* च- वस्तु-विनिमयक एक पद्धति, बेच (अन्न)सँ कोनो खाद्य-सामग्री क्रय करबामे विक्रेता द्वारा बेचसँ किछु कम मात्रामे क्रेय वस्तु देबाक हेतु बेचमेसँ अनुपातत: निकालल गेल किछु अंश

खोटिला/खोँटिला- नाकक एक गहना

खोड़-चाड़ (करब)-बीतल घटनाक नवसँ चर्चा करब, स्मरण करायब, कोनो काज आरम्भ करबासँ पूर्वक स्थिति

खोड़ि- पाँतर दऽ कऽ जाइत पथमे ओ स्थान जतऽ पथकेँ टुटल रहबाक कारणे पानि लागि जाइत होइक, कटारि, खोड़ा

खोधर-*अपि* च- 1. चेचकक गहीँर चेन्ह (विशेषत: मुहपर) 2. गाछ/काठमे बनि गेल गहीँर खाधि, घोधरि

खोधराहा/ही- चेहरापर चेचक/गोटीक चेन्हबला पुरुष/स्त्री

खोधली-कोठी/भीतमे बनाओल छोट ताखा, छोट खाधि

खोन-*अपि* च-नदीक मोनिबला स्थान

खोन्ही-घरक सङ्कीर्ण कोन

खोपड़ी- *अपि* च- छोट चारबला टटघर

खोभाटनि-बारंबारक उलहन, बेर-बेर रुक्षतापूर्ण उत्प्रेरणा

खोमाहि- खोम माननिहारि स्त्री

खोम्ह- वस्तुविशेष/घटना विशेषसँ अनिष्ट होयबाक धारणा, खोम

खोम्हाह/हि- खोम्ह माननिहार/रि

खोर- *अपि* च- पैघ तौला (विशेषत: दही पौरबाक)

खोँरा- एक प्रकारक धान

खोरि- दे. खोड़ि

खोह-*अपि* च- गुफा, सोन्हि

खौआ-पकौआ-अत्यन्त दरिद्र, (*पेटबे कि लोटबेक वृत्तिबला*)

खौआ-पचौआ-ऋण-पैँच लऽ कऽ पचा लेनिहार

खौआ-बझौआ- घुमन्तू जाति, असभ्य, खुआ-पिया कऽ वशमे राखल जायबला

खौँझ/खौँझी- भितरिया तामस, खौँझयनाइ

खौड़बाढ़नि- महत्त्वपूर्ण वस्तुक उपेक्षा/दुरुपयोग कऽ दूरि कयनिहार

खौड़ाहीटोल/खौड़ाही पट्टी- झगड़ाहु स्वभावबला लोकक टोल, संस्कारहीन व्यक्ति सभक गच्छ

खौरछाइन/खौरछाह- अनपेक्षित नोनगर स्वाद, अप्रिय (बोली), कटु(वाणी)

खौलायब-द्रवकेँ तेज आँचपर खूब खलबला कऽ औँटब

खौहड़- फालतू, फरुहात, बेकार, दे. खञ्ज-खौहड़

[ग]

गओँत- मालजालक मूत्र, गोँत

गओनौती- गओना (द्विरागमन) विषयक, गओनासँ सम्बद्ध

गगरी-*अपि* च- एकटा माछ

गङतिरिया- गङ्गा तटवर्त्ती क्षेत्रक वासी

गङबा-सोहैती- कोनो दायित्वकेँ एक दोसरापर फेकब/टारब; खुसामदी गप्प

गङाजल- गङ्गाक जल, गङ्गाजल

गङाजली- गङ्गाजल रखबाक पात्र विशेष

गङिया- गङ्गा

गङौट- गङ्गाक माँटि/पाँक

गङ्गाडूब- गङ्गास्नान

गचब- कम स्थानमे अधिकक बलपूर्वक समावेश, सटा-सटा कऽ कसि कऽ खोँसब (*बसमे यात्री गचल छल*)

गच्छ- *अपि* च- 1. पक्ष 2. केसकट्टी देयादक समूह 3. घुच्ची-पिलौअलि खेलमे भेल गलतीक दण्ड लगनाइ

गछ- दे. गच्छ

गछचढ़बा- गाछपर चढ़बामे पटु

गछपड़ङा- गाछ पङबामे निपुण, गाछ पङनिहार जन

गछबार- गाछी ओगरनिहार

गछहुली- छोट-छोट गाछबला गाछी

गछा-गछौअलि- दुइ पक्षक मध्य पारस्परिक वचन दऽ ओकर पालन करबाक प्रतिज्ञा, पारस्परिक सहमति

गछायब- *अपि* च- बिच्चीक झमटगर होयब

गछुल्ली- दे. गछहुली

गजगज-*अपि* च- बहुत, बहुसंख्यक

गजपीबा/गँजपीबा- गाँजा सोटनिहार, गजेड़ी

गजपुरना- गदहपुरैनि, एक प्रकारक वनस्पति

गजपेटा- हाथी सन पेटबला, बेसी मात्रामे खयनिहार, खाधुर (*धान बासमती, कूटय आसकती, खाय गजपेटा, परसय हथकट्टी*)

गजब/गऽजब-*अपि* च- फोँक स्थानमे उपयुक्त पदार्थ ठूसि-ठूसि कऽ भरब, ठूसब

गजबहीर- देरीसँ सुननिहार, कहल बात सुनियो कऽ अनठओने रहनिहार

गजबिज/गजर-बिजर- अस्त-व्यस्त, फेँटल-फाँटल

गजाड़ब-छत इत्यादिक ढलाइमे सीमेण्ट-गिट्टी-बालुक गील मसालाकेँ लोहाक छड़ आदिसँ गोजब/कोँचब

गजाड़ा-गजाड़बाक लोहाक छड़

गजाधर- थुलथुल (लोक)

गज्जर- गजबहीर

गज्जी- रेसमी कपड़ाक एक प्रकार

गट दऽ- जल्दीसँ गिड़ि जयबाक ध्वनि

गट-मूड़ी-सट- अथाह पानिमे अचानक डुबनाइ

गटाक-गटाक- गटगट, गटागट, जल्दी-जल्दी लगातार पीबाक ध्वनि

गटाक दऽ- दे. गट दऽ

गट्टा- *अपि* च- सोहारी बेलबाक लेल सानल चिक्कसक बनाओल गेल गोली, लोइया

गड़गाड़ा- बच्चाकेँ चलब सिखयबाक लेल गुड़कऽबला तिनपहिया गाड़ी, लड़ओना गाड़ी

गड़मुड़िया- धान आदिक पाँजक जड़ि दिसक भागपर दोसर पाँजक छीपबला भाग आ पुनः ताहिपर जड़िबला भाग रखबाक क्रमसँ बान्हल बोझ

गड़ाँत- मृत शिशुक शवकेँ भूमिमे गाड़बाक स्थान

गऽड़ी- गाड़ी, बैलगाड़ी

गड़ीमान- गाड़ीवान, बहलमान, बैलगाड़ी हँकनिहार (*गड़ी गड़ीमानके पहिया लोहारके*)

गढ़गर- खूब गाढ़, मोट द्रव

गढ़ायब- 1. गढ़ल जायब (गहना औजार आदि) 2. द्रवक गाढ़ होयब, घनत्व बढ़ब 3. गाढ़ कऽ औंटब [*क.को. गढ़िआएब- दे. गढ़ाएब- किन्तु 'गढ़ाएब' प्रविष्टिमे नहि*]

गढ़िया- प्राचीन गढ़क अवशेषबला स्थान

गणितज्ञ- गणितशास्त्रक ज्ञाता,

गत- *अपि* च- मृत (*हुनक बाबा काल्हि गत भऽ गेलथिन*)

गतगर- *अपि* च- 1. मोटगर (पोथी) 2. पुष्कल; प्रचुर

गतर- *अपि* च- शरीरक अङ्ग, दे. गत्तर

गताती- सम्बन्धी, घनिष्ठ अपेक्षित, निकट सम्पर्की

गतालखत्ता/गतालखाता- देल राशि/वस्तु पुनः आपस नहि होयबाक स्थिति, ओ व्यक्ति/स्थान जतऽ गेल टका/वस्तु आपस नहि होइत हो [*क.को. गोपालखत्ताक अर्थ हेतु कहैछ दे. गतालखत्ता, किन्तु प्रविष्टिमे ई शब्दे नहि*], हिन्दी-ठण्ढा वस्ता

गति-पति- लूरि-व्यवहार,

गति-मति- बुद्धि, विचार,

गत्तर/गत्तर-गत्तर/गत्र/ गत्र-गत्र- *अपि* च- शरीरक अङ्ग सब, गतर

गँथनाइ- गँथबाक काज (माला, गहना आदि)

गँथाइ- गँथनाइ, गँथबाक रीति, गँथबाक मजदूरी

गद-पूर्व कयल गरिष्ठ भोजनक कारणे अभुक्ख/नहि खयबाक इच्छा

गदक्का- पीठपर मुक्काक आघात

गदहिनी- 1. गदहियाक स्त्री, 2. लाज-धाखसँ रहित स्त्री.

गदीना- घुच्चीपिलौअलि खेलमे घुच्चीसँ बाहर सटल एकसँ बेसी गोटी

गदेल- अल्पवयसक सन्तान सब

गद्द- दे. गद

गद्दह करब- सोर करब, जोरसँ हाक पाड़ब

गद्दा-*अपि* च- बच्चा सभक कतोक खेलमे हारल पक्षक पीठपर जीतल पक्ष द्वारा मारल जायबला मुक्का (*ताहि कालक फकड़ा- गद्दा रे गोँइ-गोँइ, मार गद्दा पोँइ-पोँइ, गद्दा रासी, वनके वासी, करय उकासी*)

गद्दी- *अपि* च- थोक क्रय-विक्रयक पैघ दोकान 2. सिन्दूरक चौखुट मोड़ल पुड़िया

गधकिच्चनि- काज-परोजन/भोज-भातमे खाद्य-सामग्रीक यत्र-तत्र छिड़िया गेलेँ ओ गीजल-मथल गेलासँ भेल विकृति / बेरबादी

गन्हकाइन-गन्हकी कीड़ी सन गन्ध, विकृतिजन्य गन्ध, सड़ाइन

गपगप- गप ध्वनिक सङ्ग हबर-हबर मुँहमे कओर (ठूसब)

गपचप- किछु हड़पबाक लेल उत्पन्न कयल गेल भ्रम

गप दऽ- तेज गतिसँ मुँहमे कओर ठुसबाक ध्वनि

गप-सरक्का-दीर्घ काल धरिक मनोरञ्जक वार्त्तालाप

गपाक-गपाक- दे. गपगप

गपाक दने- दे. गप दऽ

गपागप- दे. गपगप

गपाध्याय/गपाष्टक- दीर्घकालिक गप्प

गप्का- औँठा ओ तर्जनीक मध्य भाग, [*क.को.क अर्थ- 'आङुरक गह' -अति* व्याप्ति]

गफब- निमुन्न स्थानमे गर्मी उत्पन्न होयब

गऽब-रोपऽलेल चुटकी पर चढ़ल बीया/धान/मड़ुआक बिड़ार

गबदी (मारब)- विशेष कारणे धारण कयल गेल मौन/निष्क्रियता/ निश्चलता [*क.को.- निद्रित होयबाक भगल करब- ई अर्थ संगत नहि*]

गभकच्छू- गाभ काछल/निकालल (दूध)

गभिनायब-*अपि* च- सामान्य बातकेँ भरियायब, अस्वीकारक हेतु बहाना सब बनायब

गमगमायब- 1.सुगन्धि पसरब 2. देहमे अत्यल्प ज्वर होयब

गमछी- छोट गमछा, अङौछी

गमता- उपेक्षा, अबडेरब

गमे-गमे- नहूँ-नहूँ

गऽर-*अपि* च- युक्ति, उपाय 2. पानि बहबाक ढार 3. विषम तल आधारकेँ सम करबाक लेल नीचामे घुसियाओल गेल छोट ठोस खीप

गरगरी- चारक सबसँ निचला किनार जाहि ठामसँ बरखाक पानि खसैत छैक, ओरियानी, ओलती

गरछी- लटबा परसँ उतारल सूतक लच्छा

गरजा-गरजी-चिकरि-चिकरि कऽ झगड़ा

गरटोकन- दे. गऽरटोकब

गऽरटोकब- 1. हर जोतबामे सिराउरसँ हटल बिन जोतल अंशकेँ कोदारिसँ तामब, आरि-कोन छाँटब 2. उपरका मनसँ कोनो काज करब

गरथैया (नाच)- 1. दहिना हाथ माथपर ओ बाम हाथ पोनपर राखि कयल जायबला नाच 2. लोभ/विवशतामे कयल काज

गरदी- बुकनी, चूर्ण

गरभआन्हर- 1. जन्मान्ध 2. पिताक मृत्युक समय गर्भस्थ शिशु, पिताक मृत्युक उपरान्त जनमल सन्तान

गरमा-नव विकसित धानक एक प्रजाति

गरमाइ- शरीरमे ऊष्मा/ ऊर्जा उत्पन्न करऽबला पौष्टिक खाद्य, पुष्टिकारक दबाइ, मकरध्वज आदि रसायन

गरमियाह- शरीरमे/ पेटमे दाह उत्पन्न करऽबला कुपथ्य खाद्य

गरमै- दे. गरमाइ

गरसित- 1. ग्रस्त, आक्रान्त 2. विवश

गरहा- खत्ता, खाधि, डबरा

गरहाँ/गरहाङ- एगारहसँ बीस धरिक संख्याकेँ एगारहसँ बीस धरिक संख्यासँ गुणन-सारणी, बिटगरहाँ, दे. खाँत

गरा लागब- अति शुष्कता/नीरसताक कारणे मुहमे देल कओर नहि घोंटायब, खायल खाद्यक कण्ठसँ नीचाँ नहि जायब

गरुभार- गर्भवती

गर्छी- दे. गरछी

गर्दी- दे. गरदी

गर्माइ- दे. गरमाइ

गर्मै- दे. गरमै

गर्मियाह- दे. गरमियाह

गलचोथौअलि- निष्कर्षहीन वाद-विवाद

गलथेथरै/गलथोथी- अप्रामाणिक बातकेँ सत्य सिद्ध करबाक चेष्टा

गलनती/गलन्ती- गलैत जयबाक रोग, अवनति, क्षयिष्णुता

गलबलायब- मन्द आँचपर अत्यल्प काल खापड़िमे भूजब, (*जेना- भिजाओल बूट-मटर, सीससँ सद्यः छोड़ाओल मकैक दाना आदिकेँ अत्यल्प भूजब*)

गलमोछ- गाल धरि नमरल नमहर मोछ

गलमोछा- गालधरि नमरल मोछ रखनिहार

गलहत्था- गरदनियाँ, ठोँठियौनाइ, (*चोरकेँ गलहत्था उसास*)

गलियायब- माल-जालकेँ घासक नूड़ी बनाय गालमे ठूसि खुआयब

गलोगप- ऋण-पैँच/जिम्मामे राखल वस्तु आपस करबासँ नठि जायब/पचा जायब

गलौधी- गराँमे लपेटल गमछा/वस्त्र, बलात् घीचि कऽ लऽ जयबाक लेल गलामे लपेटल वस्त्र

गसब-*अपि* च- कोँचब, ठूसब

गसियायब- कसि कऽ पकड़ब, दुनू हाथक आङुरकेँ परस्पर गस्सामे घुसिया कऽ पकड़ब

गस्सा- हाथ-पैरक आङुरक गऽह, [*क.को. गप्फा-अव्याप्ति*]

गहकी/गँहकी-ग्राहक, क्रेता (*बनिआँकेँ घेघ गँहकीकेँ उदवेग*)

गहगही- आडम्बर, देखाबा, डीलडओल, (*जस जनाउ तस गहगही*)

गहनपेरू- चन्द्र किंवा सूर्य ग्रहणक प्रभावेँ जन्महिसँ विकलाङ्ग

गँहसच्चू- दे. गुँहसच्चू

गँहिकी/गँहिक्की- गम्भीर (दृष्टि/नजरि)

गहियायब- *अपि* च- गसियायब

गहुआ- *अपि* च- 1. गसियाओल/ गहियाओल, आङुर सब 2. तर्जनीपर मध्यमा आङुर चढ़ाओल मुद्रा जे नेना सब अपनामे सप्पत आ अशुभ गारिक निवारणार्थ कयल करैछ 3. महुआक बीज

गाड़ो-सोहाइत/सोहैती- दे. गड़बा-सोहैती

गाजा-बाजा- वैभवसूचक आडम्बरपूर्ण सजावटि ओ विविध वाद्य-वादन

गाँठी(*प्रा.*)- एक प्रकार आभूषण

गाड़-*अपि* च- माटिक कोठीक क्षैतिज खण्ड

गान्ही (लागब)- 1. गन्हायबला घाओ, गलित कुष्ठ 2. क्रमिक रोग वृद्धि जन्य शारीरिक क्षीणता

गाबिस-माटिक बासनपर चिकनाइ चढ़यबाकलेल विशेष प्रकारक शोधित माटि, [*क.को. माटिक एक प्रभेद*]

गाभ-*अपि* च- काँच/बिनु औँटल- विशेषतः बासि दूधक सतहपर जमल गाढ़ सार तत्त्व/नेनु/मक्खान (*दे. गभकच्चू-गाभ काछल*)

गामी- 1. एकटा जातीय उपाधि 2. (*प्रा.*) ग्राम-प्रधान, (*गाम गामीकेँ नाँओँ बाबाजीकेँ*)

गारद (*अं*)- प्रहरी, सिपाही, रक्षक सैनिक (Guard)

गारी-सारी- परस्पर गारि दैत झगड़ा

गाली-*अपि* च- 1.दे. गलियायब 2. गाय-महीसकेँ दुहबा काल थन दाबि कऽ ककरहु (विशेषतः नेनाक) मुँहमे देल गेल दूधक धार

गाले-माले जीतब- मुँहक जोरगरी ओ धनक बलपर जीतब/अपन अनुचितो बात मनबा लेब

गिटपिट- लटपट-सटपट, अनैतिक सम्बन्ध

गिटार (*अं.*)- एकटा तन्तुवाद्य

गिदरभुक्का- रातुक ओ समय जखन गीदर बाजल करैछ

गिरगिटिया- पैघ नाङड़िबला बड़का गिरगिट जे 'चुप-चुप' सन ध्वनि मुँहसँ बहार करैछ, टिकटिकिया

गिरफदार- बन्दी बनाओल गेल, गिरफतार

गिरमल हार- गराँक हार, ग्रिमहार, कण्ठक माला

गिरमिट (*अं.*)-*अपि* च- काठमे मोट भूर करबाक औजार

गिरहत- भूमिक स्वामी

गिरहतनी/गिरहथनी- गिरहतक पत्नी, गृहस्वामिनी, मलिकाइन

गिरही- घर, गृह

गिरि-*अपि* च- संन्यासी जातिक एक उपाधि [*क.को. ब्राह्मणक एक वर्गक कुलनाम-अयथार्थ*)

गिलटाह- गीजल-मथल सन, रोगाह सन भेल नेना/ कुकुर-बिलाड़िक बच्चा

गिलसी (*अं*)- छोट गिलास

गिलाबा- ईंटक देबाल जोड़बाक लेल सानल गील माटि, गिलेबा

गीता- हिन्दूक एकटा प्रसिद्ध धार्मिक/दार्शनिक ग्रन्थ

गुइयाँ- गोधियाँ, सहक्रीड़क

गुङरओट- अधिक धुआँ आ धधराबला आगि/अगिलग्गीक आगि, भितरे-भीतर अनदेखमे सुनगैत आगिसँ एकाएक उठल धधरा सहित धुआँक अम्बार

गुङुआयब-*अपि* च- 1. ङु ङु ध्वनि करैत अस्पष्ट रूपमे अस्वीकार / असहमति व्यक्त करब (*खाइतो छी गुङुआइतो छी*) 2. अल्प समयमे अत्यधिक वृद्धि होयब (धन, ज्ञान आदिमे)

गुड़कन्ना गाड़ी- पहिया लागल खेलौनाबला गाड़ी

गुड़कान- गुड़कनाइ

गुड़गुड़ायब-1. पाचन क्रियाक गड़बड़ीक कारण पेटमे गुड़ गुड़ ध्वनि होयब 2. हुक्का पीयब, जाहिमे हुक्कासँ गुड़गुड़ ध्वनि बहराइछ

गुड़चौरी- फुलाओल अरबा चाउर ओ गुड़क मिश्रण

गुड़जाउर-गुड़मे रान्हल खीर

गुड़ही- गूड़ मिला कऽ बनाओल पकमान/भोज्य सामग्री

गुड़कब- गुड़कब

गुड़ैँत- दुरगमनियाँ कनियाँकेँ गुड़ खुअयबाक एक विधि

गुढ़मा- एक प्रकारक लता-फल

गुण्डपनी- बदमासी

गुण्डा-*अपि* च- धान कुटलापर आ चाउर छँटलापर बहरायल भुस्साक मेही बुकनी, गूड़ा

गुजरान- जीवन-यापन, जीवन-निर्वाह

गुझिया- चौकठि आदिक चूरमे ठोकल जायबला बाँसक कील

गुत्थब/गुथब- सुइ-डोरी/सूआ-सुतरीसँ अनियमित सघन सिआइ करब

गुदगुदायब- गुदगुदी लगायब

गुदस्त- व्यतीत, बीतल

गुदुरगाँइ- 1. गुदगुदी 2. नेनाकेँ गुदगुदी लगयबाक लेल कहल जायबला शब्द

गुन-*अपि* च- 1. कृतज्ञताक भाव, कयल गेल उपकार 2. जादू-टोना, तन्त्र-मन्त्र

गुनगरि- विभिन्न काजमे निपुण स्त्री

गुनधुन- सोच-विचार, चिन्ता, उद्विग्नता

गुन-बान- आघातकारक तान्त्रिक प्रयोग (*दुर दुर गे डैनियाँ, दुर बेटखौँकी, कथी लय गुन-बान सिखलेँ गे*)

गुनियाँ- *अपि* च- समकोण नपबाक राजक एक औजार

गुनी-*अपि* च- तन्त्रविद्या वा जादू टोनासँ उपचार कयनिहार, ओझा

गुफ्फ-1. सब दिससँ बन्द स्थान जतऽ रौद-बसात नहि जाइत हो 2. निर्वात गरमी

गुफरब- बिनु बजनहि हाव-भावसँ क्रोध व्यक्त करब, मने-मन तामस राखब

गुबदी- मोट/थोपल रोटी

गुमगुम- कनेक-कनेक पाकल (फल), गुमल

गुमब-*अपि* च- काँच तोड़ल फल जेना-आम, कटहर, केरा, अनरनेबा आदिक राखल-राखल पाकब

गुमसाइन- अन्न/चिक्कस आदिक गुमसबाक कारणे उत्पन्न गन्ध/स्वाद

गुमसुम- चुप चाप रहनाइ, निर्वाक्

गुमायब- फल आदिकेँ झाँपि-तोपि कऽ कृत्रिम रूपमे पाकल बनायब, दे. गुमब

गुम्मा-*अपि* च- एकटा औषधीय बनस्पति

गुरदा- पेटक भितरका अङ्गविशेष

गुरुअइ-1. अध्यापन वृत्ति 2. चलाकी, धूर्त्तता, चतुराइ (*गुरु सङे गुरुअइ*)

गुरुद्वारा- 1. आचार्य/शिक्षक/दीक्षागुरुक वास-स्थल 2. सिख लोकनिक पूजा-स्थल

गुल-*अपि* च- 1. कोइलाक बुकनीकेँ सानि कऽ इन्धन हेतु बनाओल गोली/टिकिया 2. गाँजाक चीलम बोझबाक लेल रस्सीक गीरहकेँ जराय बनाओल गेल चिनगी

गुलचा-मुलचा- कम लम्बाइक हृष्टपुष्ट मांसल शरीर/नेना

गुलजामुन- जामुनक पैघ फलबला प्रजाति

गुलज्जर-तीव्रतासँ पसरल निराधार बात, अफवाह

गुलठी-घोरल सातु / मैदा आदिमे गोली/ढेकुड़ी बनि गेल बिनु मिलल अंश; खीर / खिच्चड़ि/ दालि आदिमे गोली/ढेकुढ़ी बनि गेल बिनु सीझल अंश

गुलथुल- अधिक मोटायल (देह),थुल-थुल

गुलमा- गुलाबक चित्रबला तासक एगारहम पत्ती

गुलाबखास- आमक एक प्रसिद्ध प्रभेद

गुलाबछड़ी- चीनीक पाकसँ बनल गुलाबी रङ्गक बालप्रिय मिठाइ, दे. लालछड़ी

गुलाम-*अपि* च- दे. गुलमा

गुँहकिड़बा/गुँहकीड़ी- गूँहभक्षी कीट

गुँहखौका/की- गूँह खयनिहार, विष्ठाभक्षी (एकटा गारि)

गुँहसच्चू- कय-कय दिन धरि मलत्याग नहि कयनिहार शिशु

गुँहाइन- गुँह सन विकृत गन्ध

गुहाँगिज्जी- घृणित झगड़ा, घिनामय

गूजा-*अपि* च- लट्टूक शङ्कुक नीचाँमे ठोकल लोहक नोकबला काँटी जाहिपर लट्टू नचैत अछि

गूड़- कुसियारक रसकेँ औँटि कऽ बनाओल ठोस पदार्थ

गूड़ीबीड़ी- बेसी छोट-छोट गुलठी सब, दे. गुलठी

गूढ़ी/गूढ़ीकपटी- प्रच्छन्न छल-छद्म

गूना-*अपि* च- 1. ढिबरी कसबाक लेल बनाओल घुमाओदार गँहीर रेखा, घाट, पेँच 2. सपता व्रतक डोरमे गाँथलजायबला सोना/चानीक तारक तीन भत्तासँ बनल फोँफी

गूनामूना- दुरागमनक अवसरपर कनियाँक सासुरमे उपहार रूपमे बाँटल जायबला आङुर सन बनाओल पकमान, ऐहबक फड़

गूँह-विष्ठा

गूहब-*अपि* च- जुट्टी बनयबालेल केशक तीन लट बनाय परस्पर फँसायब, तीन तागकेँ परस्पर फसाय जुट्टी सन मोट डोरी बनायब

गृहस्थाश्रम- भारतीय परम्परानुसार जीवनक दोसर अवस्था; वैवाहिक जीवन, पारिवारिक जीवन

गेड़ियाह- असङ्गत दुराग्रह करबाक स्वभावबला, निराधार बातक लेल जिद्द करैत रहनिहार, गेड़ करबाक स्वभावबला

गेट(*अं*)- द्वार, दरवज्जा

गेटकी(*अं*)- दरबान, गेट-कीपर (Gate keeper)

गेँटी- छोट थाक, छोट गेँट

गेठबन-एक औषधीय वनस्पति जकर पातक उत्कट गन्धसँ छुछुन्नरि पड़ा जाइछ दे. पलहास

गेठिया[1]/गेँठिया-*अपि* च- एक प्रकारक लत्ती जे गेठिया रोगमे ओषधि रूपमे प्रयुक्त होइछ

गेठिया[2]- स्थानान्तरण लेल कसि कऽ बान्हल गेल कपड़ा ओ तत्सम अन्य वस्तुक पैघ मोटा

गेँठी- छोट गीरह, परिधानीय धोती-साड़ी-गमछा आदिक खूटमे बान्हल गीरह (*गेँठीमे दाम नहि बाँकीपुरक सैर*)

गेनखेली- कन्दुक क्रीड़ा, फुटबौलक खेल

गेन्हरी- गेनहारी, एक प्रकारक साग (*चतरी गेन्हारी*)

गेन्हायब- 1. उत्कट दुर्गन्ध पसरब 2. घिनायब

गेलहा/गेल्हा- एक प्रकारक फड़ जाहिसँ रगड़ि कऽ धोबि कुर्त्ताक बाँहिपर चुनन बनबैत अछि

गेल्हा करब- कुर्त्ताक आस्तीनपर चुनन बनायब

गैढुकानी- गाय सभक बथानपर जयबाक बेर, लुकझुक करैत साँझ, गोधूलि बेला

गैँता/गैँती-*अपि* च- कोदारिक बेँट सन बेँटबला माटि कोड़बाक लोहक एक औजार जकरा दुहू दिस क्रमशः नोक ओ चापत धार रहैछ

गैरह- इत्यादि, एवं अन्य, (*फारसी- वगैरह*)

गोआ- सड़ल-पुरान गोबर

गोआ पटायब- खेतमे खादक रूपमे पुरान गोबर छीटब

गोइठी- छोट गोइठा, गोइठाक टुकड़ी, गोइठाक चिनगी

गोएँढ़ा- गामसँ सटल निचास भूमि/खेत, ओहासी

गोखुल-कृष्णक बाल्य कालक नन्द-यशोदाक गाम, गोकुल

गो-जायब- लेल वस्तु/ऋण/पैँचकेँ नठब, पचा जायब, झूठ बाजब, बैमानी करब

गोजारब/गोजियारब- पैरसँ अथवा लाठी इत्यादिसँ पानिक निचला तलक धरतीक स्थितिक अन्दाज करब/बेर-बेर दबायब

गोजी- भोँकऽबला नोकदार हथियार, कोँती [*क.को. कानक मैल, गुज्जी -भ्रान्ति*)

गोजै- अनेक अन्नक मिश्रण- विशेषतः रब्बी फसीलक अन्नक, गहूम-जओक मिश्रण

गोझनओट- महिलाक साड़ीक पैर दिसक भाग

गोटपघरा- दे. गोटा-पघरा

गोटा-*अपि* च- 1. अन्नक तैयार दाना- विशेषतः सीससँ छोड़ाओल मकै 2. सौँस (सुपारी)

गोटा-पघरा- गोटेक, ठाम-ठीम, कखनो-कदाचित्

गोठना- दूनू हाथक गप्फामे अँटऽबला मध्यम मोटाइक लकड़ीक टोन

गोठुल्ला- गोड़हा-गोइठा रखबाक छोट सन घर

गोड़-*अपि* च- अनुमित/सम्भावित संख्या, अन्दाजन (*गोड़ बीसेक आम झोड़ामे छल होयतैक*)

गोड़धरिया/गोड़धरी- पैर पकड़ब, अनुनय-विनय करब, क्षमा माङब, खुशामद करब

गोड़धोआ (पुल)- बाढ़ि/बरखाक पानि बहबाक लेल सड़कमे बनाओल गेल लेआ स्थान, सड़कक ओ लेआ स्थान जाहि ठाम घुट्ठी-छाबा धरिक पानि हेलि कऽ पार करऽ पड़ैछ, लचका पुल

गोड़पड़िया- पैर पकड़ब, अनुनय-विनय करब, माफी माङब, दे. गोड़धरिया

गोड़ा-*अपि* च- व्यक्ति, गोटा

गोड़ाटाही (करब)- अनावश्यक आबर-जात करब, चर-चित लेबाक लेल कोनो-कोनो बहन्ने अबैत-जाइत रहब

गोड़े- गोटे, व्यक्ति, दे. गोड़ा

गोढ़िलबा- हृष्ट-पुष्ट ओ बलिष्ठ शरीरबला

गोढ़िलबा बानर- बानरक झुण्डक सरदरबा बानर

गोँतब- *अपि* च- बलपूर्वक पानिमे डुबायब, मूड़ीकेँ नीचाँ दिस झुकायब

गोतरध्या- 1. गोत्राध्याय, 2. निरर्थक दीर्घकालिक गप-सप

गोदौस- खढ़-पातक कस्तर

गोद्धाँ- गोधियाँ

गोधनायब- सामान्यो बातकेँ बिकछा कऽ नमरायब

गोधनाह/हि- सामान्यो बातकेँ बिकछा कऽ नमरौनिहार पुरुष/स्त्री

गोनौड़/गोनौड़ा- गोबर-छाउर-गूँह-नूड़ इत्यादिक ढेरी, टोनाक रूपमे गोनौड़क ढेरीपर फेकि देल गेल जनमौटी नेनाक नाम

गोपालदही- महुआ दूधक दही

गोपी-*अपि* च- गाछक पहिल गछपक्कू आम

गोफा- अँकुरल नारियर/ ताड़क फलक भीतरक कोमल गुद्दा

गोबर-कड़सी-गोबरक चोत तथा लतखुरदनसँ बथानपर लेभरायल गोबर ओ सनायल घास-भुस्सा

गोबरकढ़ही- गोबर काढ़ि कऽ रखबाक पथिया/छिट्टा

गोभा- 1. दे. गोफा 2. बिनु गम्हड़ल धानक पादप

गोभी- *अपि* च- दे. गोभा-2

गोमुखी-*अपि* च- गङ्गाक उद्गम-स्थल

गो-मो करब- स्पष्टतया हँ वा नहि से नहि कहब, न-नू न-च करब

गोर-बुर्राक/भुर्राक- अतिशय गौरवर्णक, उजरी गोराइबला

गोरू- गाय

गोर्रा- 1. बड़का झिंगा माछ 2. अङ्ग्रेज सैनिक

गोर्रा-पलटन (*अं.*)- अङ्ग्रेज सैनिक

गोलओन- गोलसन (आकृति)

गोलका/की- 1. गोल आकृतिबला 2. भुल्ला/गोल रङ्गक पशु (गाय/बाछी/बड़द)

गोलकी(*अं.*)[1]- गेनखेली(फुटबॉल)मे गोल-रक्षक (Goal Keeper)

गोलकी[2]- ताड़ी नपबाक एक नपना

गोलथत्ती- चाउरक खुद्दीक नोन-हरदि दऽ कऽ रान्हल गील भातक गोला; रिन्हकी

गोलभट्ठा- ईंट पकयबाक चिमनी लागल स्थान

गोला-*अपि* च- 1. पैघ ढेरी 2. विक्रय हेतु विक्रेय वस्तुक पैघ भण्डार

गोला-बादर- मनमोटाओ, मतभेद, झगड़ाक सूर-सार

गोलामा- गोलाइ

गोली(*अं*)- *अपि* च- दे. गोलकी[1]

गोस- गोमांस, गोस्त, मांस

गोसाँइनाओँ/नाम- कार्त्तिकी स्नान कैनिहारि द्वारा नित्य स्नानोत्तर श्रवणीय सूर्यादि देवस्तव

गोँहछ- तामस, तमसायल भाव

गोँहछब-तमसायल व्यवहार करब, हाव-भावसँ तामस व्यक्त करब

गोँहड़ि- शिशु/अशक्त बूढ़/ रोगी आदिक एहन परिचर्या जाहिमे गूँह-मूत पर्यन्त साफ करऽ पड़य, सब प्रकारक सेवा-बरदासि, दे. लड़िकम

गोहिया- बाती/करचीक चारक दुनू छोरकेँ लिबाय धरतीमे सटाय बनाओल अर्द्धवृत्ताकर कछुआक पीठसन खोपड़ी

गौ-1. गाय 2. गय (सम्बोधन)

गौँआरी- 1. एकहि गामक वासी होयबाक सम्बन्ध 2. गाम भरिक (भोज) / गामे भरिक (भोज)- जबारी नहि

गौकसी/गौकुसी-गौहत्या, गोवध

गौँछी (मारब/लागब)-*अपि च*- माल-जाल द्वारा सिंघसँ कयल गेल अचानक झटका

गौँजायब- छोट-छोट गाछ/लत्तीक अनेक मूड़ी खूब लहलहा कऽ बढ़ब

गौ-ढुकानी- गायक/माल-जालक चरि कऽ बथानपर अयबाक समय, गोधूलि बेला, गदहबेर, झोलफल साँझ

गौनौती- दे. गओनौती

गौरब करब- अपच होयब

गौरब ढहब- घमण्ड टुटब, विवश होयब

गौरबाह- *अपि च*- विलम्बसँ पचऽबला खाद्य पदार्थ, गुरुपाकी

गौरबाहि- घमण्डी स्त्री

ग्राम(अं.)- *अपि च*- एक किलोग्रामक हजारम भाग

[घ]

घओन- सघन, घनगर, बड़ लग-लग गाछ

घग्घा- सघन मेघक पसार, घाघस (*मग्घा लगाबय घग्घा सेबाती लगाबय टाटी*)

घचक्का- ताड़ीक एकटा नपना

घचपच- ओझरायल-पोझरायल, फेँट-फाँट, गजपट

घचपचायब- *अपि च*- ओझरायब, गजपट होयब

घट दऽ/सँ- एकहि बेगमे जल्दीसँ पीबि/घोँटि जयबाक ध्वनि, अविलम्ब घोँटि जायब

घटन्ती- घटैत गेनाइ, छिजनाइ, क्षयिष्णुता, अवनति

घट-बढ़- कमी-बेसी, न्यूनाधिक्य

घटरा-उचितसँ अधिक सिझलासँ स्वत: बनल झोर, घोँटनासँ मथि कऽ बनाओल झोर

घटाक घटाक- घटाघट, दे. घट दऽ

घटाक दऽ/सँ- दे. घट दऽ

घटी-बढ़ी- कमी-बेसी

घटुआरब- बिनु बुझने फेँट-फाँट कऽ देब, मिझरा देब, अमनियाँ-अपैतकेँ एकट्ठा कऽ देब

घटेसब- ऋण/पैंच/उधार/मङनी कयल वस्तुकेँ आपस नहि कऽ पचा लेब

घटेसर/घटेसर राजा- घटेसबाक वृत्ति कयनिहार, हलमपच कयनिहार, दे. घटेसब

घटोसब-*अपि च*- दे. घटेसब

घट्टी-*अपि च*- तौलमे कमती, उचित परिमाणसँ कम

घट्ठर-कोनो बात सुनियो कऽ अनठा देनिहार, कान मठेरनाहर

घट्ठा- ठेला

घट्ठा-पिट्ठा (पड़ब)- डाँट-दबाड़/गारि-फज्झति/लात-मुक्काक मारि इत्यादिक अभ्यस्त भऽ जायब

घड़घड़ी- आसन्न मृत्युक सूचक कण्ठसँ बहराइत घड़-घड़ ध्वनि

घड़जोड़बा- ठढ़का कानबला अनेक बासन जेना- घैल इत्यादिक रस्सी द्वारा बान्हल गरदनिसँ गरदनि

घड़ाजोड़ी- दुइ वा अधिक व्यक्तिक परस्पर

एक-दोसराक घाड़पर बाँहि राखि पकड़ने रहनाइ

घड़ेर- दे. घरहेड़

घत (धरब/लाधब)- भगल, धाति, बहाना, छद्मरूप, छद्म-आचरण, नहि बुझबाक नाटक करब

घनगर- सघन, लग-लग, सटल-सटल, घओन

घनेर- अनगिनित, बहुत

घनेरो- बहुतो

घपचप- काज-परोजनमे अन्यसँ आनल प्रयोजनीय वस्तु-जातक पुन: आपसीमे भेल/कयल गेल हेर-फेर

घपचपायब- घपचप करब

घमघमायब- देहमे हल्लुक पसेना छुटब, घाम छुटब

घरकथा- सभागाछी/ वैवाहिक सभामे नहि जाय वरपक्षक घरहिपर जाय स्थिर कयल गेल विवाह

घरछारा- खढ़/खपडावला घरक चार छारनिहार जन

घरड़ा (लागब)- घर्षण, रगड़ा, चाँछ

घरनिप्पा- घर निपबाक लेल घोरल माटि ओ नूड़ रखबाक वासन

घरपैसी-*अपि* च- घरक खाना-तलासी

घरफुकना- घरक सम्पत्तिक अपव्यय कयनिहार

घरफुटओना/घरफुटाओन- परिवारक मध्य मतभेद उत्पन्न कऽ भिन्न-भिनाउज करौनिहार

घरबला- 1. पति, 2. घरक मालिक

घरबा-दुअरबा- धूरा-माटिक घर बनयबाक नेना सभक एकटा खेल

घरबारिक-घरक मुख्य व्यक्ति / घरक कोनो व्यक्ति

घरबास-नवघर /नवनिर्मित घरमे निवास हेतु सविधि प्रथम प्रवेश

घरहेड़/र- *अपि* च- स्वार्थ-साधन हेतु बेर-बेर पहुँचनाइ, घड़ेर

घरी- कुलदेवताकेँ पातड़ि देबाक घरही पावनि जे वर्षक निश्चित मास, पक्ष ओ तिथिकेँ भेल करैछ

घरुआर- घरक नियमित काज, भानस-भात कयनाइ एवं अन्य सामान्य काज

घरुआरब- घरक नियमित काज सब करब, घरक व्यवस्था करब, दे. घरुआर

घरैतिन- गृहस्वामिनी, घरकेँ व्यवस्थित कयनिहारि

घर्रा-*अपि* च- दे. घरड़ा

घलघल- पाकि कऽ पुलपुल भेल

घलघलायब- पाकि कऽ पुलपुल भऽ जायब (आम, कटहर केरा आदि)

घसछिल्ला- घास छिलनिहार घसबाह, (*ला.*) निरक्षर, मूर्ख

घसबाहिनी-घास कयनिहारि, घास छिलनिहारि, घास कटनिहारि

घसर-घसर- मुहमे देल खाद्य वस्तु खयबामे शुष्क आ स्वाद-हीन प्रतीत होयब

घसराह- घसर-घसर स्वादबला

घसल्ली- एकदम घसायल, अति साधारण, उपयोगिताहीन, न्यून कोटिक

घाओ- *अपि* च- कोँती-गोजी-बरछी-बनसी आदिमे बनल उनटा दिसक नोक

घाओ-घोस- व्रण एवं चर्म रोगादि

घाट-*अपि* च- 1. पेँच बैसाय कसबाक लेल घुमाओल गँहीर रेखा, गूना 2. श्राद्ध स्थल

घाटि- न्यून, हीन, कम

घानी लगायब/लागब- सञ्चित ढेरी/राशिमेसँ खर्च आरम्भ कऽ देब

घाँहि- भीतरसँ धूर्त, दे. घैहर

घिखिचड़ी- कुस्तीमे अनिर्णीत हारि-जीत

घिचिर-पिचिर- 1. ओझरायल 2. मन आगाँ-पाछाँ कयनाइ, ततमत, इतस्तत:

घिच्चम-घिच्चा- अनेक व्यक्ति द्वारा कोनो वस्तु लेबा लेल अपना-अपना दिस घिचनाइ

घिच्चा-तीरी- (घीचब-तीरब), दे. घिच्चम-घिच्चा (घीचब-तीरब)

घिढारी- उपनयन-विवाहमे मातृका पूजामे षोडश मातृकाक पिंडपर घी ढारबाक क्रिया (*घियापुता ककरो घिढारी करय मङरो*)

घिनमा-घिनमी- पारस्परिक घृणित कलह, झगड़ा, गारा-गरौअलि, गारा-गारी

घिनामय/घिनाष्टक- 1. घृणित आचरण, निन्दनीय कार्य/व्यवहार 2. छिनसँ भरल

घिनौअलि- घिनमा-घिनमी

घियौरिया/घियौरी- भृङ्ग द्वारा निर्मित माटिक घर

घिरियायब- 1. ज्वरादि सन बिमारीक बेसी दिन धरि छोड़-बाढ़ करैत रहब 2. कोनो काजक लेल बेसी दिन धरि दौड़-बरहा करबैत रहब

घिसियओढ़(काटब)- वृद्धावस्था/चिरकालिक रोगक कारणे असमर्थताजन्य कष्ट

घिसेढ़- दे. घिसियओढ़

घुघना-मुखाकृति, चेहरा [*क.को.-उदासी/अप्रसन्नता व्यञ्जक मुँह*]

घुघना लटकब/लटकायब- उदास होयब, अप्रसन्न होयब

घुघसब- शरीर विशेषत: चेहरा फुललाह सन होयब

घुघुआ मना- चित्त भऽ मोड़ल ठेहुन भरे पैरपर बच्चाकेँ राखि ऊपर-नीचाँ झुलयबाक खेल

घुटुक सन- शिशुक दूध आदि घोँटबाक ध्वनि (*बौआक मुँहमे घुटुक सन*)

घुड़कब-*अपि* च- क्रोध ओ उत्तेजना देखाय भयभीत करब, हुड़कब

घुड़की- क्रोध-उत्तेजनाक प्रदर्शन, (*बनरघुड़की-मिथ्या डर देखायब*)

घुनायब- घुन लागब

घुन्ना- अपन मनक बात कोनहु रूपमे व्यक्त नहि होअऽ देनिहार

घुमघुमौआ- अधिक ठाम घुमानबला बाट

घुमानी- घुमान, टेढ़-मेढ़ रहने बेसी दूरीबला बाट

घुरञ्ची- स्वत: लम्बवत् रहऽवला सचल सीढ़ी

घुरन/घुरना/घुरनी- मुइल सन्तानक पीठपर जनमल सन्तान

घुर-बहुर- बेर-बेर विदा होयब आ घुरि आयब, दुरागमन-कालमे कनियाँक सबारीकेँ आगाँ बढ़ा कऽ पाछाँ करबाक एकटा विधि

घुरमनतेरी- कार्य-सिद्धिमे बाधक रूपमे उपस्थित अनेक झंझटि

घुरमा-*अपि* च- एकटा लताफल, गुढ़मा

घुरमुड़िया (खेलायब/देब)-*अपि* च- मूड़ीकेँ धरतीमे रोपि धड़केँ आगाँ दिस उनटयबाक एक बाल-क्रीड़ा

घुलघुलायब-पाकि कऽ अत्यन्त कोमल भऽ जायब

घुलटायब/घुलटियायब- हिसाब-बारीमे राशिक बैमानी करब, टका-पैसाक गोल-माल करब

घुलब-*अपि* च- द्रवमे ठोस वस्तुक गलि कऽ मिलब

घुसकान- बैसले-बैसले ससरैत चलब

घुसकी पेठिया- अत्यन्त लगक स्थान, सुगम्य स्थल

घुसरब-बिसरब

घुसारब-बिसरबाक हेतु विवश करब

घुसियायब-सङ्कीर्ण स्थानमे बलात् पैसब/पैसायब

घुसुक-फुसुक- सिकस्तमे कोम्हरहु दिस कनेक ससरब

घुसुकब-यथा स्थितिमे कनेक ससरब / हटब

घुसुकायब- कनेक ससारब/हटायब

घेओना (करब/पसारब)-व्यथाकें बाजि-बाजि विलाप करब/ कृत्रिम विलाप करब, घओना, घाना

घेघही- घेघबाली (*सब छौँड़ी गामपर, घेघही लताम* पर), नेनाकें डेरयबाक हेतु एक काल्पनिक जन्तु

घेँटी-घेँट, गरदनि, गला

घेथार- धुसनाइ

घेथारब-*अपि* च- धुसब, फज्झति करब, समक्षहिमे दूसब

घेर-बेढ़- चारू दिससँ अवरोध ठाढ़ कयनाइ

घेरा-*अपि* च- फराक/फ्रॉक नामक (बालिकाक) अंगवस्त्रमे नीचाँ लागल घघरा/घघरी

घेराबा-चौतरफा बनाओल अवरोध/देबाल/ छहरदेबाली

घैलसिरी- पेयजलक घैल रखबाक नियत स्थान, घैलची

घैला-घैल, नमहर घैल

घैलिया/घैली- छोट घैल, बसनी

घैहर-देखबामे सज्जन किन्तु भीतरसँ अति चतुर, घाँइ, घाघ, [*क.को.मे 'घिघरी काटब'* केर *भ्रम*]

घोघ- *अपि* च-1. पशुक कण्ठमे स्थित ओ थैली जाहिमे पाउज करबासँ पहिने भोजन कयल वस्तु जमा कयने रहैछ 2. धानक गम्हड़ाक आवरण

घोघट पड़ब- कन्याक विवाह सम्पन्न भेलाक बाद वर वा वरपक्षक जेठजन द्वारा नववधूक माथ झँपबाक विधि, मथझँप्पी

घोघटाही(साड़ी)- घोघटक निमित्त (साड़ी)

घोघर-नेनाकें भय देखयबाक हेतु एकटा कल्पित भयानक जन्तु (*राम रूप जहिया हम भेलहुँ नरबानर सङ रहिया, लंका जारल, रावण मारल, घोघरो ने देखल तहिया*)

घोँघरी- घोँघाक छोट आकारक एक प्रजाति, घोँघारी

घोँघाउज/जि- अनेक व्यक्तिक एकहि सङ्ग वाग्युद्ध

घोघोपाल- कण्ठसँ पैर धरिक झूल

घोघोरानी-किशोर वर्गक जल क्रीड़ाक सम्बोध्य पात्र (*घोघोरानी ! घोघोरानी ! कत्ते पानी ? –घुट्ठी पानी*)

घोँच-अति सङ्कीर्ण दोग/दोगाठी

घोँटनी-*अपि* च- छोट घोँटना

घोँटब-*अपि* च- फेँटब, द्रवमे स्थित ठोसगर वस्तुकें मथि कऽ मिलायब, जेना दालिकें घोँटब

घोड़गद्दह/घोड़पड़ास- घोड़ा/गदहा सन आकृतिबला एकटा वन्य पशु, नील गाय

घोड़ाघासिन- लण्ठिनी, लड़ाकिन

घोन-फेन (करब)- एके बातकें घुमा-फिरा कऽ बेर-बेर कहनाइ, अनावश्यक बातकें बेर-बेर बजनाइ

घोर-*अपि* च- पानिमे दूधक छाल्ही/सञ्चित गाभकें महि मक्खन कछला उत्तर बचल अपशिष्ट द्रव, मट्ठा

घोरञ्ची- द. घुरञ्ची

घोर-मट्ठा- फेँट-फाँट, घोँकल द्रव / पानि

घोलटक्की- द. होलटक्की

घोलटायब-वस्तुक हेराफेरी कऽ नीक वस्तु हथियायब

घोल-फचक्का- कोनो घटनाक निन्दा वा आलोचनामे होइत बहुमुखी चर्चा, अनेक व्यक्तिक एकहि विषयपर एकहि संग बजनाइ

घोलम्यन्त- गीजल-मथल, फेँट-फाँट, ओझरायल, अओँज-गओँज

घोसिन- यादव जातिक एक उपवर्ग, [*क.को. गोआरि-अर्थअसंगत]*

घौँचाल-अनेक लोकक एकहि संग बजनाइ, हलचल, हल्ला, घोल-फचक्का

घौदा- गुच्छा, फलक गुच्छा

घौदा-मौदा- अत्यन्त सटल-सटल, गुच्छ बनल, झुण्ड बनल

घौर- केराक हत्था सभक संलग्न समूह, गाछमे लागल कोनहु फलक गुच्छा

घौरछा/घौरछी- फलक गुच्छा

घौलायब-तेजीसँ अस्पष्ट शब्दक उच्चारण करब, शिशुभाषा (अस्पष्ट रूपमे किछु कहब), परबोधलोपर शिशुक कनिते रहब

[च]

चकचोन्ही-*अपि च*- आश्चर्य, विस्मय

चकतबा-चकत्ता जकाँ फूलल देहबला (पुरुषक प्रति स्त्रीक एकटा गारि)

चकत्ता-कीट-मच्छड़ आदिक दंश वा खढ़-पातक काप लगने अकस्मात् फुलल त्वचा

चकत्ता सन- विशाल देह (निन्दा)

चक दऽ (उठब)- आकस्मिक चमकसँ (दृश्यमान)

चकुढ़ब- जकड़ब

चकैठ- हृष्ट-पुष्ट आ सुड्डओल (देह)

चकोढ़ब- देहक अंग-अंग जकड़ब

चकोरी- चकोर पक्षीक मादा

चक्का-*अपि च*- गाड़ीक पहिया

चक्की- विद्युत चालित आँटा पिसबाक मशीन

चङ उड़ब/चङ उड़ियायब- नङो-चङो होयब, एकहि समयमे अनेक दिस ध्यान जायब, खूब हल्ला होयब

चङ्गुरा- चारि आङ्गुर/चाङ्गुरपर लपेटि कऽ बनाओल सूतक पोला/लच्छी, विशेषत: जनौक वा ओकर पूर्व रूपक चङ्गुरा बनाओल जाइछ, [*क.को.मड़िआओल सूतक एक परिमाण- SeeT IX. –मुदा ओहि ठाम एकर उल्लेख नहि अछि*]

चङ्गुरायब/चङ्गुरियायब- चाङ्गुरपर सूत लपेटब

चटकल- जूटमील, जूटक कारखाना

चटकन/चटकनियाँ/चटकनी- हल्लुक चाट (*समधानल चाट वा थापड़ नहि*) [क.को. - *चाट, थापड़*]

चटगूनी- छोट खिनहरि

चट दऽ/सँ- तुरन्त, अविलम्ब

चटायब- *अपि च*- जलाशय-पोखरि, इनार, डबरा इत्यादिक पानि सुखा जायब

चट्टक- चिड़ैक विष्ठा

चट्टा- *अपि च*- ईंटक जोड़ाइमे मसल्ला सनबाक लेल ईंटक चबुतरा

चड़ैनियाँ- *दे.* चरैनियाँ

चतकार-बजबामे विन्यास, बजबामे छवि-छटा, [क.को. *जनैत रहितहुँ पुछलापर विस्मय देखायब -ई अर्थ अग्राह्य*]

चतरिया (*प्रा.*)- न्यून कोटिक धातुपर सोना-चानीक पानि चढ़यबाक वृत्ति कयनिहार, दे. चातर

च-तु कऽ-घटना/वार्त्ताक छोट-छीन बात(-केर वर्णन)

चतुराइ- चातुर्य, बुधियारी, चलाकी

चतुरानन- चारि मुहबला देवता, ब्रह्मा

चतुरी- बुधियारि, चलाक स्त्री

चनचनायब- धियापुताक पातर स्वरमे जोर-जोरसँ बाजब

चन दऽ/सँ/सन- अचानक सीसा आदि फुटबाक ध्वनि

चनन बथुआ- झल्ला/बथुआ सागक एक प्रजाति

चनरस- काठक उपस्करक सतहकेँ रङि कऽ चमकदार बनयबामे प्रयुक्त एक रासायनिक पदार्थ

चनसुर- एकटा वनस्पतिक औषधीय बीज

चन्नर(लागब)- आकस्मिक क्षणिक मूर्च्छा/अचेतन, चाउन्हि

चन्नी हजार-अनगिनित, घनेरो, बहुतो

चन्सगर (*अं*)- मेधावी, भविष्णु (नेना)

चपटब- दे. चपेटब

चपड़ा- *अपि* च- एक प्रकारक आम

चपता-ऊपरसँ दाबि कऽ/छीलि कऽ समतल कयल; पीचल, (*हे सिरी सपता ! आँखि देलहुँ, कान देलहुँ नाक किए चपता*)

चप दऽ/सँ/सन- अकस्मात् तीव्रतासँ पानिमे डुबबाक/पाँकमे धसबाक ध्वनि

चपेटब- खूब डाँटब, धूसब

चपोतब- 1. अनाड़ी जकाँ लेपब/चौपेतब

चफरगरि- चप्फर स्त्री, दे. चप्फर

चफरि कऽ- घृष्टतापूर्वक, रोआबसँ, दाबीसँ

चप्फर-ढीठ, चलाक, निधोख, चलता-पुरजा [*क.को.* चफर- *See* चरफड़ *। ओतऽ चरफरक अर्थ कहल गेल- 'शीघ्रकारी, चलबा-फिरबामे पटु, चतुर'* । चफरक *ई अर्थ असंगत*]

चभ दऽ/सँ/सन- अकस्मात् तेज गतिसँ पानिमे खसबाक ध्वनि

चभ-चभ-लगातार पानिमे खसबाक ध्वनि

चभाक दऽ- बहुत जोरसँ अकस्मात् पानिमे खसबाक ध्वनि

चमचमौआ- खूब चमकैत, चमकदार

चभाक-चभाक-लगातार बहुत जोर-जोरसँ पानिमे खसबाक ध्वनि

चमरखल्ला- मुइल पशुक चाम खलबाक स्थान

चमरटोली- चमारक वस्ती

चमरनाक- दुर्गन्धो बुझबामे असमर्थ नाक

चमरमछरी- बेङक बच्चाक आरम्भिक रूप जाहिमे ओकरा नाङड़ि रहैत छैक तथा अल्प पानिबला स्थानमे माछ जकाँ छलमल करैछ। नाङड़ि टुटलाक बाद बेङक रूपमे आबि जाइछ ।

चम्पी- माथक मालिस

चम्मच- डण्टी लागल सीप वा सापक फणक आकारबला उपकरण जाहिसँ अल्प मात्रामे खाद्यवस्तु अथवा दवाइ आदि खायल जाइछ

चम्मा- *अपि* च- अत्यन्त कृपण, इत्तर

चरकाहा/चरकाही(स्त्री)- 1. श्वेत कुष्ठ रोगसँ ग्रस्त व्यक्ति, 2. श्वेत वर्णक गाय-बड़द आदि

चरकी- चरक वर्णक मिरचाइ, आखरी छोहनिक मिरचाइ जकर रंग भड़छल रहैछ आ कड़ू नहि होइछ

चरचाँइक- पंखा हौंकनिहार सेवक, टहल कैनिहार, टहलु

चरजा- आचरण, चालि, करनी

चरबाहि-पशु चरयबाक काज, पशु चरयबाक वृत्ति

चरबाही-पशु चरयबाक बोनि/वेतन

चराउर-*अपि* च- पशु ओ पक्षी सभक आहार-अन्वेषण, चाराक खोज, [*क.को. खेतमे चराओल गेल अंश-अशुद्ध* दे. *चराठी*)

चराठी- माल-जाल द्वारा चरि गेलाक बाद धान-खढ़ आदिक अवशिष्ट डाँट-पात

चरिपहिया- चारि चक्काबला गाड़ी (मोटरगाड़ी)

चरैनियाँ (नाचब)- अमंगलक भवितव्यता, अशुभ भावी, अधलाह होनी, (*माथपर/कपारपर चरैनियाँ नाचब*)

चरोबरो (करब)- लीरी-बीरी करब, अस्त-व्यस्त करब

चर्र दऽ/सँ/सन- कपड़ा वा कागत आदिक अकस्मात् जोरसँ चिरयबाक ध्वनि

चलओँस- चाललाक बाद अवशिष्ट मोटगर अंश

चलकपनी- चलाकी, धूर्त्तता

चल-चलन्ती-विदा कालक हड़बड़ी, (*चल चलन्ती-हगि भरन्ती, जे रहन्ती से पोछन्ती*)

चलती- *अपि* च-1. चलैत अवस्थाबला (चलती गाड़ी) 2. कीर्त्तनमे समापन कालक त्वरा गति

चलनसारि- लोक-व्यवहारमे प्रचलित/प्रचलन

चलना- पैघ-पैघ भूरबला चालनि, मोट अन्न चालऽबला चालनि

चलनियाँ-चालनि

चल-बिचल- घुसुक-फुसुक, हेर-फेर

चलह-प्रचलह/चलः-प्रचलः -प्रस्थानक अन्तिम क्षण, विदा काल

चलाकी-धूर्त्तता

चलाचली- 1.प्रस्थानक हेतु तैयारी 2. मृत्युक अन्तिम क्षण

चलितगरि-चरित्रहीना स्त्री

चलित्तर-चरित्र, आचरण, स्वभाव

चसमिलिया- चसमा पहिरनिहारि स्त्री (उपहासमे)

चसमुद्दीन- चसमा पहिरनिहार पुरुष (उपहासमे)

चहुँच्चा- साढ़े चारिक खाँत

चहेटब-खेहारब

चाउन्ह/चाउन्हि- आँखि अन्हरायब, मूर्च्छा, चन्नर लागब

चाकरी-नोकरी (*अधम चाकरी भीख निदान-डाक*)

चाकी- *अपि* च- जाँत बैसयबाक लेल दौराक आकारक माटिक बनाओल आधार-उपकरण

चाङुर- *अपि* च- 1. हाथक आङुरक नकुसी जकाँ मोड़ल रूप, 2. कुकुर-बिलाड़ि आदि शिकारी जन्तुक पैरक तेज नखयुक्त आङुर, चिड़ैक पैर

चाँछपर चढ़ब/चढ़ायब- नहि सम्हरऽबला काज ठानब/ठनबादेब

चाट-*अपि* च- लति, हिस्सक, चसक

चाटी-पाटी- सिङार-पटार, साज-सिङार

चाँड़-*अपि* च- एकटा जातीय उपाधि

चातर-*(प्रा.) अपि* च- न्यून धातुपर चढ़ाओल गेल सोना-चानीक पानि (*चातर चकमक दिन दस रहई-जगजोति*)

चानक-क्षतिक अभिज्ञान, सतर्कताक चेतना, ज्ञान

चान्द्रपक्ष- शुक्लपक्ष, इजोरिया पख

चापत-पीचि कऽ समतल कयल, दे. चपता

चाँपा (पड़ब)- वाहनक चक्कासँ पिचा जायब

चाय-पर्वतीय प्रदेशमे उत्पादित एक प्रकारक गाछक पत्ती जकरा काढ़ा जकाँ बनाय पिउल जाइछ, चाह

चाल-*अपि* च- अधिक संख्यामे छोटकी माछक जलक सतहपर कूदब/डेब देब, (*टेङरा पोठी चाल दिअय, रोहुक सीर बिसाय*)

चाल-चूल-निःस्तब्ध स्थान/आवासमे लोक-संचारक आभास

चाली-*अपि* च- 1. बालु चालऽबला चालनि, खड़चाल 2. ईंटक देबाल जोड़बामे राज-मिस्त्रीक काज करबाक लेल ओ

जोड़ाइक सामान रखबाक लेल बाँसक फट्ठासँ बीनल मचान सन ठाठ

चाहब-*अपि* च- 1. चीरब, फाड़ब 2. कागतकेँ (भरना, तमस्सुक आदि दस्तावेजकेँ निष्प्रभावी बनयबा लेल आंशिक रूपसँ) चीरब

चिआरब- दुइ संलग्न वस्तुकेँ दुइ विपरीत दिशामे खीचब, (*आँखि चिआरब, दाँत चिआरब, टाङ चिआरब*)

चिकनफट- नीके-निकुत भोजन अथवा नीके-नीक परिधानक प्रति अत्यन्त आसक्त

चिकनायब- 1. चिक्कन बनायब 2. शरीरक अंग हल्लुक सन सूजब

चिकनी- *अपि* च- चाउरमे लागऽबला एक प्रकारक कीट, एक प्रकारक सूँड़ा

चिकरा-भोकरा- सामान्यो बातपर खूब जोर-जोरसँ बजनिहार, (*चिकरा-भोकरासँ लागी ननमुँहासँ नहि लागी*), स्त्री. चिकरी-भोकरी

चिकसा-*अपि* च- द्रे. चिक्कस

चिकाइट-कड़ूतेल / तीसीतेल / अण्डीतेलक नीचाँमे जमल मैली /गादि/काटि, तेलक बेसी संसर्गसँ वस्त्रपर जमल मैल

चिक्कस- रोटी/सोहारी पकयबाक लेल अन्नकेँ पीसि कऽ बनाओल चूर्ण, आँटा [*क.को. चिकस- 'सोहारीक हेतु पीसल चाउर'- पीसल आन अन्नकेँ की कीहल जाय ?*]

चिक्का पार- अल्प आयासमे पैघ कार्यमे आकस्मिक सफलता-प्राप्ति

चिखना-ताड़ी-दारू पीबामे संग-संग किछु-किछु खाइत रहबाक लेल चहटगर जलखै

चिचोढ़ी- चओरहा खेतमे जनमऽबला एकटा घास, चिचोढ़क लघु प्रजाति, (*चऽरक सम्बन्धे चिचोढ़ मामा*)

चिजुआ/चिज्जू- धिया-पुताकेँ भुलयबा लेल देल जायबला नीक खाद्य वस्तु (*चीज> चिज्जू> चिजुआ*)

चिटचिट- तेलक विकृतिसँ भेल लसलस

चिटचिटाइन-विकृत तेलसँ उत्पन्न गन्ध वा स्वाद

चिट-पुरजा/चिट-पुरजी (अं. Chit)- परीक्षामे चोरी करबाक लेल उत्तर लिखल छोट-छोट कागतक टुकड़ी सब

चिटिङबाज(अं. Cheating+बाज)-ठक, फरेबी, जालसाज, जालिया

चिटिङबाजी- ठकपनी

चिड़िया-1. तीन पातक कारी छापबला तासक पत्ती, Club 2. चिड़ै

चिड़ैया/याँ- 1. पक्षी, चिड़ै 2. एकटा अनेरुआ साग

चितपट होयब- कटु बात सुनि उत्तेजित होयब/ छिलमिलायब

चितायब- गुदानब, टेरब, धाख मानब, मोजर देब, धाख मानब (*उद्धत सन्तान अपन मायो-बापकेँ नहि चितबैत छैक*)

चित्त-*अपि* च- उतान, चितङ

चित्ती (मारब)-*अपि* च- पानि/पसेनासँ बेसी समय धरि सिमसिम रहने कपड़ापर पड़ल बिन्दु सन-सन कारी दाग, फलपर पड़ल कारी दाग

चिनियाँ- चिन्नी सन मिठ स्वादबला, केराक एक प्रभेद

चिनुआर-*अपि* च- भनसाघरमे भानस हेतु बनाओल चबुतरा

चिन्नी-मीलमे पेड़ल कुसियारसँ बनल श्वेत शर्करा, चीनी

चिन्ह-पहचिन्ह- परिचय-पात, चिन्हारय

चिन्हान-परिचय

चिन्हास-चिन्हबाक आधार, चेन्ह

चिभुटब- कसि कऽ तेना सटल/पकड़ने रहब जे छोड़ौनहुँ नहि छूटय

चिमचिमाइन- अशुद्ध वा घटिया तेलमे बनल खाद्य पदार्थक गन्ध/स्वाद

चिम्मट-चिमाटि, चिम्मड़

चिरचिरी/चिरचीरी-*अपि* च- टेढ़-टूढ़ पाड़ल निरर्थक डड़ीर/रेखा

चिरतन- दे. चिड़िया

चिराइ-*अपि* च- लकड़ी चिरबाक मजदूरी

चिरान- चीरल लकड़ी

चिराँइन- केश/मांस जरबाक उत्कट गन्ध

चिर्री-चिर्री- छोट-छोट टुकड़ीक रूपमे फाटल/फाड़ल/चीरल कपड़ा वा कागत आदि

चिर्रीचोथ- गुदड़ी जकाँ अत्यन्त फाटल (वस्त्र-कागत)

चिलकाउरि- नवजात शिशुबाली स्त्री

चिलमिलिया- चऽर-चाँचरमे उत्पन्न एकटा जलीय घास, चिलमिल

चिल्लर-1. ढील सन आकारक श्वेतवर्णक एकटा स्वेदज कीट 2. रेजकी, भजओखा, खुदरा, अल्प मूल्यक मुद्रा

चिल्ह/चिल्होरि- एक पक्षी विशेष, चिलहोरि

चिल्हो-सियारो- दे. चुल्हो-सियारो

चीरक- चिरायल अंश, संलग्न फाटल भाग, चीरल होयबाक चिह्न

चीरा-*अपि* च- औन्हा घाओक पीज बहयबाक लेल नहरनी वा आन तेज धारबला उपकरणसँ देल गेल चिरक्का, पओ

चीरापट्टी- जमीनक नामा-नामी विभाजन

चुक- *अपि* च- अत्यन्त अम्मत/खट्टा

चुकसी-देहक मोटाइसँ कम फैल अंगा, देहमे पहिरबामे सकसक, *वि.* फल्लर

चुक्का- माटिक लघुपात्र जकर पेन सङ्कीर्ण पेट पसरल आ आङुर बराबरि मुँह होइछ, डिबिया

चुक्कू-मुक्कू-ठेहुन मोड़ि जाँघसँ छाती ओ पेट सटा कऽ बैसब, बैसबाक एकटा आसन, चुक्की-माली

चुचकसना- स्त्रीक अन्तरंगवस्त्र, कंचुकी, (*अं.*ब्रेसरी/ब्रा)

चुचुहिया- एकटा चिड़ै जे रातुक अन्तिम पहरमे चू-चू-चू कऽ बजैछ, चुहचुहिया

चुटकुल- पानक जोड़ा पात सन काठक पातर तकथीक गाँथल जोड़ाक एकटा वाद्य जकरा मध्यमा आङुरक दुनू दिसक गस्सामे दबाय परस्पर ठोकर मारि बजाओल जाइछ

चुटचुट- जल्दी जल्दी

चुट दऽ/सँ- तुरन्ते

चुटपुटिया- एक प्रकारक बट्टम

चुटीमार/चुट्टीमार-चुट्टी द्वारा खायल बाँस/गाछ

चुड़कुट्टी- चूड़ा कुटबाक क्रिया

चुड़लाइ- भूजल चूड़ाकेँ गूड़क पाकमे विशेष प्रकारेँ सानि कऽ बनाओल लड्डू

चुड़िहारिन- चूड़ी बेचनिहारि स्त्री

चुड़ैल-स्त्री-प्रेत

चुनन-सुन्दर बनयबालेल वस्त्रकेँ घोकचा कऽ बनाओल लहरदार आकृति

चुनमुन्नी- ललमुनियाँ, बगड़ी इत्यादि छोटकी चिड़ै

चुन्नी-चुन्नी- पुरान भेलापर वस्त्रक तानी-भरनीक सूत खिया गेलासँ जाल सन बनि गेल, छिद्रयुक्त स्थिति

चुमकी- फुरती, तेजी, तीव्रगतिसँ अंग संचालनक गुण

चुमहब-हाथ नमराय कोनो वस्तुकेँ पकड़ि/छूबि सकब

चुम्मक/चुम्मुक- लोहाकेँ आकर्षित करबाक गुणसँ युक्त लोहा, चुम्बक

चुम्हब- दे. चुमहब

चुरकुट्टी- दे. चुड़कुट्टी

चुराठ- चुरयला/चोटलगलासँ भेल आंगिक क्षत

चुल्हो-सियारो- जितिया व्रतकथाक दूटा (पक्षी ओ पशु) पात्र

चुलबुलिया- चंचल नेना

चूँ/चूआँ- गरमीक समयमे बाधमे पानिक हेतु खुनल गेल अस्थायी छोट कूप, कुम्हार द्वारा माटि खुनि कऽ बहार कयलासँ बनल गहींर खाधि, कुइयाँ, चुइयाँ

चूम्हब- दे. चुमहब

चेकी चढ़ायब- मिथ्या दोषारोपण करब

चेठनगर- बात नीक जकाँ बूझऽबला वयसक, चेष्टगर, फुर्तिगर, किशोर, चेतनगर

चेथरी- अत्यन्त फाटल कपड़ा, गुदड़ी, (*गुदरी-चेथरी*)

चेरी-*अपि* च- लकड़ीक छोटकी चेरा, खुहरी

चेलबा- चेलाक तीर्यक रूप

चेलबाहि- चेलाक काज, अनुगामिता

चेलाचाटी- चेला ओ तत्सदृश अन्य अनुगामी

चेली- शिष्या

चेहैं-चेहैं- पाड़ाकेँ थिरायल महिसिक लग सोर करबाक शब्द

चैआ/चैयाँ- चाँइ, उचक्का

चैतबारनी- दे. बारनी

चैली- खुहरी

चोइआ/याँ- घाओ, घमौड़ी, सूजन आदिक छुटलाक बाद ओदरैत अत्यन्त पातर चमड़ीक टुकड़ी सब; भुन्ना वा छोटका प्रजातिक कतोक माछक देहक लघु आ पातर खोँइचा

चोकड़-*अपि* च- चिक्कस चालि कऽ बचल मोट दोखड़ा अंश

चोखगर-तेज धारयुक्त, खूब चोख

चोँच-*अपि* च- काठ वा बाँसक टोनक जड़ि/अन्तिम भागमे विषम रूपमे बढ़ल अंश

चोँचा-*अपि* च- 1. दरजी चिड़ै (चोँचा चिड़ै) द्वारा बनाओल खोँता जे गाछक डारिक फुनगीसँ लटकल रहैछ 2. बीया लेल जुआयल घिउरा-झिङ्गुनीक सुखायल अवशेष

चोट-*अपि* च- तुरत असरि करऽबला दबाइक खोराक

चोटगर- 1. अत्यन्त तेज बरखा 2. अत्यन्त उपयुक्त स्थान 3. अत्यन्त उपयुक्त कथन

चोटपनी- चोट्टाक आचरण, दे. चोट्टा

चोटहिल-आहत

चोटाह-*अपि* च- चोटसँ आहत (साप आदि)

चोटी- 1. पर्वतक शिखर 2. सबसँ ऊँच स्थान 3. स्त्रीक केशक अन्तमे संलग्न कयल जायबला फुदना लागल डोर (चोटी बान्हब)

चोट्टहि- तुरन्त, अविलम्ब, पिठियाठोक

चोट्टा- उचक्का, दुश्चरित्र

चोट्टे- दे. चोट्टहि

चोथब-*अपि* च- चिड़ैक पाँखि आ रोइयाँ नोचब

चोन्ह/चोन्हा-1. एक आँखि छोट दोसर पैघ, पपनीसँ झँपायल आँखि 2. ओहन आँखिबला मनुक्ख

चोन्ही-चोन्ह आँखिबाली स्त्री

चोप-*अपि* च- भोजनक आवश्यक परिमाण (*चोप लगा कऽ खायब*) 2. एक प्रकारक

लत्ती जकर डाँट मजबूत होयबाक कारणे बन्धनमे उपयोगी होइछ (सूपक मर्रामे चोपक बन्हन देल जाइछ)

चोरकाँटी- छोट आकारक एकटा खढ़ जकर मज्जर (फूल) कपड़ामे काँट जकाँ गँथा जाइछ, छिमड़ा नामक खढ़

चोरकोड़ो- बान्हल चारमे बादमे घुसियाओल कोड़ो

चोरघटिया-चोर सभक अड्डा, चोरक लेल सुविधाजनक सुनसान स्थान, चोर द्वारा छीन-झपटबला स्थान

चोर-मोट- चोराओल वस्तुक मोटा सहित चोर, (*चोर-मोट बन्हनहि पाबी*)

चोरिपनी- चोरि करबाक लति/स्वभाव

चोरौका-सबसँ नुका कऽ राखल, चोरौआ, चोरिसँ प्राप्त

चौआ- चिबाबऽबला दाँत, चौ, [क.को.- *कल्ला -अर्थ असंगत*]

चौक-*अपि च*- व्यवस्थित रूपमे कयल गेल ढेरी, थाक, टाल

चौकीतोड़ नाच- एहन तीव्रगतिक नाच जाहिमे पैर पटकलासँ चौकी टुटबाक सम्भावना, उत्तेजक नाच

चौकोरा-चारि कोरबला काँटी

चौगान- सब दिससँ देखार स्थान, प्रमुख स्थान

चौगामा-चारि गामक सन्धि स्थल, चारू कातक गाम

चौगुन/चौगुना- कोनो परिमाणक चारि बेरक योग, चतुर्गुण

चौघटिया- चारिटा घाटबला पोखरि/पैघ इनार, (*बखरी-सलौनाक चौघटिया इनार प्रसिद्ध अछि*)

चौघारा- चारूकात घर ओ बीचमे आङनबला हवेली

चौठी- *अपि* च- ताड़ीक एकटा नपना

चौड़चन- भादव शुक्ल चतुर्थीकेँ होअऽबला चन्द्रमाक पाबनि

चौड़चन्ना- 1. चौड़चन सम्बन्धी 2. चौड़चन पाबनिक दोसर दिन विद्यालयक चटिया सब द्वारा सहपाठी सभक घर-घर जाय दुकठिया बजबैत गीत गाबि कऽ गणेश पूजाजन्य राशि जमा कऽ गुरुजीकेँ अर्पित करैत छलनि। कतोक दशक पूर्व ई परिपाटी लुप्त भऽ गेल।

चौड़ाइ- चाकर दिसक पसार/विस्तार, चकराइ

चौतरफा/चौतरफी- चारू दिस, चतुर्दिश

चौतार(प्रा.)[1]-पैघ अधिकारी, प्रमुख व्यक्ति, (*बाप गदहिया पूत चौतार*)

चौतार[2]- हुथान/हुथानी, घर्षण, फज्झति

चौतारब- समक्षहिमे आलोचना वा निन्दा करब, हुथब, धूसब, फज्झति करब, [क.को. *चारू दिससँ घेरि पकड़ब-असंगत अर्थ*]

चौपहरा- चारि पहरमे सम्पन्न होअऽबला एकटा धार्मिक नाट्य रूपक/नाच

चौपहिया- चारि पहियाबला गाड़ी/मोटर गाड़ी

चौपाल- एकटा जातीय उपाधि

चौबटिया- चारि गोट बाटक मिलन स्थल, चौबट्टी, चौक

चौबन-*अपि* च- गुणन चिह्नक आकारमे चारि भत्तासँ देल गेल बन्धन

चौबन्ना- अङरखा

चौबन्ह- द. चौबन

चौबर-कोनो परिमाणक चारि बेरक योग, चौगुन, चारिगुना

चौमथ-चारि गामक सीमाक सन्धिस्थल, [क.को. *चारू दिस माथ घुमाए देखबाक जोग स्थान-अमान्य*]

चौमेड़/चौमेड़ा- चारि गोट आरिक सन्धि-स्थल

चौर कऽ- दे. चौरि कऽ

चौरट्ठा- चाउरक चिक्कस, चाउरक दोखड़ा चिक्कस

चौरायब- धानक सीसक दूधक चाउर रूप बनब

चौराहा- चौबट्टी, चौक

चौरि कऽ (बान्हब)- कसि कऽ (बान्हब), मोटाकेँ आगाँ-पाछाँ ओ दहिना-वामा डोरी लेपटाय कसि कऽ बान्हब

[छ]

छओँड़- स्वस्थ सुगठित देहबला नवयुवक

छकछकायब- हल्लुक ज्वर होयब

छकड़ दादा- लकड़दादाक बाप, अतिवृद्ध-प्रपितामह, छठम पीढ़ीक पूर्वज

छकड़ी-*अपि* च- छओ गोटे द्वारा खेलायल जायबला तासक एकटा खेल

छकबा-पटबा (उठब)- अनधुन मारिसँ बहुतो लोकक आहत होयब, संक्रामक रोगसँ बहुतो लोकक दुखित पड़ब

छकसँ भक (होयब)- असन्तोषजनक परिणाम

छकित-(चकित)- मुग्ध, आश्चर्यित

छगरा गोत्र- वर्णसंकर, रक्त-सम्बन्ध किंवा सगोत्रमे भेल विवाहसँ उत्पन्न लोक, स्वजनागामीक सन्तान

छगुनब- *अपि* च- सोचब, सोचमे पड़ब

छछकार/छछकाल- निरर्थक पानि हेरौनाइ

छछनर/छछनल- ओछ(वस्त्र), कृपण, उचितोसँ न्यून (देब-लेब), न्यून (व्यवहार)

छछरिया काटब- मलत्यागोत्तर शौच हेतु माटिपर पोन रगड़ैत घुसकब

छज्जी- पक्का मकानमे देबालसँ बहरायल छत वा छाजन

छठियाही-छठि पाबनिसँ सम्बद्ध (पोखरि)

छड़क्का-नमहर छड़, छड़ सन नाम, कुसियारक डाँट

छण्ठी- हीन प्रजातिक पशु

छतरी-*अपि* च- क्षत्रिय, राजपूत जाति

छतिफट्टू- दुखसँ तुरन्त कातर भेनिहार, कोँढ़फट्टू

छनमतरी/छनमतिया- अस्थिर बुद्धिबला, क्षणहिमे अपन विचार बदलनिहार

छपकी/छपकुइयाँ- कम उँचाइक चारबला घर जाहिमे निहुरि कऽ पैसल जा सकय

छपछप-*अपि* च- घुट्ठीसँ नीचाँक पैरक अंश डुबबाक जोग पानिक सतह

छप दऽ/सँ- 1. पानिमे अकस्मात् खसबाक ध्वनि 2. धारबला हथियारसँ एके प्रहारमे काटि देबाक ध्वनि

छपरिया- छपरा जिला/सारण प्रमण्डलक निवासी/ बोली

छपाक दऽ- अकस्मात् पानिमे जोरसँ खसबाक ध्वनि

छपाक-छपाक- पानिमे निरन्तर जोर-जोरसँ कुदबाक ध्वनि

छप्पा- *अपि* च- छिट्टामे कसि कऽ राखल घास-भुस्साकेँ उनटाय लगाओल कूड़ी

छबाड़ी/री- नेना, धिया-पुता

छमरछैयाँ- किशोरी/युवती द्वारा प्रदर्शनार्थ विभिन्न काजमे अनावश्यक उत्साह/सक्रियता

छयमान- निरन्तर छिजैत गेनिहार, क्षयिष्णु, क्षयमान श्रीहीन

छयाह- दे. छाया

छरकी-*अपि* च- मध्यम उँचाइक बान्ह, धूर

छरपट्टी (लागब/छूटब)-आशंकायुक्त व्यग्रता

छरपिटायब- निर्दयतासँ सटकासँ पीटब

छरहर-*अपि* च- पातर/तरल(खीर/खिच्चड़ि)

छर्री- गिट्टीसँ छोट आकारक पाथरक टुकड़ी

छलमल करब- छोटका माछ सभक चंचल होयब

छलिया- सुपारीक एक प्रकार

छल्ली- बोझ/ईंटाक थाकमे देल गेल तऽहपर तऽह, थाक

छहाछति- साक्षात्, प्रत्यक्ष, समक्षमे

छहोरा- खजूरक जातिक एकटा फलक सुकठी, छोहारा

छाइ-*अपि* च- एकचारीक अस्थायी चार, (*जेहन जकर छाइ-छप्पर तेहन तकर खड़िका*)

छाँइ-छाँइ- अधिक पियास लगैत रहने पानि पीबाक तीव्र वेग

छाँइ-बाँइ- नष्ट-भ्रष्ट, राइ-बाइ, क्षत-विक्षत

छानब-*अपि* च- गृहोपकरण (पौती, मौनी, कोठी, सुजनी आदिक) बनायब आरम्भ करब

छाया *अपि* च- मृतकक श्राद्धक बाद पहिल बरखक प्रत्येक मासमे पड़ऽबला मृत्युतिथि जाहि दिन मृतकक निमित्त ब्राह्मण-भोजनादि कराओल जाइछ, [*एहि अर्थक हेतु, क.को. कहैछ- See 'क्षयाह'- किन्तु प्रविष्टिमे 'क्षयाह' अछिहे नहि*]

छालती (साड़ी)- कामदार/कसीदा कयल (साड़ी)

छिच्छा-स्वभाव, आचरण, प्रवृत्ति

छिछरी-पटिया- चिन्ता आ व्यग्रतासँ पूर्ण क्रियाशीलता, औनी-पथारी

छिछलब-वेगसँ ससरब

छिछलाह-पिछड़ाह

छिजाओ- छिड़िया कऽ नष्ट होयब, बोहायब,

छिटकायब-*अपि* च- माल-जालक डोरी खोलब, डोरीक बन्धन खोलब

छिटकिल्ली- घरक भीतरसँ केबाड़केँ बन्द करबाक लेल लोहाक किल्ली

छिड़ियायब-*अपि* च- मनाओन करायब, आग्रहकेँ उपरका मनसँ अस्वीकार करब

छित्ती-बित्ती- छिड़ियायल, छीटल-छाटल

छिनगब- चौंकब, शंकित होयब, मनमे ठेहकब, [*क.को.मे देल- See छिटकब-एतऽ असंगत*]

छिनरझप (खेलायब)- व्यभिचार हेतु विभिन्न छद्म/ गुप्त आचरण

छिना-छोड़ी- उचक्का द्वारा राही-बटोहीक सामान छीनि कऽ पड़ा जयबाक वृत्ति

छिना-झपटी- 1. छिना-छोड़ी 2. दुइ वा अनेक व्यक्तिमे कोनो वस्तु छीनि लेबाक परस्पर झगड़ा

छिपाठब- छीप काटब, छीप परसँ काटब

छिप्पी- सराइ, छिपलीयोसँ छोट पात्र

छिमड़ा- 1. एकटा खढ़ जकर मञ्जरक फूल कपड़ामे गथि जाइछ, चोरकाँटी, 2. पाकल राहड़िक सुखायल छिम्मड़ि/छिम्मड़िक खोइया

छिलका-*अपि* च- खोँइचा

छिलमिलायब- आकस्मिक तीव्र पीड़ासँ शरीरक चंचल भऽ उठब, व्यग्र भऽ उठब

छिलमिल्ली-उत्कट व्यग्रता

छिल्लनि-कोनो बातपर निरर्थक तर्क-वितर्क

छिल्ला-*अपि* च- रन्दा अथवा बसुलामँ छीलल-काठक पातर तह

छिहुलब-अकस्मात् अंग-संचालन संग चौँकब

छीन-छोड़/छीन झपट- बाट-घाटमे उचक्का/ गुण्डा द्वारा लोकक वस्तु-जात वा टाका-पैसा छिननाइ

छीप- *अपि* च- सराइ, छिप्पी, छिपली

छीपब- अकस्मात् अपना दिस वा पाछाँ दिस घीचब

छीपा- थारी

छीया- *अपि* च- शिशुक मल, गूँह

छुआछन- भारमुक्ति, दायित्वसँ मुक्ति

छुच्छा- दरिद्र, निःस्व, खगल, जकरा किछु नहि छैक, (छुच्छाकेँ के पुच्छा ?)

छुछनरि/छुछनरिया- क्षुद्र बुद्धिबाली, ओछ प्रकृतिबाली, छुछुन्नरिक स्वभावबाली (गारि)

छुछुआयब- किछु-किछु खायबालेल खाद्यवस्तुक सन्धानमे रहब, स्व-रुचिक खाद्यवस्तु लेल सतत जीह ललचाइत रहब/ मन बौआयब

छुछुनराहा/छुछुनराही/छुछुनरा/छुछुनरी- छुछुन्नरक स्वभावबला व्यक्ति (गारि)

छुटानि- मुक्ति

छुट्टम-छुट्टा- सम्बन्ध-विच्छेद

छुट्टा- अखीनसँ इतर अन्न (गहूम-चाउर आदि)

छुट्टा खजाना-अनुशासनहीन, उत्तरदायित्वहीन, निर्बन्ध

छुट्टा-छुट्टी-सम्बन्ध-विच्छेद

छुट्टी (होयब/करब)- *अपि* च- नष्ट होयब/करब

छुतहरनी- अपरिष्कृत वेश-भूषाबाली स्त्री

छुतहरिया/छुतहरी- व्यभिचारिणी (गारि)

छुतिया छोड़ायब- कर्त्तव्यक देखौआ निर्वाह करब

छुच्छर-अधम, नीच स्वभावक व्यक्ति, नगण्यो वस्तुक प्रति लोभ रखनिहार, छोटो सन वस्तु चोरा लेनिहार, क्षुद्र

छुद्रघण्टी- छुच्छर स्वभावक लोक

छुधरपनी- नीचता, छुच्छर स्वभाव

छुधराहा(पु.)/छुधराही(स्त्री.)- छुच्छर स्वभावक लोक

छुबुधि- क्षोभ, आश्चर्य,

छुरछुरी/छुरछूरी- एक प्रकारक रबाइस

छुरमुत्ती- छने-छने मुतबाक बिमारी, भयसँ बेर-बेर मुता जायब

छुरिया-छूरी सन पातर आ नाम(नाक, देह)

छुरुक्की- खूब पातर आ नाम, एकदम सोझ-सोझ

छुलकब- भयसँ कने-कने लग्घी होयब

छुलकल- डरेँ अविलम्ब (कोनो काज करब) दे. छुलकब

छुलमुत्ती- दे. छुरमुत्ती

छुलाछनि- क्षुद्र स्वभावबाली स्त्री, निन्दनीय आचरणबाली स्त्री लोभी स्वभावबाली

छुलुकमुत्ती- दे. छुरमुत्ती

छुहक्का उड़ब/छुहुक्का उड़ब- तुरन्ते बिका जायब

छू-छाप- अकारण छुबैत रहब

छेकनी- पक्का मकानक देबाल सभक संरचना निर्धारणार्थ बैसाओल गेल ईंटक पहिल रद्दा

छेँट- *अप चि*- अवशिष्ट अंश, बचल भाग

छेदब- *अपि* च- लोह-काठ आदिमे भूर करब

छेद बहकब- अदनीयो सन बातक रोख लागब

छेदा- भूर

छेना- दूधक फटोन

छेना जिलेबी- छेनासँ बनल एकटा मधुर

छेनी-1. लोह कटबाक एकटा औजार 2. आम इत्यादि फलक खोँइचामे पड़ल कारी-कारी दागक बिमारी, छोँड़ी, भीजल वा सिमसिम कपड़ामे पड़ि गेल कारी-कारी दाग, दे. चित्ती

छेरकट- न्यून कोटिक कारणे विकृत आकार

छेरनी/छेरबाहि- जल्दी-जल्दी पातर दस्त होयब

छेरापुत- नवजात शिशु जे बेसी छैरैत हो, (*छेरापुत बछेड़ा होअय*)

छेहा- अमिश्रित, बिनु फेँटल, एकहि प्रकारक (*अन्न-जेना छेहा गहूम, छेहा बूट, छेहा सरिसो*)

छोच/छोँच- मलत्यागक बाद पानिसँ भलमार्ग धोनाइ, शौच

छोचायब/छोँचायब- बच्चाकेँ छोच करायब

छोटकन/छोटकिन-सन्तानमे सबसँ छोट, भाइमे सबसँ कनिष्ठ

छोटकिनमा/छोटकिनमी- 1. सन्तानमे सबसँ छोट (बेटा/बेटी) 2. छोट आकारबला (पात्र/वस्तु)

छोटकी-वयसमे छोट (स्त्री), छोट आकारक

छोट-खाँट-छोट आकारक

छोटपैका- छोट/निम्न कुल/वंशक

छोप-*अपि* च- आड़ा/हत्तापर नवसँ चढ़ाओल माटिक तह

छोरी- डोरी इत्यादि नाम वस्तुक अन्तिम अंश, ओर, छोर

छोला-फुलाओल बूट वा मटरकेँ मसल्ला दऽ कऽ बनाओल चहटगर रसदार व्यंजन

छोहगरि- आवेश कयनिहारि, स्नेहमयी, ममत्व रखनिहारि

छोहनि- मूड़/मिरचाइ टुटबाक तोड़/आवृत्ति

छौ(छउ)रझँप्पी- सारा झँपबाक कर्म, अस्थि संचयक कर्म

[ज]

जऽर- 1. ज्वर 2. नार-पुरैन 3. दे. जओर

जऽरे- दे. जओरे

जओर- एकत्र, एकट्ठा, जमा, संग, समेटल

जओरे-सङ-सङ

जक[1]- ढेरियायल, ढेरी

जक[2] (*अं.*)-भारी वस्तुकेँ अलगाबऽबला यन्त्र (Jack)

जकती- जकाँ

जकब- अँटाबेससँ अधिककेँ जेना-तेना ढेरी लगा देब, थकिचायब

जकित- जकाँ

जखनि/जखनी- जखन

जग-*अपि* च- जगह, ठाम

जगजानिस- विख्यात, सर्वज्ञात, प्रसिद्ध

जगदिप्पी- लुतजरियाहि, ढबाढुबी लागौनिहारि

जगमूड़न-कर्णवेध-चूड़ाकरण सहित बालकक पहिल बेर केश काटल जायब, यज्ञ-विधान सहित मूड़न

जगरजाठि- *अपि* च- बेसी वयस भेलहुपर अविवाहित (निन्दामे)

जगुन/जङ- ठाम, जगह, जग

जचना/जँचना- यातनापूर्ण स्थिति

जट- जटा-जटिन नामक गीतिमय लोकनाट्यक पुरुष-पात्र [*क.को. एक प्राचीन नर्त्तक जाति-नितान्त भ्रामक, कपोल-कल्पित*]

जट-जटिन- दे. जटा-जटिन

जटही- 1. बाङक एक प्रकार जकर बीया सब एक दोसरासँ जुटल रहैछ 2. प्रत्येक गीरहपर पात ओ कनोजरि सभक जटा सन गुच्छबला भाङ

जटा-जटिन- मिथिलाक स्त्री वर्गक एकटा समूह नृत्य-नाट्य जाहिमे स्त्रीक एक समूह-जटा ओ दोसर समूह जटिन बनैछ

जटाधर- महादेव

जटाधारी-*अपि* च- महादेव

जट्टा- जटा

जड़ाउर- वर ओ कनियाँकेँ विवाहक पहिल वर्षक जाड़ मासमे उभय पक्ष दिससँ परस्पर पठाओल जायबला भार-दोर सहित जाड़मे पहिरबा-ओढ़बा योग्य वस्त्रादि [क.को. *जाड़ कटबा लए देल गेल भत्ता/ओढ़ना- अर्थ अनुमानसँ कल्पित]*

जड़ैया/जड़ैया बोखार- जाड़क संग भेल ज्वर, लागि, शीत ज्वर, मलेरिया

जतऽ- जाहि ठाम

जतपुत- जाउतक पुत्र/बेटा

जतपुतोहु-पतिक भाइक पुतोहु, जाउतक पत्नी

जतान-बेसी काल धरि जतनाइ, बहुत बेसी भारक दबाब

जत्ती/जत्ते- जतेक

जदि- जँ, यदि

जनतब/जनतबे- सूचना, जानकारी, अभिज्ञान, जानल बात [क.को. *'जानतब, जानतबे'क अर्थमे निर्देश- 'See जनतब' किन्तु प्रविष्टिमे एकर अभाव*]

जनपिट्टा- दे. जनिपिट्टा

जनम-*अपि च*- जीवन, जिनगी (*भरि जनम, जनम भरि; जनम अवधि हम रूप निहारल-विद्यापति*)

जनम-आन्हर- जन्मान्ध, जन्महिसँ दृष्टिहीन

जनमाहु- जन्मजात, जन्महिसँ; जीवन भरि, (*जनमाहु लेबह की बरखाहु*)

जनमौटी-*अपि च*- गामक चौकीदार द्वारा थानापर देल जायबला सूचनामे नव जनमल शिशुक संख्या-सूचना

जनानी-*अपि च*- पत्नी, सामान्य स्त्री, मौगी

जनारो-*अपि च*- जानवर, जन्तु, (*जस जनारो तस गड़गड़ी*), [क.को. *साधु-भोजन*]

जनिपिट्टा- बोहु द्वारा पीटल गेनिहार पुरुष, मौगी द्वारा पीटल जाय बला मर्द, स्त्रीक द्वारा पुरुषकेँ देल जायबला एकटा गारि

जनौआहल- उपनीत, जकर जनौ भऽ गेल हो

जनौढ़ी- जन रूपमे काज कऽ कऽ सधा देबऽबला कर्ज

जन्मान्ध-जन्महिसँ आन्हर

जबद-अधिकार, दाबी, रोआब, बलवत्ता; कानून द्वारा अधिकारमे लेब

जबदाह- 1. अस्वास्थ्यकर स्थान 2. भरिगर; (*पाहुन छौं जबदाह बरख दिन टिकैं लय*)

जबन्दभारी- अत्यन्त भारी

जबरा- धातुक बरतन-बासन रखबालेल भरि डाँड़ ऊँच चाकर मुहबला माटिक चौकोर कोठी

जबार- *अपि च*- भोजमे अन्य गामक परम्परया नोतल जायबला सवर्गीय लोक

जबारी- भोज-भातमे अन्य गामक सवर्गीय लोकसँ नोत-हकारक पारम्परिक सम्बन्ध

जबुट्टा- जओ एवं बूटक मिश्रण

जबूरा- कठिन, भारी, बेसम्हार

जब्बर- जोरगर, बलगर

जम-यम, मृत्युक देवता, मृत्यु-दूत

जमकठ- जामुनक काठसँ बनल इनारक देबालक बलयाकार नेओँ, [क.को. *'जमुअठि'क अर्थ हेतु कहैछ See 'जमकठ'। मूल प्रविष्टिमे 'जमकठ'क बदलामे अछि'जमकाठ'। तुलना हेतु निर्दिष्ट शब्द कहल गेल अछि- 'जमुआठि' जे प्रविष्टमे अछिए नहि*]

जमक दिवारी-दीपावलीक पूर्व दिन जहिया सन्ध्या काल गोनौड़ाक ढेरीपर गोबरक दिपली लेसि कऽ राखल जाइछ

जमघट- *अपि* च- दे. 'जमघण्ट'

जमघण्ट- प्रेतघट, अस्थि संचयसँ क्षौरकर्म दिन धरि प्रेतकेँ नित्य जल देबाक हेतु टाङल गेल माटिक अध:छिद्रयुक्त जलपात्र

जमदिबारी- दे. जमक दिबारी

जमनीपट्ट (प्रा.) -नाट्यमंचक पर्दा

जमराज- मृत्युक अधिदेवता

जमाजुट- अकस्मात् बहुत लोकक एकठाम एकत्र होयब

जमाति- *अपि* च- नाटक/रामलीलाक अभिनय-वृत्ति कयनिहारक दल

जमीन-जथा- भू-सम्पति एवं अन्य धन

जमौट/जमौठ- दे. जमकठ

जमौड़ा- बढ़ा-चढ़ा कऽ कहल जायबला आत्मप्रशंसा/आत्मीय जनक प्रशंसा

जयन्ती- *अपि* च- देवीपक्षमे सविधि जनमाओल गेल जओकेर डिब्भी

जरती-*अपि* च- अन्न पीसल गेलापर आँटाकेर तौलमे भेल कमी, सुखन; रौदीसँ फसीलक सुखनाइ

जरनियाह/हि-ईर्ष्यालु

जरब-*अपि* च- शरीरक भितरिया चोट

जरसी- *अपि* च- संकर प्रजातिक एक गाय जे बड़ दुधगरि होइछ

जराइन- *अपि* च- ज्वरक प्रभावेँ भेल मुँहक स्वाद/गन्ध

जरिमाना/जरीमाना- दण्ड, जुर्माना

जरी-कड़ी- जमीन नपबाक लेल लोहक जंजीर जाहिमे एक सय कड़ी रहैत छैक आ पूर्ण लम्बाइ रहैछ 66 फीट अर्थात् 22 गज, 1 कड़ी = 7.92'', [*क.को. जरीब-अमीनी जंजीर जे 55वा 60 गजक होइत अछि See T, VII,– नाप अशुद्ध, टेबुलमे कोनो संकेत नहि*]

जरोपरो-जरैत चूल्हि परसँ सद्य: उतरल अत्यन्त तप्पत (खाद्य)

जरौंह- सन्तान-परम्पराक लोक, सम्बन्धी वर्ग

जल-*अपि* च- तरकारीक झोर

जलगर- झोरगर

जलजोग- जलखै

जलझम्प- 1. जलक सतहकेँ स्पर्श करैत बहनिहार शीतल बसात, 2. पानिमे कूदि जायब (आत्महत्याक लेल)

जलढरी- 1. शिवलिंगक आसन जाहिमे जल-निस्सरण-प्रणाली बनल रहैछ 2. शिवलिंग पर जल चढ़यबाक/ढारबाक क्रिया

जलथम्हन- हल्लुक जलखै

जलधर-*अपि* च- अधिक जलबला गहींर (जलाशय-इनार, पोखरि आदि)

जलरिसाल करब- शिवलिंगपर जल ढारबाक विधि करब

जलसयन- जलमे निमग्न, जलमे डूबल

जलसेन- जलक संस्पर्श युक्त शीतल वायु

जलामुखी (ज्वालामुखी)- एकटा कुलदेवी/ग्रामदेवी

जलासरय (जायब)- मलत्याग (करऽ जायब)

जलिया- नकली, जाली

जसक तस- यथावत्, अक्षुण्ण

जसूसी/जसौसी (लूटब)- श्रेय, यश, बाह-बाही

जहत्तर-पहत्तर-जहपटार, अव्यवस्थित, जहाँ-तहाँ पसरल/फेकल

जहन-जखन

जहनि- *अपि* च- जिद्द

जहन्नम- नष्ट, क्षतिग्रस्त, लाहेब

जहरी- *अपि* च- एक प्रकारक चुट्टी जकरा कटने अधिक बिसबिसाइछ

जहसन- बाँहिमे पहिरल जायबला एकटा नारी-आभूषण

जाइ-जनमल- सम्बन्धी वर्ग (ज्ञाति) ओ स्वसन्तान

जाकरी- पेटक एक रोग

जाच/जाचना- धर्मसंकट, दुबिधा

जाड़ा-जाड़, (*जाड़ा फेनो अओतै-अमर*)

जाँता- जाँत

जादो-जादू

जान-परान- सर्वात्म भाव

जाप-जप, मन्त्रक वारंवार आवृत्ति

जाम- 1. पैघ बट्टा 2. (*अं.*) अधिक वाहनक कारणे मार्गावरोध

जामनी- ककरो द्वारा देल वचनक पालन करयबाक उत्तरदायित्व लेनिहार, जामिन, जमानति लेनिहार

जाल-पोल- सखा-सन्तान

जालिया- जाल-फरेब कयनिहार, फरेबी

जा ले-जावत धरि

जासती- बेसी, अधिक, अहगर

जाहिल- अनपढ़, मूर्ख, [*क.को.-आलसी, अकर्मण्य-अशुद्ध। वास्तवमे ई अर्थ 'काहिल'क थीक*]

जाहुरी- पारखी, सिद्धहस्त कारीगर

जिअओरा- माछक अण्डा-बच्चा

जिउ- *अपि* च- जीह, जिह्वा

जिकिर- *अपि* च- कुतर्क, बातकेँ चिरनाइ

जिगेसा- दुखद घटना भेलापर सहानुभूति प्रदर्शन, खोज-पुछारि, जिज्ञासा

जिञ्जिर- केबाड़क पल्ला बन्द करबालेल प्रयुक्त संलग्न सिकड़ी

जिट- घमण्ड व्यंजक आचरण/परिधान, नव-नव फैसनक प्रयोग

जिटियल- जिट कयनिहार

जिट्ट- दे. जिट

जितवाहन- जीमूतवाहन, जितिया व्रतक पूज्यदेवता

जिबटगर/रि- साहसी, धैर्यवान- (पुरुष/स्त्री)

जिबलाह/हि- विभिन्न स्वादक खाद्य वस्तु खयबाक हेतु आसक्त, स्वादप्रिय, जिहुलाह -(पुरुष/स्त्री)

जिभ्या-जिह्वा, जीह

जिमहर-जेमहर

जिमौटी- ककरो जिम्मामे राखल वस्तु, (जिम्मा लगौनाइ)

जिया-मन, ह्रदय

जीत- *अपि* च- दे. जीयत

जीप (*अं.*)- खनिज तेलपर चलनिहार विशेष प्रकारक गाड़ी

जीबा-जन्तु- सकल प्राणी, जीवमात्र

जीयत- बटखाराक मानक तौलसँ किंचित् अधिक, *वि.*झंस/ठस

जीया/जीहुल- जीबैत रूपमे खाम्हक रूपमे प्रयुक्त एक प्रकारक गाछ, जिम्मड़

जुअनका/जुअनकी- युवक/युवती

जुआयब-*अपि* च- 1. फल आदिक पूर्ण विकसित अवस्था होयब 2. तरकारी आदिक पकठायब, सकतायब, सर्पक बेसी वयसक होयब (अत्यन्त विषधर होयब) 4. जोंकक नमहर आकारक होयब (अधिक रक्तशोषक होयब), [*क.को.मे 'अजोह'क अर्थ बिनु 'जुआएल' -किन्तु मूलक्रिया 'जुआएब'क प्रविष्टिमे ई अर्थ नहि*]

जुआरि- 1. मासक खास तिथिकेँ समुद्रमे उठऽबला ऊँच तरङ्ग 2. मनमे उठऽबला दुःखक प्रबल आवेग

जुआन-जहान- युवा वयसबला

जुग- *अपि* च- 1. दीर्घ कालावधि, 2. कीनल चूड़ीक अतिरिक्त लाबा-दुआमे देल गेल चूड़ी

जुगलतगर-परस्पर उपयुक्त (वर/कनियाँ), संगत, समीचीन

जुजु/जुज्जी/जुज्जू- पुरुषक लिंग

जुटानी-बेसी लोकक एकठाम जमा भेनाइ, जुटान

जुड़िछाहरि-शीतल छाहरि, (*आ हे बैसू हे बहिनो इहो जुड़ि छाहरि हे*)

जुड़िबन्हन-विवाह

जुत्ती-स्त्रीक पहिरऽबला चट्टी, मौगियाही जुत्ता

जुनियायब- खढ़-नार इत्यादिकेँ ऐँठि कऽ जुन्ना बनायब

जुलपित्ती (उठब)- एक आकस्मिक चर्म रोग जाहिमे सौंसे देहमे नोचनी होअऽ लगैछ आ नोचैत नोचैत सौसे चकत्ता भऽ कऽ फूलि जाइछ

जूआ- 1. द्यूत 2. गाड़ीक सबसँ अगिला काठक टोन जे दुइ बड़दक कान्ह पर रहैछ

जूठि- ऐँठ, उच्छिष्ट

जूड़ा-मजूरा- मजूरक कलऊी सन खोपा

जेठजर- जेठ सन्तानक प्रति माय-बापक उपेक्षा भाव

जेठाँस/जेठांस- पैतृक सम्पत्तिमे जेठ पुत्रकेँ सामान्यसँ किछु अधिक देल जायबला अंश

जेन्नऽ/जेन्नी- जेमहर, जाहि दिस

जेब खायब- रूप वा आकृतिक अनुरूप/अनुकूल लागब, उपयुक्त लागब

जेबी-*अपि* च- अंगामे छोट-छोट वस्तु रखबा लेल बनाओल गजिया/धोकड़ी

जैन्ती- संकल्पित बहुदिवसीय पूजा विशेषमे विधिपूर्वक जनमाओल गेल जओ केर डिब्भी, दे. जयन्ती

जोकर- दे. जोगर

जोँकी-*अपि* च- 1. समकोणपर दुहू छोरपर मोड़ल नोँकबला काँटी जे दरकल/चहकल काठकेँ सटल रखबालेल ठोकल जाइछ 2. खिज्जा मुनिगा

जोख-*अपि* च- उपयुक्त अवसर, ताक

जोगर- उपयुक्त, योग्य, काजक, जोकर

जोगाड़-*अपि* च- कार्य-साधन हेतु संग्रहणीय विभिन्न साधन

जोड़ीदार- परस्पर एक-दोसराक संग-संग काज कयनिहार (जेना देबाल जोड़निहार दूटा राज)

जोड़ी-पारी- समतुल्य, बराबरीक (व्यक्ति)

जोड़ू- पत्नी, बहु, स्त्री

जोता- जमीनक जतबा क्षेत्रफलमे हरसँ जोति कऽ खेती कयल जाइछ, जोतसीम, [क. को. *जोता- जोतनिहार, कर्षक-अशुद्ध*]

जोतोरी/जोत्तोरीक/जोत्तोरीके- अतिशय आश्चर्य-व्यंजक अव्यय

जोनि- माल-जालक जननाङ्ग, योनि

जोरगरी- बलवान् होयबाक भाव (-प्रदर्शन)

जोर-जपतान/जपताना/जबतान/जबताना- बल सहित अनुचित अधिकार प्रदर्शन, जबर्दस्ती, बलजोरी

जोर-जबद-जबरदस्ती

जोराबर- खूब बलवान

जोलहण्डी- जोलहा द्वारा बुनल कपड़ा, न्यून कोटिक मोट कपड़ा

जोसायब- जोसमे आयब, जोस देखायब, उत्साहित होयब

जौर-रस्सी (*जौर जरि गेल ऐँठन बाँकी अछि*)

जौराठ- जौरक बन्धनसँ बनल चेन्ह

[झ]

झंस- मानक तौलसँ कम (बटखारा)

झक दऽ- आकस्मिक रूपेँ एकाएक देखबामे चमकैत

झक (लागब)- किंचित् औंघीसँ आँखिक पल बन्द होयब

झक्खा- काँच अमताह फलकेँ नोन-मिरचाइ आदि दऽ कऽ बनाओल व्यंजन

झखब- अपन विवशता वा दीनतापर स्वगत सोचब, चिन्ता करब (*गौरी झाँखथि दिन-रतिया*) [*क.को. कलपब, बाजि-बाजि दीनता प्रकट करब-मान्य नहि*]

झखायब-*अपि* च- गाछक फल सबकेँ एक-एक कऽ तोड़ि लेब, झखारब

झङ्खाड़- *अपि* च- नमहर ओ पसारबला पुरान गाछ

झझकब- लुलकारब, खौँझाय उत्तर देब, झझकारब

झज्झर- जर्जर, बहुशः छिद्रयुक्त

झञ्झटि- बखेड़ा, झगड़ा

झनकट/झनकटाह- सनकल सन, झनकाह, रुच्छ स्वभावक

झन्स- दे.-झंस

झपलायब- औंघीसँ आँखि बेर-बेर मुना जाइत रहब, [*क.को.मे एकर कथित अर्थ 'झलफलाएब' अशुद्ध*]

झपास- बसातक वेगक संग अबैत पानिक बुन्द, [*क.को.मे कथित अर्थ 'झपसी' समीचीन नहि*]

झपासा- ठकबाक लेल कहल गेल विश्वसनीय सन फूसि कथा

झप्पा- *अपि* च- 1. खयबासँ पूर्वहि गरम दूध दऽ कऽ झाँपि देल गेल भात/सोहारी 2. डिब्बा वा बाकसक झपना

झबला- शिशुक पहिरबाक एक तरहक फलकल अंगा

झबहा- दूध नपबाक हेतु लोटासन माटिक एक बासन

झबही- छोट आकारक झबहा, झबहाक रूपमे प्रयुक्त अन्यो पात्र

झमकौआ- झङ्कार उत्पन्न करऽबला (गहना), अधिक झालिक तीव्र ध्वनियुक्त (कीर्त्तन)

झमझम- *अपि* च- चोटगर बरखाक ध्वनि

झमझमायब- चोटगर बरखा होयब

झमझमौआ- झमझमबला पानि

झमरुआ- तेल-मसल्ला लोहियामे दऽ झमारि कऽ आँचपर सिझाओल रुक्ख तरकारी, कि तरुआ

झमाझम- अनवरत चोटगर बरखा, दे. झमझम

झमायब- *अपि* च- चिन्ता-शोच करैत रहब

झमेला- झंझटि, झगड़ा, (*किए हमरासँ कयलेँ झमेला गे लटछिलकी धोबिनियाँ*)

झऽर- *अपि* च- सीसमेसँ झारल अन्न यथा-मकै, राहड़ि आदिक दाना

झरकबाहि/झरकी (उठब/लागब)- अकारण द्वेष भाव (उत्पन्न होयब) (*गोर आङ मोरा टहटह करय, की मड़ुआ देखि-देखि झरकी पड़य*)

झरण्ठी- अत्यन्त पुरान, जाकड़, जर्जर (यन्त्रोपकरण साइकिल आदि)

झलैता- झालि बजौनिहार

झाउली/झाउली-पट्टी- विश्वास उत्पन्न करबाक लेल बढ़ा-चढ़ा कऽ कहल गेल फूसि गप्प

झाकब/झाँकब- *अपि* च- टोकनामे रान्हल भातकेँ अखरा ढाकीमे उझीलि कऽ माँड़

पसायब, उसिनल धानकेँ ढाकीमे उझीलि पानि पसायब, एक बासनसँ वस्तुकेँ दोसर बासनमे उझिलब वा पलटब

झाङड़- छिम्मड़ि सहित बूटक गाछ

झाड़ि (बान्हब)- कलंक जोड़ब, अछेट जोड़ब

झाँझ[1]- छोट-छोट छिद्रयुक्त वृत्ताकार छोलनी जाहिसँ गरम तेल-घीमे सीझल खाद्यवस्तु छानि कऽ बहार कयल जाइछ

झाँझ[2]/झाँझन- बाँसकेँ थकुचि चीरि आ पसारि कऽ बनाओल टाट

झाँझर- अति पुरान बहुतो छिद्रयुक्त, जर्जर (चार)

झाँझी(कुकुर)- कुकुरक एक प्रजाति, सामाचकेबाक एकटा कुकुर-पात्र

झाड़/र- *अपि* च- 1. पातर दस्त 2. डाँट-फटकार 3. मन्त्रसँ बिष/भूत आदि उतारनाइ

झाड़ब- *अपि* च- झूठ-फूस कहि टका-पाइ ठकब

झात- अबोध शिशुकेँ दुलार सहित आकृष्ट करबाक सम्बोधन

झाँप-तोप- मेघओन होयब, मेघ लागब

झामा- अधिक पाकसँ बरकि-ढबकि कऽ कारी भेल ईंट, झाम

झिकुटी- माटिक फूटल बासनक छोट छोट टुकड़ी, द्र. झिटुकी

झिक्कम-झिक्का/झिक्का-तीरी- अनेक व्यक्ति द्वारा कोनो वस्तुकेँ अपना-अपना दिस झिकनाइ

झिङ्गा- *अपि* च- भानसक चाकर मुँहक छितनार पैघ बासन

झिङ्गुनियाँ- झिङ्गुनीक आकारक (अल्हुआ)

झिझकब- ततमत करब, संकोचित होयब

झिझरी (खेलायब)- *अपि* च-नाव/बेड़ पर चढ़ि जल क्रीड़ा करब, झिलहेरि [*क.को. -झिझिया-भ्रामक*]

झिझिया- आसिनक दसहरामे डाइनि-जोगिनिक जोग-टोन निरोधार्थ स्त्रीवर्ग द्वारा रातुक दोसर पहरसँ कयल जायबला एक गीत-नृत्य जाहिमे एकटा स्त्री बहुछिद्रयुक्त दुइ गोट तौलामे दीप बारि माथपर तराउपरी गेँटि अर्द्धवृत्ताकार नचैत अछि आ संग-संग आन स्त्रीसब डाइनिक भर्त्सना-गीत गबैत गाममे घुमैत अछि, [*क.को.-झिझिया-एक व्रत जाहिमे छिद्रमय घैलमे जरैत दीप माथपर लए भरि राति घुमल जाइत अछि– ई निर्वचन सर्वथा भ्रामक-झिझिया व्रत नहि डाइनि-निरोधक एक उपचार थिक । दसहरा मात्रमे स्त्रीवर्ग द्वारा कयल जाइछ । माथपर छिद्रमय घैल नहि तौला रहैछ ।*]

झिझिरकोना-धिया-पुताक एकटा खेल

झिटुकी-झिकुटी, खपटाक टुकड़ी, (*झिटुकीसँ फुटि जाइछ घैल*)

झिलमिलायब- प्रकाशक चमक कम-बेसी होइत रहब

झिलहेर/झिलहेरि- नाव वा बेड़पर जलक्रीड़ा करब, झिझरी खेलायब

झिल्ल- चओर, झील

झिल्ली झड़ब- बिनु श्रमे अनुचित लाभ भेटब

झिल्ली झाड़ब- बिनु परिश्रमे अनुचित लाभ लैत रहब

झिसियायब- पानिक मेही-मेही बुन्न पड़ब, झीसी पड़ब

झीक देब- *अपि* च- खण्डनात्मक उत्तर दैत रहब, मुँह लागल जबाब देब

झीटब- धुरतइसँ कोनो वस्तु लेब, ठकि कऽ लऽ लेब

झुट्टी- 1. मकैक सीसक बनाओल गेल गुच्छ, धानक सीसकेँ एकट्ठा कऽ बनाओल गुच्छ [*क.को 'जुट्टी'-अशुद्ध*] 2. बिड़िया, झूटी

झुट्ठी-मिथ्याभाषिणी स्त्री

झुमका-औन्हल कटोरी सन आकारक नीचाँ दिससँ झुलैत बचबा लागल कानक एक प्रकारक गहना

झुमकी-छोट आकारक झुमका

झुम्मरि-स्त्रीवर्गक एक सामूहिक गीत-नृत्य, झूमरि (*सब सखी झुम्मरि खेलय, लुल्ही कहय हमहूँ*)

झुरखुन्ना- एक प्रकारक अनेरुआ साग

झुरझुरायब- बरमहल दुखिताह रहब

झुर्री- *अपि* च- ततबा कड़ा सुखायल जे कनेको दबने बुकनी भऽ जाय

झूरी-घाठिमे सानि कऽ रौदमे सुखाओल (बूट, केराओ, खेसारी, मेथी आदि) सागक मुठरा, बिड़िया

झूलन- *अपि* च- बड़दक सतत झुलैत रहबाक एकटा ऐब

झूस- *अपि* च- उदास, खिन्न, न्यून

झोँक- *अपि* च- देबालसँ बाहर बनाओल कम चाकर वर्द्धित भाग

झोँकाह- सनकी स्वभावक व्यक्ति (स्त्री-झोँकाहि)

झोँटा-पैघ छिड़ियायल केश, झोँट

झोरब- *अपि* च- 1. ताकि-हेरि कऽ अल्पो राशि प्राप्त करब 2. कोनहुँ विधिसँ ककरोसँ किछु टका-पाइ प्राप्त कऽ लेब

झोरायब- तीमनमे अधिक जल-मसाला दऽकऽ रान्हब, तीमनकेँ अधिक झोरसँ युक्त करब

झोलङा- गरदनिसँ पैर धरि झँपा जायबला अंगा

झोलफल- हल्लुक सन प्रकाश युक्त अन्हार, सन्ध्याकालक ओ समय जखन अन्हारक कारणे वस्तु सब अस्पष्ट बुझाइत छैक, भोरक ओ समय जखन प्रकाशक मन्द आभासँ वस्तु सब अस्पष्ट रूपमे दृष्टिगोचर होअऽ लगैछ

झोलब- *अपि* च- 1. मन्द आँचपर किंचित भूजब 2. अकस्मात् झमारब वा डोलायब

झोला- लीखपर बनल खाधि जाहिमे गाड़ीक पहिया अकस्मात् खसने गाड़ी जोरसँ नीचाँ-ऊपर अथवा बामा-दहिना डोलि उठैछ आ गाड़ी असन्तुलित भऽ जाइछ

झोली- सनक सुतरीसँ बीनल पट जे माल जालकेँ ओढ़ाओल जाइछ, चट्टी

झौलायब- भूख-पियास वा कोनो अन्य पीड़ासँ शिशुक लगातार कानब/चिचियायब

झौँसा- झरकलहा, जरलाहा (पुरुषक प्रति स्त्रीक गारि)

झौँसी- झरकलही, जरलाही (स्त्री द्वारा स्त्रीकेँ गारि)

[ट]

टकटकी- बिनु पल खसौने तकैत रहब

टकाही- आध आनाक सिक्का, अधन्नी

टङघिसरी- टाङ पकड़ि कऽ घिसियौनाइ, [*हे पिया, तोहर हीया, ऐसन हीया-रहड़ी खेत टङघिसरी दीया*]

टटका- *अपि* च- बिना मात्रा-चिह्नक व्यंजन वर्ण, टटका- 'क' इत्यादि

टण्डैली- *अपि* च- समय बितयबा लेल निरुद्देश्य बौआयब

टनक- *अपि* च- बजबामे ध्वनिक तीव्रता

टनटनौआ- आघात लगने टनटन ध्वनि करऽबला शुद्ध चानीक (टाका)

टनेरा- बनसीक तागमे बान्हल काठी, दे. टरेड़ा

टन्ना- एकटा मात्र (सन्तान), सतघरबा खेलमे कोनो घरमे स्थित एकेटा गोटी

टपान- *अपि* च- 1. बाट परक ओ टूटल स्थान जतऽ पानि लागल रहैछ आ लोकके॑ टपि कऽ जाय पड़ैछ, 2. पैघ धाप

टपौआ- चोरा कऽ पार कयल/टपाओल (वस्तु)

टप्पुक- पानिसँ घेरल छोट भूखण्ड, छोट टापू

टभकायब- बरकायब, निर्वाहार्थ अल्प मात्रामे भात/ खिच्चड़ि रान्हब

टरफिस (करब)- दे. टर्रफिस

टरेड़ा- बनसीक डोरमे बान्हल काठी जे पानिक सतहपर दहाइत रहैछ, टनेरा

टर्र- टेढ़ी, गुमान, घमंड (*जबानीक टर्र*)

टर्रफिस-टेढ़ीक संग कयल गेल बहाना, घमण्डक संग कयल गेल अस्वीकार

टहटहौआ- तीक्ष्ण ओ उत्ताप जनक (रौद)

टहलान- बेसी काल/दूर धरिक टहलनाइ

टहाटही- स्वच्छ/धवल (इजोरिया)

टाइ-गुड़िया- निरुद्देश्य कयल गेल छोट-छोट काज

टाँइ-टाँइ- कार कौआक बजनाइ

टाङा- *अपि* च- टमटम, ताङा

टाट- *अपि* च- दोकानक स्थान, थोक खरीद-बिकरीक बजार

टाटक- भगल, छद्म व्यवहार, भ्रमित करबाक लेल कयल गेल देखौआ काज, [क.को. *See* त्राटक । किन्तु 'त्राटक'क अर्थ एतऽ समीचीन नहि]

टानब- *अपि* च- उपकारार्थ आवश्यकता देखाय टका-पैसा लेब, ठकि कऽ लऽ लेब

टापी- माछ मारबाक हेतु बाँसक कमचीसँ बनाओल शंकु आकारक उपकरण, टापि

टार-बहटार/टार-बहटोर- तत्काल काज नहि करबाक उद्देश्ये॑ कयल गेल बहाना सब

टाल- *अपि* च- टेढ़, बाँक

टाली- 1. विशेष नाम ओ चाकर-पातर ईंट जाहिसँ छत पाटल जाइछ 2. आयताकार समतल खपड़ा 3. रेलक पटरीपर ठेलि कऽ वा इंजिनसँ चलऽबला छोटगाड़ी/कुसियार उघबाक ट्रेन

टाँस- *अपि* च- नीक जकाँ टहकौलासँ भेल घीक परिशुद्धता/सुगन्धि

टाँसब- नेनुके॑ आँचपर गरम कऽ घी बहार करब, घीके॑ टहकाय परिशुद्ध करब/सोन्हगर बनायब

टाँसी- गायनमे तार स्वर, रोआब, बोलीमे तीक्ष्णता

टिकली-तितली

टिकासन- *अपि* च- ऊँच स्थान, प्रमुख स्थान

टिकिया- *अपि* च- कोइलाक बुकनीके॑ माँड़मे सानि कऽ बनाओल टिकड़ी जाहिमे आगि जल्दी धऽ लैत छैक

टिटकार- अनुपयुक्त वा अनुचित काज करबाक लेल मिथ्या प्रशंसापूर्वक प्रोत्साहित कयनाइ, टिटकारी

टिपटियायब- टिपटिप ध्वनि करैत पानिक बुन्न खसब

टिपऽध- जन्मकुण्डलीक निमित्त शिशुक जन्मकालिक ज्यौतिषीय स्थितिक संक्षिप्त लेख

टिपब- *अपि* च- समूह/ढेरीसँ पहिनहि मनोकुकूल बीछि लेब, हथिया लेब

टिपोरी- खयबा-पिउबामे निखुड़ाह

टिप्पा- *अपि* च- सबसँ नीक वस्तु अलगट्टे बीछि लेनिहार/हथिया लेनिहार [क.को.- *निरक्षर व्यक्ति द्वारा स्मरणार्थ बनाओल रेखाङ्क-असंगत; टीप/टिप्पीक भ्रम*], सतरंजक खेलमे टीप देनिहार तेसर लोक

टिरिकबाज- पेंचैल (*अं.-ट्रिक+बाज*)

टिरुसाह- छोट-छोट बातपर रुसनिहार

टिल्हकी- छोट आकारक माटिक उँचगर स्थान, छोट टिल्हा

टीकी- पुरुषक चानिपर पाछाँ दिसक केशक लट, टीक, शिखा

टीड़ी- 1. एकटा शस्य-नाशक कीट, टिड्डी 2. अनपेक्षित धियापुताक हेँज, खड़ुहान

टीप- *अपि* च- 1. गोदना/खोधाक एकटा आकृति 2. दू गोटाक गप्पक बीचमे तेसर द्वारा बीच-बीचमे जबाब देब

टीपब- दे. टिपब

टीमटाम- नियम-निष्ठाक आडम्बर, टण्ट-घण्ट

टुकटुकायब- दीर्घ कालिक रुग्णतासँ मुक्त भऽ कने-मने चलऽ-फिरऽ लागब, मन्द गतिसँ रोगमुक्त होयब

टुकड़ा- *अपि* च- वस्त्रक छोट खण्ड

टुकदुम-टुकदुम- कोनो तरहेँ, जेना-तेना मन्द गतिसँ

टुक्का- रोटीक चारिम खण्ड, रोटीक एक कोन

टुटब- *अपि* च- भोज आदिमे रान्हल वा रान्हल जायब (चाउरक परिमाण)

टुटरुम-टू- सर्वथा निष्फल

टुटहिल- आर्थिक दृष्टिसँ लचरल

टुट्टी- अपि च- त्रुटि, स्खलन

टुनटुनायब-टुनटुन ध्वनि करब, घण्टी बजायब

टुप दऽ/सँ- अकस्मात् (बीचेमे बाजि देब)

टुप-टुप- अनपेक्षित रूपमे निरन्तर (उत्तर दैत रहब), जल्दी जल्दी (बाजब), जल्दी-जल्दी (मुहमे देब)

टुभ दऽ/सँ- दे. टुप दऽ,

टुभ-टुभ- दे. टुप-टुप,

टुरहे- ठकपनी वृत्तिक कूटनाम

टुसकियायब- गुप्त रूपेँ उकसायब, ककरो विरोधमे उत्तेजित करब, कान भरब

टुसकी-उत्तेजित करबाक कृत्य

टुहटुह- गाढ़ लाल

टूअर- एहन नेना जकर माय ओ बापमेसँ एक वा दुनू मुइल होइक, टुअर

टूअर-टापर- टूअर एवं ओकर समान उपेक्षित नेना

टूक- खण्ड, सुपारीक चारिम खण्ड (*एक सुपारी कय टूक ?, चारि टूक, हमरा-तोरा कय आँखि ?, चारि आँखि*)

टूड़ा- जओ-गहूमक टूटि कऽ खसल सीस

टूरा/टूरी- टूअर (निरादर वा उपेक्षासँ)

टूस- नेनाकेँ खुअयबा काल दुलारसँ कहल जायबला प्रबोधक शब्द

टेकठी- ऊपर दिससँ संलग्न ओ नीचा दिससँ तीन दिशामे छितरायल तीन खुट्टाबला आधार, तेकठी

टेनामानी- नगण्य बात लय अगम्भीर झगड़ा, टेनामेनी

टेपटा- तीन व्यक्तिक बीच परस्पर हर, हरबाह ओ बड़दक भजैती/सपठैती

टेबा- *अपि* च- नियमित अन्तरालपर कोनो अप्रिय घटना होइत रहब

टेबाटाही- गोटा-पघरा, गोटा-गोटी, थोड़ेक-थोड़ेक अन्तरालपर एक-दू गोट

टोइया-टप्पर/टोइया-टप्पा/टोइया-टापर-अन्हारमे हाथ-पैरसँ छूबि कऽ स्थान-वस्तु-बाट आदि ठेकनायब

टोक- नमहर गाछी वा खढ़ोरि आदिमे हिस्सेदारक निर्धारित हिस्साक क्षेत्र

टोक देब- आनक पारस्परिक गप्पक बीचमे बाजि देब

टोक लागब- यात्रा कालमे टोकलासँ इच्छित काज भङठब, यात्रा भङठब

टोकनी- छोट आकारक टोकना

टोकरी- पथिया, छिट्टा

टोका-बिजलीक मुख्य तारमेसँ बिजली लेबाक लेल फँसाओल गेल तारक अँकुसी

टोका-चाली- सामान्य वाचनिक सम्बन्ध

टोकारा (देब)-थोड़ेक थोड़ेक कालपर सचेत करबाक लेल टोकैत रहनाइ

टोङब- *अपि* च- नऽहसँ खोँटब, (*ला.*) अरुचि वा लाजेँ रोटी इत्यादि कनेक-कनेक खोँटि-खोँटि कऽ खायब

टोङरायब- अत्यन्त मन्द गतिसँ खायब, अरुचिसँ खायब, पशुक बच्चाक घास खायब शुरू करब

टोचन (*अं.* Tow Chain)- भङठल मोटर आदिकेँ रस्सा वा सिक्कड़ आदिसँ चलाउ गाड़ीमे बान्हि घिसिया कऽ लऽ जायब

टोटम- टोटमा, टोना

टोड़ी- संगीतक एक राग-विशेष

टोन (देब)- *अपि* च- व्यंग्यात्मक शब्द, उत्तेजित करबाक शब्द/कथन

टोनका (लागब)- माटि वा सीसाक बासनमे परस्पर वा अन्य कठोर वस्तुसँ लागल ठोकर, ठोकरसँ चनकब

टोनियायब- छोट-छोट टोन अर्थात् खण्ड करब, टोनी बनायब

टोनी- *अपि* च- रोपबाक लेल कयल सीसोक डारि अथवा कुसियारक छड़क छोट-छोट टुकड़ी

टोप- *अपि* च- कपड़ाक सीयनिमे एक दिसक छेदसँ निकालि दोसर दिसक छेदमे पैसाओल तागक देखार भाग वा ओकर लम्बाइ

टोपर बान्हब- *अपि* च- सघन मेघ लागब

टोपिया-चापत पेन आ लम्बाकार किनारबला फैल मुँहक डेकची

टोभ(लागब)- कोनो वस्तुपर गड़ल लोभदृष्टि

टोर(खसायब)- धारीमे बाओग करबाक लेल हरक सिराउरपर क्रमशः एक-एक कऽ बीज खसौनाइ

टोला- गामक एक भाग, विशेष वर्गक वासक्षेत्र

टौऐनी-बौअयनाइ, बौऐनी

[ठ]

ठकठेना- बलझगड़ा, बाधा देबाक लेल अकारण झंझटि, [*क.को. वंचनापूर्ण व्यवहार -असंगत*]

ठक दऽ- 1. कठोर वस्तुसँ अचानक ठोकर लगबाक ध्वनि/ठेकबाक ध्वनि, 2. अकस्मात्, (*कहियो पूरी रे पचास, कहियो ठक दऽ उपास*)

ठकपनी- वञ्चक-वृत्ति, दे. दुरहे

ठकबुद्धी- ठकबाक चतुरता

ठकहर/ठकहारा- वञ्चक, ठकवृत्ति कयनिहार

ठकुरबाड़ी- वैष्णव मन्दिर परिसर

ठकुरा- 1. चूड़ा कुटबा काल उक्खरिमे धानकेँ लाड़ऽबला फट्ठी, 2. रबीक खेतमे खास कऽ सरिसो-राइमे जनमऽबला एकटा लघु घास

ठकुरा सोहैती- मुँह देखौअलि गप्प वा व्यवहार

ठकैती-ठकपनी, वञ्चकता

ठठगर- वैभवयुक्त, ठाठसँ भरल

ठठायब- 1. अट्टहास करब, ठहाका देब (ठठा कऽ हँसब) 2. बन्हन दऽ कऽ कसब,

ठाठब (ठोकि-ठठा कऽ दुरुस्त करब, -ठोकब-ठठायब)

ठठियल- दे. ठठगर

ठठेर- *अपि* च- मकै-जनेरक डाँट, [क.को. *ठहेर -भ्रान्तिपूर्ण*]

ठठेरा/ठठेरी- धातुक बरतन बनौनिहार एक जाति

ठढ़मुतना- ठाढ़े-ठाढ़े लग्धी कयनिहार

ठढ़िया- *अपि* च- लीबल वस्तुकेँ सोझ कऽ उठौने रखबाक लेल ठाढ़ कयल सोङर; ईंटक देबाल जोड़बाक लेल बनाओल चलन्त भारा

ठढ़ेसरी(देब)- बेसी काल धरि एकहि मुद्रामे ठाढ़ रहनाइ

ठण्ढि/ठण्ढी- शीतलता

ठण्ढै- शीतलतादायक पेय/खाद्य, (ला.) भाङक शर्बत

ठनठन- धातुपर बेर-बेर पड़ैत चोटक ध्वनि

ठनठन गोपाल- शून्य परिणाम, निष्फल

ठन दऽ/ठनाक दऽ- धातुपर पड़ल आकस्मिक चोटक ध्वनि, कठोर वस्तुपर पड़ल आकस्मिक आघातक ध्वनि

ठन्नक- खूब सक्कत जमीन

ठप्पा- मोहर, छाप

ठम/ठमन/ठमा/ठमान- ठाम, स्थान,

ठरकब- दहीकलेल पौरल दूधक जोड़न देलाक बादो ओहिना रहब

ठरमरू- कनेक सुसुम

ठर्रा-देशी दारू

ठस- *अपि* च- मानकतासँ बटखराक न्यून तौल

ठहक्का- जोरसँ हँसल गेल हँसी, ठहाका

ठाँइ-ठाँइ- कठोर वस्तुपर अनवरत प्रहारक ध्वनि

ठाँइ-पठाँइ (कहब)- नि:संकोच निर्भयतापूर्वक समक्षहि (कहब)

ठाँओँ-पिढ़ही- भोजनार्थ आसनादि व्यवस्था, *(ला.)* आचार-व्यवहार

ठाँओँ-बाट-भोजनार्थ आसनादि व्यवस्था।

ठाढ़ी(देब)- 1. दीर्घ काल धरि ठाढ़ रहब 2. छठिमे व्रती द्वारा पानिमे ठाढ़ होयब

ठामपर- उचित स्थानपर, सुरक्षित स्थानपर

ठिकियायब- ठेकनायब, निशाना बनायब, लक्ष्य स्थिर करब

ठिठिऐनी- अशिष्ट हँसी

ठिनी/ठिम- ठाम, स्थान

ठिलिया- छोट घैल, बसनी

ठीकाठीक- ने न्यून ने अधिक, ने कम ने बेसी *(ठीका ठीक दुपहरिया)*

ठुकुमुकु (भऽ कऽ बैसब)- चुक्कीमाली भऽ कऽ बैसबाक एक मुद्रा जाहिमे हाथ-मुँह सहित शरीरक अग्रभाग ठेहुनसँ झपायल रहैछ, लाजेँ संकुचित भऽ कऽ बैसबाक एक स्थिति

ठुट्ठा- ठुट्ठ आकृतिबला (गाछ इत्यादि), [क.को.क *अर्थ-औंठा आ तर्जनीक टुरनीक बीचक दूरी-भ्रामक, अशुद्ध*]

ठुट्ठी- औंठा ओ तर्जनीक पसारक लम्बाइ- प्राय: 19½ सेमी. वा पौने आठ इंच [क.को. *मे 'ठुट्ठा'मे ठुट्ठीक भ्रम -दे. ठुट्ठा*]

ठूआठक्का- अन्यूनाधिक तौल, तौलमे ने कम ने बेसी

ठेक- *अपि* च- माल-जालकेँ खुट्टामे बन्हबाक एक प्रकारक रस्सी जाहिमे दुनू छोरपर मुन्ही लागल गरदाम बनल रहैछ

ठेकनायब- *अपि* च- मोन पाड़ब, स्थान सुनिश्चित करब,

ठेकब- *अपि* च- कोनो शुभ कार्यक हेतु दिन/तिथि/मुहुर्त्त निश्चित करब

ठेकी- *अपि* च- कानमे जमल ठोस गुज्जी

ठेकैता- तबालची, ठेका बजौनिहार

ठेङ्ड़ी- छोट ठेङा

ठेङाठाही- बुढ़ारीमे ठेङा पकड़ि कऽ चलबाक सामर्थ्य

ठेँठ- *अपि* च- ओछ, जतेक आवश्यक ताहिसँ छोट (वस्त्र)

ठेँठिया- खिया कऽ अत्यन्त छोट भऽ गेल (कोदारि), ठेँठक तिर्यक रूप

ठेपी-ठेकी, सीसीक मुन्ना [*क.को.मे 'मुन्ना'क पर्याय ठेपी कहल अछि किन्तु मूल प्रविष्टिमे 'ठेपी' नहि*]

ठेसाह (आङुर)- जाहि आङुरमे/बाटमे बेसी काल ठेस लगैत रहय

ठेहकब- शंका होयब, भान होयब, आभास होयब

ठेहा- *अपि* च- 1. ओ आधार काठ जाहिपर राखि घासक कुट्टी काटल जाइछ अथवा जारनि काटल/चीरल जाइछ, परिकठ 2. राज-मिस्त्रीक कार्यस्थल

ठेहियायब- थाकब, निराश होयब,

ठेँयाँ- छोटकी ठेङा, पयना

ठोक-ठोकि कऽ लगाओल गेल खाम्ह, छतक ढलैयाक आधार रूपमे ओछाओल तकथामे नीचाँसँ लगाओल गेल अस्थायी खाम्ह

ठोकब- *अपि* च- मारब, पीटब

ठोकराह- कोनो ठोस वस्तुक ओ बहकल अंश जाहिसँ बेसी काल ठोकर लगैत हो

ठोंठ- अपि च- कण्ठ स्वर

ठोँठी- गरदनिक अगिला भाग, ठोँठ

ठोप- *अपि* च- महादेवकेँ सोन/चानीक सिक्काक चढ़ौना

ठोपनी-अत्यन्त छोट ठोप, (*ठोपनी भरिक नेन्ना लिलोह भऽ गेल*)

ठोराहि- मुह लागल जबाब देनिहारि, असंयत बोली बजनिहारि

ठोला- कर्णप्रिय बोल बजनिहार नेन्ना [*क.को. ठोला-पातक पूड़ाक आकारक एक बासन-अश्रुत, प्राय: ठोङाक भ्रम*]

ठोसगर-सक्कत, मजगूत, नहि लचकऽ-पचकऽवला

ठोहर- *अपि* च- गोँहछल बोली, रोष, दे. ओहर-ठोहर, दे. ठोहरायब

ठोहरायब- गोँहछल बोली बाजब, रुच्छ बोली बाजब, रुष्ट भऽ कऽ बाजब

[ड]

डकब- *अपि* च- कागा/कारकौआक कर्कश स्वरमे बाजब [*क.को. 'कौआक बाजब' किन्तु कौआ बजैत अछि / कुचरैत अछि; कौआ डकैत नहि अछि। कागाक डकब अशुभ*]

डङरना/डङार- छोट छोट डहुरी-पात आदि काटि-छाँटि कऽ बहार कयल गेल मोट डारि

डँटकी/डँटुकी- गहूम, बूट आदिक मध्यम आकारक टूटल डाँट, डाँटक छोट-छोट खण्ड, [*क.को.- फूल आदिक पातर डाँट*]

डँड़ीर/डड़ीर-रेखा, चींछ

डड़ोखा-छोट लाठी, हथलग्गू सोँटा

डढ़ाइन- दूध-व्यंजनादिक जरल होयबाक गन्ध/स्वाद

डपटान- दबाड़नाइ, फज्झति, डाँटब

डफला- छोट डम्फा

डबरियायब- निचाँस स्थानमे पानि जमा भऽ जायब, डबरा जकाँ भऽ जायब

डम्हक- काँच फलक पकबासँ पूर्वक अवस्था, डम्हायल

डरेबर(*अं*)- मोटर गाड़ी/रेलगाड़ीक चालक (*जीयऽ जीयऽ जीयऽ डरेबर बाबू जीयऽ- रवीन्द्रनाथठाकुर*)

डरेबरी (*अं*)- डरेबरक वृत्ति

डऽल- *अपि* च- चाकपर बनाओल बासनक आरम्भिक आकृति

डलना-मिश्रित व्यंजनक तीमन, चर्चरी

डलिया- छोट डाली

डल्ली- अत्यन्त पातर छोट डारि, ठहुरी, खजूरक पत्तीयुक्त छड़

डहजरन/नि- अकारण डाह रखनिहार

डहुरी- गाछक अत्यन्त पातर ओ छोट डारि, ठहुरी

डाकटरनी/डाकदरनी (*अं*)- महिला डाक्टर, चिकित्सिका

डाकदरी (*अं*)- चिकित्साक वृत्ति/पेशा

डाकपिउन/डाकपीन (*अं.*)- चिट्ठी पहुँचौनिहार डाकखानाक कर्मचारी

डाका-डाकी- अनकासँ बेसी दाम दऽ कऽ कीनि लेबाक प्रतिस्पर्द्धा

डाँटी- *अपि* च- झाड़ल दानाबला मड़ुआक ढेसर, [*क.को.-गहूम आदिक छोट डाँट- असंगत, दे. डँटकी*]

डाढ़ि- वृक्षक शाखा, डारि

डाली- *अपि* च- कबडी खेलमे भेल जीतक खेप, जीतल बाजी

डिगडिगायब- प्रचार करब, घूमि घूमि कऽ सूचना देब

डिङर/डिङ्गर- सेवक, नोकर

डिठबरन/डिठबरना-एकटा बड़का गाछ जकर फऽड़ आँखिक आकारक होइछ तथा ओहिसँ निःसृत तेलक औषधीय उपयोग होइछ

डिड़ियायब- *अपि* च- निरर्थक जोर-जोरसँ (बच्चाक) कानब

डिब्बा- *अपि* च- रेलगाड़ीक प्रखण्ड जाहिमे यात्री चढ़ि कऽ यात्रा करैछ

डिब्बी- छोट मञ्जूषा, छोट डिब्बा

डिब्भी- बीजसँ बहरायल सुइ सन आँकुर, [*क.को.-See टुस्सा- अशुद्ध, कारण टुस्साक अर्थ होइछ गाछक ठहुरीक फुनगीपर स्थित किसलयक कोंढ़ी, फूलक कली, बड़क टुस्सा, भाँटिक टुस्सा, ओरहुल फूलक टुस्सा*]

डिल्ला- काठक चौकोर संरचनाक मध्यमे बैसाओल काठक चौकोर तकथा

डुमरि/डुम्मरि- गुल्लरि, उदुम्बर (*पिया भेलैं डुमरिक फूल हो रामा चैतहिं मासे*), [*क.को.मे अर्थ 'गम्हारि' जे अशुद्ध*]

डेउढ़िया- एकक बदलामे एक आ आधाक योगफलक दरसँ

डेउढ़ी-हवेली, धनीलोकक आवास, बसोबास; आवासक मुख्य द्वार

डेओढ़ा- *अपि* च- डेढ़ (1½)क खाँत

डेगाडेगी- *अपि* च- बच्चाक डेग बढ़ा कऽ चलबाक आरम्भिक चेष्टा

डेङैया- डेङयबामे प्रयोज्य सोँटा, छोट ठेङा

डेढ़िया- स्त्रीक अन्तर्वस्त्रक रूपमे प्रयुक्त कपड़ाक छोट टुकड़ा, बिनु सीयल साया

डेफ- कुश-राड़ीक जड़िसँ बहरायल सूआ सन कनोजरि

डेफा- बीजक सुइ सदृश आँकुर, [क.को. -डँफ]

डेब(देब)- माछक कुदनाइ, माछक कूदि-कूदि कऽ पानिसँ बाहर चल आयब

डेरा-डण्डा- अस्थायी निवासक हेतु आवश्यक

वस्तुजात, (*डाँड़पर डेरा*)

डेरेदार- भाड़ा दऽ कऽ मकानमे रहनिहार [*क.को. डेरादार- भनसाघरमे नियुक्त परिचारक-अश्रुत*)

डेली- *अपि* च- गाछसँ आम तोड़बाक लेल जलखरी बान्हल लग्गी

डोपटा-चद्दरि, दोपटा

डोभा- छोट डबरा, खत्ता

डोमघाउज- साधारणो बातक लेल पारस्परिक घोंघाउज, बहुत गोटेक एकहि संग-परस्पर विरोध सहित बाजब, जोर जोरसँ बाजि कयल गेल उद्देश्यहीन झगड़ा

डोमाडिगरी- खयबा लेल बाजि-बाजि आतुरता देखौनाइ

डोमौ-डोम द्वारा निर्मित वंशोपकरण

डोरियायब/डोरि लगायब- *अपि* च- आवश्यक वस्तु पहुँचबैत रहबाक लेल लोकक पाँती लगायब

डोलची- बेंत-बाँस वा प्लास्टिकक बनाओल डोलक आकारक पात्र

[ढ]

ढक- *अपि* च- अन्न रखबाक हेतु बाँसक बातीसँ बनल नमहर कोठी

ढकन पोरो- पैघ-पैघ पातबला पोरो, सागक प्रभेद

ढकनायब- सजमनि इत्यादिक लत्तीमे ढाकन सन-सन पैघ पात होयब

ढकनी- छोट ढाकन

ढक-पैंच- राशि जुटयबालेल कयल गेल भाँति-भाँतिक चेष्टा

ढकफेरी/ढकरपेंच- षड्यन्त्र द्वारा लगाओल गेल ओझरओट

ढकिया- चाकर मुँहबला पथिया, ढाकी

ढकोसब- जल्दी जल्दी अधिक मात्रामे पानि/तरल पदार्थ पीयब, [*क.को.-अधिक खायब- अशुद्ध। 'भकोसब' क्रियाक अर्थक भ्रम*]

ढढ़ायब-गाछ ओ लत्ती इत्यादिक खूब लुहलुहार भेलोपर फल-फूल हीन रहि जायब

ढबा ढुबी/ढब्बा ढुबी/ढाबा ढुबी (लगायब)- एक-दोसराक विरुद्ध झूठ-फूस कहि झगड़ा लगयबाक चेष्टा

ढरब- *अपि* च- ककरोपर अतिशय अनुकम्पा/स्नेह देखायब

ढरहायब- दे. ढढ़ायब

ढलढल- फोंकाक पीज भरल स्थिति

ढलता- बेरोक-छेक, निर्बाध

ढलोइ- एक प्रकारक माछ, ढलै (*तोरा के पुछतौ गे ढलोइ !*)

ढल्ला- जरला वा पाकि गेलासँ ऊपर अलगि गेल त्वचा, फोका

ढल्ला ओदरब- फोकाक चमड़ी अंगसँ छूटि कऽ लटकब

ढाकन-तौलाक मुँह झँपबाक छितनार उपकरण, ढकना, झँपना

ढाब- *अपि* च- निचाँस भूमि जतऽ बरखाक पानि बहि-बहि आबि कऽ जमा भऽ जाय

ढार- *अपि* च- ढारबाक कृत्य, उझिलनाइ (*दूधक ढार*)

ढाल- *अपि* च- 1. पानि बहबाक दिशा, क्रमशः निम्न होइत सतह, सतहक लेआ भाग 2. दे. ढल्ला

ढाला- रेलवे-गुमती

ढालू- पानि बहबा योग्य निम्नतर भेल जाइत सतह

ढाहिलोल- महामूर्ख, महाअपरोजक, ढहलेल

ढिढ़कोहबा- कोहा सन नमरल पेटबला

ढिमकी- धरतीक सतहसँ ऊपर उठल माँटिक छोट पिण्ड, छोट ढिमका

ढिलढिलाह- पूर्ण रूपमे नहि कसल जकाँ, अल्प ढील

ढीप- स्वार्थसिद्धि हेतु कथित विश्वसनीय सन फूसि बात

ढीपब- टका-पैसा आदि वा अन्य इच्छित वस्तु ढीप दऽ कऽ ठकि लेब, झीटब

ढुकायब-बलजोरी पैसायब

ढुड्ढुर- अत्यन्त लाल, गाढ़ लाल, [क.को. *-चिक्कन-चुनमुन-अर्थ अशुद्ध*]

ढुन (होयब)- भरि पोख भोजनोत्तर ऊचपेट, पुनर्भोजनक अशक्यता/अनिच्छा

ढुलकब- अनायास नीचाँ दिस गुड़कब

ढुलकाह- गुड़कि जायबला (स्थान)

ढुलब- 1. ककरो दिस आकृष्ट होयब, ढरब, 2. द्र. ढुलकब

ढूल- दाउन कयल धानकेँ ओलि-ओसा कऽ बाहर कयल गेल डाँट-पातक छोट-छोट टुकड़ी ओ बुकनी

ढेउरब- चून वा पिठारक घोरसँ पोतब (देबाल, मूर्त्ति आदि)

ढेकरब- *अपि* च- साँढ़क बाजब

ढेकी कूटब- (*ला.*) नेङरा कऽ चलब

ढेकुड़ी- छोट ढेप

ढेङरियायब- बहुत रास अनुपयोगी वस्तु सब जमा भऽ जायब, अधिक संख्यामे धिया-पुता भऽ जायब

ढेढर- अंगमे बढ़ल गोली सन मांस-पिण्ड

ढेनमा-ढेनमी-छोट-छोट धिया-पुता सब

ढेपी-छोट ढेप, लघु पिण्ड

ढेरकी/ढेरी-ढाकी- प्रचुर परिमाण, ढेरक ढेर, बहुत अधिक

ढेलमारा गोसाँइ- 1. गाम-घरसँ हटि कोनो गाछतरमे स्थित ओ लोकदेवता जकरापर लोकमान्यताक अनुसार अयनिहार-गेनिहार बटोही एकटा कऽ ढेप फेकि देल करैछ 2. बेर-बेर अनेक व्यक्तिक मिथ्या आरोप/उपहासक लक्ष्य बनल व्यक्ति

ढेला- 1. छोट ठोस पिण्ड, ढेप/ढेपा, चेपा, 2. सोनक एक प्रकारक कानक आभूषण, लोरि [*क.को.मे 'ढेला' नहि, यद्यपि एहिसँ व्युत्पन्न 'ढेलबाहि' ओ 'ढेलमास' विद्यमान*]

ढेहा- मिथ्या आरोप, ढेसा [क.को.क *अर्थ 'ढाही'- संगत नहि*]

ढेहै-ढेहै- साँढकेँ थिरायल गाय लग आकर्षित करबाक हेतु मुख-शब्द

ढोकबा- बुड़िबक, ढहलेल, बकलेल

ढोङल- ढहलेल, अलूरि, बकलेल

ढोँढ़बा/ढोढ़बा- 1. नमरल ढोँढ़ीबला 2. जलचर विषहीन सर्पविशेष, ढोँढ़ साप

ढोँढ़िया/ढोढ़िया- ढोँढ साप

ढोँ ढोँ- अनवरत खोँखी करबाक ध्वनि

ढोलना-ढोलकक आकृतिबला एक कण्ठाभूषण

ढोलबज्जा- खुसामदेँ जयजयकार कयनिहार, पछिलग्गू

ढोसि-पानि उपछबाक एक उपकरण, ढोस

ढोढु- पेटक ढोंढ़ीसँ नीचाँबला भाग

ढोहुरी- अवैध गर्भवाली, व्यभिचारिणी (गारि)

[त]

तऽक- एक प्रकारक हँसुली सन गहना

तकीकात- जाँच, अनुसन्धान, तहकीकात

तक्कन- छोटो वस्तुक लेल अनकर आश्रित

तक्कर- दहीक घोरमे नोन दऽ छौँकि कऽ बनाओल व्यंजन, तक्र

तक्खा- देबालमे बनल खोधली, छोट-छोट वस्तु रखबा लेल देबालसँ बाहर निकालल फलक, चक्का

तगबा- पातर ओ नमछड़ आकारक (सजमनि, घिउरा, झिङुनी, भाँटा आदि)

तगाइ- *अपि* च- सीरक-तोशक आदिक सीयनिक बोनि

तगाड़- *अपि* च- भवन निर्माणक हेतु मसल्ला बनयबाक गहींर स्थान

तङ-तरहा- घोड़ाक पीठपरक गद्दी एवं ओकर बन्धनक डोरी, (*ला.*) सकल उपयोगी सामग्री, सब सामान

तड़ दऽ- चट दऽ

तड़पान-फननाइ, कूदि कऽ टपनाइ

ततमतायब- इतस्त:मे पड़ब, ततमतमे पड़ब, करी वा नहि करीक दोमरजा होयब

ततमिन- ततमाक स्त्री

ततारब- *अपि* च- कतरब, काटब

तनाजा/तनेजा- आपत्ति करैत दाबा करब

तनोतरीज- तङ-तबाह, दुर्दशाग्रस्त

तन्देही- ताक-छेम

तन्नुक-कोमल, कनेको बल पड़लापर टूटि जायबला

तप (देब)- *अपि* च- बच्चाकेँ पाच पड़लाक दू-तीन दिन बाद पचनियाँ द्वारा कयल जायबला विधि विशेष जाहिसँ पाचक व्रणमे फोका उठि जाइत छलैक

तपमरू- *अपि* च- पितमरू, जकरा तामस नहि होइक

तपाओन- मकानक निर्माणारम्भमे राजमिस्त्रीकेँ देल जायबला पुरोँत ओ निछाउरक द्रव्य

तपाकी- तुरन्त अगुता गेनिहार, बिनु सोचने अगुता कऽ काज कयनिहार

तप्पत- तप्त, गरम, धीपल

तबठब- अत्यन्त तापसँ सूखि कऽ टटा जायब

तबधब- खूब धीपि जायब, [*क.को. अशान्त उत्तेजित होएब- ई वाच्यार्थ नहि ला.*]

तबेदार- आज्ञाकारी सेवक

तबेदारी- सेवा

तमहा/तमही- तामसँ निर्मित (पात्र)

तय-तमन्ना- सुनिश्चित निर्णय

तय-तसफीया- फड़िछओट, झगड़ाक निर्णय, विवादक निराकरण

तरख- *अपि* च- खूब सुखा कऽ सक्कत भेल

तरखगर- किछु-किछु सुखायल, सक्कत सन, सकतगर

तरङ- 1. लहरि 2. क्रोधक आवेश

तरछब- *अपि* च- वायु विकारक कारणे पेटक तना जायब

तरटेका- दे. टटका

तरतरायब- 1. एकाएक बड़का बुन्नक बरखा होअऽ लागब 2. अकस्मात् चाटे-चाटे मारि बैसब

तरपन- तर्पण, पितरकेँ जल देब

तरपेसकी- गुप्त रूपसँ देल गेल राशि, घूस

तरबिढुआ (काटब)-गुप्त रूपेँ अहित (करब)

तरबिन्हा- अलक्षित रूपमे क्षति पहुँचौनिहार, गुप्त रूपेँ झगड़ा लगौनिहार

तरभुज्जा- एकटा लताफल

तरहारा-धरतीक तरमे बनाओल घर, कोनो मृतकादिकें गाड़बाक लेल खुनल गेल खाधि

तरी- *अपि च*- 1. द्रवक निचला भागमे जमल गादि 2. आर्द्रता, जलीय सम्पृक्तता, हाल

तरी-घट्टी- *अपि च*- आभ्यन्तरिक गुण-दोष ओ लाभ-हानि

तरें- *अपि च*- गाय-महीसक प्रसंगमे-प्रसूत, सहित, संग (*बाछा तरें गाय, पाड़ी तरें महीस*)

तरोटा- *अपि च*- जाँत-चकरीक निचला पल्ला, *वि.* उपरोटा

तर्ज- 1. रीति, पद्धति, ढंग 2. गीतक भास/धुनि

तलक- तक, धरि, पर्यन्त

तलता-ताक-छेम करैत रहब, तालता

तलप(*प्रा.*)- शय्या, तल्प

तलब- *अपि च*- दरमाहा, तनखाह, वेतन

तसगरायन/तसगरेन- हथिअयबाक उद्देश्यसँ वस्तुकें निपत्ता कऽ देब, चोरा लेब

तसदीक- सत्यापन

तसिलदार- लगान असुलनिहार, पटबारी,

तसील- लगान आ लहना आदिक असूली

तहदर्ज- *अपि च*- दऽढ़

तहन- तखन

तहबन- स्त्रीक अन्तर्वस्त्र-खण्ड

तहस-निहस- अन्तिम निर्णय, अन्तिम निष्कर्ष

ताइ- *अपि च*- ककरो द्वारा कयल (*कुकृत्य*)

ताइएँ- द्वारा कयल (*अधलाह काज, कुकृत्य*)

ताक-छेम- रक्षार्थ सक्रियता

ताकुत/ताकुति- खोज-पुछारि, ध्यानमे राखब

ताखा- चक्का, देबालमे बनल वस्तु-जात रखबाक खोधली वा आधार

ताजा- टटका, (बासिक विपरीत)

ताताथैया- नेनाकें ठाढ़ होयब सिखयबाक बोल, कत्थक नृत्यक 'तत थेइ' बोलक तद्भव रूप

तातिलनामा- छुट्टीक सूची

तापत- तप्पत, गरम

ताबा- *अपि च*- रोटी पकयबाक लोहक पात्र, तऽब

तारब- *अपि च*- चूड़ा कुटबाक लेल धानकें पहिने दू-तीन दिन धरि पानिमे फुलायब, [*क.को.-भिजाओल धानकें चूराक हेतु भूजब-अशुद्ध, एहि लेल 'भाड़ब' । दे. क. को. 'भाँड़ब'*]

तारभेआर- दुइ वस्तुक-न्यूनाधिक्यक अनुमान (करब)

तारा- *अपि च*- नदीक दुनू कछेड़क सबसँ उपरका कात/किनार, (*ई तारा ओ तारा एकामय*)

तारे- ह्रस्व उकारक मात्राक चिह्न (ु) तारे 'कु' इत्यादि

ता-ले- ताबत धरि

तिग्गी- तासक तीन छापबला तेसर पत्ती

तिजौरी- नगद राशि रखबाक पेटी, तिजोरी

तितकदुआ- तीत स्वादबला सजमनि (अखाद्य)

तितपड़री- तिलकोरक फड़ सन एकटा लताफल जकर स्वाद तीत होइछ तें अखाद्य, बनपरोड़ [क.को. तितपड़ली- ...एक लताफल जकर तरकारी होइछ- भ्रान्ति पूर्ण]

तितरम्हा- आडम्बर, दीर्घसूत्रता, विलम्बकारक दीर्घ प्रक्रिया, तितम्हा

तितराइन/तितरैनी- एक प्रकारक घास जकरा पीसि कऽ वा जकर रस घावपर लगाओल जाइछ

तितली- पाँखिसँ उड़ऽबला एकटा कीट

तितुआ- *अपि* च- तीत स्वादबला तरकारी/फल (अखाद्य)

तितिर- *अपि* च- पाँखिबला कीट, तितली

तित्तिर- एक प्रकारक चिड़ै

तिनकोनमा- तीन कोनबला (जमीन, खेत)

तिनपढ़िया- तीन पाढ़िबला (साड़ी)

तिनपहिया- तीन पहियाबला गाड़ी, रिक्सा, ऑटो

तिनबटिया- तीन बाटक मिलन स्थल

तिनमसिया/तिनमस्सू- तीन मासक(शिशु)

तिनमहला- तीन तलक मकान

तिनसल्ला- तीन साल पुरान

तिया- तीनक गुणन, कोनो संख्याक तीन गुणा, (*तीन तिया नओ, चारि तिया बारह, पाँच तिया पन्द्रह आदि*)

तिया-पचाँ/पछाँ- खोज-पुछारि, सेवा-टहल

तिरजा (मिलायब)- आमद-खर्चक विवरण (मिलान करब)

तिरमुहानी- दुइ नदीक संगम, त्रिवेणी, [*क.को.* - तीन बाटक सन्धि स्थल, तेबट्टी-असंगत]

तिरहुत- तिरहुति, तीरभुक्ति

तिरेजन- निरर्थक कोनो बातकेँ बिकछायब, कुतर्क करब, विवाद कयनाइ

तिर्री-तिर्री- छोट-पैघ बहुतो चिरक्का लागि कऽ फाटि गेल (वस्त्र), चिर्री-चिर्री, चिर्री-चोथ

तिलकित- तिलक लगाओल, ठोप कयल

तिलकोड़ा-तिलकोड़

तिलकौआ- तिलक रूपमे टका दऽकऽ आनल बर

तिल खायब- मकर संक्रान्ति दिन ज्येष्ठ जन (माता-पिता आदि) द्वारा मुँहमे देल गुड़ सानल तिल-चाउर खाइत काल तनिका वृद्धावस्थामे सेवा करबाक वचन देब

तिल-बहब- सेवा-शुश्रुषा करब, पूर्वमे वा पूर्वजन्ममे तिल खाइत काल देल वचनक निर्वाह करब

तिलबिखनी- 1. छोट-छोट बातपर अकस्मात् क्रुद्ध भऽ गेनिहारि स्त्री, 2. तीक्ष्ण बुद्धिवाली, 3. लौङिया मिरचाइक एक प्रकार

तिलै- एक प्रकारक गाछ, तिलका

तिसना-तृष्णा, पियास, लालसा, इच्छा, आकांक्षा

तीतिर- दे. तित्तिर ओ तितिर

तीमन-तरकारी- रसदार ओ शुष्क मसल्ला युक्त व्यंजन

तीमन-साजन- रसदार तीमन, तरकारी ओ तिलौड़ी/दनौड़ी/पापड़ इत्यादि

तीर- *अपि* च- भोज-भण्डारामे भानस हेतु खुनल गेल पौटी सन गहींर नाम चूल्हा

तील- तिल, एक तेलहन

तीहा- कान्ति, शोभा, रोहानी

तुक- *अपि* च- उचित समय (*तुकपर दवाइ देब*)

तुकमलङ्गा- गूरपर लगयबाक एक दबाइ

तुजार- वर्द्धित, बढ़ि गेल (घाओ, विकार, स्वभाव-विकृति आदि), घावक फफनायल रूप

तुतना (लागब)- *अपि* च- जीहक अग्र भागक निचला तलक बढ़ल अंश जकरा कारणेँ जीहक संचालन बाधित होइछ तथा बोल स्पष्ट नहि बहराइछ ।

तुनतुन करब/तुनतुनायब- छोटो बातपर क्रुद्ध होयब

तुरकिनी- तुरुकक स्त्री, (*ला.*) बदमाश स्त्री

तुरछब- क्रोधित होयब

तुरत- तुरन्त, चट दऽ

तुरफेन- बिहाड़िक कारणे नदीमे उठैत ऊँच तरंग

तुर्छ- खिसियायल, क्रुद्ध

तुर्छब- दे. तुरछब

तुलबुलिया- *अपि* च- 1. मकैक छोट दानाबला एक प्रभेद 2. आकर्षक छोट मुखाकृतिबला

तूम-कलाम (करब/मचायब)- विरोध-विवाद, झगड़ा-झंझटि

तूम-ताम(करब/बतियायब)-तुम इत्यादि कहि रोब देखायब, हिन्दी भाषामे अपमानजनक शब्द कहि झगड़ा करब

तूर- *अपि* च- किशोर-युवा-वयस [*क.को. समवयो वर्ग-सामासिक पदमे ई अर्थ संगत नहि होइछ*]

तूल- *अपि* च- पूर्ण प्रशिक्षित, सब तरहेँ तैयार

तेजाप- तेजाब, अम्ल

तेँड़ी- टालि-गुल्लीक खेलमे गुल्लीक स्थानसँ घुच्चीक दूरीक नापमे तीन टालिक बराबरि (*एँड़ी-1, दोँड़ी-2, तेँड़ी-3, चौँड़ी-4, चम्प-5, एकहन्त-6 दोहन्त-7, सराइबन-8, सित्तो-9*)

तेतरा- तीन बेटीक बाद जनमल बेटा, तेतर (अशुभ), (*तेतर बेटा भीख मङाबय*)

तेतरि/री- तीन बेटाक बाद जनमलि बेटी (शुभ), (*तेतरि बेटी राज लगाबय*)

तेपटा- दे. टेपटा

तेपहल- तीन पार्श्व(पहल)बला ठोस वस्तु

तेफसिला- तीन फसील उपजऽबला खेत, [*क. को. 'तेसारि'क पर्याय 'तेफसिला' कहैत अछि, किन्तु मूल प्रविष्टिमे 'तेफसिला' नहि अछि*]

तेबखा- उड़ीद (*थोड़ घाओ तेबखो चोखाय*)

तेबा-तेहटि- कोनो कार्य-सम्पादनमे अन्यान्य साधन-सहयोगक अनिवार्यता, काज पूरा होयबाक क्रममे उत्पन्न ओझरओट

तेरहम विद्या- अन्तिम साधन रूपमे बलप्रयोग

तेरहा/तेरहिया- *अपि* च- पुरखा (*गारिमे, निन्दामे*)

तेराति- मृत्युक तीन राति बितलाक बाद चारिम दिन कयल जायबला कर्म

तेरी-मेरी- हेरा-फेरी

तेलपक- तेलमे सिझाओल पकमान

तेलाइन-तेलक गन्ध/स्वाद

तेलाह- तेलयुक्त, तेल-सम्पृक्त

तेसराँ- गत वर्षसँ पूर्वक वर्षमे

तेसराइत- 1. तेसर व्यक्ति 2. दुइ व्यक्तिक विवादमे मध्यस्थ

तेसुत- तीन सूतक भत्ता दऽ कऽ बनाओल जनौक तानीक आरम्भिक संरचना

तेसुर/तेसुरकाँ- 1. गत वर्षसँ पूर्वक वर्ष, पौरकाँसँ पूर्वक वर्ष 2. आगामी वर्षक बादक वर्ष, पौरकाँक बादक वर्ष

तेहना- तेहन

तेहरा- तेहराओल गेल, पुनः तेसर बेर

तैखन- तखनहि, ओही क्षण, ओही समयमे, तत्काले

तोतर (लागब)- उच्चारण-दोष(होयब), तोतरयनाइ

तोता रटन्त- सूगा जकाँ एकहि बातकेँ बजैत रहब, बिनु अर्थ बुझने घोषैत रहब

तोतो-अण्डा (करब)- उचितसँ अत्यन्त अधिक आवेश देखायब, इच्छाक विपरीत विवशतामे खुसामद करब

तोप- *अपि* च- खपड़ाक नड़ियाक सन्धिकेँ झाँपऽबला खपड़ाक धारी

तोहमति- मिथ्या आरोप, ढेसा, दोहमति

त्रिपाल (अं.)- लेप चढ़ाओल मोट कपड़ा, तिरपाल

त्रिपेक्षण- त्रि:प्रेक्षण, तिरपेच्छन, तीन बेर परिक्रमा कऽ देवदर्शन

त्रिमुहानी- नदीक संगम, तिरमुहानी

त्रिम्याङ- अनेक प्रकारक ओझरौट

[थ]

थकड़ब- झाँखीकेँ काटि-काटि छोट-छोट खण्ड करब, छकड़ब

थकमकायब-स्तम्भित होयब, सहसा रुकि जायब

थत्ती- धरोहर रूपमे राखल मौद्रिक सम्पत्ति

थपड़ियायब- थापड़सँ लगातार मारब

थबकब/थभकब- गील वस्तुक पिण्डक जमीनपर खसलापर यथावत् स्थिर भऽ जायब, [*क.को. थभकब-अपने भारसँ टुटब -अर्थ असंगत*]

थरभस(लेब)- निष्क्रियता, निराशा, अशक्यता, विवशता (होयब), स्तम्भित भऽ बैसि जायब

थरि- *अपि च*- 1. माछक बच्चाक घानि/समूह, थर, 2. माल-जाल बन्हबाक स्थायी स्थान

थरुहट- थारुजन-बहुल इलाका

थल्ला- एक ठामसँ दोसर ठाम रोपबाक लेल छोट गाछक जड़िक चारू दिस संलग्न माँटिक थिम्हा

थाती- धरोहर, अभिरक्षामे राखल सम्पत्ति, पूर्वजक कृति,

थितगर- स्थिर चित्तबला, विश्वास योग्य, स्थिरबुद्धिक, अचंचल बुद्धिबला

थित-मति- विवेक-बुद्धि

थिमहा/थिम्हा- गोल पिण्ड, गील वस्तुकेँ थोपि-थापि कऽ बनाओल पिण्ड

थिरकब-तालक गतिपर पदकेँ संचालित करब

थिरीथमन- स्थिरता, सुनिश्चित स्थान

थुआ-थक्का-द्रवक जमल गाढ़/ठोस रूप

थुकचट्टा- फेकल थूक चटनिहार, कुकर्मी

थुथुन- नाम मुँहबला पशुक मुँहक अग्र भाग

थुनही/थुन्ही (खसब)- कार्यक्षम शरीर (अशक्त होयब)

थुम्हा- गील वस्तुक पिण्ड, थिम्हा, थुमहा

थुर्री- *अपि च*- थुरल, थकुचा

थुसकुनियाँ (देब/मारब)- विवशतामे अकस्मात् जेना-तेना बैसि गेनाइ, धड़ खसा लेनाइ, (*ला.*) हारि मानि लेब

थुस दऽ- अकस्मात् झट दऽ (बैसब)

थेथरपन/थेथरपनी- थेथरक स्वभाव, थेथरै

थैया- शिशुक ठाढ़ होयबाक चेष्टा, [*क.को. थैआ-See थौआ । प्रवृष्टिमे थौआक प्रदत्त अर्थ- श्लथ, लड़गुज, पिचड़ा ।' किन्तु थैआ/थैयाक ई अर्थ अशुद्ध*]

थैया-थैया- शिशुक ठाढ़ होयबाक प्रयत्नमे प्रोत्साहनक बोल-अर्थात् ठाढ़ होउ, ठाढ़ होउ

थैहर-थैहर- भोज इत्यादिमे सम्भावनासँ बहुत अधिक भोज्य सामग्रीक परसन

थोड़की- कनेक, किंचित्

थोड़-थाम (लगायब)- विवाद शान्त कयनाइ, झगड़ाक शमन

थोड-बहुत-कनेक कम कि कनेक बेसी

थोड़बी- कनेके

थोड़बिक- कनेक

थौआ-थकुचा, पिचड़ा, जर्जर

थौआ-थाकड़/ड़ि- चूर-चूर, छिन्न-भिन्न, पिचड़ा-पिचड़ा भेल

[द]

दँऽक/दओँक- नाकमे कुटकुटा कऽ लागऽबला (मिरचाइ-तमाकूक) कटु गन्ध/धुआँ

दगमग- आशंकित, भयभीत

दगमगायब- आशंकित होयब, डेरायब

दगमगी- आशंका, भय

दड़िमा- *अपि* च- आमक एक प्रजाति

दढ़ियल- पैघ दाढ़ीबला

दँतकथा- बढ़ा-चढ़ा कऽ कहल गेल निराधार आक्षेपात्मक गप्प, बाता-बाती

दतरी- समवयस्क, बतारी, समान तूरक

दँतारि- नरकट जातिक एक तृण जकर फड़ गाँथि कऽ शिशुक दाँत जनमबाक काल गरदनि ओ डाँड़मे पहिराओल जाइछ [*क.को.क अर्थ-दाँतक दर्द- भ्रान्तिपूर्ण*]

ददरी- *अपि* च- घोरल चूनक नीचाँमे जमल बिनु घुलल ठोस अंश

दनही- दानमे देल जायबला, दानमे भेटल, (*ला.*) निम्न कोटिक

दनऽही- कन्याक विवाहक बाद कोनो शुभ दिनमे पोखरिमे स्नान, दहनही

दने- एकटा अव्यय, होइत (*ओहि गाम दने जाउ*)

दफा- अपि च- 1. खेप, बेर, आवृत्ति 2. निमित्त, हेतु (*पुरुखक दफा नोत*)

दफे- दे. दफा

दफेदार- चौकीदार सभक प्रधान, दफादार

दबहिल- मुँहदुब्बर, दुर्बल

दबाइ-बीरो- औषधि ओ अन्य उपचारादि

दमगर- *अपि* च- मजगूत

दम साधब- 1. साँस रोकब 2. डर/संकोच सँ निष्क्रिय होयब

दमसायब- डाँटब, डपटब,

दरचौठ- मूलक चतुर्थांशक अनुपातमे लगान-सूदि, हिस्सा आदि

दर-दुनिया- सकल संसार

दरबाइन- चिरकालिक बिनु माँजल दरब (धातु)क बासनमे राखल खाद्य वस्तुमे उत्पन्न गन्ध वा स्वाद

दराधनी- *अपि* च- अत्यन्त बदमास स्त्री

दरेसब- हाँसूसँ छोपब/काटब/रेतब

दरेसी- पिजाओल धारबला हाँसू

दरोगनी- 1. दरोगाक पत्नी, 2. महिला दरोगा

दलिघोटना-सीझल दालिकेँ मिलयबालेल बेँट लागल चक्र, रऽही

दलिसग्गा- दालिमे साग मिला कऽ बनाओल गेल व्यंजन

दशद्रोही/दसद्रोही- अधिक लोकक विरोधक पात्र

दसखती- हस्ताक्षर करबाक बदलामे देय शुल्क (घूस)

दसगरदा- सामाजिक कार्य हेतु उपयोगी, सामाजिक कार्यक निमित्त [*क.को. See दस्तगर्दा, ओतऽ कहल गेल अर्थ अछि- 'हथपैंच' । दसगरदाक ई अर्थ असमीचीन*]

दसमी पूजा- दे. दसहारा

दसराहा- गंगादशहरा

दसहारा- आश्विन शुक्ल पक्षक प्रतिपदासँ दशमी धरिक दुर्गापूजा, दसहरा

दहायब- *अपि* च- जलक सतहपर स्थित रहब

दहाड़ब- गरजब, चिकरब

दहियाही- दही पौरल जायबला बासन

दहौआ- बाढ़िमे दहा कऽ आयल

दाग- *अपि* च- मृतकक दाहकर्म(क वस्त्र/साड़ी)

दाग-पट्टी- भरल बोरापर अंकित ओजन

दागब- *अपि* च- कागतपर अर्थहीन लेखन करब, कागतपर चिरचीरी पाड़ब

दागा- धोखा, वंचना, विश्वासघात, दगा

दाढ़ा- 1. पैघ-पैघ केशबला दाढ़ी 2. ईंटक देबालमे पुनः आगाँ देबाल जोड़बाक उद्देश्यसँ नीचाँसँ ऊपर धरि बहका कऽ छोड़ल गेल ईंटक दऽर

दातमनि- दाँत मँजबाक लेल टुट्ठी वा बीत भरिक डहुरी, दतमनि

दाम करब- मोलाइ करब, मूल्य निर्धारण करब

दामुल- कालापानी, आजीवन कारावास

दालक (छूटब/छोड़ायब)- लति, लुतुक, आदति, अभ्यास, स्वभाव (अधलाह)

दालचीनी- मसालाक रूपमे प्रयुक्त एक प्रकारक छाल जे मिठ ओ कड़ू होइछ, दालिचीनी

दालहरदि- दारुहरदि, दालिहरदि, एक औषधीय वृक्षक छाल

दासोदास- *अपि च*- भक्ति वा भयसँ आज्ञा-पालनमे सदा तत्पर/सेवामे निरन्तर लागल, [*क.को. दासक दास, परम भक्त सेवक-अर्थ असमीचीन*]

दाह-बोह- 1. अधिक वर्षासँ दहब-बहब, 2. भोज-भातमे पर्याप्त रहने पातपरसँ दही-सकरौड़ीक बहब

दाहर- बाढ़ि

दाहू- दाहरक समयमे जनमल व्यक्ति

दाहोरानी- अनपेक्षित रूपमे घरक मलिकाइन बनि गेलि स्त्री, गिरथाइन

दिकम-सिकम/दिक्कम-सिक्कम- अभावमे कोनहुना (निर्वाह)

दिगदिग थैया- शिशुक ठाढ़ होयबाक प्रयत्नमे कथित उत्साहवर्द्धक बोल

दिदगर/दिदगरि- ढीठ (*दिदगरि कनियाँकेँ भैंसुर लोकनियाँ*)

दिदिया-पिउँसि, जेठि बहीन

दिन उठब- सूर्योदयक बाद अधिक समय बीतब

दिनकाटब- विवशतामे/विपन्नतामे समय बितायब

दिन खसब- बेरुक पहर होयब, बेर खसब

दिन घटब- अधलाह समय आयब, विपन्न होयब

दिनघट्टू- जकर दिन घटल होइक, अभागल

दिनजरू- अभागल, करमघट्टू

दिन-बर-दिन- दिनानुदिन, क्रमशः, कालक्रमे

दिनादिनिस- दिन-देखार, सभक सोझाँ

दिना-दिनी- अनेक दिनमे क्रमशः, दिन प्रतिदिन

दिनियायब- व्यग्रतामे छिछियायब

दिपली- छोटका दीप

दिपलेसन/दिपलेसना/दिपलेसनी- कोनो बातकेँ सगरो काने- कान कहि प्रचार कऽ देनिहार

दिबड़खौक/दिबड़लग्गू- दिबाड़ लागल

दिबान- एहन पलंग जकरा नीचाँ पेटार बनल होइक

दिबारी- सुखराती, दीपावली, माटिक छोट दीप

दियामान- सौभाग्य, अहोभाग्य, [*क.को. -प्रतिष्ठित-अशुद्ध*]

दिशांश/दिसांस- दिग्भ्रम

दिलदार/दिलहगर/रि- उदार, सहृदय, अकृपण

दिबालग्न/दिवालग्न- दिनमे विवाहक शुभ मुहूर्त्त

दिसासरय/दिसाश्रय- पक्षपात, एकपक्षीय

दीनानाथ- सूर्य भगवान (छठि पाबनिक देवता)

दीपालगन- दे. दिबालगन/दिवालग्न

दीपू- बच्चाकेँ फुसिया कऽ चौरौनिहार

दीया- दीप, डिबिया

दीया-बाती- सुखराती पाबनि, दीपावली

दीसा करब/फिरब- मलत्याग करब

दीसा जंगल- मलत्यागक हेतु झोँझ इत्यादि अऽढ़स्थान

दुअतकन्ना- औकारक मात्रा-ौ (*दुअतकन्ना कौ*)

दुअम्मा- दुइ आमक गुच्छा, कोनो दुइ फलक गुच्छा

दुअरछेकाइ/दुअरिछेकाइ- मूड़न-उपनयनमे बड़ुआक एवं बियाह-दुरागमन आदिमे वर-कनियाँक गृह-प्रवेशकाल बहीन, भाउजि, सारि, सरहोजि आदि द्वारा प्रवेशक बाट छेकबाक विधि, द्वार छेकबाक उपलक्ष्यमे देल जायबला राशि

दुआरि-देहरि

दुआरेँ-कारणेँ, दोषेँ, निमित्त

दुकन्ना/दुकन्हा- गाछमे एक ठामसँ फूटल दुइ डारिक सन्धि

दुखदायक- कष्ट देनिहार, पीड़ा देनिहार

दुखन/दुखना/दुखनी- दुखसँ ग्रस्त

दुखमोचन/दुखहरण/न- दुखसँ मुक्ति दियौनिहार, भगवान, महादेव, देवता

दुगच्छा(तर)- ओ स्थान जतऽ दुइ गोट गाछ रहबाक कारणे जानल जाइत हो

दुगमिया- भिन्न वर्गक गाममे वैवाहिक सम्बन्ध कयनिहार

दुगोला- पारम्परिक विरोधक कारणे दुइ भागमे विभक्त समूह, पारस्परिक मनोमालिन्य/झगड़ा

दुग्गी- *अपि* च- तासक दुइ छापबला दोसर पत्ती

दुग्गी-तिग्गी- अति साधारण सामर्थ्यक व्यक्ति, आदी-गुदी,

दुचारनि- दुश्चरित्रा, दुष्टा, हितेच्छु बनि शत्रुक आचरण कयनिहारि स्त्री, दुहू प्रतिपक्षीक आप्त बनि टूसि-टूसि कऽ झगड़ा लगौनिहारि स्त्री (*एहन दुचारनि ननदो कतहु ने देखल, साँझे राति कहय परात*)

दुचारा/दुचारी- दुइ चारबला घर (*वि. एकचारी*)

दुजनियाँ-दुइ व्यक्तिक समावेश योग्य (खाट/चौकी आदि), (*वि. एकजनियाँ*)

दुजीबा- गर्भवती (स्त्री)

दुटप्पी-संक्षिप्त गप्प, गोपनीय संक्षिप्त बार्त्ता

दुतकारब- दुरदुरायब, अपमानपूर्वक निवृत्त करब

दुतरफा- उभय पक्षक तोख रखनिहार

दुतरफी- दुनू पक्षसँ

दुती/दुतीवर- दोसर बेर वियाह कयनिहार वर

दुदिसिया- खेलमे दुनू पक्ष दिससँ खेलनिहार, दुहू प्रतिपक्षीमे अपन समान प्रवेश रखनिहार (*दाओकेर दुदिसिया*)

दुदीना- मतभिन्नताक कारणे एके पावनि दू दिन होयब, दू दिनमे सम्पन्न होअऽबला

दुदुर/दुद्दुर- जलोदर रोग, पनिदुद्दुर

दुद्धी- *अपि* च- मोटका धानक एक प्रभेद

दुधनप्पा- दूध नापल जायबला पात्र/नपना

दुधिया- *अपि* च- 1. बेढ़क रूपमे प्रयुक्त एकटा झाड़, 2. कुसियारक खेतमे होअऽबला एक अनेरुआ लत्ती जकर साग होइछ

दुनाली- दुइ नलीबला (बन्दुक)

दुपट्टा- महिलाक ओढ़नी

दुपनियाँ- दुइ पन्ना अर्थात् चारि पृष्ठमे छपल/लिखल

दुपलिया- दुइ पल्लाबला केबाड़, दू पल्ला वस्त्र खण्डकेँ साटि कऽ बनाओल चद्दरि/ओढ़ना, दोहरि

दुपहरिया- मध्याह्न, दुपहर

दुपहिया- दू पहियाबला गाड़ी

दुपिट्ठा- कागतक दुनू पृष्ठपर लिखल वा छापल

दुफसिला- सालमे दुइ फसील उपजऽबला खेत

दुफेँड़ा- नीचहिसँ दू धड़बला गाछ

दुबगली- बाटक दुनू कात, दुनू बगल

दुबल- दुर्बल (*अबल दुबल पर सितुआ चोख*)

दुब्बर- लटल, कृशकाय

दुब्भी- दूभि, दूर्वा

दुभाषिया- दुइ भिन्न-भिन्न भाषा-भाषीक मध्य एकक कथनकेँ दोसराकेँ ओकरा भाषामे अनुवाद कऽ कऽ कहनिहार

दुभिया- दूभि सन एकटा घास

दुमरजा- दुइ विकल्पक दुविधा

दुमहला- दुइ तलबला मकान, मकानक दोसर तल/महल

दुमाङि- दुइ नाओक माङि, दुइ नाओक माङिपर एकहि संग (पैर राखब), दुइ भिन्न-भिन्न साधनसँ कार्य सिद्धिक चेष्टा, एकहि संग दुइ विकल्पपर निर्भरता

दुमुहाँ/दुमूहाँ- 1. दू दिस मुहबला 2. गनगोआरि साप, कहल जाइछ जे ओकरा दुहू दिस मुँह होइछ 3. मित्र बनि शत्रुक आचरण कयनिहार

दुरगञ्जन- फज्झति, दुर्दशा, दुर्गति

दुरङ्गा- दुइ वर्णक, जाहिमे दुइटा रङ्ग होइक

दुरजरू- दुरदुर शब्द द्वारा निन्दित भेनिहार, अभागल, मुँहचुरू, निन्दाक पात्र

दुरभखा- अलच्छ बात, अप्रिय कथन, अशुभ वचन

दुरमिल- 1. बड़ कठिनतासँ प्राप्य 2. दूरबीन

दुरात्मा- दुष्ट प्रकृतिक व्यक्ति

दुराहुत- दूरपर स्थित, बेसी दूरपर

दुरित-दुख, कष्ट, पाप

दुरुक्खा- हवेली/आङनमे प्रवेश ओ निष्क्रमणक मुख्य द्वार, दुइ दिशामे रुखिबला मकान, उभय पीठक सुदर्शन सतहबला (वस्त्र, कागत आदि)

दुलकब- *अपि* च- माथ वा कान्हपर अधिक भार सहित तेज गतिसँ चललापर देहक ऊपर-नीचाँ होयब [*क.को. उछलैत-कुदैत चलब-असमीचीन*]

दुलकी (मारब)- *अपि* च- झटकि कऽ चलनाइ, तेज गतिसँ दुलकब

दुलत्ती- घोड़ा ओ गदहाक पछिला दुनू टाङक लथाड़

दुलरी/दुलारि- दुलारू (स्त्री), दुलरैतिन

दुलेब- एक बेर लेबल भीत वा टाटपर दोसर बेर पुन: देल लेबा, दोसर खेप माटिक लेप चढ़ायब (*मधुकेर पड़ल दुलेब कोइलिया घूलल घामल बोल छौं -चन्द्रभानु*)

दुश्मन- शत्रु

दुशमनी- शत्रुता

दुसञ्झा- दुइ व्यक्तिक स्वत्वबला

दुसञ्झी- दुनू सन्ध्या, दुनू साँझ, भिनसर ओ साँझ, दिन ओ राति

दुसमन- शत्रु

दुसमनागत/दुसमनी- चिरकालिक शत्रुता

दुसमनियाँ- शत्रुता रखनिहारि स्त्री, दुष्ट स्त्री

दुसुत्ती- दुइ सूतक तानी-भरनीसँ बीनल कपड़ा

दुहत्थी-दुनू हाथसँ लाठी पकड़ि कऽ प्रहार

दुहाइ- दूध दुहनिहारक पारिश्रमिक (दूध वा टका)

दुहान- बहुत देरी धरि दुहनाइ, अनेक गाय-महीसकेँ दुहनाइ (*गाय गोआर मिलान तँ ठेहुने पानि दुहान*), [*क.को.-दुहाओन, दुहबाक पारिश्रमिक -असमीचीन*]

दुहाब- पारिश्रमिक लऽ कऽ दूध दुहनिहार

दुआ- *अपि* च- आशीर्वाद, शुभकामना

दू काङ- दू केर खाँत, दू (2) संख्याक 1 सँ 10 धरिक गुणन सारिणी

दूतावास- अन्य देशक राजदूतक कार्यालय, अन्य देशमे राजदूतक कार्यालय

दूध-मुँह-मृतक संस्कारक बाद कयल जायबला एक विशेष कृत्य

दूरदृष्टि- भविष्यक विषयमे सोचबाक शक्ति

दूरा- *अपि* च- आवासक अगिला भागमे स्थित पुरुषवर्गक बैसबाक स्थान, दलान, दरबज्जा (दूरा-दरबज्जा)

दूरा लागब- वर-बरियातीक कन्यागतक दलानपर पहुँचब

दूसब- खिधांस करब, आलोचना करब, निन्दा करब

देकची- समान रूपसँ फैल पेट-मुहबला भानसक बासन

देखनबाला- 1. देख-सुन कयनिहार, रक्षक, आभिभावक 2. अद्‌भुत, आश्चर्यजनक, देखबाक योग्य

देखनहुक- देखनुक, सुन्दर, देखबामे नीक

देख-रेख/देख-सुन- ताक-छेम, रक्षण

देखाउँसि- *अपि* च- दिग्भ्रम, दिसांस

देखाबा- आडम्बर, प्रदर्शन

देखा-सुनी-सन्तुष्टि/सम्पुष्टि हेतु विवाहसँ पूर्व वर अथवा कन्याक साक्षात्कार करब

देगची- दे. देकची

देनदार- ऋगी, दायी,

देनी-लेनी- परस्पर ऋण-पैंचक व्यवहार

देबगनाह- दिव्य शक्तिसँ युक्त, भावी घटनाक पूर्वाभास बुझनिहार

देबदार- एक प्रकारक हल्लुक काठबला गाछ

देबलिया- ऋण लऽ कऽ चुकयबामे असमर्थ भऽ गेनिहार

देबहरि- एक जाति जे पूर्वमे पचनियाँक बृत्ति करैत छल

देबाइ-धरमाइ- कष्ट निवारण वा मनोकामना पूर्त्ति हेतु कयल जायबला पूजा-पाठ ओ कबुला-पाती

देबानजी- करपरदाज, पटबारी, कायस्थ

देबाला- ऋण चुकता करबामे अक्षमता

देबाला मारब- ऋण लऽ कऽ वा व्यापार-सामग्रीक मूल्य पश्चात् देबाक वचनसँ फूसि असमर्थता देखाय नठि जायब

देबाहि-धरमाहि- दे. देबाइ-धरमाइ

देरी- *अपि* च- पूर्व क्रियाक कारणे भेनिहार दोसर क्रियाक अविलम्बता-सूचक अव्यय

देसकुट- पिहानीबला पद्य, दृष्टिकूट

देसबाली- स्थानीय, स्थानीय उपज, अपन प्रदेशक (लोक), देसी

देसरिया- एक प्रकार मोटधान (दुद्धी-देसरिया) [*क.को.- सौरभवाला एक मेही धान- सतरियाक भ्रम*]- दे. सतरिया

देहरी- देहरि, दुआरि

देह-समाङ/देही-नेही- आकस्मिक शारीरिक कष्ट/व्यथा आदि

दैबी-दिलाही- आकस्मिक दुर्घटना एवं तत्सदृश घटना

दैया- ज्येष्ठ महिला-सम्बन्धीक हेतु प्रयुक्त दाइ शब्दक दीर्घ रूप, शोकादि व्यंजक शब्द

दैयो-स्त्री द्वरा समवयस्का स्त्रीक प्रति प्रयुक्त दाइ शब्दक सम्बोधन रूप

दोअतकन्ना- औकारक मात्रा (ौ)

दोआत- मोसिहानी, दोआति

दोआत पूजा/दोआति पूजा- चित्रगुप्त पूजा जे कार्त्तिक शुक्ल द्वितीयाकेँ होइछ

दोआदसी- द्वादशी (तिथि)

दोआरा- उपाय, बचबाक बाट

दोइया-पाइ-निरुद्देश्य घरक वस्तुकेँ एमहरसँ ओमहर करैत रहनाइ, महत्त्वहीन काज सब

दोकठी- दुइ काठक बीच अति संकीर्ण स्थान

दोक्कन- गाछक दुइ डारिक सन्धि

दोगठी/दोगा/दोगाठी/दोगी- दुइ वस्तुक बीच अति संकीर्ण जगह [क.को. *दोगाठी-जाँतल-दबल जगह- असमीचीन*]

दोचित्त- दू दिस बटल ध्यान, चंचल मनःस्थिति

दोदरा- शरीरपर चोट लगलासँ फूलल त्वचा

दोम- *अपि च*- नाङड़ि, पुच्छ

दोमरजा- दुइटा समान महत्त्वक विकल्पक कारणे अनिर्णय

दोरिक- एक प्रकारक प्राचीन नाच

दोल-बाती (-देब)- 1. लचकऽबला आधारपर देहक भारसँ दबा कऽ झूलब 2. एक डारि परसँ दोसर डारिपर कूदि-कूदि कऽ झूलब 3. (*ला.*) फूसि आश्वासन दऽ दऽ कऽ समय बितबैत रहब, खेप-खेपा करब

दोसती- मित्रता, यारी

दोस-महीम- मित्रादिवर्ग

दोहट/दोहटा- एकहि परिवारक दू ठामक चास-बास

दोहरी- दोसरो बेर, दोसरो

दोहरौअलि- दोहराओल गेल, दोहरौनी, पुनःपुनः

दोह हिछब/दो-हिछब- अशुभ बात बाजब, अमंगल सूचक कथा कहब

दोहितरी/दोहित्री- नातिन, दौहित्री

दोहित्र- दौहित्र, नाति

दौनबाह/दौनिबाह- दाउनि कयनिहार, दाउनिमे बड़द हँकनिहार

[ध]

धउ- असहमति/उपेक्षा वा खण्डन-सूचक अव्यय

धओल- हाथक मुट्ठीसँ केहुनी धरिक फट्ठीसँ पीठपर कयल प्रहार

धखगर- प्रभावोत्पादक (शरीर/व्यक्तित्व)

धखायब- *अपि च*- कनेक-कनेक नेङड़ायब

धग्गी- कम चाकर ओ बेसी लम्बाइबला (खेत/जमीन)

धच्चा- डऽल, टिटपनी, धृष्टता

धड़खसाओन- साधारणो काजमे असमर्थता देखौनिहार, काजसँ छिटकनिहार, आलसी

धड़ दऽ- चट दऽ, अविलम्ब

धड़पड़नियाँ- धरना, कार्यसिद्धि हेतु लागल रहब

धड़हर- पानिक धक्कासँ खँघड़ल नदीक किनार/पोखरिक भीड़ [क.को.- *भड़हर- असमीचीन*]

धधायब- *अपि च*- आततायीक तेज गतिसँ उन्नति करब (*जे जहिना धधाय से तहिना मिझाय*)

धन- *अपि च*- धन्य, श्रेयक भागी, धन्यवादक पात्र (*धन थिकहुँ अहाँ कि धन थिकहुँ हम*)

धनकब- धधरा होयब, आगिक लहरब

धनकायब- आगि पजारि धधरा करब

धनकार/धनिकार- बाँसक ढाकी-पथिया बिननिहार एक जाति

धनकुट्टी- 1. धान कुटनाइ 2. धान कूटऽबला मशीन/मील

धनटेढ़- धनिक होयबाक घमण्डसँ भरल

धनतेरस- कार्त्तिक कृष्ण पक्षक त्रयोदशी जाहि दिन धातुक वस्तु-जात कीनब शुभ मानल जाइछ, धन्वन्तरि जयन्ती

धनमण्डल- धानक अप्रत्याशित अधिक उपजा, अधिक धान उपजऽबला क्षेत्र/खेत

धनमन्ती- सौभाग्यशालिनी स्त्री

धनसीसा- मकैक फूल जे धानक सीस सन होइछ

धनहारी- कोठीमे बनल खोधली/ताखा

धनाठ- अधिक धनबला, धनाढ्य

धनि- *अपि* च- श्रेयक भागी, धन्यवादक पात्र, दे. धन

धनिकहा/धनिकाहा- धनी वर्ग (निन्दामे)

धनिकाइ- धनाढ्यता

धनिकाइन- धनिक व्यक्तिक स्त्री, प्रचुर धनबाली स्त्री

धनियाँ- 1. एकटा मशाला, 2. प्रिया, स्त्री

धऽनी- दे. धनियाँ -1

धनुखा- धनुष, सीता-विवाहक धनुष-यज्ञसँ सम्बद्ध एक विशेष तीर्थ जे नेपालक तराइ (मिथिला) भागमे स्थित अछि

धनुखा-टूटब- चिरकालिक बाधाक निवारण होयब

धन्धारी- दे. धनहारी

धन्धि- चिन्ता, फिकिर

धन्नासेठ- खूब धनिक, बेसी सम्पत्तिबला

धबब- *अपि* च- अग्रिम ऋतुक आगमनक/ आरम्भक आभास होयब

धमकब- *अपि* च- 1. अकस्मात् उपस्थित होयब 2. कनेक-कनेक (माथ) दुखायब

धमक्का- 1. मुक्कासँ पीठपर प्रहार 2. लोहक एक उपकरण जाहिमे विस्फोटक पदार्थक पुड़िया भरि कऽ पटकलापर 'फटाक' सन ध्वनि बहराइछ, फटाका फोड़बाक यन्त्र

धमगज्जर- *अपि* च- 1. घनघोर वाग्युद्ध, झगड़ा-झाँटी 2. काज-परोजनमे खाद्य-सामग्री सभक छिजाओ

धमधुसरी- मोट-डाँट देहबाली खूब काजुल स्त्री

धमाउर- झमकौआ होरी-गीत

धमाचौखड़ी- उधम,

धमुक्का- दे. धमक्का

धमुच्चा- साढ़े छओ केर खाँत (*एक धमुच्चे साढ़े छओ, दू धमुच्चे तेरह, तीन धमुच्चे साढ़े उनैस इत्यादि*)

धरब- अपि च- सटब, संलग्न होयब, (आगि) पजरब

धरमतमा- धार्मिक मनोवृत्तिक व्यक्ति

धरमदोख- दे. धर्मदोष

धरमा-धरमी- धर्मसहित, सत्यनिष्ठा-सहित, न्यायपूर्वक

धरहर (*प्रा.*)- धवलगृह, राजप्रासाद

धरानि- कष्टकर उपाय, कठिन रीति

धराह- *अपि* च- 1. पैघ घुसखोर, घुसहा, 2. विषधर सर्प

धरी-धोख- संकोच, लाज, धाख

धर्मकाँटा- गाड़ीपर लादल सामग्री जोखबाक पैघ यन्त्र, राटन

धर्मतः- दे. धरमा-धरमी

धर्मदोष- नैतिक त्रुटि

धँऽस-पट्टी देब- धमकायब, क्षति पहुँचयबाक भय देखायब

धऽस लेब-मरबालेल इनार-पोखरिमे डूबि जायब

धाजा-धुजा, ध्वजा

धातरी-अओरा, आमलक

धाति(धरब)- भगल (करब), कृत्रिम चेष्टा

धाप- *अपि* च- ऊपर चढ़बाक लेल बनल स्थायी सीढ़ीमे पैर रखबाक क्रमिक आधार-स्थल

धाप-धूप- धिया-पुताक एकटा क्रीड़ा

धार-साज- कोनो वस्तुक उपलब्धिक (शुभाशुभ) फल

धाही- *अपि* च- पराक्रम, रोब-दाब

धिमका/धिमकी- सामान्य सतहसँ ऊपर उठल माँटिक पिण्ड/तल, ढिमकी

धिमराहा- धिम्मरसँ सम्बद्ध, अधिक कालमे धीपऽबला(-बासन) (*तौला रे धिमराहा छओ मास धीपैलय*)

धिरायब- डर देखायब, धमकायब, चेतायब, चेतौनी देब

धिरिक-धिक्, धिक्कार (*हट हट रे जटा, छूअल जायब रे जटा, धिरिक जीवन रे जटा*)

धिर्त- धैर्य, सन्तोष, धृति

धिर्तघट्टू- धैर्यहीन, सन्तोषहीन, अधक्की

धीया-बेटी, कन्या

धी-पुतोहु- कन्या ओ वधूवर्ग

धी-बेटी- कुमारि ओ बिआहलि कन्यावर्ग

धुआ कऽ/धुआ-धुआ कऽ- नाम लेने बिना व्यक्ति विशेषकेँ लक्षित कऽ (निन्दा, आक्षेप गारि इत्यादि) (*धुआयब क्रियाक अन्य रूप* लुप्त)

धुकनि- धुआँक झोँक देनाइ

धुतहुर- एक प्रकारक औषधीय गाछ, धतूर, धथूर

धुत्थुर- झुनकुट (बूढ़)

धुथरी- अत्यन्त छोट मौनी

धुनब- *अपि* च- अनधुन पीटब

धुन्धकारी- उत्पाती, उपद्रवी

धुपछाँही- ओ स्थान जतऽ रौद ओ छाया दुनू रहय

धुपसरड़- जरौलापर सुगन्धि उत्पन्न करऽबला विशेष प्रकारक लकड़ी/काठ

धुमधुसरा/धुमधुसरी- मानापमान रहित स्थूलकायाबला

धुमसाही- एकहि समयमे अनेक कार्यक सम्पादन-सक्रियता, अस्त-व्यस्तता ओ अशान्ति-जनक कार्य-व्यापार

धुम्माखेरहा/धुम्माखेरा-एक प्रकारक मोटका धान

धुरझार- बिना रोक-टोक, निर्बाध

धुरतै- ठकपनी, धूर्त्तता

धुरफन्द- छल-कपट

धुरफन्दी- छल-कपट कयनिहार

धुरफन्दी लाल- धुरफन्दमे निष्णात, चलता-पुरजा, धूर्त्त (*लालोमे लाल धुरफन्दीलाल*)

धुरिया मलार- ग्रीष्मान्तमे गाओल जायबला एक गीत प्रभेद

धुरियायल- धूरा लागल, गरदा लागल

धुरियायले पैरेँ- यात्रासँ अयलापर बिनु पैर धोयनहि, प्रत्यागत भेलाक बाद अविलम्ब

धू- 1. लाथ, बहाना, 2. वन्य पशु ओ चिड़ै आदिसँ जजातिक रक्षा लेल खेतमे ठाढ़ कयल गेल खढ़ इत्यादिसँ निर्मित मनुष्याकृति [क.को. *घास-पात- असमीचीन*]

धूआ-काया- शरीरक गठन, शरीरक हाड़-काठ

धूआँ- धूम, धुआँ

धूकब-केरा-आम आदिकेँ पकयबा लेल निमुन्नमे राखि कऽ धूआँ झोँकब

धूजा- ध्वजा, पताका, धाजा, धुजा

धूप- एक विशेष प्रकारक वृक्ष जकर काठकेँ जरौलापर सुगन्धित धूआँ बहराइछ, सरड़, धुपसरड़ [क.को. *सौरभबाला धुआँ-असंगत*]

धूमन- साल वृक्षक लस्सा जकरा आगिमे जरौलासँ सुगन्धित धूआँ बहराइछ

धूसब- 1. समक्षहिमे निन्दा करब, फज्झति करब, 2. वस्त्रादिकेँ अत्यधिक उपयोग कऽ विकृत करब, वस्त्रादिकेँ धाङब

धेआन- ध्यान

धैँचा- खाद ओ जारनिमे उपयोगी एकटा गाछ, मनेजरा, ढैँचा

धोइ- पानिमे फुला कऽ धोअल उड़ीदक दालि

धोइनि- पाक सामग्रीकेँ धो कऽ पसाओल गेल पानि

धोइनि-धान-धोइनि एवं तद्‌वत्

धोख-सङ्कोच, लाज, रोच

धोपब- *अपि च-* रखाड़ब, डाँटब

धोबिनियाँ- 1. धोबिक स्त्री 2. एक गोट चिड़ै जे झपट्टा मारि कऽ माछ पकड़ैत अछि, धोबिया चिड़ै

धोबियाही- धोबिसँ सम्बद्ध (पोखरि, घाट, गाम, कपड़ा आदि)

धौजन/धौजनि- *अपि च-* एकहि बेरमे अनेक कार्यक उपस्थिति भेने थका देबऽबला व्यस्तता

[न]

नकधुन्नी- मोन जोगरक वस्तु नहि भेटलापर अस्पष्ट शब्देँ भनभनैनिहारि (निन्दामे)

नकफकड़ा/ड़ी- 1. पसरल नाकबला/नाकबाली 2. सब काज वा बातमे घृणा/असहमति देखयबाक स्वभावबला (पुरुष/स्त्री)

नकफेँचा- पीचल नाकबला, सापक फण सन आकृतिक नाकबला

नकबास/नकबासा- नाकक सभसँ उँचका भाग

नकमानि (करब)- *अपि च-* अकच्छ, आजिज, आरिज, विवश, अतितृप्ति, अतिशयता जन्य विरक्ति

नकरा- नाकक घाओ

नकलची- अनुचित अनुकरण कयनिहार, देखाँउसि कयनिहार

नकसक- अजीर्ण भोजन, भोजनाधिक्यक कारणे नाक धरि ठेकब

नकसी- दूरस्थ वस्तुकेँ लग घिचबाक लेल नमहर डण्टामे छोट गुल्लीकेँ तिर्यक बान्हि कऽ बनाओल गेल अँकुसी

नकार- *अपि च-* अस्वीकार

नकार-सिकार/नकार-सिखार- मुखाकृति

नकुसी- दे. नकसी

नकोर- *अपि च-* प्रशस्त उच्च(भूमि), प्रमुख

नखार-सिखार- दे. नकार-सिकार (नखशिख)

नखरा-तिल्ला- अनेक प्रकारक अविश्वसनीय बहाना, अस्वीकारक छद्मचेष्टा

नग- *अपि च-* एकाइ, संख्या

नगदा- नदीमे उठैत ऊँच तरंग [*क.को. झटक-अशुद्ध*]

नगदी- मूल्य चुकता कऽ (पैँच उधारक विपरीत)

नगन- नाङट, नग्न

नगरिया- नगर

नगहर (-भरब)- उपनयन-विवाह-द्विरागमन इत्यादिमे सधवा द्वारा पोखरिसँ जलपात्रमे जल भरि कऽ अनबाक विधि, जलपूर्ण मंगल कलश [*क.को.मे भिन्न अर्थ प्रदत्त*]

नगीना- आभूषणमे जड़ल मूल्यवान पाथर

नगोल-पक्का मकानक सीढ़ीघरक सबसँ उपरका छत

नघर- दे. नगहर

नङट- बदमास, लङ्गट

नङटिनी- बदमास स्त्री

नङड़िडोलाओन- स्वार्थसिद्धि मात्र धरि अपनत्व देखौनिहार, जकरा-जकरासँ कार्यसिद्धि सम्भव तकर खुसामदमे रहनिहार, अविश्वसनीय

नङड़िडोलाओन धन- बड़द इत्यादि माल-जाल

नङड़िममोड़ (देब)- 1. कुकुर जेना लोभेँ लोक लग नाङड़ि ममोड़ैत जाइत अछि तद्‌वत् आचरण (-करब) 2. बड़दकेँ नाङड़ि ऐँठि कऽ उत्प्रेरित करब

नङड़िया पिलुआ- नाङड़िबला एकटा कृमि

नङड़िसट (लागब)- 1. (कूकुरक) मैथुनमे संलग्नता जे छूटब कठिन भऽ जाइछ, 2. अनुचित सम्बन्ध

नङो-चङो- अकच्छ, आरिज

नङोटा- कौपीन, कछिया

नङौटी- भगबा

नङ्गोथान-बिहङ्गो- सैंतल-सम्हारल बीत-बाखर सभक बिरहा जायब, जे वस्तु सभ जेमहर गेल तकर ओम्हरे रहि जायब, स्थान च्युत भऽकऽ नष्ट होयब

नचनी-नाच (लगायब)- आपठ (खसायब), उछन्नर

नचरब- नचार भऽ जायब

नचरल- आर्थिक दृष्टिएँ दुर्बल

नछतरी- भाग्यक जोरगर, नक्षत्री

नजरिया- 1. नजरिपर आधारित (नकसा) 2. शिशुकेँ नजरिसँ बचयबा लेल पहिराओल कारी बलय

नटखट- छोट-छोट उपद्रव कयनिहार नेना, उकट्ठी [क.को.-उकठ, उत्पात 2. अशुभ अभव्य घटना-उभय अर्थ असंगत]

नटिन/नटिनियाँ- नटक स्त्री, खोदपाड़नी, (*उतरहिँ राजसँ अयलै एक नटिनिये रे जान*), निर्लज्ज स्त्री

नट्टिन- बदमाश आ झगड़ाउ स्त्री

नट्ठा- बाँझ वा बिनबाहलि (गाय-महींस)

नड़ही/नड़ै- वासडीहक निकटस्थ गाछी

नढ़रा- व्यभिचारी, निर्लज्ज

नण्ढ-मुकुण्ढ- नाङट-उघार (देह), निर्वस्त्र

नण्ढा- निर्लज्ज

नतीजा (करब/लगायब/होयब)- दुर्गञ्जन, दुर्दशा, फज्झति [क.को. *'परिणाम'- मैथिली मे ईअर्थ ओतेक प्रशस्त नहि*]

नदारति- शून्य, अनुपस्थित, लुप्त

नदाबी- कोनो दाबा नहि, कोनो अधिकारक दाबी नहि करबाक प्रतिज्ञा-पत्र

नदिया- *अपि च*- नदी (*नदियाक तीरे-तीरे फल्लाँ भैया करथि शिकार*)

नदी करब- मलत्याग करब

नद्दी-नदी

ननकटनी- मेंही सूत कटनिहारि

ननकिर- छोट नेना, सन्तान

ननकिरबा-बेटा

ननकिरबी- बेटी

ननघस्सी-छाहमे भेल छोट-छोट कोमल घास

ननदी- ननदि, पतिक बहिन

ननमुँह/ननमुँहाँ/ननमुँही- सज्जन सन मुँह किन्तु भीतरसँ कुटिल बुद्धिक व्यक्ति (*ननमुँही टारी गाम बिगाड़ी*)

ननसुत- पातर वस्त्रक एक प्रकार

ननिहल्ला- नानीक गाम, मायक नैहर, मातरिक

ननुआ- *अपि च*- दुलारू बच्चा (*जे ननुआ से गरभहिँ ननुआ*)

ननुआगर- अत्यन्त सुकुमार आ दुलारू

ननू- दुलारू, प्रियगर, नेनु, नवनीत [*क.को.- भविष्णु -असंगत*]

नन्दमहर/नन्दमहल- कृष्णक पालक-पिता

नन्हकिर- दे. ननकिर

नन्हकिरबी-दे. ननकिरबी

नन्हमुँह/नन्हमुहाँ/नन्हमुँही- दे. ननमुँह इत्यादि

नपनियाँ- महिसानसँ दूध नापि कऽ संग्रह एवं ओकर विक्रय-व्यवसाय कयनिहार

नफगर- नफा देबऽबला, लाभप्रद

नबकबेर- नव वयसक, नवतुरिया

नबकनियाँ-नबे-नबे सासुर आयलि कनियाँ

नबकी- नवीन

नबकुट्टी- नव कूटल (चाउर)

नबटोलिया/नबटोली- हालमे बसल टोल, नव आवासबला गाम

नवतुरिया- नव वयसक किशोर/युवागण

नब-नौतार/रि- अत्यन्त नव वयसक, अति उत्साही, अल्प अनुभवी [क.को.- *अखरकट्टू-अमान्य*]

नबर्त- विनम्र, सुशील

नबालिक- अवयस्क, नाबालिग

नबेरिया- छोट आकारक नाव (*कथीकेरे नाव-नबेरिया कथीके करुआरि*)

नम-नम्र, विनीत

नमछर- पातर आ नाम, लम्बा

नमपोर-1. (शरीरक) पातर आ नाम आकार, फुहराम 2. नमहर पोरबला (बाँस)

नमरायब- तीरि कऽ विस्तृत करब, विपरीत दिशामे बल लगा कऽ पसारब,

नमरौअलि- बात/काजकेँ अनावश्यक विस्तार कयनाइ

नमाज- मुसलमानक ईश्वर-आराधना, नबाज [*क.को. नबाज- See नमाज । किन्तु प्रविष्टिमे 'नमाज'क अभाव*]

नमारब- नमरायब, तीरब

नम्मा- नाम, लम्बा

नम्मा-धग्गी- नाम मुदा कम चाकर (जमीन)

नयका- नबका

नयन- *अपि* च- नैनी माछ

नया- नव, नवीन

नऽर-जऽर- सन्तति ओ सर-सम्बन्धी वर्ग, जाल-पोल (*नऽरे-जऽरे भरल छी, पानीमे तीतै छी*)

नरसराय- आँखिक पल ओ कोसामे भेनिहार फोंसरीबला घाओ

नरेटी- कण्ठनली

नहि तँ/नहि तऽ/नहितन- दुर्विशेषण वा दुर्विशेष्य संग प्रयुक्त अतिशय क्रोध, घृणा, निन्दा, तिरस्कार, उपेक्षा, ममत्व, स्नेह, सहानुभूति इत्यादि भावक व्यञ्जक अव्यय, जेना बैमान नहितन ! पापी नहितन ! भुसकौल नहितन ! अठकपारि नहितन, पढ़ता से नहि ! गय बताहि नहितन, एना केओ बाजय !

ना- *अपि* च- गीतक भास-पूरक अव्यय (*गौरी फूल लोढ़ऽ गेली फुलवरिया संगमे सहेलिया ना*)

नाउठ- *अपि* च- छपाइमे ओ अक्षर जे उगल नहि हो

नाक फकड़ब- घृणा/अरुचि/असहमति होयब

नाक फकड़ायब- घृणा देखायब, असहमति देखायब, अरुचि देखायब

नाकी मारब- निषेधकारक बात बाजि देब

नागफेनी- नागफनी, दे. बगिया

नागा- *अपि* च- वैरागी साधुक एक वर्ग

ना-गोल- 1. दे. नगोल 2. एकदम नठि गेनाइ

नाड़ी-दुआ/दूआ- आकस्मिक रोग-दुर्घटनादि

नाढ़ी- *अपि* च- व्यभिचारिणी (स्त्रीक प्रति गारि)

नादी- पशुकेँ सानी खुआबक लेल बनाओल पैघ पात्र, नादि

ना-पसिन- नीक नहि लागऽबला, अप्रिय

नापी- नपबाक काज (जमीनक), पैमाइस

नाबल्द- निस्सन्तान, निर्वंश

नामी गरामी-प्रख्यात, प्रतिष्ठित

नारा- *अपि* च- 1. पयजामा-साया आदिकेँ डाँड़मे बन्हबाक डोरी 2. महिलाक केश बन्हबाक डोर

नारि- *अपि च-* काठक बेँटमे ठोकबाक लेल हाँसू-खुरपी आदिमे बनाओल गेल पैघ नोक [*क.को.-हाँसू खुरपी आदिक बेँटमे लोहाक बलयाकार बन्धन-ई अर्थ भ्रामक। वास्तवमे एकरा 'सामी' कहल जाइछ*]

नाल- *अपि च-* घोड़ाक खुरमे ठोकल जायबला लोहक अर्द्धचन्द्राकार पत्तर 2. ढोलक सन एकटा चर्म वाद्य

नाल काटब- माल गोदाम/मालगाड़ीक डिब्बाक ताला तोड़ि चोरि करब (*संकेत भाषा*)

नालिसी- न्याय हेतु अभियोगक विवरण सहित आवेदन-पत्र

नासिकबुद्धि (*प्रा.*)- पशुबुद्धि, जड़बुद्धि, मूर्ख, जऽढ़

नाहक- अनेरे, अकारण (*नाहक मारि खाय जोलहा*)

नाहब- नहायब (*क्षेत्रीय प्रयोग*)

नाहित-जकाँ, सदृश

निकन्नन- समूल नाश, निर्वंश, उसरन, निकन्दन

निकरुण/न (*प्रा.*)- निष्ठुर, निर्दय, निर्मम

निकर्ज- उऋण, ऋण मुक्त, ऋणसँ बचल

निकलब- *अपि च-* 1. उढ़रब 2. दुष्परिणाम भेटब

निकारुन (*प्रा.*)- दे. निकरुन

निकुती- सोनारक तराजू

निखुड़ब- तरकारी आदिमे स्थित अवांछित अंशकेँ नऽहसँ खोंटि हटायब, खयबा काल मन्द गतिसँ खोंटि-खोंटि कऽ खायब

निखुड़ाह- खयबा काल रुचिगरो खाद्य वस्तुकेँ अरुचि देखबैत खोँटि-खोँटि खयबाक स्वभावबला

निगाह/निङाह- कृपादृष्टि, दयादृष्टि, अनुकम्पा

निँघटायब- वृहत् भागक उपयोग कऽ अल्प मात्रामे शेष रहऽ देब, समग्रक उपयोग कऽ समाप्त कऽ देब

निचलका- निचाँबला

निचट्ट- दुर्लभ, अलभ्य, कठिनतासँ प्राप्य

निचट्टी- दुर्लभता, क्रेयार्थ अलभ्यता

निचू- बरखामे नहि चूबऽवला चार/घर

निच्चा/निच्चाँ- अधोभागमे, निम्न स्थानमे

निछच्छ/निछछ-नितान्त, निपट, सर्वथा, एकदम [*क.को. निछक/निछक्काक पर्याय 'निछछ' कहैछ, जे अशुद्ध अछि। प्रयोगमे निछछ गमार, निछछ देहाती, निछछ मूर्ख आदि ध्यातव्य*]

निछड़ब- सूपमे मिज्झर अन्नकेँ राखि बाम हाथ दिस लेआ ओ दहिन हाथ दिस ऊँच राखि सूपकेँ डोलाय डोलाय मोट-पात्तर वा मिझरायल ऑंकड़-गर्दाकेँ फराक करब

निछाउर- छठिहार आदिमे शिशुक ओ मूड़न-उपनयनमे बड़ुआक माथक चारू कात घुमाय पौनी-पसारीकेँ देल जायबला उछाही (टका वस्त्रादि) [*क.को.- 'कारनीकेँ छुबाए देवताकेँ चढ़एबाक हेतु वा ब्राह्मणकेँ देबाक हेतु राखल वस्तु'-व्यवहारक अनभिज्ञता-सूचक*]

निछायब- *अपि च-* माल-जालक गर्भपात होयब

निछाहब- छाँटि कऽ अपदार्थ हटायब (खढ़/खड़ही आदिसँ)

निजगुत- निश्चित, निर्धारित

निड्डर- 1. निर्भीक 2. ढीठ

निट्ठाह- 1. दृढ़, मजबूत 2. एकदम, सर्वथा, नितान्त

निट्ठुर- सर्वथा शुद्ध, अमिश्रित (दूध)

निठोहर- अपरतीब, निराश, वञ्चित, उदास [*क.को.-निरवलम्ब -असमीचीन*]

नितुआन- अत्यन्त दुर्बल, असक, कमजोर

निदग/निदग्ग- कोनो प्रकारक दोषसँ रहित, निष्कलंक, दागरहित, जाहिमे कोनो दाग नहि हो

निदारुन(प्रा.)- *अपि* च- विशेष दुखदायी, कठोर

निनामा- मुँहक भीतरमे भेल विकृति, मुँह बिगड़ब, पपियाहा रोग

निनाय (-उखड़ब/बैसायब)- वायुक दबाब कारणे भेल पेटक दर्द

निनियाँ- *अपि* च- छोट बच्चाकेँ ठोकि कऽ सुतयबाक गीत, मलारनि, निन्नक आवाहन-गीत (*निनियाँ अयलै निनपुरसँ, बौआ अयलै कदमपुरसँ*)

निनियाँ गायब- सूतब

निबस्तर- नग्न, वस्त्रहीन, नाङट

निबहुआ- बिना पत्नीक पुरुष, विधुर

निभेर-सुधि-बुधि हीन,

निमज्जित- डूबल, निमग्न

निमझान/ निमझानी- पति-सन्ततिसँ हीन स्त्री (गारि)

निमरता- दे. निमेरता

निमरब- निवृत्त होयब, जेना-तेना कार्य सम्पन्न करब/होयब

निमस्तिन- आङी

निमहता- निर्वाह, जेना तेना कर्त्तव्यक सम्पादन

निमाइन- *अपि* च- नीमक अथवा नीमक सन स्वाद/गन्ध

निमुनियाँ (अं.)- एकटा रोग जाहिमे फेफड़ा चकुढ़ि जाइछ तथा ओहिमे सूजन भऽ जाइछ, न्यूमोनिया

निमुन्न- सब दिससँ बन्द, निर्वात

निमूधन/निमूहधन- मूक जीव, पशु (गाय, बड़द, महींस आदि)

निमेरता- निर्वाह, निवारण, निवृत्ति

निम्मन- नीक, सुन्दर

निरगुनियाँ- *अपि* च- गुण/उपकार नहि माननिहार, कृतघ्न

निरतागति- निर्बलता, बलहीनता, *वि.* तागति

निरदीस(प्रा.)- असहाय, दीन, निरुपाय (*हे हर हम निरदीस अनाथे*)

निरबुद्धी- बुद्धिहीन, मूर्ख, मूढ़

निराधार- *अपि* च- विना किछु खयने-पीने, अन्न-जल विना

निरासी- निराशाग्रस्त स्त्री, स्त्रीक प्रति स्त्री द्वारा पढ़ल जायबला अशुभ-सूचक गारि

निसतड़र- अविवेकी, निष्ठुर, इत्तर

निसभेर- (निन्न/निसाँसँ) बेसुध भेल [*क.को. -निसाँमे मातल-अनुपयुक्त*]

निसरठ- नीरस, उसरठ, रुच्छ स्वभावबला, अदत्त

निसाना- लक्ष्य बिन्दु

निसानी- स्मारक वस्तु, स्मरण दियाबऽबला वस्तु

निसायब- माँड़ पसायब

निस्तड़र- दे. निसतड़र

निस्सन- ठोसगर, फोँकक विपरीत

निस्सार- 1. निष्क्रमण, पुरान नेपालीय मैथिली नाटकमे मंचपरसँ पात्रक बहरायब 2. सारहीन

निहुछब/निहुँछब- जोग-टोन ओ नजरि-गुजरिक निवारणार्थ एकटा टोना जाहिमे कारनीकेँ राइ-जमाइन-मिरचाइ तथा वरक विदाकाल राइ-जमाइन माथक चारु दिस घुमाय आगिमे जराओल जाइछ [*क.को.- 1. जकर कल्याणक कामना हो तकरा देहमे दान वस्तु छुबाय आ आरती देखाय देवता/ब्राह्मणकेँ देबाक हेतु संकल्प करब । -अर्थानभिज्ञता*]

निहुड़िया (देब)- डाँड़सँ उपर धड़के आगाँ दिस झुका कऽ राखब/देखब

नीक ननू-उत्कृष्ट खाद्य वस्तु, नीक-निकुत

नीज- अपन, नितान्त अपन, निज

नीढ़ब-रान्हब, रिन्हब

नीर- *अपि* च- 1. शिवलिंगपर चढ़ाओल जल 2. ओझा-गुनी द्वारा अभिमन्त्रित जल

नीरा-ताड़ी, मद्य

नीह- नगण्य(व्यक्ति), उपेक्षित(लोक), निर्धन, भूमिहीन, नि:स्व, तुच्छ (व्यक्ति)

नुनुआँ- दुलारू, नेनाक लेल दुलारक सम्बोधन

नुक्स (निकालब)- दोष, त्रुटि

नूआ-फटा- कपड़ा-लत्ता, वस्त्रादि

नेआर-भास- कोनो कार्य करबाक विषयमे सोचब, नेआरब

नेआरा- *अपि* च- भिन्न, फराक, निरपेक्ष, उदासीन

नेउर(प्रा.)- नूपुर

नेओँता- नोत

नेकी- उपकार, भलाइ

नेकी-बदी- उपकार-अपकार

नेङड़ी- नेङड़ा कऽ चलनिहारि

नेज काढ़ब-छठि/रवि-शनि पाबनिमे नैवेद्य देब

नेढ़ा-बसन्त- अयोग्य, मूढ़, आलसी

नेनकनाओन- नेनाके कनबैत रहबाक स्वभावबला

नेनुआ- *अपि* च- घिउरा

नेन्ना- शिशु, नेना

नेपियाह/हा/हि/ही/नेपी- छोटो सन बातपर नोर चुऔनिहार (पुरुष/स्त्री)

नेमोनेमो (करब)-खुसामद, नमोनमो

नेरु- गायक बच्चा, नेरू

नेहमान- पाहुन, जमाय/समधि कोटिक पाहुन

नोकरनी- वेतनपर काज कयनिहारि स्त्री, सेविका

नोकरियाहा/नोकरिहारा- नोकरी कयनिहार

नोकी-सूक्ष्म तीक्ष्ण अग्रभाग, लघु आकारक नोक

नोख- *अपि* च- 1. नोक 2. अत्यन्त छोटो सन दोष (निन्दा)

नोख निकालब- किछु ने किछु दोष देखायब

नोखी- 1. नोकी 2. छोटो सन दोष (निन्दार्थ)

नोखी निकालब- किछु ने किछु दोष देखायब

नोथारी-नोतहारी, निमन्त्रित व्यक्ति (*जनिका खेती ने पथारी तनिका सात गाम नोथारी*)

नोनफड़- नोन बनौलाक बाद फेकल गेल अपशिष्ट माटिक ऊँच टिल्हा [*क.को. नोनफड़-See नोनिआह । पुन: नोनिआहक अर्थ- नोनीबाला माटि । परन्तु, ई अर्थ असंगत*]

नोनाचौरी- नोन बनयबालेल नोनियाह माटि खखोड़लासँ बनल निचाँस भूमि

नौआँ-कौआँक- बहुत कबुला-पातीसँ प्राप्त (गोटेक सन्तान)

नौजवान- नवयुवक

नौतार- द. नव-नौतार

न्यारा- द. नेआरा

[प]

पओ- *अपि* च- 1. पचीसी खेलमे कौड़ी भजलापर दस वा पचीस भेलें प्राप्त क्रमश: दू / चारि विशेष अंक जाहिसँ गोटी जनमैछ, लाल होइछ वा ओतेक घर आगाँ बढ़ैछ 2. भोरुकी रातुक धुन्ध, पूबक लालिमासँ पहिलुक झोलफल अन्हरिया, पह

पओँकी (लागब)- 1. पचीसी खेलमे पक्की गोटीक लाल होयबासँ पहिलुक घरमे अँटकि जायब जे पओ भेलेपर एक पओसँ लाल होइछ, पबन्नी 2. काजक सफलतासँ पहिनहि आबि गेल बाधा

पओना- पओनक खाँत, ¾क गुणन सारिणी

पओ फाटब-प्रात: काल पूब दिशाक लाल होयब

पओसर- 1. भोरक लालिमासँ पूर्वक समय 2. भोर समयमे महिसिक चरबाहि

पकठोसल- ढीठ, निर्भीक

पकतेल- पकमान वा व्यंजन छनलाक बाद अवशिष्ट तेल

पकाइन- अधिक रौद लगने खाद्य पदार्थ/पेय/ कुसियारक रसमे भेल विकृतिजन्य स्वाद

पकिन्जा- निड्डर, ढीठ

पकौड़ा- पैघ पकौड़ी

पक्की- *अपि* च- एहन भोजन जाहिमे मुख्य खाद्य पूरी/कचौड़ी- तरकारी होइक 2. शास्त्रीय गायन 3. ईंट-रोड़ासँ बनल (सड़क)

पखेब- कार्तिक शुक्ल प्रतिपदाकेँ भेनिहार माल-जालक पाबनि [*क.को. एक औषधीय पेय जे गोपूजा दिन कार्तिक शुक्ल पड़ीबकेँ बड़दकेँ पिआओल जाइत अछि- एतऽ सोन्हाओनक भ्रम, दे.सोन्हान]*

पगलबा- बतहा, बतहबा

पगहरिया- तरकारी काटऽबला हाँसू जकर बेँटकेँ पैर तर दाबि तरकारी काटल जाइछ

पगाड़/र- कुसियारक हरियर वा सुखायल पात [*क.को. कुसियारक अग्रभाग जे पातसँ झपाएल रहैत अछि आ पशुकेँ खोआओल जाइछ-प्रथम अंश अशुद्ध*]

पघरायब- कोनो बातकेँ बिकछा कऽ नमरायब

पघरिया (हाँसू)- दे. पगहरिया

पद्धति- *अपि* च- भोज खयनिहारक पाँती

पँचकोठिया- पाँचमुँहबला कोठी, एकहि संरचनामे पाँच (मुँहक) कोठी

पँचकोसी- पाँच कोसक परिधिक विशिष्ट क्षेत्र

पचखी/पँचखी-1. पाँच नोकबला बरछी 2. सतघरबा खेलमे पाँच गोटीक गुच्छ

पचड़ा- आकस्मिक झंझटि

पच दऽ- गील वस्तु फेकयबाक ध्वनि, थूक फेकबाक ध्वनि

पँचमहला- भूतल सहित पाँच तलबला मकान

पचरी- 1. छोट पच्चर 2. बटखारा (*पुरान प्रयोग-पचरी हेरायल बाबू तकिते छी*)

पचहिया- पियरका बिढ़नी [*क.को. एक बिखाह पतङ्ग जे माटिक घर बनबैत अछि- उत्तर खण्ड अशुद्ध*]

पचौनी- छागरक अँतड़ीक एक भाग

पछड़म-पछड़ा/पछड़ा-पछड़ी- दुइ वा दुइसँ अधिक व्यक्तिक मध्य परस्पर उठा-पटक

पछिलका/की, पछिला/ली, पछुलका/की- पाछाँबला, बादबला

पछेड़ (लागब/धरब)- *अपि* च- पाछाँसँ संग लागब, पछोड़

पछेड़ा (मारब)- *अपि* च- चद्दरि वा दोहरि ओढ़बामे दहिना दिसक छोरकेँ बाम कान्हक पाछाँ लटकाओल भाग, अथवा दहिना छोर बाम कान्हक पाछाँ ओ बामा छोर दहिना कान्हक पाछाँ लटकल भाग (*वर्ण रत्नाकर- 'पछेओला'*)

पजबा (राहड़ि)- (राहड़िक) पैघदाना बला प्रजाति

पँजरपटिया- सुतबामे ओढ़नाक आधा भागकेँ पाँजर तर दबाय बनाओल गेल ओछाओन

पँजरबाहि- पाँजर दिसक अंग

पँजरा- काँखसँ नीचाँबला छाती ओ पेटक भाग, पार्श्वभाग, पाँजर

पँजरी- भूजल धनीकेँ चीनी मिला कऽ बनाओल बुकनी जे भगवानक प्रसादक रूपमे प्रयुक्त होइछ

पजोह- खोज, सन्धान, अन्वेषण,

पझायब- *अपि* च- 1. औँटल दूधक क्रमशः सेरायब (एहिसँ मोट छाल्ही पड़ैछ), 2. आगिक क्रमशः मिझायब

पञ्चनामा- पञ्चक निर्णयक अभिलेख

पञ्चनेबा- पाँच गोट सुखायल फलक मिश्रण

पञ्चपरमेश्वर/पञ्चपरमेसर- देव रूपमे मान्य पञ्च, न्यायकर्त्ता

पञ्चमकार- तान्त्रिक साधनामे प्रयुक्त मकारादि नामबला पाँच गोट अनिवार्य उपादान-मत्स्य, मांस, मदिरा, मुद्रा आदि

पञ्चायत/पञ्चायतीराज- ग्राम स्तरीय शासनक संवैधानिक व्यवस्था

पञ्जा- *अपि* च- तासक पाँच छापबला पाँचम पत्ती

पटञ्जा- ईटाकेँ पट ओछा कऽ बनाओल गेल (सड़क, अङनै आदि), *दे.वि.*- खड़ञ्जा

पट दऽ/सँ- तुरन्ते बाद

पटनी- खेतमे पानिक पटब, पटौनी

पटपट- *अपि* च- वृक्षादिसँ रहित (क्षेत्र, मैदान)

पटमासी- सिँउथक दुनू भागक पाटीपर पसारि कऽ लगाओल गेल सिन्दूर

पटरी- *अपि* च- 1. रेलगाड़ीक पहिया गुड़कबाक समानान्तर लौह पथ 2. इंच/सेण्टीमीटर नपबाक लेल नाम आ चापत उपकरण

पटहा- *अपि* च- वृहत् संख्यामे धराशायी (अन्हड़, बिहाड़िमे गाछ सभक खसब, महामारीमे लोक वा पशु सभक दुक्खित पड़ब-इत्यादि), तापसँ गाछ सभक मौलायब

पटाँखी- मकैक ओहन सुतिआयल गाछ जाहिमे बालि फड़ऽबला नहि होइछ

पटानि- मेल, सौमनस्य

पटायब- अपि च- 1. अपना अनुकूल करब 2. दाम-निर्धारण करायब

पटियौझी- पटीदारी, पटीदार नहियो होइत तत्सदृश व्यवहार (झगड़ा)

पटीदार- फरीक, हिस्सेदार, अंशभागी

पटीदारी- पटीदार होयबाक सम्बन्ध, पटीदार सन आचरण, झगड़ा

पटेढ़- एक जलीय खढ़, पटेर

पटोटन/पटोटनि- *अपि* च- चिताक आधार रूपमे देल जायबला दुइ गोट मोट लकड़ीक टोन

पट्टक- बीचमे नीचाँ धसल चार, कम ढलानबला चार

पट्टा- *अपि* च- 1. फूलसँ सद्यः बहरायल छिम्मड़ि, अजोह दानाबला छिम्मड़ि 2. (ठोकब)-चूल्हि बनयबा लेल सानल माँटिक आयताकार थापल गेल तकथा सन संरचना

पट्ठा- *अपि* च- बहादुर (उत्साहवर्द्धक सम्बोधन), पहलमान

पड़ाहि (लागब)- आतुरतापूर्वक बहुतोक भागब

पड़ि ओछायब- 1. धरना देब 2. अपन असमर्थता देखायब, देह ओरब

पड़ोसिया- प्रतिवेशी, पड़ोसी,

पढ़नमा- पढ़बामे सतत लागल रहनिहार

पण्डाइनि- पण्डाक स्त्री

पण्डागिरी- पण्डाक वृत्ति

पतक्खा- पताका, झण्डा

पतचट्टा- ऐँठ पात चटनिहार, दे. परचट्टा

पतरकी- पातर आकृतिबाली

पतरखा- दे. पतक्खा

पतझरका- गाछ/जजातिक पात सुखायबला एक रोग

पतरखेप- बहाना बनाय टारैत रहनाइ, कार्य सिद्धिमे विलम्बकारक बाधा सब

पतरसुट्टा/ट्टी- अत्यन्त पातर देहक काँतिबला (पुरुष/स्त्री)

पतलुम (अं.)- फुलपैण्ट

पतलो- 1. गाछसँ सुखा कऽ झड़ल पात 2. कुसियारक सुखायल पात

पतहगना- कृतध्न, अविश्वसनीय, आश्रय देनिहारेक अपकार कयनिहार-[*जाहि पातपर खाय ओही पातपर मलत्याग कयनिहार- एकटा निकृष्ट गारि*]

पति- *अपि* च- लाज, प्रतिष्ठा, इज्जति

पतितपना/पतितपनी- पातित्य, पतितक व्यवहार, नीचता

पतिराखन- प्रतिष्ठा बचौनिहार, भरमा रखनिहार, जीवन निर्वाह करौनिहार (*पतिराखन अल्हुआ नाम हमर-अमर*)

पतिल्ली- अत्यन्त पातर

पत्ताझाड़- जाहि भोजमे पातपर ऐँठ नहि छोड़ल जाय

पत्थल- प्रस्तर, पाथर, मेघसँ बरिसल बरफक गोली

पथनी- छोट पथिया

पथल कोइला- खानसँ बहार कयल कोइला

पथलखड़ी- उज्जर माटि सन खनिज जाहिसँ सिलेट / ब्लैक बोर्ड आदिपर भट्ठा बनाय अक्षर लिखल जाइछ आ जकरा रगड़ि कऽ मेटाओल जा सकैछ

पथलचूर- एक औषधीय झाड़

पथारी- *अपि* च- बहुत संख्यामे वस्तुक पसार, पथार

पथेरिया/पथेरी- ईंट/खपड़ा पथनिहार

पदमिनी/पदमीनी- कोमलाङ्गी, प्रतिष्ठिता, भारखमी (*व्यंग/उपहासमे प्रयुक्त-बड़ पदमीनी बनऽ अयलीह अछि !*)

पदरोगी- कोनहु काज करबामे अक्षम, रोगाह, सतत दुखिताह रहनिहार

पदुक्का- पादुका, खराम

पद्दू- मुँहसच, मुँहदुब्बर, अकर्मण्य

पधरायब- देवमूर्त्तिकेँ आसनपर सविधि स्थापित करब

पन- *अपि* च- वयस, उमेर, अवस्था

पनकब- पत्रहीन गाछ वा डारिमे नव कनोजरि होयब

पनकी- कनोजरि, पनुघी

पनतोआ- चीनीक रसमे बोरल एक प्रकारक मिठाइ, गुलाबजामुन

पनमा- *अपि* च- 1. पान(क तिर्यक रूप) (*पनमा जे खयलह हो भैया-सामा गीत*) 2. अल्हुआक एक प्रभेद जकर पात पान सन होइछ 3. पानक पात सन आकृति

पनरहाँ- संख्या विशेषक पन्द्रह गुने

पनरहिया- *अपि* च- पन्द्रह दिनक अवधि

पनरहेँ- दे. पनरहाँ

पनसुइया- पाँच सय टाकाक नोट

पनारि- दीप/डिबियाक रासि, टेमीक धधरा

पनाह- *अपि* च- आश्रय, अवलम्ब

पनिअओला/पनिअल्ला- धातरीक आकारक एकटा खटतुरुस स्वादबला फल, पनिअओरा

पनिआयब- *अपि* च- 1. प्रेरित/उत्तेजित करब 2. स्वार्थ सिद्धिलेल मिथ्या प्रशंसा करब

पनिगर- *अपि* च- तेजीसँ युक्त (बड़द/ घोड़ा), कान्तिमान

पनिछक्क/पनिछक्का- उचित परिमाणसँ अधिक पानिबला (दालि आदि व्यंजन)

पनिछा- घाओसँ बहि कऽ बहरायबला पानि सन द्रव/पीज

पनिबोरा- पूर्वाह्नमे पश्चिम क्षितिजपर उगऽबला इन्द्रधनुष जे अधिक पानि होयबाक सूचक मानल जाइछ

पनिभर- *अपि* च- 1. इनारसँ पानि बहार करऽबला जलपात्र 2. नित्य पानि भरबाक निमित्त मासिक/वार्षिक पारिश्रमिक/बोनि

पनियाँ दराध- पानिमे रहऽबला एक विषधर साप

पनिसल्ला- 1. धर्मार्थ पियासल पथिककेँ पानि पिअयबाक स्थान 2. मेष सङ्क्रान्तिकेँ शिवलिङ्ग एवं तुलसी चौरापर मासव्यापी अनवरत जलाभिषेक लेल टाङल जायबला छिद्र कयल जलपूर्ण पात्र

पनिहारिन-पनिभरनी

पनुगी/पनुघी- नव कनोजरि, द. पनकी [*क.को. 'डग' लेल कहैछ See 'पनुगी'। किन्तु ओतऽ अछि 'पनुगा'।*]

पन्द्रहिया- द. पनरहिया

पन्नापोठी- एकटा घास जकर पातक तरुआ होइछ

पन्नी- *अपि* च-1. चमकैत सतहबला कागत 2. पलस्तरपर सिमेण्टक घोला दऽ कऽ कयल जायबला चिक्कन सतह

पपटी- अत्यन्त पातर, टाँट (रोटी)

पपियाहा/पपियाही- पापी

पपीहा- एक पक्षी, पपिहा

पबनौटा- पौनी-पसारीकेँ देल जायबला पाबनिक बखरा/बयन

पबितरी- देवकर्म-पितृकर्ममे दहिना हाथक आनामिका आङुरमे अनिवार्यतः पहिरल जायबला चानी, ताम वा कुशक औँठी; पवित्री

पमोजिम- भयेँ/खुसामदेँ/रोचेँ कयल जायबला निःशुल्क सेवा-टहल

पम्पाल-अत्यन्त भुसकौल, मूर्ख

पम्ह- *अपि* च-धानक अत्यन्त पातर-सूक्ष्म दूल, तूरक घुनाइमे उड़ल खूब मेही फाहा सब, पम्ही

पयना- माल-जालकेँ हँकबाक लेल छोट छड़ी, छोट सटका

पयरा- रास्ता, बाट

परचट्टा/ट्टी- अनकर देल खयनिहार परजीवी, पराश्रित, लोभेँ खुसामदमे रहनिहार, लोभी

परचरब- प्रथा/परिपाटीक प्रचलन होयब

परचा- सूचना-प्रचारक हेतु मुद्रित पत्र, अस्थायी प्रमाणपत्र,

परची- तात्कालिक अनुज्ञा पत्र, लघु सूचना लिखित कागतक छोट खण्ड

परजा- प्रजा, राज्यक सकल जनता

परझा- उदाहरण, नजीर, परतर

परतार- *अपि* च- विशेष अवधि धरि

परतिङा/परतिङ्ग (पायब)- प्रमाण, लक्षण, सूरि-पता

परतियायब- ठेकनायब, जाँचब, प्रतीति निश्चित करब

परधान- *अपि* च- निन्दात्मक स्थायी विशेषण (*परधान जोड़ब*)

परपन- *अपि* च- सन्तुष्ट, प्रपन्न

परपोती- बेटाक बेटी, प्रपौत्री

परबाबा- बाबाक बाप, प्रपितामह

परसादी- परसाद, प्रसाद, देवताकेँ उत्सर्ग कयल नैवेद्य

पराछित- प्रायश्चित्त (*पतिया-पराछित*)

परात- *अपि* च- पैघ थारी, थार

परार- आन, सम्बन्धी वर्गसँ इतर (*अपन-परार*)

परिकरमा- देवता, देवमन्दिर अथवा तीर्थस्थलक चारू कात घुमब, परिक्रमा

परिचर- सेवक, टहल कयनिहार

परिछब- *अपि* च (अकर्मक क्रिया)- समतूल होयब, समगम होयब, उपयुक्त होयब, अँटबा योग्य होयब

परिपाँखि(लागब)- कोनो काजक रहस्यपूर्ण उद्देश्यक अभिज्ञान (होयब)

परोछ-परोक्ष, अनुपस्थिति

परोँछ(लागब)- गर्भस्थ शिशुपर संसर्गी लोकक आकृति-प्रकृतिक प्रभाव (पड़ब)

पलकब- छोटहु लाभपर अतिशय हर्षजन्य चञ्चलता देखायब

पल खसब/खसायब- लज्जित होयब, संकोच होयब, सहमति देखायब

पलङ्ड़ी- छोटकी पलङ, खटुली

पलटनियाँ (देब)- कोनो खास उद्देश्यसँ स्थल विशेषपर आबर-जात करैत रहब, चक्कर काटब

पलटी- 1. भरल बोराक थाककेँ गऽर उनटायब 2. एक बोराक वस्तु दोसर बोरामे भरब 3. गाड़ीपर लादल सामान उतारब

पलटी मारब- तेज चलैत ट्रक-बस-मोटर आदिक अकस्मात् उनटि जायब

पलथा- दहिना पैरकेँ बामा जाँघ पर ओ बामा पैरकेँ दहिना जाँघ तर वा एकर विपरीतो राखि कऽ बैसबाक स्थिति [*क.को. अर्थ विचारणीय*]

पलथी- दहिना पैरकेँ बामा जाँघ तर ओ बामा पैरकेँ दहिना जाँघ तर राखि कऽ बैसबाक स्थिति

पलहास- तीव्र गन्धबला एक पादप, गेठबन

पलानी- *अपि* च- छोट अस्थायी एकचारी

पलापच्छी- पक्ष लऽ कऽ संग देनिहार, पक्षधर

पलिबार- परिवार

पलेक- प्लेग नामक महामारी

पलोटनि(देब)- निहित उद्देश्यसँ बेर-बेर अबैत-जाइत रहनाइ, दे. पलटनियाँ

पल्ला- *अपि* च- 1. साड़ीक आँचर (*सीधा पल्ला/उनटा पल्ला*), 2. दूर, दूरस्थ [*क.को.- दूरी-ई अर्थ समीचीन नहि*]

पल्लो- डहुरीमे लागल आमक पात, पल्लव

पल्हासब- माटिक धिमका/धिमकीकेँ ढाहि कऽ समतल करब

पसमीना- उत्तम कोटिक ऊनक एक प्रकार

पसरा- कमार-लोहारक कार्यस्थल

पसरी- पाँजरक हाड़

पसही(ओगरब)- खेतमे धान काटि कऽ पाहिपर पसरल पाँजक पतियानी [*क.को. आँटी-अर्थ अशुद्ध*]

पहचान- चेन्ह, परिचय, सही व्यक्ति होयबाक साक्ष्य, भूमि निबन्धनमे विक्रेताक परिचयकेँ अभिप्रमाणित कयनिहार

पह फाटब- दे. पओ फाटब

पहरा- *अपि* च- अवैध-अनुचित क्षति रोकबाक निमित्त सतर्क पर्यवेक्षण

पहरेदार- सम्पत्तिक ताक-छेम कयनिहार, चौकीदार

पहलाम- मोहर्रमक अन्तिम दिनक कृत्य

पहाड़ी- *अपि* च- छोटका पहाड़; पहाड़बला क्षेत्र

पहिराउ- बेसी काल पहिरल जायबला वस्त्र (*विपरीतार्थक 'धराउ'*)

पहिलओठ- पहिल जनमल शिशु, प्रथम सन्तान

पहुँच्चा- साढ़े पाँचक खाँत । मिलाउ- चहुँच्चा/घमुच्चा

पा/पाभरि- एक सेर/कीलोक चौठाइ

पाइ- *अपि च-* प्रेसमे फेँट-फाँट भेल टाइप सब

पाउटी- नटुआक पैरमे बान्हल जायबला घुघरू गाँथल पट्टी

पाक(करब)- *अपि च-* शरीरमे लागल चाँछ वा खोँच-खाँच एवं अन्य आघातक पिजुआयब, पकै करब, [*क.को. घाओ पघिलब -खूब उपयुक्त नहि*]

पाको- पाकल आमक सुखायल आँठी, पकुहा, पकोहा

पाकोपण्डित- 1. परिपक्व शास्त्रज्ञ, निष्णात पण्डित 2. (ला.) शास्त्र-ज्ञान छँटनिहार अल्पज्ञ

पाछाँ/पाछू- *अपि च-* प्रत्येक, हरेक

पाज- बदमास, सयतान, पाजी

पाँजा- दुनू हाथकेँ नमराय बनाओल परिधिक बिचला भाग, पाँज; ओतबा परिमाण जे एक बेरमे पाँज/पाँजामे अँटि सकय

पाट- *अपि च-* देवयोनि ओ प्रेतयोनिक आवास/ विश्रामभूमि (लोक विश्वास)

पाटि- *अपि च-* 1. रीति-व्यवहार 2. दाउनिमे खोहक सबसँ कातक परिधि

पाटी (अं)- *अपि च-* 1. राजनीतिक दल 2. मोकदमामे वादी/ प्रतिवादी

पाठा- *अपि च-* 1. पाड़ा, भैँसा 2. नर-हाथी [*क.को.मे See 'पट्ठा'- किन्तु ओतऽ ई दुनू अर्थ नहि अछि ।*]

पाड़ब- *अपि च-* कर्मकारकाश्रय भेदेँ अनेक विशिष्ट अर्थ व्यंजित करैछ- यथा 1. निर्माण करब- कोठी पाड़ब, चूल्हि पाड़ब 2. उत्पन्न करब-अण्डा पाड़ब, बीया पाड़ब, फुद्दी पाड़ब 3. चलायब-कोदारि पाड़ब 4. तीव्र ध्वनि उत्पन्न करब-चाल पाड़ब, ठड़र पाड़ब, ठोहि पाड़ब, थपड़ी पाड़ब, पुक्की पाड़ब, पुर्री पाड़ब, भोकारि पाड़ब, भोकासी पाड़ब, सोर पाड़ब, हाक पाड़ब 5. लिखब- चिरचीरी पाड़ब, चेन्ह पाड़ब, डड़ीर पाड़ब, डाँड़ि पाड़ब 6. ठेकानपर आनब- मोन पाड़ब

पातड़ि(-देब/पड़ब/होयब)- कुलदेवताकेँ अर्पित खीर-पूरी-रोट आदिक नैवेद्य [*क.को.- प्रथम अर्थ 'पातकेँ जोड़ि बनाओल भोजन-पात्र'- अशुद्ध । पातकेँ जोड़ि कऽ बनाओल भोजन-पात्र होइछ पत्तल/पात। पातकेँ जोड़ि-मोड़ि कऽ बनाओल पुड़िया होइछ 'पतौड़ा' ।*]

पातिल- बिना कानबला रङल-ढङल माटिक कोहा जाहिमे उपनयन, विवाह, दुरागमन, चुमाओन आदिमे अनवरत जरैत दीप ढाकनसँ झाँपि कऽ राखल जाइछ (पुरहर-पातिल/ *अहिबातक पातिल फोड़ि-फाड़ि पहिलुक परिचयकेँ छोड़ि-छाड़ि- यात्री*) [*क.को.- भाँड़, माटिक पाकपात्र- अर्थानभिज्ञता*]

पानि पड़ब- *अपि च-* उत्साह मन्द होयब

पानि हेरायब- आतिथ्य ग्रहण करब

पानि होयब- *अपि च-* 1. वर्षा होयब 2. सेरायब 3. बोखार उतरने देह ठण्ढा होयब

पानी- पानि, जल, तेजी, हथियारक धार

पाबा- 1. खाट-पलङ-चौकी आदिक चारू कोनपर लम्बवत् ठाढ आधार दण्ड, पौआ 2. खराम, जुत्ताक जोड़मेसँ एकटा

पारखत/द- पूजाक सराइ-कटोरी आदि उपकरण

पारस- *अपि च-* भोजन हेतु परसि कऽ राखल अथवा पठाओल सकल भोज्य सामग्री,

पालक- *अपि च-* एकटा साग, पलाँकी

पाला- *अपि च-* कबडी खेलमे मध्यवर्त्ती

विभाजक रेखाक दुहू दिसक प्रतिपक्षीक अपन-अपन क्षेत्र

पाली- *अपि* च- सतत कार्यरत कारखानामे दिनराति मिलाय विभिन्न काल खण्डमे विभाजित कार्यविधि

पास (*अं*)- *अपि* च- 1. प्रवेश-वर्जित क्षेत्रमे प्रवेश हेतु अनुज्ञा-पत्र 2. रेलगाड़ी-बस आदिमे निःशुल्क वा आंशिक शुल्क दऽ यात्रा करबाक अनुज्ञा-पत्र 3. सुइमे डोरा पैसयबाक भूर

पासी- *अपि* च- पूर्ण विरामक दण्डाकार चिह्न (*दू सुन्ना : दू पासी // -क://*)

पाहुड़/र- सुगरक बच्चा [*क.को.- बलिदान करक सुगरक बच्चा-अर्थ संकोचक दोष*]

पिटपिटिया- छोट हथौड़ी

पिटम्मस-पिटाइ

पिट्ठा पहलमान-पहलमान सन हृष्टपुष्ट ओ बलगर

पिठपहुक/पिठपोहुक- सहायता कयनिहार, रक्षा कयनिहार, बेर-विपत्तिमे भरसाहा देनिहार

पिठारी-तुरन्त जनमल शिशुक देहमे लागल पिठार सन उज्जर गील लेप [*क.को.- '1. एक वृक्ष'-किन्तु से पिठारी नहि, पिट्ठा वा पिठबा कहबैछ '2. शरीरपर जन्मजात दाग'- वास्तवमे ओहि दागकेँ लहसन कहल जाइछ*]

पिठिया- पूर्व जनमल बच्चाक अव्यवहित पश्चात् जनमल [*क.को. एकपिठिया, अर्थात् ठीक पूर्व जनमल- अर्थ अस्पष्ट आ ओझरायल*]

पिड़ाकरी- पिड़ुकिया

पिण्डश्लोकी- प्रत्येक काजमे दोष ताकि/देखाय विरोध कयनिहार

पिण्डा- पितरकेँ अर्पित करबाक निमित्त बनाओल खीर, भात अथवा चौरट्ठाक गोला; पिण्ड

पिण्डा-पाड़ब- पिण्डदान करब

पित-तामस, क्रोध, पित्त

पितरमेरौनी- श्राद्धक दोसर दिनक कर्मक अन्तमे पितरवर्गक संग प्रेतात्मक सम्मिलन-कर्म, सपिण्डीकरण

पितृपक्ष- *अपि* च- पिता-पितामहादि सात पुरुष पूर्व धरिक रक्तसम्बन्धी वर्ग

पित्त- *अपि* च- पित, तामस, क्रोध

पिनकाह- झनकटाह, अदनीयो बातपर क्रोधित भेनिहार

पिनखजूर- आयावित एक विशिष्ट कोटिक खजूर

पिपहिया- 'पी कहाँ पी कहाँ' सन ध्वनि उच्चारण कयनिहार एक पक्षी, पपीहा, चातक

पिपही- *अपि* च- एकमात्र दुर्बल सन्तान

पिपहू- 1. फूकि कऽ बजाओल जायबला एक वाद्ययन्त्र 2. आमक आँठीसँ जनमल दू चारि पातबला बच्चा गाछ 3. आमक अँकुरल आँठी जकरा घसि बच्चा सब फुकना बाजा पिपही/पिपहू बनबैछ

पियरगर- 1. प्रिय, मनोनुकूल 2. स्वरुचिक खाद्य

पिरसौर- तूरक फाहाकेँ लपेटि कऽ पिउर/पीर बनयबाक काठी, पिरबटनी

पिरीत- प्रीति, प्रेम

पिलकौआँ (पनही)- पूर्वमे प्रचलित विशेष आकारक जुत्ता

पिलब- घुच्चीमे गोटी/गोली खसब

पिलायब- *अपि* च- कतोक खेलमे घुच्चीमे गोटी/गोली खसायब

पिल्ली- कुकुरक मादा-बच्चा (*कुकुरक नरबच्चा- पिल्ला*)

पिसता/पिस्ता- *अपि* च- पिसायल सन, थकुचल, पिचड़ा

पिहकारी- *अपि* च- उपहास व्यंजक चीत्कार

पिहुआ- *अपि* च- एक मात्र-दुर्बल सन्तान

पीक- पान खयलासँ मुहमे बनल लाल द्रव जकरा थूकल जाइछ [*क.को. मुहमे सञ्चित थूक-अति व्याप्ति*]

पीच- कोइलासँ बनल एक प्रकारक द्रव जे ठण्ढामे ठोस ओ गरम भेलापर लसिगर द्रव बनि जाइछ आ जाहिसँ पक्की सड़क बनाओल जाइछ, अलकतरा

पीठ- *अपि* च- पिट्ठी

पीड़- *अपि* च- कष्ट, पीड़ा

पीपरि- एक वनौषधि

पीपा- *अपि* च- केसरिया रंगक सिन्दूर

पुख- पुष्य नक्षत्र, पुक्ख, (*पुख ने राखय रुख*)

पुङ्गल- खिच्चड़ि

पुचकारब- पोल्हायब, दुलार करब

पुच्ची- अत्यन्त लघु आकारबला, मानक आकारसँ बड़ छोट

पुछा-आछी- जिज्ञासा, खोज-पुछारि

पुच्छा- पुछनिहार, जिज्ञासा कयनिहार, सहानुभूति देखौनिहार (*छुच्छाकेँ के पुच्छा ?*)

पुजौड़ा- अव्यवस्थित रूपमे राखल छोट-छोट कूड़ी, छोट-छोट ढेरी (*जेना पूजाक निमित्त फूल-प्रसाद आदि कूड़ी बना कऽ राखल जाइछ तहिना बनाओल छोट-छोट ढेरी*)

पुट्ठी- *अपि* च-बाँसक बातीक बाहरबला कठोर भाग

पुण्यकाल- प्रत्येक संक्रान्ति केँ स्नान-दानादिक हेतु पवित्र समय/पुण्यप्रद समय

पुतखौका- पूतकेँ खयनिहार, पुत्र-मरण देखनिहार (*पुरुषक प्रति पुत्रमरणकामी अशुभ गारि*)

पुताम- टूटा तकथाकेँ एक दोसरापर चढ़ा कऽ जोड़बाक लेल दुनू तकथाक लम्बाइ भागक किनारकेँ खति कऽ बनाओल खाँच

पुत्ती- मड़ुआक डाँटमे लागल पात (*जआँ मड़ुआमे पुत्ती भेल, धियापुता खुरलुच्ची भेल*) [*क.को.- मड़ुआक काँटूसँ झड़ल फूल-अशुद्ध*]

पुनकाल- दे. पुण्यकाल

पुनाह- *अपि* च- यज्ञादि अनुष्ठानक समापन

पुबारी- पूब दिसक, पूबभरबला

पुन्न- पुण्य

पुन्नकाल- दे. पुण्यकाल

पुरओँत- मूड़न-उपनयनादि काज-परोजनमे सम्बद्ध पौनी-पसारीकेँ देल जायबला किछु द्रव्य सहित सीधा/सिधहा

पुरकस- प्रचुर, पूर्ण, अहगर

पुरखारति/पुरखारथ- पौरुष्ह, पुरुषार्थ, सामर्थ्य, साहस

पुरखाहि- दे. पुरुखाहि

पुरदारा- अहगर, अपेक्षासँ अधिक, पुरकस

पुरनीमा- शुक्लपक्षक अन्तिम तिथि, पूर्णिमा

पुरबिल (*प्रा.*)- पहिलुक, पूर्वक

पुरबा-साति-ककरहु कथन वा कृत्यक ओकरा समक्षहि सत्यापन

पुरहितनी/पुरहिताइन- पुरहितक स्त्री

पुरुखाहि- पुरुषोचित गुण/वाणीसँ युक्त महिला

पुरोँत- दे. पुरओँत

पुर्र- उपहास व्यंजक शब्द

पुर्र-पुर्र करब- डेराइत रहब

पुलकारब- पोल्हायब, पुचकारब

पुष्टगर- परिपूर्ण, अधिक

पुष्टै- बलवर्धक खाद्य/ओषधि

पुसओठ- शिशुक जन्मक पहिल वर्षक पूस मासमे बगियासँ ओकर देह सेदबाक एक विधि

पूत-करन्त- पुत्र वा श्राद्धकर्म कयनिहार अन्य उत्तराधिकारी,

पूर- *अपि* च- गर्भक अन्तिम/पूर्ण मास

पूरी (पड़ब)- *अपि* च- दोकानदारीमे वस्तुविक्रयसँ प्राप्त लाभ

पूरे पूर- ने बेसी ने कम, अन्यूनाधिक

पूर्णकाम- जकर कामना पूर्ण भेल होइक

पूर्ववत्- पहिने जकाँ, पहिल जकाँ, पूर्वमे जेहन छल तेहन

पेओन- वस्त्रक फाटल स्थानपर सीबि कऽ साटल जायबला वस्त्रक छोट टुकड़ी

पेखना (प्रा.)- नाट्य-नृत्यादि (*राजा, जोगी, पेखना, खाली हाथ ने देखना*)

पेङा- हरवाही पयना/पेना [*क.को.मे अर्थ दोषारोप -असंगत*]

पेङा करब- हुतकारब, उकसायब

पेचिल- *अपि* च- प्रपञ्ची, ओझरओट लगौनिहार

पेचिस- अधिक दस्त होइत रहबाक बिमारी

पेचैल- प्रपञ्ची, पेचिल

पेटकटारि (लागब)-भरिपेट भोजनक अभाव (होयब)

पेटकान (देब/लाघब)- पेटक भरेँ पड़ल रहब, असह्य दुख अथवा क्रोधसँ खयनाइ-पीनाइ छोड़ने रहब

पेटखाप- मध्य भागमे किंचित् धसल समतल सतह

पेट-पेट कऽ मरब- पैघ क्षतिक दुखकेँ संकोचवश व्यक्त नहि कऽ मनेमे राखब

पेटाढ़ी- कटहरक कोआक गुद्दा आ आँठीक बीचमे आँठीसँ सटल अखाद्य तन्तु / गुद्दा [*क.को. 'कटहरक पेटमे भरल फीता सन तन्तु' । परन्तु ओकरा 'कमरी' कहल जाइछ । क.को 'कमरी'केँ 'कटहरक खोँइचा' कहैछ, जे अशुद्ध अछि*]

पेटी- *अपि* च- बाँसक बातीक भीतरबला भाग, दे. विठपुट्टी

पेनी- *अपि* च- डोका/घोंघहाक मांसक सबसँ भीतरबला कोमल भाग

पेमही/पेम्ही- नगण्यो सन कष्टकेँ पैघ बनाय कानि-कानि वर्णन कयनिहारि

पेरोटन- उत्पीड़न

पेशा- नियत व्यवसाय, आजीविका

पेस- अदहो कोड़ोकेँ सटा कऽ पैसाओल मजगूत कोड़ो, पेसल जायबला चोरकोड़ो

पेसा- दे. पेशा

पेसाप- लग्घी, लघुशंका

पेसापखाना/पेसाबखाना- लग्घी करबाक नियत स्थान

पेस्तर- पहिनहि, पूर्वहि [*क.को. शीघ्र-भ्रामक अर्थ*)

पैकामी नाच (प्रा.)- पूर्वमे पाइक/सिपाही आदिक मनोरंजनार्थ आयोजित कयल जायबला विशेष प्रकारक नाच

पैकार- उत्पादक सबसँ घूमि-घूमि सस्त भावमे वस्तु कीनि थोक-व्यापारीक हाथेँ बेचनिहार [*क.को. घुमि-घुमि बेचनिहार-अशुद्ध*]

पैकारी- पैकारक काज [*क.को. घुमि-घुमि बेचबाक काज- अशुद्ध*]

पैँच-पालट- अल्पकालिक बिनु ब्याजक ऋण एवं वस्तुकेँ बदलि कऽ वस्तु लेनाइ इत्यादि

पैँचा- पैँच, अल्प समयक हेतु लेल गेल बिनु ब्याजक ऋण

पैजनिआ- पैजनी, घुघरू, नूपुर

पैयाही- एक पाइ मूल्यबला सिक्का

पैसाही- एक पैसा मूल्यक सिक्का

पोआङ- छाहरिमे जनमल कोमल घास, ननघस्सी

पोकमाइन/पोकमाइनि/पोकमानि- मध्यस्थ जकाँ गप्प करऽबाली महिला

पोकर (*अं.*)- गैस/ज्वलनशील तेलक प्रवाह-छिद्रक अवरोधकेँ साफ करऽबला सुइक सदृश लोलबला उपकरण

पौँकी- द. पओँकी

पोकोमैआ(याँ)/पोकोमैया- अति वृद्धा अनुभवी स्त्री (*अल्पवयस्काक प्रति व्यंग्यमे*)

पोखरा- पोखरि (*पोखरि रजोखरि और सब पोखरा*)

पोखरिया'ज'- पोखरिक आकृतिबला ज, तिरहुता लिपिमे 'ज' रूपमे उच्चारणबला 'य', जेना- यशोदा = जशोदा

पोखरी- पोखरि/छोट पोखरि

पोछन-पाछन- बासनमेसँ अन्तमे पोछि कऽ जमा कयल गील व्यंजन

पोछना- सफाइ करबाक लेल वस्त्रादिसँ बनाओल साधन, नूड़

पोछा (लगायब)- घरक चिक्कन सतहकेँ पोछबाक काज

पोट- नेबो/समतोला आदि फलक भीतरमे बनल प्राकृतिक फाँक, ढेँढ़ीक रूपमे परस्पर संलग्न पैघ जओक आकारक लहसुनक फाँक सब

पोठा- पैघ जुआयल पोठी माछ

पोठिया-पोठी माछ

पोतन/पोतना- रंग लगाबऽबला लत्ता, पाटी (कृष्णपट) पर करिखा पोतऽबला लत्ता

पोप (*अं.*)- इसाइ मतक सर्वोच्च धर्माचार्य/धर्मगुरु

पोँपरेड़ा (उठब)- अनेक काज एके बेर उपस्थित भऽ जयबाक कारणे उत्पन्न नंगो-चंगोक स्थिति, हलचल

पोरा- पोआर

पोल- *अपि* च- 1. कोनो ठोस सन वस्तुक भितरिया फोँक भाग 2. (*अं*) टेलीफोन/बिजलीक तार लटकाबऽबला खाम्ह

पोलिया- सूतकेँ लपेटि कऽ बनाओल गोली, पोला

पोसबैया- पोसनिहार, पालन कयनिहार

पोसाँत-पोसुआ/पोसल-पालल वन्य जन्तु/चिड़ै

पोसिन्दा- मजदूरकेँ नियमित काज देनिहार मालिक, पोषक, पालक

पोसु- पोसि कऽ नमहर कयल गेल पाड़ी, ओसरि

पोस्ट (*अं.*)- पद

पोस्ट आफिस (*अं.*)- डाकघर, डाकखाना

पोस्टमास्टर (*अं.*)-डाकखानाक मुख्य अधिकारी

पोस्टर (*अं.*)- प्रचारार्थ देबालपर साटल/टाङल जायबला विज्ञापन अंकित पैघ-पैघ कागत

पोहपित-1. परिपूर्ण तेल नीक जकाँ पोचकारल 2. गील ओषधिक लेप नीक जकाँ लगाओल

पौजामा- पैर पैसाय पहिरल जायबला सीयल अधोवस्त्र, पयजामा

पौटी- पटौनीमे पानि बहबाक लेल बनाओल पातर नाली, पैन

पौड़की-एक प्रकारक चिड़ै, पण्डुक (पण्डुकी)

पौढ़ायब- देवमूर्त्तिकेँ स्थापित करब, समुचित स्थानपर देवमूर्त्तिकेँ पूजनार्थ राखब

पौनी-पसारी- गाम-देहातामे गृह कार्य ओ गृहस्थीक काजमे नियमित नियोजित रूपमे तथा पारम्परिक रूपमे विशेष-विशेष काज कयनिहार वर्ग/जाति [*क.को.-' गृहस्थ द्वारा गामक पसारी सबकेँ देय वार्षिक पारिश्रमिक '- अशुद्ध । पारिश्रमिक होइछ 'बोनि' वा 'कमाइल '*]

प्रगतिवाद- साहित्यमे प्रचलित मार्क्स(साम्यवाद)क सिद्धान्त/विचारधारा

प्रगतिवादी/प्रगतिशील- प्रगतिवादक अनुसरण कयनिहार

प्रचलित- सामान्य व्यवहारमे प्रयुक्त

प्रयाग- एकटा प्रसिद्ध तीर्थ जतऽ गङ्गा-यमुना-सरस्वतीक संगम अछि

प्रशिक्षु- प्रशिक्षण पौनिहार

प्राक्कथन- पूर्व कथन, भूमिका

प्रीतम-पति, प्रेमी, प्रियतम

प्रेतांश- प्रेतक भाग

[फ]

फकड़ब- *अपि* च- 1. बेसी काल धरि चिचियाइत रहब (विशेषत: नेनाक)

फकड़ल- पसरल (नाक)

फकीरी- फकीरक आचरण

फच दऽ/सँ- दे. फचाक दऽ

फचर-फचर करब/बाजब- निरर्थक बेसी बाजब

फचाक दऽ- अकस्मात् असधं गील वस्तुपर पैर पड़बाक ध्वनि

फजली- एक प्रकारक आम

फटओन- छेना, फाटल/फाड़ल दूधक सार भाग

फटकी- *अपि* च- दूर, हटि कऽ, पल्ला

फट दऽ/फटाक दऽ/सँ- अकस्मात् टुटबाक ध्वनि, तुरन्त

फटोफन/न्द- अवग्रह, धर्मसंकट, की करी आ की नहि करीक स्थिति

फट्टक- बाँसक झाँझनसँ बनल केबाड़, फटक

फड़चोका/खा- खम्हारु/तेकुनाक लत्तीमे फड़ल फल सदृश कन्द

फड़िछओट- झगड़ाक निदान

फड़िछायब- 1. विवाद सोझरायब 2. स्पष्ट करब/होयब

फड़िच्छ/फड़ीछ- भोरक घूमिल इजोतबला, स्पष्ट समय

फड़ी-शस्यमे फड़ऽबला छिम्मड़ि, [क.को.- *महावृक्षक फल रूप उपज- प्रयोगमे ई अर्थ नहि होइछ*]

फड़ुहा- दे. फड़चोका

फतूर (जोड़ब)- मिथ्या कलङ्क, मिथ्या आरोप

फतूही- बिन बाँहिबला गञ्जी

फनकायब- उत्तेजनामे हथियार देखायब/भाँजब

फनन्त- अनुपनीत नेनाक लेल चौदहसँ न्यून ग्रन्थिवला अनन्त

फफड़दलाल- धूर्त्त/फुसियाह मध्यस्थ, अपन प्रभाव आ क्षमताक विषयमे खूब बढ़ा-चढ़ा कऽ फूसि बजनिहार

फबकी- *अपि* च- सुतार, बिनु परिश्रमे फबनाइ

फरकब- लेन-देनमे मिनहाक बाद अधिशेष राशि बहरायब

फरकी- दहीक छाँछपर दोसर छाँछ रखबाक लेल तीन काठीसँ बनाओल त्रिभुजाकार आधार (*फर्क* > *फरक* > *फरकी- फरक करऽबला*)

फरचोक- (अल्पो वयसमे) बाजऽ-भूकऽमे मुखर/निर्भीक

फरछाँही- आकृतिक छाया, पानिमे पड़ऽबला प्रतिबिम्ब

फरजी- *अपि* च-नकली

फरफैसी/फरफैँसी- आडम्बर-सूचक गप, [*क.को.- मिथ्या दोषारोपण-असमीचीन*]

फरस- *अपि* च- एक प्रकारक पैघ नाव जाहिपर तकथा पाटि कऽ चौकी जकाँ सतह बनाओल रहैछ

फरहा- लघु आकारक एक फल

फरही- भूजल जओ, [*क.को.-See 'मुड़ही'। किन्तु प्रविष्टिमे 'मुड़ही' नहि अपितु 'मुरही' अछि जकर अर्थ कहल गेल अछि चाउरक लावा'। जखन कि लावा होइछ धान, मखान, मकै, खोभी, भेंट, जनेर आदि केर।*]

फराक (*अं.*)- *अपि च*- बालिकाक पहिरबाक घघरी सन घेरा लागल अंगवस्त्र

फराकति/फरागति- शौचादिसँ निवृत्ति

फरिकेन- पटीदार लोकनि, हिस्सेदारगण

फरियायब- *अपि च*- वमन करबाक प्रवृत्ति होयब, ओकियायब

फरीकी- फरीकक सम्बन्ध / व्यवहार, हिस्सा-बखराक लेल झगड़ा

फर्द- *अपि च*- 1. उन्मुक्त प्रशस्त क्षेत्र 2. बिना आच्छादन / बिना परदाक स्थान

फर्दबेयान- अधिकारीक समक्ष प्रदत्त स्वैच्छिक वक्तव्य

फर्रा- कुड़हरिक छओसँ ओदरल काठक नमहर चेरा

फर्री- मोटका भागकेँ छीलि कऽ पातर कयल ईंट

फलका- *अपि च*- गहीँर धरि फलकल माटिक सतह जाहिमे चललापर पैर धसि जाय

फलको- 1. आङीक बहुआँमे पाँखुरपर ऊपर दिस कऽ फलकाओल भाग 2. कपड़ाक पट्टीकेँ कोचिया कऽ लगाओल मगजी

फलनमा/मी- अमुक, फल्लाँ

फलहारब/फलहोरब-कपड़ाकेँ पानिमे डुबा कऽ पसारि कऽ पखारब

फलामा/फल्लीँ- अमुक

फल्ली- *अपि च*- 1. रन्दाक उपकरणमे लागल लोहक धारबला पत्ती जाहिसँ काठक सतह छिलाइत छैक 2. ताड़क पाकल फल

फसादि- उत्पात, झगड़ा, मारा-पिटी

फसान- ओझरओट, झंझटि बझनाइ

फसील- शस्य, जजाति, खेतक उपजा

फाँका- *अपि च*- पाँतर, पथमे बहुत दूर धरि निर्जन भाग

फाड़ि- दुनू ठोरक बाम-दहिन लम्बाइमे मुहक फाट [*क.को. फारि- दुनू ठोरक विस्तार -अर्थ असमीचीन*]

फारस (*अं.*)- प्रहसन, हास्याभिनय

फाँहि दऽ- एकाएक, अकस्मात् (*प्राण चल जायब*)

फिक्का- 1. अत्यन्त हल्लुक रंग, 2. पानि सन स्वाद, अनोन व्यंजनक स्वाद

फिरनी- एकटा माटिक पात्र, छोट सनहकी

फिलमान- हाथीक सेवक, महाउत

फिस्सा/फिस्सी- 1. खेलमे अन्तिम स्थान पौनिहार (*पहिल-मीरा, दोसर- दोबजा, तेसर तेबजा, अन्तिम-फिस्सा / फिस्सी*) 2. सबसँ पाछाँ रहनिहार, श्रेष्ठता क्रममे अन्तिम [*क.को- फीसाँ- किछु खेलमे द्वितीय विजेता-?*]

फुकल-फाकल- रोगमुक्त,

फुकना/फुकनी- *अपि च*- आगि पजारबाक लेल मुँहसँ फूकऽबला फोँफी / नली

फुक्का- 1. खाली, शून्य 2. मुँहसँ फूकि कऽ तुम्मा-सन बनाओल जायबला खेलओना, बैलून

फुक्का मुट्ठी- 1. तत्काल टका-पैसाक नितान्त अभाव, 2. खाली हाथ (*काग-दोस खेलमे एक स्थिति-खाली मुट्ठीकेँ काग वा दोस कहलापर बारह गोटीक दण्ड-फुक्का मुट्ठी बारह गो*)

फुचकार/फुचकारब- आवश्यकतासँ बेसी पानि हेरायब

फुचफाच- विशिष्ट परिधानक सप्रयत्न प्रदर्शन (*लालधोती फुचफाच राति खेलें छुच्छ भात*)

फुचफुच करब- *अपि च-* हाव-भावसँ रोष-प्रदर्शन करब

फुचफुचाह- तमसाह

फुचुक्की- (अपेक्षाक प्रतिकूल) अति लघु पात्र

फुटकियाह- फुटकीसँ युक्त, दे. फुटकी

फुटकी- भात/दालिमे असिद्ध रहि गेल दानाक अंश

फुटकुटिया- बेसी मूल्यक मुद्राक बराबरि देय/प्राप्य कम मूल्यक मुद्रा सब, रेजकी [*क.को.-खुदरा विक्रेता-?*]

फुटानि- मनोमालिन्य, मतान्तर, झगड़ा [क. *को. झगड़ा लगयबाक चेष्टा-असीमीचीन*]

फुटानी- देखाबाक लेल अपव्यय, बिना श्रमे प्राप्त धनसँ इलबाइस कयनाइ [*क.को. झगड़ा लगयबाक चेष्टा*-असीमीचीन]

फुदड़ियायब- मकै-मड़ुआक सीसक फुदड़ी/अत्यन्त छोट सीस भऽ जायब

फुदफुदायब- आँच लगलापर गाढ़ द्रव वा खूब गील वस्तुसँ बुलबुला फूटि कऽ भाफ बहरयबाक ध्वनि होयब, खदकब

फुदुआ- शिशु बालकक लिंग

फुदुर-फुदुर करब- मन्द स्वरमे गोपनीय गप्प करब, अत्यन्त लगसँ मद्धिम स्वरमे फदका करब (*बौआ कनै छै कथी लय, बाबू कोरा जाय लय, फुदुर-फुदुर बतिआइ लय*)

फुद्दी पाड़ब- शिशु द्वारा मुँहसँ थूकक छोट-छोट बुलबुल्ला फेकब

फुनफुनायब- चंचल आचरण द्वारा रोष प्रकट करब

फुनफुनी/न्नी-आचरण द्वारा रोष-प्रदर्शन

फुफनब/फुफनायब- 1. सिरकामे बोरल मिठाइ, दही आदिक बेसी दिन रहि गेलापर विकृत भऽ कऽ फुलि जायब 2. बाँतर-खोतर खयने घाओक बेसी पिजुआ कऽ फूलि जायब

फुफड़िआयब- फुफड़ी पड़ब

फुफड़िआइन- फुफड़ीक कारणे उत्पन्न गन्ध वा स्वाद

फुर-फाँइ/फुर्र-फाँइ- 1. धन-राशि असंयत रूपमे खर्च 2. अनुपयोगी काजपर कयल गेल अपव्यय

फुलकब- फलकब, बन्धन ढील होयब

फुलकल- उपर उठल, बिन जाँतल, बिन सैंतल

फुलकोका- कुमुद पुष्प (*जलद जोग फुलकोका-विद्यापति*)

फुलनेबा- अनरनेबाक बिन फलबला फूल, अनरनेबाक ओ गाछ जाहिमे फल नहि फूल मात्र होइछ

फुलौड़ी- (अगस्त/स्ति, इन्द्रकमल, पिड़ार, बेला-बेली, तग्गर फूलकेँ बेसनमे बोरि कऽ तेलमे छानल पकौड़ी [*क.को.- बेसनक बड़ी जे रौदमे सुखाए राखल जाइछ- भ्रान्ति*]

फुल्ली- फूल लागल बतिया, अजोह फल (विशेषत: लताम ओ बड़हरक फल *-लुल्ली छुल्ली बड़हरक फुल्ली*) [*क.को.- कली, कोँढ़ी-भ्रान्ति*]

फुस दऽ/फुस्स दऽ- कनेको नमरने/नमरौने टुटि जयबाक ध्वनि/वेग

फुसफुसाह- फुस दऽ टूटि जायबला वस्तु (जेना-ताग, रस्सी आदि), कमजोर

फुसुक्की- दुर्बल, नगण्य, फुसफुसाह

फुहरी- अपरोजक स्त्री (*काजुल काज करय फुहरी बोलाय दिअय*)

फुहिया- फूहीसँ उत्पन्न (फुहिया ढील)

फूट (*अं*)- *अपि* च- लम्बाइ नपबाक एक प्रकारक मान, एक गजक तृतीय भाग, 12 इञ्च= एक फूट

फूला- *अपि* च- मृतकक अस्थिशेष

फूला फेकब/भसायब- अस्थिशेष/फूलाकेँ गंगा/पवित्र नदीमे प्रवाहित करब

फूस- खऽढ़ (रटनी, राड़ी, डाभी, खड़ही) आदिक समवेत (फूसक घर, घास-फूस)

फूहरि- दे. फुहरी

फेओँ- बाघक आगाँ-आगाँ उड़निहार एकटा तथाकथित चिड़ै, (*ला.*)- खुँखार लोकक सहचर

फेकन/फेकना/फेकनी- अपि च- निरसल नेना, एहन नेनाक नाम जकर जीबाक आशा नहि होइक

फेक-फेका- अपि च- एक-दोसरपर परस्पर दायित्व टारनाइ

फेँटमाल-फेँटल-फाँटल, मिज्झर

फेनो-पुनः, पुनरपि

फेँफ (काढ़ब/जोड़ब)- सापक फण/फेँच [*क.को.- See फोँफ । ओतऽ फोँफक कथित अर्थ-निद्रावस्थामे नाकसँ बहरायल ध्वनि, ठऽर ।' वस्तुतः सूतलमे लोक फँफ नहि, फोँफ कटैत अछि। साप फँफ जोड़ैत/काढ़ैत अछि ।*]

फेफस- *अपि* च- शरीरक अंगपर आघात लगने भीतरसँ बहरायल मांस/गुद्दी

फेरब- अपि च- उमठब, वितृष्णा होयब

फेरही/फेरहै- घूमि-घूमि कऽ माल-जाल कीनि कऽ पुनः बेचबाक काज

फेरा- *अपि* च- ओझरओट, झंझटि

फेरिस्त/फेहरिस्त- सूची, लिस्ट

फेरी- *अपि* च- ओझरओट, झंझटि

फोँकगर- फोँक भागसँ युक्त, कोमल, दे. फोँकायब

फोकराइन- बिनु औँटल दूधक विकृतिजन्य गन्ध वा स्वाद, नवजात शिशु द्वारा सद्यः पीबि कऽ बोकरल दूधक गन्ध [*क.को.- एक प्रकारक गन्ध-अति व्याप्ति*]

फोँका- *अपि* च- मखानक नमहर आ हल्लुक लावा, दे. फोँकगर 2. फोँकायब

फोकटिया- 1. विना मूल्यक अनायास प्राप्त वस्तु 2. हीन गुणवत्तावला वस्तु 3. बिना कोनो व्यय कयने लाभ उठौनिहार

फोँकायब- बूट, केराओ, खेसारीक मूड़ीक मोट आ कोमल होयब, मखानक पैघ आ हल्लुक लावा बनब

फोँकार- देबालमे केबाड़-खिड़की बादमे लगयबाक लेल खाली छोड़ल/बिना ईंट जोड़ल खाली भाग

फोँकिला- ऊपरसँ सौँस आ भीतरसँ खाली, अन्नकीट द्वारा खायल फोँक अन्नक दाना

फोको- कुरेड़िनि द्वारा भीख मङबाकाल घरक महिलाक प्रति प्रयुक्त सम्मान सूचक सम्बोधन

फोड़ी-पुरना धारसँ निकलल नव कम चाकर धार

फोँफा- मोट फोँफी, मोट नली, ध्वनि-विस्तारक भोम्हा

फोहार- खसैत मेही-मेही जलकण, झीसी

फोहारा- छिच्चा, छीटल जायबला जलकण,

फौत- मृत, मुइल, दिवंगत

फौती- *अपि* च- मरकी, महामारी

फौद- फौज, सेना

फौदब/फौदायब- लत्ती-गाछ आदिक चतरब

फौदार- बेसी मोकदमा लड़निहार

फौदारी- आपराधिक मोकदमा, फौजदारी

फौलब/फौलायब- दे. फौदब/फौदायब

फ्योँ- दे. फेओँ

[ब]

बओगहा-बाओग कयल (धान), बाओग कयल जायबला (धानक खेत)- *वि.* रोप/रोपहा

बकछिहुल (करब/लगायब)- अकच्छ, तंग, बेर-बेर आग्रह-दुराग्रह

बक दऽ (छोड़ब)- कसि कऽ पकड़ल वस्तुकेँ एकाएक छोड़ि देब

बकनायब- *अपि* च- अनियमित भऽ जायब

बकब- *अपि* च- 1. अपन अपराधक स्वयं वर्णन करब, गुप्त बात बाजब, 2. नेनाक बेसी काल धरि कनैत रहने हिचुकि-हिचुकि अपन कनबाक कारण कहब, 3. भूत लगलापर बाजब

बकरकसा- बकरी-छागर मारनिहार कसाइ, चिक

बकलम खास- स्वयं कलमसँ कयल हस्ताक्षर, (*ला.*) मूर्ख, निरक्षर

बकलो/बकलोइया- मकैक सीसक आवरण/खोँइचा

बकाटा- गुड्डी कटबाक/काटबाक उच्च उद्घोषणा

बकारा- विवश भऽ देल वचन, वचनबद्धता [*क.को. भविष्यकथन-अनुपयुक्त*]

बकुतब- आङुरक नऽह गड़ाय बिट्‌टू काटब

बकुता-बकुती- दुइ व्यक्तिक मध्य परस्पर झगड़ामे नऽह गड़ाय-गड़ाय नोचनाइ

बगधब- 1. कुपित होयब 2. मालजालक उन्मत्त भऽ कऽ मकब/कूदफान करब

बगबग- अपि च- अतिशय उज्जर (उज्जर बगबग)

बगलामुखी- दशमहाविद्यामेसँ एक

बगिया- अपि च- बगिया सन आकृतिक धड़बला एकटा कटैया झाड़, नागफेनी

बगुलनी-मादा बगुला

बगुलबा-बगुला

बगुली- *अपि* च- बगुलनी

बग्घो- भयोत्पादक बाघ सन एक कल्पित जन्तु, बाघ

बघबा-बाघ

बघबा (जोड़ब)-पेटक भरेँ दुनू हाथ रोपि आगाँ ससरबाक शिशुक प्रयास

बघमुहाँ- बाघक मुँह सन आकृतिबला

बघलाउर- एकहि संग अनेक दिससँ कयल गेल नंगो-चंगो

बङलभुट्‌टी- बौनी, भुटिया (मौगी)

बङला- अपि च- रहड़िया/रहड़ियासीम

बङली- चारू भागसँ खुजल चारि चारबला छोट घर

बङौरी- मेघसँ बरिसल बरफक छोट-छोट गोली जे पानिक बुन्न जमलासँ ठोस भऽ जाइछ जकरा तथा पत्थल/पाथर कहल जाइछ

बङ्कुरा- वीर, बहादुर, साहसी

बचओन/न्ह-बच्चा सन(मुँह/व्यवहार)

बचबा- *अपि* च- 1. बच्चा, नेना, ननकिरबा 2. गहनाक (मङटीका, कान, गरदनि आदिक) निम्न भागमे लटकाओल झुलैत रहनिहार छोट-छोट बुनका

बचबी- कन्या, बुच्ची, ननकिरबी

बचाब- रक्षा, त्राण

बचिया- दे. बचबी

बजरगीरह/बजरगेँठ- 1. नहि खुजऽबला गीरह, कठिनतासँ खुजऽबला गीरह 2. देखबामे अल्प वयसक परन्तु वास्तवमे बयसाहु

बजरङ्गी- *अपि* च- हनुमान

बजराँठ/ठी- चिरकालसँ बिन जोतल-कोड़ल पथराह जमीन, सक्कत, कठोर

बजरी- *अपि* च- बेसी काल धरि फुलाओलो गेला उत्तर सक्कते रहि गेल केराओ

बजाहटि- अयबाक समाद, अयबाक आदेश/हुकुम/निर्देश

बञ्जर- झाड़-झाँखुरसँ युक्त अनुपजाउ सक्कत भूमि

बटखारा- मानक ओजनबला विशिष्ट आकारक ठोस पिण्ड जाहिसँ वस्तु तौलल जाइछ

बटबा- 1. बाट 2. छितनार मुँह आ गोल पेनबला पैघ बाटी

बटिया- 1. बाट 2. छितनार मुँह आ गोल पेनक छोट बाटी

बटीदार- उपजामे हिस्साक आधारपर आनक खेत उपजौनिहार

बटोरन- समेटि कऽ जमा कयल गेल छिड़ियायल वस्तु (*आधा गेलौं उड़न-पुड़नमे आधा लेलौं हम, आधा गेलौं बाल-बटोरन आधा गेलौं पम, बाना दे बुना ले*)

बट्टी- अपि च- अधिकमानबला मुद्राकेँ ओकरे बराबरि छोट मुद्रामे बदलबाक शुल्क

बड़का-बड़की- घमसान झगड़ा, त्वञ्चाहञ्च

बड़दिया/बड़दीया- बड़दपर सामान लादि घूमि-घूमि कऽ बेचनिहार

बड़ नी- बेस, बड़बेस, बड़नीक, तथापि

बड़बड़ायब- *अपि* च- 1. सब बीजक एकहि संग अँकुरा जायब, 2. पानिक चोटगर बुन्न एकाएक बरिसऽ लागब, 3. चेचक/घमौड़ी एकाएक प्रकट भऽ जायब

बड़बड़िया- छोट आकारक अधिक फड़ऽबला बिज्जू आम

बड़ा- जेठ, श्रेष्ठ, पैघ, अधिक, मुख्य (बड़ा लाट, बड़ा हाकिम, बड़ा बाबू, बड़ा साहेब, बड़ा काबिल)

बड़ि (स्त्रीलिंग)- अधिक, बेसी, (*बड़ि बुधियारि, बड़ि चतुरी*)

बड़ी गो/बड़ी टा- खूब नमहर

बड़ुकी- अत्यन्त छोट आकारक माटिक डाबा

बढ़म- मुइलाक बाद देव रूपमे पूजित निविष्ट ब्राह्मण, ब्रह्म

बढ़मण्डल- माथक मध्य भाग, माँझ कपार, ब्रह्ममण्डल

बढ़मथान- बढ़मक स्थायी पूजा-स्थल

बढ़मोतर/बढ़मोतरा- ब्राह्मणकेँ दानमे प्रदत्त कर- मुक्त भूमि/ग्राम, ब्रह्मोत्तर

बढ़िमका/बढ़िमकी/बढ़िम्मा- नीक रूप-गुणबला, सबसँ बढ़ियाँ

बढ़ेड़- बहेड़, अबारा, अनुशासनहीन

बढ़ोतरी- पूर्वापेक्षा वृद्धि, बढ़ल अंश

बण्ठ- भुट्ट

बण्ठा- भुट्टा, भुटबा, बौना

बण्ठी- भुट्ट स्त्री

बतकटपन- कहल बातकेँ खण्डन कयनाइ,

बतकहाँ-बाता-बाती, वाग्युद्ध, मौखिक झगड़ा

बतचोथौअलि- कुतर्कपूर्ण विवाद, गलचोथौअलि

बतबनबा- मनोरंजक गप्प बनौनिहार

बतहपनी- बताहक स्वभाव, बताहक आचरण

बतहुत्थन/नि- एकहि बातकेँ बेर-बेर अनेक तरहेँ कहब/पूछब/ कुतर्क करब

बतान- नटुआक नाच कालमे आँखि, मुँह, हाथ आदिक विभिन्न मुद्राक प्रदर्शन

बतिया- 1. लत्ती/भाँटा-रामझिङुनिक आरम्भिक अवस्थाक छोट फड़ [क.को. '*आरम्भिक अवस्थाक छोट फड़; विशेष कए काँकड़िक*'- *अर्थक पूर्व खण्डमे*

अतिव्याप्ति, उत्तरखण्डमे अव्याप्ति दोष] 2. खीरा जातिक पातर-नमपोर एकटा लता फल जकरा खीरा जकाँ काँचे खायल जाइछ [*क.को. एक प्रकारक काँकड़ि जे काँचे खाएल जाइछ- टिप्पणी: मगही-भोजपुरीमे एकरा कँकड़ी कहल जाइछ- किन्तु मैथिलीमे काँकड़ि फूँटि/फूटि नामक लता-फलकेँ कहल जाइछ।*] 3. बात, गप्प (*सुनह हमर हित बतिया हे गौरी-चन्दाझा*)

बतियान- दीर्घकाल धरि निरुद्देश्य गप्प करैत रहब

बतोला- *अपि* च- कठविवाद, निरर्थक बहस

बत्तिस- तीस ओ दू

बत्ती- *अपि* च-1. इजोत करऽबला साधन-चोरबत्ती, बिजली बत्ती, मोमबत्ती; 2. जरौलापर सुगन्धित धुआँ देबऽबला साधन- अगरबत्ती, धुपबत्ती 3. बाँसक पातर आ नमछड़ फट्ठी, बाती

बथनियाँ- महिसिक बथान रखनिहार [*क.को. बथानपर रहनिहार पशुपालक।' टिप्पणी: बड़द, गाय, बकरी आदि पशुक पालक बथनिआ/याँ नहि कहल जाइछ*]

बदखोइ- निन्दा, खिधांस, बदगोइ

बदगोनिया- आयत/वर्गक दृष्टिएँ समकोणसँ कम वा बेसी अंशबला कोण, कोनाह

बदनेत- मनमे बैमानीक भाव रखनिहार

बदनेति/बदनेती- बैमानीक भाव

बदमसही- बदमास स्त्री

बदर- परिवर्त्तन, प्रतिस्थापन, जमीनक रैयती नाम/नाप/नक्सा/ मालगुजारी आदिमे त्रुटि सुधारक अर्जी/ आवेदन

बदल- बदला

बदलाम- निन्दित, बदनाम, कुख्यात

बदी- अन्हरिया पक्ख, कृष्ण पक्ष, बदि

बद्दी (बैसब)- *अपि* च- मनमे स्थायी रूपसँ बैसि गेल ककरो प्रति घृणा/प्रतिशोधक भाव

बध लागब- 1. हत्याक प्रायश्चित्तक भागी बनब, पतिया लागब 2. किंकर्त्तव्यविमूढ़तासँ बकार बन्द भऽ जायब

बधहा- खुट्टीक बदलामे डोरी लागल खड़ाम

बऽन- हाथमे पहिरल लहठीक आगाँ/पाछाँमे पहिरबाक मोट लहठी

बनकठ- एकटा कुकाठ जकर प्रयोग घरक कोड़ो/बल्लीक रूपमे होइछ, तिलै

बनकाउन- काउन सन डाँट आ सीसबला घास जकर सीस कपड़ामे चिभुटि जाइछ

बनचर- असभ्य, अनुशासनहीन, असामाजिक

बनपर- मलाहक एकटा उपजाति

बनबैया- बनौनिहार, निर्माता, स्रष्टा

बनरघाओ-बानरक घाओ जे छुटैत नहि छैक, बानरक घाओ जकाँ जल्दी नहि छूटऽबला घाओ

बनरघुड़की- बानर जेना खोँखिया कऽ छूटैत अछि तहिना भयभीत करबाक चेष्टा

बनरनी- मादा बानर

बनरबाँट- जकरा जते जे हाथ लागय से लूझि लेअय

बनरमुहाँ/ही- बानर सन मुहबला/मुहबाली

बनराहड़ि- जतऽ-ततऽ छिड़ियायल (अन्न इत्यादि)

बनरी-बनरनी

बनाइ- कोनो वस्तु बनयबाक बोनि

बनाइन- मिलान, सौहार्द, सौमनस्य, सलाह

बनाओन- तरकारीकेँ रन्हबा योग्य बनयबाक क्रममे बहरायल अनुपयोगी अंश

बनाओन-सोनाओन- दे. बनाओन

बनाठी-बनमे जनमऽबला छोट-छोट गाछ, झाड़, बनैया गाछ

बनाम- प्रतिपक्ष, (अमुक)-क विरोधमे, प्रतिवादी

बनोधिया- वन्यजाति, वनवासी, वन्य जाति मूलक सैनिक/सिपाही

बन्न-बन्द, मूनल

बन्सबानि- वंशानुगत चल आबि रहल अधलाह प्रवृत्ति/आचरण

बन्हओटा- सतत खुट्टापर बान्हल रहऽबला माल-जाल जे खुजि गेलापर अनियन्त्रित भऽ कऽ मकऽ/रेकऽ लगैछ

बन्हकी- महाजनक ओतऽ कर्जसँ बेसी मूल्यक वस्तु जिम्मा लगाय कर्ज लेब

बन्हना-जाहिसँ बन्हन देल जाय से रस्सी/डोरी

बन्हा- नियमित, निर्धारित, नियत (*काज ने धन्धा, तीन रोटी बन्हा*)

बन्हायब-बान्हल जायब, बन्धित होयब

बन्हियाँ- निम्मन, नीक, बढ़ियाँ, सुन्दर

बन्हेज- *अपि* च- चितकाबर बनयबाक लेल कपड़ामे गीरह सब बान्हि कऽ रङबाक एकटा विधि

बपखौक/बपखौका/बपखौकी- नेनामे जकर बाप मरि गेल होइक (अलच्छता सूचक)

बपजेठ- बूढ़ जकाँ कथि-कथि कऽ बजनिहार अल्पवयसक लोक

बपटुअर/बपटूरा/बपटूरी- ओ नेना जकर बाप मरि गेल होइक

बपरोहटि(उठब/छुटब)- घोर संकटापन्न अवस्थामे 'बाप रे बाप !' कहि-कहि चीत्कार, बपहारि

बपहिया- बाप, बाप सन पिठपोहुक, रक्षक (व्यंग्यात्मक)

बप्प-रे-बप्प- आश्चर्य गर्भित उपहासोक्ति (विस्मयादिबोधक शब्द)

बप्पाखौकी/बप्पाडाही- बापकेँ खयनिहारि / बापकेँ डाहनिहारि (मौगीक प्रति मौगियाही गारि)

बप्पाबैरी- चिरकालिक घोर शत्रुता, खन्दानी दुसमनी

बफारि काटब- बपहारि काटब, असह्य पीड़ासँ 'बाप रे बाप !' कहि-कहि चिचियायब, कष्टमे पड़ब

बबरा- अल्प तेलमे तऽबपर सिझाओल पूआ/ बेसनक बड़

बबुरबनी- बबूरक जंगल

बबुरी-बबूरक पात सन पातबाला एकटा झाड़, सनि, शमी

बभिनियाँ- बाभनक स्त्री (निरादरमे)

बम- कमरथुआ, कामरु लऽकऽ पैदल वैद्यनाथधामक यात्री

बमपिलाट- सामान्यसँ बहुत पैघ, बेढब आकारबला

बम फूटब- जलक स्रोत फूटब, पानिक सोआ प्रगट होयब

बमबम करब- निफिकिर भऽ कऽ मस्तीमे रहब

बम बाजब- हारि जायब, देबलिया भऽ जायब, घमण्ड टूटब (*प्रेरणार्थक क्रिया-बम बजायब*)

बमभटाक- अकस्मात् खसबाक ध्वनि, भाण्ड-भङ्गक ध्वनि

बम्मड़-मोचण्ड, बुद्धिहीन,

बय- *अपि* च- लति, स्वभावजन्य दुर्गुण विशेष

बयखर- बात/व्यवहारमे लाज-धाखसँ रहित लोक, निर्लज्ज

बयबेँ-लाथेँ, बहानासँ

बयसस्थ- प्रौढ़ावस्थाक

बयाना- साइ, अगाउ [*क.को.मे साइक अर्थ 'बयाना' - किन्तु मूल प्रविष्टिमे ई शब्दे नहि*]

बरक्कति- लाभ, वृद्धि, उन्नति

बरगूना- भानसमे प्रयुक्त विशेष आकारक धातुक बासन

बरदासि- सहन करब, अबधारब (*सेवा-बरदासि*)

बरनेका- विस्तृत वर्णन

बरमसिया- बारहो मास फड़ऽबला फलक गाछ, सालो भरि रहनिहार

बरमहल- बेसी बेर, बहुधा

बरमासा- बारहो मासक वर्णनात्मक गीतक एक प्रभेद

बरम्बूह/बरम्बोह- विशाल (ढेरी), बहुत बेसी, नहि निङ्घटऽबला

बरहमसिया- दे. बरमसिया

बरहिया- *अपि* च- बारह भागमे एक भाग देय फसील-कटनीक बोनि

बरही- *अपि* च- बच्चाक जन्मक बारहम दिन कयल जायबला बिध-बाध

बराज (*अं.*)-जल-सञ्चय हेतु नदीपर बनाओल गेल जलरोधी बान्ह

बराँट- 1. बियाहक बीतल बयसबला वर 2. पेटक एक प्रकारक रोग

बरा-बरौअलि- दुइ पक्षक बीच पारम्परिक नोत-हकारादिक वर्जना

बरैठा- छाजन देल पानक बगैचा, बरेब

बरैन- हरकठक भूरमे पैसाओल हरीसक जड़िमे हरकठक नीचाँ ठोकल कील जाहिसँ हरकठ नीचाँ नहि ससरय

बरोबरि- *अपि* च- बरमहल, बहुधा, बेर-बेर, पुनः पुनः, बारंबार

बर्रे- मुँहपर भेल फोँसरी सब

बरोह/बरौँह- बड़क डारिसँ लटकल सीर सबसँ विकसित गाछ

बलउमकी- बलक मदमे झगड़ा-दन कयनाइ

बल करब- *अपि* च- जबरदस्ती करब, अनुचित करब,

बलखोँखी- कृत्रिम खोँखी

बलगरी- बलगर होयबाक घमण्ड

बलगेड़- अनुचित / असंगत बातकेँ मनबयबाक जिद्द

बलण्ठ- मोटायल ओ बलगर शरीरबला मूर्ख / मोचण्ड

बलम- *अपि* च- प्रेमी, प्रियतम, पति, बल्लभ

बलमा/बलमुआ- दे. बलम

बलया- दे. बलिया

बलहँसी/बलहँस्सी- अनवसरक हँसनाइ, कठहँसी

बलहा- मोट रस्सा

बलहुँ- अनेरे

बलाँ (*प्रा.*)- आदरणीयक प्रति सम्बोधनक शब्द, हे अओ महाशय !

बलान- *अपि* च- मिथिलाक प्रसिद्ध नदी (कमला-बलान, भुतही बलान)

बलिया- धातुक छड़केँ गोल मोड़ि कऽ बनाओल पूर्ण वृत्तक आकृति, हाथमे पहिरऽबला धातुक वृत्ताकार आभूषण, मट्ठा-माठा, बलय

बलु/बलू- जे, जे कि, वाक्य संयोजक अव्यय (*डाकदर कहलकै बलु/बलू अखनी परहेजे सऽ रहै ला*) [*क.को- सम्भवतः, कदाचित् -ई अर्थ अशुद्ध*]

बलेसरी- छोट आकारक काँटी

बलैँ/बलौँ- अनेरे, व्यर्थ

बल्ला- *अपि* च- रेलवे लाइनक दुनू भागक परती जमीन

बल्ली- मध्यम मोटाइकेर काठक नमहर टोन

बँसकरम- बाँससँ गृहोपकरण बनयबाक व्यवसाय

बसिया/बसुरिया/बसुलिया- बाँसुरी, बंसी

बँसुरिया नाच/बसुलिया नाच- नटुआ द्वारा बसुली बजबैत कयल जायबला एक प्रकारक लोकनृत्य

बसुलबाधार- जेना बसुलासँ छिलनिहार अपना दिस कऽ काठकेँ छिलैत अछि तहिना सतत अपने लाभ लेबाक प्रवृत्ति

बसेरा- डेरा, घातक जीव-जन्तुक द्वारा बनाओल गेल वासस्थान

बसोबास- आवास भूमि, आवास भूमिक क्षेत्रफल

बसोधारा- धारा प्रवाह नोर [क.*को.*- *असोधार-अश्रुत*]

बहतौनी- तेल पेड़बाक बोनि, बहताओन (*घानीसँ बहतौनी भारी*)

बहत्र/बहत्रा- अनुशासनहीन, उद्‌दण्ड, बहतर

बहन्ना- लाथ, बहाना

बहलायब- *अपि* च- मानसिक असन्तुलनमे/ ज्वराधिक्यमे असम्बद्ध/असंगत/अप्रासङ्गिक बात सब बाजब, प्रलाप करब

बहसा-बहसी- कटु विवाद

बहायब- *अपि* च- थिरायल गाय-महीसकेँ बाहबाक क्रिया करायब

बहिँ- बहिन लगाय देल जायबला अश्लील गारिक संक्षिप्त रूप, क्रोध ओ विस्मयादि बोधक शब्दक रूपमे प्रयुक्त अव्यय [क.*को.*- *धुत्-असमीचीन*]

बहि (*प्रा.*)- बहिया, स्थायी खबास

बहिनोइ/बहिन्वै- बहिनिक पति

बहिरा/बहिरी/बहिरू- बहिर/बहीरक दीर्घ रूप, श्रवणशक्तिहीन

बहिलाठ- बाँझ गाय-महींस, बहिला, नट्ठा

बहुआस- वधूक मर्यादा (*अपन बहुआस राखू*)

बहुखौक- जकर अनेक पत्नी मरि-मरि गेल होइक

बहुजनौआ- विवाहेक अवसरपर कयल जायबला उपनयन-संस्कार जे कतोक सवर्णमे प्रचलित अछि

बहुजूती- अनेक लोकक मत/युक्तिसँ चलनिहार काज जे नीक जकाँ सम्पन्न नहि होइछ

बहुडिङ्गरा/बहुडिङ्गर- पत्नीभक्त, पत्नीक कहलमे रहनिहार, जोड़ूक गुलाम (निन्दात्मक)

बहुधन्धी- अनेक प्रकारक वृत्ति/धन्धा कऽ अर्जन कयनिहार

बहुमुखी (*प्रतिभा*)- विभिन्न क्षेत्रमे समान-समर्थ गति, विभिन्न दिशाबला

बहुरा- मुइल बेटाक बाद जनमल बेटा

बा- बाबी, दादी, पितामहीक लेल सम्बोधन

बाइस- *अपि* च- पूर्व दिन/रातुक रान्हल भोज्य सामग्री, बासि

बाइस-बेरहट- भिनसर ओ बेरुक पहरक लेल जलखै

बाउसीर- मलमार्गस्थ व्रण, बवासीर

बाकल- *अपि* च- बकलेल, मूर्ख

बागड़- *अपि* च- मोचण्ड

बाचित- गप्प-सप्प, बात-चित, वार्त्ता

बाँझिन- निःसन्तान स्त्री, बाँझि

बाँट- *अपि* च- जौरक ऐँठन

बाटा-बाटी (*ताकब*)- ककरो अयबाक प्रतीक्षा

बाँटी- विभक्त कऽ लगाओल गेल बखरा/हिस्सा [*क.को-बटाइ Share cropping- गलती*]

बाड़ा- घेरल-बेढ़ल गाछी

बातरस- वायु दोषक कारणेँ शरीरक जोड़ सबमे भेनिहार दर्द एवं सन्धिस्थल सभक टाँट भऽ गेनिहार रोग, वातरक्त, गेठिया [क.*को.*

'बतरसाह 'क अर्थ कहैछ बातरस रोगसँ ग्रस्त, किन्तु मूल प्रविष्टिमे 'बातरस 'क अभाव]

बाँतर- *अपि च-* मलाहक एक उपजाति जे बाँसक ढाकी-छिट्टा बिनबाक काज करैछ (तीयर-बाँतर)

बाँतर-खोतर- रोग-उत्तेजक खाद्यादि

बाना- *अपि च-* बेयाना, साइ, जोलहाक बिनाइ-मजदूरी, दे. बटोरन

बापुत- बाप-पूत (*दुनू बापुत; सब बापुते- सब समाङ*)

बाबति-ककरहु नीक होइत देखि ओकर डाह-पूर्ण चर्चा कयनाइ

बाबाजी- *अपि च-*ब्राह्मण भनसीया (बावर्ची)

बाम- *अपि च-* प्रतिकूल, विरोधी, अहितकर (*हुनकर करमे बाम छनि, ओकर विधाता बाम छथिन*)

बारजन- दीर्घ ऊकारक मात्रा-चिह्न (ॄ), बारजन 'कू' इत्यादि

बारजित- बाजी, सर्त

बारनी- वारुणी योग,चैत कृष्ण त्रयोदशीकेँ शतभिषा नक्षत्रक योग । ओहि दिन गंगा-स्नान विशेषत: सिमरिया घाटक स्नानक महत्त्व अछि । [*क.को. वारुणी-चैत्रकृष्ण त्रयोदशी... 'अतिव्याप्तिदोष*]

बारब- अपि च- त्यागब (*नोन बारब, माछ बारब,*) रोकब (*भोजनान्तमे हाथ बारब*), बचायब (*काँट-कूस, गूँहमूतसँ पैर बारब*)

बारहो बिरहिनी/न्नी- विविध प्रकारक अन्न, (*पुरान अवधारणाक अनुसार साम, काउनि, गम्हड़ी, धान, जओ, उड़ीद, केराओ, बूट, राहड़ि, मूङ, तील आ सरिसो*)

बाराबरौअलि- दे. बराबरौअलि

बारिक-भोजमे विभिन्न भोज्य-पदार्थ परसनिहार जे प्रत्येक सामग्रीक हेतु भिन्न-भिन्न व्यक्ति रहैछ [*क.को- मुखिया, घरक मुखिया, भोजमे परसबाक व्यवस्था कयनिहार व्यक्ति- एकहु गोट अर्थ समीचीन नहि*]

बारी- *अपि च-* माछ मारबाक हेतु बनाओल उपयुक्त स्थान (*सब ठाम रामराम बारी पर नै राम राम*), कतोक सहचर शब्दक 'इत्यादि'-व्यंजक उत्तरपद, जेना- उपजा बारी, खेती बारी, सनेस बारी, समदा/समाद बारी, सौदा बारी, हिसाब बारी

बालछड़ी- छोटकी काँटबला झाड़ जकर प्रयोग बेढ़ (घेराबन्दीक टाट)क रूपमे रोपि कऽ कयल जाइछ तथा डारि-छीपकेँ छाँटि-कपचि कऽ मोट देबालक रूप देल जाइछ [*क.को.-एक सुगन्धित वनौषधि- कल्पित अर्थ*]

बालबोध- अबोध नेना, निश्छल हृदयक व्यक्ति, नेना सन बुद्धिबला

बालब्रह्मचारी- बाल्यावस्थहिसँ आजीवन अविवाहित रहबाक हेतु सङ्कल्प लऽ कऽ जीवन बितौनिहार

बालम बरछी- एक प्रकारक धान

बालसङ्गी- बाल्यकालक सङ्तुरिया

बालहठ- नेन्ना द्वारा कोनो असम्भव/ कठिन/असंगत इच्छाक पूर्ति हेतु कयल जायबला जिद्द, अनुचित दीर्घ दुराग्रह

बालपन- बाल्यावस्था/किशोरावस्था

बालि रे- भय-चिन्ता व्यञ्जक शब्द, अरे बा !, बाप रे !

बालूसाही- चीनीक रसमे पागि कऽ बनाओल मैदाक एकटा मिष्टान्न

बासकित/बासगित- स्थायी आवासक भूमि

बासी- *अपि च-* बासि, *वि.*-टटका

बासु/बासू (*प्रा.*)- सेवक, परिचर, अनुचर, दास

बास्ते- निमित्त, हेतु, लेल

बाहुड़ कीचब- शिशुक दाँत जनमबासँ पूर्व उपरका मसुहरिसँ निचला ठोरक निचला भागकेँ जोरसँ कूचब, क्रोधसँ उपरका दाँतसँ निचला ठोरक बाहरी भागकेँ काटब [*क.को. पाहुड़ कीचब-ठोरपर दाँत बैसाय क्रोध देखायब- एतऽ 'बाहुड़' मे 'पाहुड़' क भ्रम, दे. पाहुड़*]

बिकछायब- स्पष्ट करब, बेकछायब

बिकबाल- बिकायबला वस्तु

बिकबाली- विक्रेता, व्यापारी

बिकारी- *अपि च*- लुप्त 'अ'कारक चिह्न- जेना नमःअस्तु ते=नमोऽस्तुते, मैथिलीमे विलबिम्त 'अ'क लेल लिपि-संकेत- 'ऽ' जेना- अऽढ़, कऽर, लऽ, दऽ, कऽ, भऽ इत्यादि

बिखजी/बिखझी/बिगजी/बिगझी/बिघजी/बिघझी- बरियाती ओ वरकेँ प्रातःकालमे देल जायबला मेवा-फलादिक हल्लुक जलपान

बिखपाद-अनसोहाँत बोली, अनकट्ठल कथन,

बिखबोली-कटाह बात, उलहन, कटुवाणी

बिखमा- अधिक फड़बाक लेल सजमनिक जड़िसँ ऊपरबला डाँटकेँ चीरि कऽ ओहिमे भरल जायबला एक दबाइ

बिखहा- जकरामे विष होइक से, जाहि जन्तुक कटलासँ विष लागि जाइक, छोटो बातपर रूसि रहनिहार, क्रोधी स्वभावक

बिखही/बिखाहि- छोटो बातपर रूसि रहनिहारि/गाल फुला लेनिहारि

बिखिन- *अपि च*- अवाच्य/अश्लील/निरघिन (*बिखिन-बिखिनक गारि/बात*)

बिख्या- विवाहोत्सुक वर

बिगिया- उड़ीस

बिग्घिन- विघ्न कयनिहारि, बदमास स्त्री

बिघबा- बिघाक मापबला क्षेत्र, द्विगु समासक उत्तर पद रूपमे प्रयुक्त यथा- बरबिघबा-बारह बिघाक क्षेत्रफलबला भूमि/खेत/गाछी आदि

बिङब- फेकब

बिचका- बीचबला, बिचला, मध्यवर्त्ती

बिचबिचबा- मध्य

बिचमानि- मध्यस्थ, दलाल

बिचलका- बीचबला, पछिलका ओ अगिलकाक मध्यबला

बिच्छा- डंक मारऽबला एकटा कीट, बिच्छू

बिछक्का- नीक-नीक बीछल, सर्वोत्तम

बिछाइ- बिछबाक काज

बिकाठी- प्रत्येक बातक खण्डन कयनिहार

बिजुवन- विजनवन, निर्जनवन, सघनवन (*रामहि बिजुवन भंजल रे की*) [*क.को. वृन्दावन -भ्रान्तिपूर्ण अर्थ*]

बिजुरिया/बिजुलिया- बिजुरी, बिजुली

बिजोड़ी- परस्पर बिछुरल (सखा/सखी/मित्रक) युग्म/जोड़ी (*जोड़ीसँ बिजोड़ी कयने जाइ छँ गे सखिया*)

बिटायब- धानक गऽबमे अनेक गाछक बहरायब

बिटियायब- कोनो बातकेँ गम्भीर तार्किकताक संग बुझब, बातकेँ बिकछा कऽ बुझब

बिड़बा- गोल पेनबला पात्रकेँ स्थिर रखबाक लेल बनाओल वलयाकार आधार जे नार-पोआर, खढ़ वा कपड़ाकेँ ऐँठि कऽ बनाओल जाइछ [*क.को. बिड़बा I. बाल पादप-एहि अर्थमे ई हिन्दी शब्द थिक*]

बिड़ार- उपाड़ि कऽ पुनः रोपबाकलेल घनगर कऽ बाओग कयल धानक बीया/बीयासँ जनमल पादप [*क.को.-बीया पारबाक लेल पोसल खेत- भ्रान्ति पूर्ण अर्थ ।*]

बितनी- बीत भरिक मौगी, अत्यन्त भुट्टि मौगी (*बितनीकेँ बुधि कते !*)

बितय- व्यत्यय, बाधा, विघ्न, अभाव, प्रतिकूल परिस्थिति

बिदापत/ति- विद्यापति परम्परामे रचित गीत सभक आधारपर नाट्य/नाटकक एकटा लोकरंगमंचीय परम्परा

बिदाह/बिदाहब- जजातिक पाँती सभक बीच तेना हर जोतब जाहिसँ गाछक जड़िपर माटि चढ़ैत जाय

बिधञ्छन (करब)- (विध्वंसन), नंगो-चंगो करब, शरीरकेँ नोचल-भम्होरल जायब, लागल जजातिकेँ धाङल जायब

बिधना- बिधाता, सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा, भाग्य लिखनिहार देवता

बिध-बिधाता/बिधि-बिधाता- लोक कथाक दुइ गोट दिव्य पात्र, दे. बिधना

बिन्नी- मधुश्रावणी व्रतावधिमे नित्यदिन बिसहरिक पूजाक अन्तमे कहल जायबला स्तुतिमन्त्र/फकड़ा

बिन्हा- डङ्क मारनिहार कीट, गुप्त रूपसँ क्षति पहुँचौनिहार

बिपतल- विपत्तिक मारल, विपत्तिमे पड़ल, (*बिपतल गेलहुँ बिरिछ तर, बिरिछ लेल पतझाड़*)

बिमरियाह- बिमारीक लक्षणसँ युक्त रहनिहार, रोगाह, रोगियाह

बिमान- मृतकक चचरी, अरथी

बिम्बा- तिलकोरक पाकल फड़

बिरछी- नव गाछबला गाछी (*गाछी-बिरछी*)

बिरहायब- 1. नष्ट होयब, जे वस्तु जेमहर जाय तकर ओमहरे रहि जायब, बिलटब 2. नष्ट करब, बिलटायब

बिरहिन्नी/बिरही-(व्रीहि/व्रीह्यन्न+ई)-विविध अन्न, दे. बारहो बिरहिन्नी

बिरान/बिराना- आन, अपनसँ इतर लोक, परार, (*अपनसँ आन नीक, आनसँ बिरान नीक*), दे. (*वि.*) मीती

बिरोग- अपन आत्मीय जनसँ विलग होयबाक पीड़ा, फराक रहबाक व्यथा-कथा

बिलगायब- *अपि च-* बैलायब, दूर हटायब

बिलटी- *अपि च-* दुअरि कन्या

बिलटौनी- सम्पत्तिकेँ बिरहौनिहारि

बिलैँती- देशीसँ भिन्न, बिलैँतसँ आयातित, यूरोपीय मूलक (*देसी मुर्गी बिलैँती बोली*)

बिलैँती भाँटा- टमाटर

बिलोबन- अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त, बिरहायल

बिसकुट (*अं.*)- कारखानामे मशीनसँ तैयार विशेष प्रकारक खाद्य

बिष्ठी/बिसठी- भगवा, कौपीन, नङौटी (*बिष्ठी लय दैंतखिष्ठी जकरा, जोड़ा बड़द द्वारि पर तकरा-अमर*) [*क.को. धरियाक पर्याय 'बिष्ठी' किन्तु मूल प्रविष्टिमे तकर अभाव*]

बिसबास- प्रतीति, विश्वास

बिसबासू- विश्वस्त, विश्वसनीय

बिसमाद-आनक नीक देखि उत्पन्न विषाद, डाह

बिसमित- भूमिसात भऽ कऽ लुप्त भऽ गेल (*प्राचीन* वस्तु)

बिसहारा- नागदेवता, बिसहरि

बिस्तारय-तारय- बहुत विस्तृत, बेसी पसार, अति विस्तार

बिहब- (विभव), धन-सम्पदा (जथा-बिहब)

बिहान खन/खनी- भिनसरमे

बिहिआयब- सघन जजाति वा खढ़होरिमे डाँटकेँ पैर वा हाथसँ दहिना-बामा दिस टारि-टारि कऽ विभाजक रेखा बनायब

बीकब- परस्पर गुप्त विचार कऽ निश्चय करब

बीगुल (*अं.*)- सैनिक/ आरक्षीकेँ सचेत करबाक वा सङ्केत-सन्देश देबाक हेतु मुँहसँ फूकि कऽ बजाओल जायबला विशेष प्रकारक वाद्य-यन्त्र

बीड़ी- *अपि* च- नार-पोआर वा खढ़केँ मोड़ि कऽ बनाओल बीत भरि नाम भीड़ी जे वृहत् भोजमे आसन रूपसे प्रयुक्त होइछ

बीत- *अपि* च- (वित्त), उपयोगी सामान, वस्तु-जात (बीत-बाखर)

बीयरि/बीहरि- बिल,

बुइया- *अपि* च- उड़ीस

बुटेलिया- गोल आकारक (मिरचाइ/नाक), बूट सन आकृति

बुट्टा- अपि च- खेतमे बाओग/लगाओल शस्य

बुट्टी-बुट्टी चमकब- अंग-प्रत्यंगक चंचल होयब, स्वभावक चंचल होयब

बुड़िबकहा- मूर्ख, बेकुफ (*बुड़िबकहाक खेती अगिला साल । बुड़िबकहाकेँ धन भेल तँ कबिलाहा ठकि-ठकि खाय ।*)

बुड़ियाहा/बुड़ियाही- बुड़िबकहा, बेकुफ

बुढ़नद- पुरान नदीक भरनि भेल अवशेष

बुढ़भस- बूढ़ वयसक कारणे उत्पन्न मतिभ्रम

बुढ़हुरा/बुढ़हुरी- बुढ़बा/बुढ़िया (निन्दात्मक)

बुढ़ाठ/बुढ़ाँठ- उचित सीमासँ अधिक वयसबला, बूढ़ भऽ गेल, जुआयल-पकठायल (तरकारी-सजमनि, घिउरा इत्यादि)

बुढ़ामजी- वृद्ध महाशय, बूढ़ महोदय

बुढ़िया-*अपि* च- कीत-कीत खेलमे हुरबाक रूपमे स्थित खेलाड़ी

बुढ़ौ-बूढ़ा, अओ बूढ़ा !

बुताती- नियमित भोजन-निर्वाहार्थ देय नगद राशि

बुत्ता- बल, सामर्थ्य शक्ति, सक (*जा करब पुत्ता-पुत्ता ता करब अपन बुत्ता*) [*क.को. 'बुत्ता'क वैकल्पिक रूप 'बूता' देखऽ कहैछ, किन्तु बूता 'वास्तवमे हिन्दीक प्रयोग थिक, मैथिलीक नहि*]

बुधिमालती- बड़ बेसी बुधियारि होयबाक दाबी रखानिहारि (व्यंग्य/उपहासमे) (*हे बुधिमालती, बुधि बढ़ैए की घटैए ? तँ, कनेक-कनेक बुधि बढ़ैए*)

बुनकब- मेघसँ गोटा-गोटी पानिक बुन्न खसब

बुनकर- कपड़ा बिननिहार, जोलहा

बुनबुनायब-मेघसँ पानिक छोटका बुन्न खसब [*क.को. बुनबुना छोड़ब-असमीचीन*]

बुनय (फूजल)- रहस्य (प्रकट होयब), भेद (फूजब), गूढ़ बात

बुन्दा- *अपि* च- हीन गुणवत्ताबला लोहाक एक प्रकार

बुन्दीमार- पकबासँ पूर्व पानिक बुन्दक चोट पड़ने खुदुर-बुदुर भऽ गेल सतहबला ईंट

बुन्ना- 1. बिन्दु 2. दे. बुन्दा

बुन्नीमार- दे. बुन्दीमार

बुमकार (छोड़ब)- मनमे दाबल क्रोधकेँ व्यक्त करबाक लेल अकस्मात् जोरसँ बाजि उठब, दबल दुःख/शोक असह्य भेलापर अकस्मात् चीत्कारक संग कानि उठब; अकस्मात् ऊपरमुहेँ पानिक धार फूटब, बुमकौर

बुरुजखाप- केबाड़क पुताम ओ ओकर सतहपर उठल-धसल रेखा बनयबाक विशेष प्रकारक रन्दा-उपकरण

बुर्राक- दुधिया गोर (*गोर-बुर्राक/गोर भुर्राक*)

बुलतभामा- ओहन शिशु जकरा कोरमे लऽ कऽ घुमबैत रहब बेसी नीक लगैत छैक

बुलती/बुलन्ती- अङने-अङने बुलैत रहनिहारि स्त्री

बुलबुली- अप्रभावी धमकी

बुलबुल्ला- तरल पदार्थमे विशेषत: पानिमे उठल फोका

बुलबुल्ली- द. बुलबुली

बेअबला(स्त्री)- दीना, असहाया, अनाथ, निरुपाय, अबला

बेआन- कथन, वक्तव्य

बेओला- व्याकुल, व्यग्र, आतुर, चिन्तित

बेकठ- झंझटिया, ओझरओटबला, कठिन, विकट, (*तीन तेकठ, महाबेकठ*)

बेकतियानय- व्यक्तिश:, प्रत्येक व्यक्तिकेँ फराक-फराकसँ पूछब/नोतब/कहब/देब, सपरिवार

बेकुफ- मूर्ख, मूढ़

बेङ्ची- *अपि* च- बाँहिक मांसल भागपर आघात कयलापर टेटर सन उठि गेल गुलठी

बेङचुल्ली- बेङक बच्चाक नाङड़ियुक्त आरम्भिक अवस्था जे नाङड़ि टुटि गेलापर बेङची भऽ जाइछ

बेचारे/री/रो- दीन, असहाय पुरुष/स्त्री

बेचित्त-अन्यमनस्क, उदासीन

बेछप- सबसँ भिन्न, अनकासँ फराक, नहि फँटायबला

बेछोह- 1. सुधि-बुधि बिसरि, विघ्न-बाधाक चिन्ता बिना कयने, अविलम्ब 2. निर्दयतासँ, निष्ठुरतासँ, निर्मम भऽ कऽ

बेजोड़- *अपि* च- जोड़ाबला वस्तुमे विषम जेना-खराम, जुत्ता, धोती आदिमे असमरूपता अथवा एकटाक अभाव

बेटिबेच्चा- बेटीक प्रति टका लऽ कऽ विवाह करौनिहार कुलीन, विशेषत: योग्य, भलमानुस ब्राह्मण

बेट्ठनि-कार्य सम्पादनमे विलम्ब करौनिहार आकस्मिक बाधा

बेँती(लिबब)- एक व्यायाम/नटुआक नृत्यक एक मुद्रा जाहिमे उतान भऽ कऽ पाछाँ दिस लीबि माथकेँ धरतीमे अथवा पैरक दुनू एँड़ीमे सटाओल जाइछ [*क.को. व्यायामक हेतु देहकेँ बेँत जकाँ लचकाएब- अर्थ/ संकोच ओ अर्थविस्तार दुनूसँ ग्रस्त*]

बेथा- व्यथा, आन्तरिक कष्ट

बेथिताह-अनथिताह, अस्थिर कथन ओ व्यवहारबला व्यक्ति, देल वचनपर स्थिर नहि रहनिहार

बेदनायब- व्यग्र होयब

बेनमा- *अपि* च- निराश्रित, निरवलम्ब, असहाय

बेना- *अपि* च- बीयनि

बेनंगन- निर्वस्त्र

बेपारी- व्यापारी, बनियाँ

बेबहारी-व्यवहार-पटु (*रानी तँ बेबहारी रानी आओर रानी कोन*)

बेबूझ- अज्ञ, बुद्धिहीन

बेभरम- लज्जित, गतप्रतिष्ठ

बेभुत- पवित्र भस्म, विभूति

बेमत्त- निसाँमे बुत्त

बेमरियाह- रोगाह

बेमाक- सकल देय नि:शेष, बेवाक, चुकता

बेयाना- अगाउ, कोनो काजक हेतु देल अग्रिम राशि

बेरड़-(द्विरद), सक्कत भऽ गेल दुद्धा दाँत जकर बिनु टुटनहि ओकर समानान्तर नव दाँत जनमि जाइछ

बेरहटिया- बेरियाक जलखै, बेरहट

बे-लगाम- बिना लगामक (घोड़ा), अनियन्त्रित, अननुशासित

बेलगायब- बैलायब, दूर हटायब

बेलज/जि/ज्ज/ज्जि/बेलज्जा/ज्जी- निर्लज्ज, धृष्ट दे. बेलेहाजी

बेलपत्र/बेलपात- बेल नामक गाछक पात जकर एक डण्टीमे तीन गोट पात होइछ आ जे महादेवक पूजामे प्रशस्त मानल जाइछ

बेलमुण्ड- अस्तुरासँ केश कटने अथवा केश उड़ि गेलासँ बेल सन चिक्कन लगैत माथ

बेलमुण्डा/बेलमुण्डी- केशविहीन माथबला पुरुष/स्त्री

बेलल/बेलल्ल/बेलल्ला- सामान्यो आवश्यक वस्तुकलेल खगल, अत्यन्त अभावग्रस्त, रकटल, लालायित

बेला- *अपि* च- 1.एक श्वेत सुगन्धित फूल, बेली 2. उखड़ाहा, जनक काजक आधा दिनक समय (पूर्वाह्न वा अपराह्न)

बे-लेहाजी-जकरा लाज-लेहाज नहि, निर्लज्ज

बेलौनी- एक प्रकारक माछ

बेसोह- विस्मरण, अनवधानमे, ध्यानमे नहि रहब

बेहाया- *अपि* च- जलीय स्थानमे उत्पन्न एकटा झाड़ जकर करमीक लत्ती सन फूल-पात होइछ

बेहुरमत- अशिष्ट, असभ्य

बैर- *अपि* च- शत्रुता, (*जलमे रहि कऽ मगरसँ बैर*)

बैरिन/बैरिनि/बैरिनियाँ- शत्रुता रखनिहारि स्त्री, ईर्ष्यालु

बैसकी- *अपि* च- गोहारि/झाड़-फूक लेल निर्धारित स्थान ओ समय पर भगत/ओझा द्वारा कयल जायबला भाओ

बैसक्खा- *अपि* च- बैसाख मासमे चुइल ताड़ी जाहिमे बड़ निसाँ होइछ

बो- बोतूक बजबाक ध्वनि-अनुकृति, धूसि कऽ अपमानित करबाक शब्द

बोकराती (छाँटब)- आत्मप्रशंसामे बढ़ा-चढ़ा कऽ अविश्वसनीय बात बाजब

बोको- *अपि* च-पीठपर लोकके ँ लादि पहाड़पर चढ़बा-उतरबाक काज कयनिहार श्रमिक

बोङ- 1. गुदा 2. गुदामार्गसँ उतरल अँतड़ी, हर्निया नामक बिमारी (*अश्लील*), [क.को. -'*भग, महिलाक प्रजनन इन्द्रिय*'-*गलत*]

बोङहा- *अपि* च- बोङ वहरयबाक रोगबला (गारि)

बोङपाज- व्यभिचारी

बोझा- बोझ

बोझिल- लादल, भारी, ग्रस्त

बोतलानन्द- अतिशय शराब पिउनिहार

बोतो- बत्तु, बोतू, बिन बधिया कयल जुआन छागर

बोदर- खूब तीतल

बोदी- एकटा दलिहन जकर हरियर छिम्मड़िक तरकारी होइछ, बोड़ा

बोमत- मन्दबुद्धिक लोक

बोमा- बोरामे भोँकि कऽ बानगीक अन्न बाहर करऽबला सूआ सन नोकबला फोँफी

बोमी- छोट बोमा, (*ला.*) हुथान

बोरनी/बोरिया/बोरी- अन्नादि रखबाक छोट धोकड़ा/बोरा

बोलड़ी- कम दानाबला मकैक सीस

बोलती- बकार, बजनाइ, वाणी

बोलबम- कमरथुआ सभक शिव-मन्त्र

बोलबाहर/रि- कहल नहि माननिहार, बेकहल, अनुशासनरहित (स्त्री/पुरुष)

बोलाबा- हकार, बजाहटि

बोलो लोलो छिह- बोकिअयबाक शब्द, दे. बो

बोहनी- *अपि* च- बरिसाति-पूजनमे प्रयुक्त दुनू दिस डण्टी लागल माटिक पात्र जाहिमे

चाउर भरि माथपर लऽ कऽ नवविवाहिता वट-पूजन हेतु जाइत अछि, खिरोदनी

बौक (होयब)- *अपि च*- जजातिमे सीस नहि होयब/सीसमे दाना नहि फड़ब

बौका/बौकी- मूक, जे बौक अछि

बौकी-बलाइनि- अपना विषयमे उचितो बात कहबामे चुप रहि गेनिहारि

बौखब- 1. बाट भुतियायब, गन्तव्य दिशासँ इतर दिशामे चल जायब 2. बेसुधि अवस्थामे असम्बद्ध बात बाजब

बौड़का/बौड़की/बौड़ा- छोट डाबाक आकारक माटिक बासन, दे. बड़ुकी

बौध- निश्छल हृदयबला, सोझमतिया, बजबामे मन्द स्वभावबला व्यक्ति

बौला- व्याकुल, व्यग्र, बेओला

ब्राह्मीबुटी- एक प्रकारक जड़ी, एक औषधीय वनस्पति

[भ]

भओँ/भओँह- भँहु, भ्रू

भक- *अपि च*- संकोच/लज्जा/वर्जनासूचक शब्द (*विशेषत: स्त्रीक*)

भक दऽ/सँ- अकस्मात् (इजोत, आँखि फुजब)

भकुआ- *अपि च*- अनाड़ी, अपटु, भक्कू

भकुना- सामान्यसँ अधिक मोटायल-सोटायल (*भकुना बिलाड़*)

भकुनी-मकुनी-भुट्ट काँतिक खूब मोट-डाँट स्त्री

भकुरा- भाकुर माछ

भकोल- बकलेल, अपटु, अनाड़ी, भकलोल

भक्की (मारब)- कृत्रिम अज्ञता/अनभिज्ञता (देखाय जानकारी लेब)

भक्कू- दे. भकुआ/भकोल

भखौटी- मौखिक रूपसँ कहल बात

भगमन्ता/न्ती- भाग्यवान्/भाग्यवती

भगलियाह/हि-भगल करैत रहबाक स्वभावबला

भगीदार- अंशभागी, पटीदार, उत्तरदायी

भगौड़ी- सासुरसँ बेर-बेर पड़ाय नैहर चल गेनिहारि स्त्री

भङ- *अपि च*- विशेष तरीका, खास ढंग

भङगोला- पीसल भाङक नमहर गोली

भङिया- भाङ पिउनिहार, महादेवक विशेषण (*गौरी दौड़ि-दौड़ि कहथिन हे मोरा भङिया रूसल जाय*)

भङ्गी- *अपि च*- एक जाति; दे. भङिया

भजओखा- पैघ मानक मुद्राक बराबरि छोटका मुद्रा

भजनी-भजन गौनिहार, भजनियाँ

भजित/भजोखा- दे. भजओखा

भँञि- महीस

भटकब- *अपि च*- घिनाओन लागब, असर्ध लागब, खाद्य विशेषसँ घृणा होयब

भटाभट- एकक बाद दोसरक खसैत रहबाक ध्वनि

भठरङ/भठरङ्ग- विकृत रङ, (*पहिल रङ नहि रङल गेल, दोसर रङ भठरङ भेल*)

भड़कब- *अपि च*- ढहब (*जराओल सीप/डोका/चूनक ढेपक उपर पानि छिटलापर ढहब, सकर्मक क्रिया- भड़कायब*)

भड़छब- *अपि च*- रङ्ग उड़ब, चितकाबर सन होयब

भँड़दुलाहि/भरदुलाहि- भाँड़मेसँ खयनिहार, अपरोजक माउगि

भँड़हेर- बर्त्तन-बासनक ढेरी, अव्यवस्थित रूपमे जमा वस्तु-जात

भण्डुल- बाधित, विघ्नग्रस्त

भँतड़ी- छोट अँतड़ी (*अँतड़ी-भँतड़ी*)

भत- सूत/डोरी लपेटबाक फेरा, परिधिक लपेट

भतभुल्लुक-भोजनमे भातक प्रति अधिक आसक्त [*क.को. भतहुल्लुक लेल कहैछ See भतभुल्लुक मुदा ओतऽ अछि 'भत भुलुक' शब्द; 'भत हुल्लुक'- सुनल नहि जाइछ*]

भतरन्हा- भात रन्हबाक तौला/बरतन

भतार- *अपि* च- उपपति, जार (*निन्दात्मक*)

भतुआ- 1. भातक प्रति बेसी आसक्त नेना 2. कुम्हड़

भतोल- खाधिमे भात दऽकऽ रोपल ओलक टोटीसँ भेल ओल, बिना कबकब स्वादबला उजरा ओल [*क.को.-'मूढ़' -अशुद्ध। 'भकोल' वा 'भकलोल'क भ्रम*]

भत्तू- दे. भतुआ

भदबरिया- भदवारि/भादवसँ सम्बद्ध

भनबैया-सम्बन्ध बना कऽ रखनिहार, दे. भनायब [*क.को-'आत्मप्रशंसक'- अनुपयुक्त*]

भनबैका- सम्बन्ध बना कऽ रखबामे निपुण, दे. भनायब [*क.को. लोक बीच बहुचर्चित' -अनुपयुक्त*]

भनायब- सम्बन्ध जोड़ब, पूर्वक सम्बन्धक निर्वाह करब

भफदरि-दिनाय सदृश एकटा चर्मरोग

भफौड़ी- छोट आकारक एकटा फल, हरफा

भबतब- भावी, घटित होअऽबला, भवितव्य, होनी

भभरब- (मुखमण्डलक) फुललाह सन होयब, घुघसब

भभरा/भँभरा- पनिबटसँ टूटल बाटपर चलबाकलेल खिलानपर ईंट जोड़ि कऽ बनाओल अर्द्धवृत्ताकार छतबला पूल (*दरभंगासँ उत्तर जयनगर-पथमे बतिसभभरा/भमरा पूल नामी छल*)

भभारा- अतिशय आत्म-प्रशंसा [*क.को. सामूहिक ठहाका'- 'हहारो'क भ्रम*] दे. *हहारो*

भभासङ्ख- पैघ भूरबला शंख जाहिसँ खूब मोट ध्वनि बहार होइछ, (*ला.*) खूब चिकरि-चिकरि कऽ बजनिहार

भम पड़ब- भवनादि आवासीय स्थानक चिरकालिक जनरहित रहब

भम्हरा- *अपि* च- दे. भभरा

भयाउनि (प्रा.)- भय उत्पन्न कयनिहारि

भरती- *अपि* च- भरल

भरना- *अपि* च- बाढ़िक कारणे माटिसँ भरि ऊँच भऽ गेल नीच जगह, माटिसँ भथि गेल नदी

भरमा- मर्यादा, मान, प्रतिष्ठा, लाज

भरमाना- मिथ्या धारणा, भ्रम

भरमे-सरमे-प्रतिष्ठा बचबैत, मानक रक्षा करैत

भराठी- माटि भरि कऽ ऊँच कयल जमीन

भरिगरहा/भरियहबा/भरियाहा- जे सबसँ भारी से

भरेठ- देबालक छेद सबकेँ ईंट/माटिसँ भरनाइ [*क.को. See भराठ : जकर अर्थ-माटि भरि ऊँच कयल जमीन-भरेठक ई अर्थ भ्रामक*)

भलकब- देबाल/भीतक मध्य भागक बाहर दिस नमरब/पलड़ब

भलकाह- भलकि जायबला

भली- सुशीला, नीक स्वाभावक स्त्री, सज्जन प्रकृतिक स्त्री (*उपहासात्मक- जँ सँयाँ*

कहितथि भली रे भली, छोड़ि दितहुँ धरती चलितहुँ अलगली)

भलेआदमी- सज्जन लोक, भद्रपुरुष

भसकब- *अपि* च- कोठी/माटिक बासनक स्वकीय भारसँ स्वत: भग्न भऽ जायब

भाउर-अजोह बाँस, अपरिपक्व बाँस

भागिरथ- एक पौराणिक पात्र भगीरथ, सपूत, सुपुत्र

भाग्य रेखा- ललाट/तरहत्थी पर अंकित डड़ीर जे मनुष्यक भाग्य-अभाग्यक सूचक मानल जाइछ

भाग्य विधाता- भवितव्यताक निर्माण/नियमन कयनिहार, सर्वशक्तिमान, सर्वोच्च शासक

भाँज (पूरब)- *अपि* च- करतेबता/काज-परोजनमे सहयोग करबाक पारम्परिक कर्त्तव्यक निर्वाह (करब)

भाँजी (-मारब)- कार्य सिद्धिमे बाधा (देब), काज भङठा देब

भाटिन/भाँटिन- *अपि* च- श्लील/अश्लील कोनहु तरहक बात निधोख बजनिहारि स्त्री

भाठा- सीराक विपरीत दिशा, नदीक बहबाक दिशा, गौण स्थान, भोजक पाँतीक सबसँ अन्तिम छोर

भाड़ब- खापड़िमे भूजि धानक चूरा कुटबासँ पूर्व तारल/भिजाओल धानकेँ खापड़िमे राखि आगिक धाहपर पानि सुखायब

भाँड़ब- 1. भण्डुल करब, काजमे बाधा देब, बीचहिमे काजकेँ बिगाड़ब 2. (कुम्हड़/कदीमाकेँ) भाङब [*क.को.- भीजल धानकेँ खापड़िमे भूजब-अशुद्ध। दे. भाड़ब*]

भाम्ही- बाधा, विघ्न, भाङठ

भारखमी/भारखम्मी-गृहप्रमुख, मान्य व्यक्ति,

भारा- *अपि* च- देबालक जोड़ाइ-मरम्मति आदि काजमे सामग्री रखबाक ओ काज कयनिहारक आधार रूपमे निर्मित मचान

भिक्खु- बौद्ध संन्यासी, बौद्ध भिक्षु

भिखिआ (*प्रा.*)- भीख

भिखैनि- भीख मङनिहारि

भिड़गर- *अपि* च- भरिगर, श्रमसाध्य, व्ययसाध्य

भिड़हगर- दे. भिड़गर

भिड़ियायब- रस्सीकेँ लपेटि गोल पिण्ड बनायब, भीड़ा/भीड़ी बनायब

भिड़ी- लगमे, निकटमे, सटल

भिण्डा- ऊँच ढेरी, पोखरिक चारू कातक ऊँच मोहार, भीड़

भिनसरुक/भिनसरुका/भिनसुरका- प्रात: कालक

भित्ता- *अपि* च- खाधिक किनारबला देबाल जकाँ ठढ़का ठोस माटि

भिम्हीरी- बड़बड़ा कऽ जनमल (सभ बीजक) अङ्कुर

भीड़ (पड़ब)- *अपि* च- भार/दाब/दबाब/ बल/श्रम (लागब)

भीड़ा- जौर/रस्सीकेँ लपेटि कऽ बनाओल गोलाकार पिण्ड, रस्सीक गोला

भुँइपटका- ठोस सतहपर पटकि कऽ फोड़ल जायबला फटक्का

भुँइफोड़- धरती फोड़ि कऽ बहरायल, अकस्मात् परिचित भेल अनभिज्ञात सम्बन्धी

भुइयाँ- *अपि* च- एकटा लोकदेवता

भुक दऽ/सँ- अकस्मात् (बरब/इजोत होयब)

भुक भुक करब- दीपक टेम कम-बेसी होइत रहब, भुकभुकायब

भुकम्प- धरतीक डोलब, भूकम्प, उनटन

भुकुर-भुकुर कानव- नि:शब्द हिचुकैत कानब

भुक्खा/भुक्खा-दुक्खा- भुखल, बुभुक्षित, अन्नादिक अभावसँ ग्रस्त, गरीब

भुखायल- भुखल, बुभुक्षित

भुजरी- मेही कऽ काटल (तरकारी)

भुजरी-भुजरी- क्षत-विक्षत

भुजुआ- भुजल (*तरुआ-भुजुआ*)

भुट- छोट लम्बाइबला

भुटकुइयाँ- भुटका साग, भुटका सागक फड़

भुटखाँट- छोट शरीरबला

भुटङ/भुटङ्ग- छोट सन शरीरबला

भुटबा/भुटिया/भुट्टा/भुट्टी- कम लम्बाइबला लोक

भुतलायब- पथभ्रान्त होयब, बौखब,

भुतियायब- 1. भुतलायब 2. काजक बेरमे कोनो वस्तु नहि भेटब, वस्तुक स्थानच्युत होयब

भुबकम्प- भूकम्प

भुमकौल्हा- धरतीमे बीहरि खुनि कऽ बनाओल गेल चूल्हि

भुमहुर/भुम्हुर- उपरसँ छाउर सन प्रतीत होइत आगि [क.को. *तपत छाउर-असमीचीन*]

भुरकुड़ब- हाथसँ दाबि कऽ बुकनी करब

भुरती भरब- दुष्परिणामक विवशतामे व्यय करैत रहब

भुरही- भूरबला, छिद्रयुक्त

भुरही पाइ- एक समयमे प्रचलित बीचमे भूर कयल तामक पैसा

भुरुक (उठायब)- *अपि* च- मिथ्या कलङ्क (देब), अछेट (जोड़ब)

भुर्राक- अत्यन्त गोर दे. बुर्राक

भुसुर-भुसुर- बेलसि ठोस खाद्यकेँ दाँतसँ अल्प दबने ढहैत जयबाक ध्वनि, नीरस स्वादक द्योतक ध्वनि

भुहुर-भुहुर- मुहमे ढेपसन खाद्यकेँ दातसँ कनेको दबने बुकनी होयबाक ध्वनि, कोमलता सूचक ध्वनि

भूआ- *अपि* च- कुम्हड़/सजकुम्हड़ [क.को. *भुआ-पाग- कुम्हड़क मोरब्बा*]

भूआँ- छोट परिधिक धरतीक सतह, माटिक सतह, भुइयाँ

भूम- धरती, जमीन

भेड़बा- *अपि* च- अन्नमे लागऽबला एक कीड़ा

भेआओन- भय उत्पन्न करऽबला, डेराओन

भेँभेँकरब/भेम्हियायब- बकरीक बाजब, छोट बच्चाक अकारण चिचियायब

भेमहा/भेम्हहा- भेम्हसन गन्धबला (एक आम)

भेयार- दुइ वस्तुक मध्य तौल/नाप/आकृतिक समतुल्यता-निर्धारण

भेयारब- समतुल्यता निश्चित करब, भजारब, दे. भेयार

भेहगर- भव्य, प्रभावशाली आकृति

भैँ- महींस

भै-बटतकनी- सामा-चकेबाक एक पात्री, भाइक अयबाक बाट तकनिहारि एक बहीन

भैयारी- भाइक सम्बन्ध, भ्रातृत्व, भाइक समान मैत्री

भैँसलेट- निरक्षर, मूर्ख

भैँसाठ- महींसक, महींसक दूधक चेखनगर (दही)

भैँसी-महींस

भैहंस- पैतृक सम्पत्तिमे सोदर भाइ लोकनिक अंश/हिस्सा

भोकरब- *अपि* च- गाय-बड़दक जोरसँ बाजब

भोँकाड़/भोकार- पैघ भूर

भोँकायब- तेज नोकबला काँट आदि स्वत: गड़ब

भोकासी पाड़ब- कनबामे जोरसँ चीत्कार कऽ उठब

भोग-पारस- भाग्यानुसार सुख-भोगक अवसर

भोगबैया- धनक उपभोग कयनिहार उत्तराधिकारी, सन्तति वर्ग

भोजनी- *अपि* च- जनकेँ बोनिमे नगद राशिक संग देय भोजन/भोजनक मूल्य- *वि.* सुक्खा

भोजी- भोज कयनिहार

भोथहा- भोथ धारबला औजार

भोदू- मन्दबुद्धि

भोपट- मूढ, मूर्ख

भोँपा- 'भोँ' सन ध्वनि उत्पादक एक बाजा, भोम्हा

भोम्हियायब- 1. डर/पियास आदिसँ माल-जालक भोँ-भोँ ध्वनि करब 2. नेनाक जोर-जोरसँ कानब 3. क्रोधसँ चिकरि-चिकरि बाजब

भोर (पड़ब/होयब)- *अपि* च- विस्मरण

भोरसँ भोर- अत्यन्त भोरे

भोरहरबा/भोरहरिया- भोरक समय

भोरहा- दानासँ रहित सीस

भोरायब-*अपि* च- सीसमे दाना नहि पड़ब/होयब

भोरुकी राति- रातुक अन्तिम पहर

भोलेनाथ- महादेव, हे महादेव !

भोँसरी- पुरुष द्वारा स्त्रीक प्रति एक गारि

भौँक- दे. भौँकी

भौकी- *अपि* च- पेट पैघ ओ मुँह छोट आकारबला पौती/मौनी

भौकी (देब)- *अपि* च- नजरिसँ बचबाक लेल घुमघुमौआ बाट दऽ कऽ पड़ायब

भौँकी (मारब)- अकस्मात् आयल बसातक झोँक

भौँचक- चकित, आश्चर्यित

भौँचाल/भौँजाल- एकहि कालमे उपस्थित अनेक झंझटि/बाधा/ ओझरओट, (भ्रमजाल)

भौजिया/भौजैया-भौजी

भौँरा- भ्रमर

[म]

मकही- कोन काजमे द्वेषसँ उत्पन्न कयल व्यवधान

मकमकी- अकस्मात् भेल जीवनयापन सम्बन्धी आवश्यक वस्तुक अपर्याप्तता

मकर/मक्कर- *अपि* च- मकर-सङ्क्रान्तिसँ कुम्भ-सङ्क्रान्ति धरिक रविवार जाहि दिन शिवालयमे जल ढारब पुण्यप्रद मानल जाइछ

मक्खी- चउरमे भिज्झर सड़ल चाउरक माछी सन कारी-कारी दाना

मखनाही- मक्खनक व्यावसायिक स्थल

मखनियाँ- मक्खनक कारबार कयनिहार, मक्खनसँ सम्बद्ध पात्र/स्थान,

मखरदन-हास्य-विनोदक रूपमे ठकनाइ (*चौंल-मखरदन*)

मखानी-कम फूटल मखान, मखानक किर्री

मग (*अं.*)-फैल मुँहबला छोट जलपात्र

मगज- *अपि* च- चानि, माथक उपरका भाग

मगजी- *अपि* च- मस्तिष्क, मगज

मगजी उनटब- अहंकार होयब

मगर- *अपि* च- गोहि, मकर

मगरुम्मी/मगरूमी- अहंकार, घमण्ड

मगहिनी- मगहियाक स्त्री, (*ला.*) बदमास मौगी

मगुली (चढ़ायब/भरब)- एक प्रकारक शारीरिक दण्ड जाहिमे दुनू हाथ पाछाँ दिस

बान्हि देल जाइछ तथा दोसर छोट डोरीक दुनू छोर दुनू पैरमे बान्हि ओहि डोरीक बीचमे गरदनि घुसिया देल जाइछ

मग्घा- मघा नक्षत्र, (*मग्घा लगाबय घग्घा, सेबाती लगाबय टाटी*)

मघड़ा- माघमे उपजनिहार तरकारी (विशेषत: कोबी)

मघधोधरि- माघार्द्धोदय, माघक अमावास्याकेँ रवि दिन, श्रवणानक्षत्र एवं व्यतिपातक पुण्यप्रद योग

मघारब- खेतकेँ माघमे जोतब

मङटिक्का/मङटीका-सिउँथमे पहिरल जायबला एक गहना

मङनियाँ/मङनी- *अपि* च- बिना मूल्य देने प्राप्त भेल, हीन गुणवत्ताबला (*मङनीक पाबी, तँ सत्तरि मन तौलाबी*)

मचमचौआ- चलबा काल मचमच ध्वनि करऽबला (जुत्ता)

मचोड़ुआ- भूत-प्रेत अथवा रोग द्वारा मचोड़ल/मारल गेल (स्त्री द्वारा पुरुषक प्रति एकटा अशुभ गारि)

मछट्टा- माछक बजार/हाट

मछरदानी- मच्छरसँ बचबालेल बनाओल ओछाओनक ओहार, मसहरी

मछही-भोज्य रूपमे माछक उपयोगमे प्रयुक्त गृहोपकरण, माछक संसर्गमे रहऽबला बर्त्तन-बासन

मछिया- दे. मक्खी

मजुरनी- *अपि* च- स्त्री-श्रमिक, जऽनक काज कयनिहारि स्त्री, (*दाइ-मजुरनी*)

मजूरा- मयूरक कलङी सन बीच माथपर बान्हल खोपा, दे. जूड़ा-मजूरा

मज्जर- मञ्जर, आम-तुलसी आदिक फूल, झाड़ल धानक सीस

मझगेँड़- कोनो नाम वस्तुक ठीक-ठीक बीच

मझमुङ्गर-अथवल मुख्य व्यक्ति, कार्यमे बाधक घरक अक्षम मुखिया/प्रमुख समाङ

मझिलका/मझिलकी- तीन वा तीनसँ अधिक सन्तानमे दोसर

मझोला- *अपि* च- राज-मिस्त्रीक मध्यम आकारक करनी नामक औजार

मञ्चित- रङ्गमञ्चपर अभिनीत (नाटक)

मटकब- प्रदर्शनार्थ अंग-सञ्चालन करब, छमकब

मटकोड़/र- उपनयन-विवाहादिमे जलाशयसँ माटि खुनि कऽ अनबाक विधि, माटि-माङर

मटमैल- माटिसन मैल

मटिखुनमा- जतऽसँ बेसी काल माटि खुनि-खुनि आनल जाइत हो, नियमित माटि खुनि कऽ बहार कयलासँ बनल खाधि

मटियायब- *अपि* च- अनठायब, उपेक्षा करब, जानि-बूझि कऽ ध्यान नहि देब (*कान मटियायब, बात मटियायब*)

मट्टर- 1. मटर नामक दलिहन 2. आङुरक गीरहकेँ मोड़लापर वा आङुरकेँ तिरलापर उत्पन्न 'मट' सदृश ध्वनि (*मट्टरफोड़ब*)

मठमज्जर- असमयमे भेल आमक मज्जर

मठाधीश- मठक मुखिया, महन्थ

मठिया- *अपि* च- छोट मठ

मँड़गिल्ला-पसयबामे किछु माँड़ नहि गरबाक कारणे भेल गील (भात)

मँड़पसौना- चूल्हिक पाँजरमे बनल छोट चबुतरा जाहिपर भतरन्हा तौला राखि माँड़ पसाओल जाइछ

मड़ुअनि- भेँटक फड़क मड़ुआक सदृश बीज [*क.को.कनखी मेरखी-भ्रान्त अर्थ*]

मढ़िया- छोट मठ, मठिया

मण्डली- *अपि* च- रामलीला-अभिनेताक दल, द. जमाति

मण्डी- अन्नादिक थोक क्रय-विक्रयक बजार

मण्डुल-मधुमेह रोगक आयुर्वेदिक औषधि

मतसुन/न्न- अनवधान स्वभावबला, मटसुन

मतामही/मताम्ही- मायक माय, मातामही, नानी

मतारी- माय, माता

मतिछिन्न/मतिछिन्नू/मतिछिप्पू- विक्षिप्त, बताह

मत्तोरी/मत्तोरी के/मत्तोरी भला- आश्चर्ययुक्त विरोध वा असहमति सूचक शब्द

मथओट- दुइ चारक शीर्ष स्थलक योग

मद- *अपि* च- निमित्तक (*विभिन्न मदमे भेल खर्चक हिसाब राखू।*)

मदोदरि- 1. मन्दोदरी (रावणक पत्नी) 2. वात्सल्यमयी (*माय/सासु मदोदरि*)

मन- *अपि* च- 1. (मन्द), अहित, अनिष्ट, निन्दा 2. अहितकर, अनिष्टकारक, निन्दनीय (*भल करैत मन भऽ गेल; भलो ने बाजी मनो ने बाजी, जेठ जनक भगवा उघार, सेहो ने बाजी; के भल के मन, के जाय तुरकक वन*)

मनकमना/मनकामना- मनमे भेल इच्छा, मनोकामना

मनगुप्त- अप्रकट, अव्यक्त, मनहिमे सीमित बात

मनजाइ- खेतमे उपजाक दर, प्रतिधूर/कट्ठा/बिघा/एकड़मे उपजऽबला अन्नक परिमाण मनक दरसँ

मनतोड़िया/तोरिया- द. असभगनी

मनबुझाओन- मनकेँ परतारऽबला, मिथ्या सन्तोष/आश्वासन

मनमतङ/मनमतङ्ग- स्वेच्छाचारी, झोँकाह स्वभावबला व्यक्ति

मनरिया- मानर नामक वाद्ययन्त्र बजौनिहार

मनरोग- मनमे रोगी होयबाक मिथ्या धारणा

मनसप्पय- आशासँ अधिक मनजाइबला उपजा

मनसा- *अपि* च- मनोभाव, मानसिकता, अवधारणा (*जेहने मनसा तेहने फल*)

मनाएक (*प्रा.*)- कनेक, किञ्चित, मनाक्

मनाओन (करब/छिड़ियायब)- रूसब, बौंसल जयबाक मनोभावसँ रूसब

मनिहारा- चूड़ी बेचनिहार, मनिहार

मनिहारिन- चूड़ी बेचनिहारि स्त्री

मनुआँ- मन, चित्त, दुखी/खिन्न मन

मनुक्खाभास- मूढ़, बुद्धिहीन व्यक्ति

मनुसदेवा- मृत्युक बाद देवरूपमे मान्य मनुष्य

मनुसमरय- पुरुषोसँ भिड़ऽबाली स्त्री, मनसा (पति)केँ मारऽबाली स्त्री

मनुसायब- अत्यन्त उत्साहित होयब

मनुहारि- लोकदेवताकेँ गोहरयबाक गीत, लोकदेवताक स्तुति-गीत

मने- *अपि* च- अर्थात्, बुझल जाय जे

मनेजरा- एक प्रकारक गाछ, धैंचा

मनोनुकूल- जेहन मनमे रहय तेहने, इच्छानुसार

मनोविनोद- मनोरञ्जन

मन्तरा- 1. एकटा घातक गूर 2. मन्तरा गूरक ओषधि रूपमे उपयोगी एकटा वनस्पति

मन्हुआयब- मन उदास होयब, मन खिन्न होयब, सुस्ती होयब

ममरी- *अपि* च- तरल पदार्थक सतहपर जमल पातर छाल्ही

ममानी- मामाक पत्नी, मायक भाउजि, मामी (मुसलमान वर्गमे)

ममुरी- द. ममरी

ममोला- इच्छित वस्तु प्राप्त नहि होयबाक दुःख [*क.को.- कचोट- हिन्दीक शब्द मानब असंगत*]

मय- *अपि* च- सहित (*मय-सूदि कर्ज चुकता कयल गेल*)

मयदा- गहूमक अत्यन्त मेही चिक्कस

मयन/मयना- अरिकोँच जातिक एक गाछ जकर पातक प्रयोग मधुश्रावणीक बिसहरिक पूजामे होइछ। एकर एक प्रजातिमे पातपर सिन्दूर-पिठारक ठोप सन रंग रहैछ

मरचुन्नी- चिरकालिक रोगक कारणे भेल अत्यन्त दुब्बर/लटल (देह), क्षीणकाय

मरचून- सत्वहीन चून, सुखायल आर्द्रताबला निस्सार चून

मर जो ! -अस्वीकार सूचक अव्यय (स्त्री-भाषा)

मरतओल- लोहाक लोढ़ी जाहिसँ कोनो वस्तुकेँ थूरल-थकुचल जाइछ

मरदन्ना- अस्पष्ट लिंगबला पशु/पक्षीक नर-जाति

मरदब-1. मर्दन करब, मालिस करब 2. गील वस्तु विशेषत: सानल चिक्कसकेँ हाथसँ पीचि-पीचि कऽ मिलायब, गिलाबा/आहिनकेँ पैरसँ धाङि कऽ मिलायब

मरदबा/मरदाबा- मरद, पुरुख

मरदे- मरदक सम्बोधन रूप-भर्त्सना/उत्तेजना/सान्त्वनाक निमित्त

मरनबाला- जे मरि गेल से

मरनी-हरनी-मृत्यु एवं अन्य दुखद अवसर

मरब- *अपि* च- नव रोपल गाछक सुखा जायब

मरबा- छोट आकारबला माछक एक प्रकार

मरम- *अपि* च- डाह

मर-मसल्ला- मसाला इत्यादि

मरमसि (कऽ)- क्रोध/अप्रसन्नताकेँ मनहि मन दबाय

मर-मिठाइ- मिठाइ इत्यादि

मरमियाह/हि- *अपि* च- मने-मन डाह रखनिहार/रखनिहारि, ईर्ष्यालु

मरमी- *अपि* च- डाह रखनिहार, डाही

मरोड़ब-मचोड़ब, ऐँठब

मरौअति- कृपा, अनुकम्पा

मरौटी- *अपि* च- चौकीदार द्वारा थानापर देय अपना इलाकाक मृत व्यक्तिक संख्या-सूचना

मर्र- विस्मयादि बोधक अव्यय/(स्त्री-भाषा)

मलकब- *अपि* च- मलका मारब- बिजलीक चमकसँ आमक मञ्जरक मधुआयब

मलकोका- भेँट, श्वेत कुमुद [क.को.-*कमल जातिक एक लाल फूल-रंग भ्रम*]

मलपूआ- विशेष रीतिसँ बनाओल कोमल पूआ, मालपूआ

मलसाइ- मालिस, शिशुकेँ तेल लगाय मर्दन सहित देह जाँतब

मलहटोली- मलाहक टोल

मलहा-मलाह

मलहिनियाँ-मलाह जातिक स्त्री, मलाहिनि

मलार- *अपि* च- नेनाक मुँह-देह हँसोथैत कयल जायबला स्नेह (*दुलार-मलार*), द. मलसाइ आ मलारनि

मलारनि/मलारि- नेनाकेँ ठोकि-ठोकि सुतयबा कालक गीत, लोरी, हरनिनियाँ, निनियाँ

मलाही- *अपि* च- 1. माछ मारऽबला जालक निचला किनारमे गाँथल लोहक छोट-छोट फोँफी/छुच्छी 2. एक प्रकारक जलीय लघु कीट जकरा मुँहपर दूटा पैघ सूंघ होइत छैक

मलिकाना- 1. मालिक सम्बन्धी 2. जमिन्दारी-व्यवस्थामे जमिन्दारक निजी जमीन

मलिकिनी/मलिकीनी- मालिकक स्त्री, स्वामिनी

मलीदा- *अपि* च- वस्त्रक एक प्रकार

मलेछ- *अपि* च- इत्तर, निष्ठुर, क्रूर

मलेछपनी- निष्ठुरतापूर्ण आचरण

मलेमास- मलमास, अधिमास

मल्हुआ- दुलरुआ

मसउपास- मास भरि उपवास करबाक व्रत

मसकन- घराड़ीक जमीन

मसकब- अपि च- दूध फटबाक पहिल लक्षण, दूधक खुदियायब

मसका- उलाओल बूटक दालिकेँ गूड़मे सानि कऽ बनाओल गेल खाद्य

मसमस दिन- भरिमास पर्यन्त

मसमादिन- तीसम/एकमास पूर्व/बादक दिन, मासपूर्त्ति दिन

मसरफ- उपयोगिता

मसरामनी- मधुश्रावणी, साओन मासमे होअऽबला नवविवाहिताक एक विशिष्ट पाबनि

मसलन- ओठङि कऽ बैसबाक लेल पैघ गोल गेरुआ, मसनद

मसल्ला- मसाला

मसुआहि- मांस रान्हब, मांसक भोजन, मांस-भोज

मसुहरि- दाँतक आधारबला मांस जाहिमे दाँतक जड़ि रहैत अछि, मसकूर

मसोमात/मसोमाति- विधवा

मसोमाती- मसोमातसँ सम्बन्धित, मसोमातसँ उत्तराधिकारमे प्राप्त (सम्पत्ति)

मस्ताना- निर्भीक, पुष्ट शरीरबला

मस्ते- अक्षरक माथक उपर (देल बिन्दु/ अनुस्वार, मस्ते कं)

महओखा- बेसी काल बँसबिट्टीमे रहनिहार कत्थी रङ्गक एक चिड़ै

महकाइन- विकृत गन्धयुक्त, विकृत दूधक गन्ध/ स्वाद

महघोरनी- अश्लील गारि सहित झगड़ा कयनिहारि स्त्री (महा+अघोरिनी)

महङ्कार- माटिक ढेपक रूपमे अस्थायी स्थापित कोल्हुआड़क देवता जकरा कोल्हुमे पेड़ल पहिल कुसियारक रस चढ़ाओल जाइछ [*क.को.- एक देवता जे कुसियारक रक्षा करैत अछि- अनुमानित अर्थ*]

महजरो- बेसी काल धरि चलैत बाद-विवाद/ बाता-बाती

महजाल- माछ मारबाक पैघ जाल, महाजाल

महजीत/महजीद- मुसलमानक आराधना स्थल, मसजिद

महजूद- उपस्थित, तत्पर, मौजूद, तैयार

महतमा- साधु, महात्मा,

महतमाइन- महतमक पत्नी, मलिकाइन, गिरहतनी, गिरथाइन

महदइ- पुरान विशाल पोखरि, महादेवी (*पटरानी*)क खुनाओल पोखरि

महना- मक्खन महबाक पैघ माँट

महन्थान- महन्थ-परम्परा द्वारा प्रबन्धित मठ/मन्दिर/ स्थल, महन्थक पद

महर- *अपि* च- प्रमुख व्यक्ति, मुँहपुरुख

महाउर- महल दूधक (*दही*), महुआ दही

महाक/महाग- विशेष, अत्यन्त, अद्‌भुत, महा (*महाक झुट्ठा, महाग सुन्नरि*)

महाच को/महाच खो- ग्राम्य खेलमे त्रुटि-मार्जन हेतु स्वानुमति-संकेत, विपक्षीक त्रुटिमार्जन रोकबाक संकेत

महापुरुख- महापुरुष, (*ला.*), दे. 'महापोरे'

महापोरे- प्रमुख, प्रतिष्ठित, भारखमी, कहबैका (*उपहासमे प्रयुक्त*)

महाबर- स्त्रीक हाथ-पैर रङऽबला लालरंग, अलता, आरत

महाभारत– महर्षि व्यास द्वारा संस्कृतमे रचित महान ग्रन्थ जाहिमे कौरव-पाण्डवक कथा कहल गेल अछि । (*ला.*) पैघ युद्ध, खूना-खतरीबला झगड़ा

महामहो– महामहोपाध्यायक संक्षिप्त रूप, महान् विद्वान, जनिक उपशिष्यक शिष्य अध्यापक (उपाध्याय) भऽ गेल होथि

महाली– ताड़ीक एकटा नपना

महियायब– *अपि* च– थोड़ खेतकेँ जोति कऽ ओकर जोतल मौँटिकेँ खूब हल्लुक बनायब (*थाड़ कऽ जोतिहह, अधिक महियबिहह, ऊँच कऽ बन्हिहह आरि–डाक*)

महिरम– अधलाह परिणाम, दुष्परिणाम, कुफल

महिसान– महीस पोसनिहार, महीसक चरबाह, महिसबार

मही– *अपि* च– 1. घोर, मट्ठा, घोरजाउर [क.को. *'महौर-मही-(मट्ठा)मे रान्हल भात, घोरजाउर'* किन्तु प्रवृष्टिमे *'मही'* नहि *अछि*]

महुआ– *अपि* च– एक प्रकारक विशाल गाछ; ओहि गाछक फूल जकरा खाद्य रूपमे उपयोग होइछ तथा ओहिसँ दारू सेहो बनैछ (*आम गुल गुल महुआ चुभुक*)

महोखा– दे. महओखा

महोमहो–थै-थै, अत्यन्त मधुर, अतिआनन्ददायक

माइक (*अं.*)– ध्वनि-विस्तारण हेतु मुँह लग राखि बाजल जायबला यन्त्र

माइनजन– जाति विशेषक सर्वमान्य व्यक्ति, ओ प्रमुख व्यक्ति जकर विचार/आदेश जातिक सब व्यक्तिकेँ मानब अनिवार्य हो

माकठ– कृपण

माङी– *अपि* च– नावक दुनू कातक ऊँच स्थान, माङि (*जनिका खेबा नहि से अगिले माङी सवार*)

माछ-मासु– श्राद्धकर्म समाप्तिक अगिला दिन कयल जायबला सामिष-भोजक/भोजनक विधि

माँजि– अपरिचित/ अल्पपरिचित महिलाक हेतु सादर सम्बोधन, माइ, मैया, मैयो

माँटोमाँट– 1. आकण्ठ भरल (बासन) 2. सप्रयत्न बनल प्रतिष्ठित/मुख्य

मात– पराजित, निरस्त, मन्द

मातनि (**पड़ब/होयब**)– ककरो सफलतासँ डाहक कारणे भेल उदासी/मनहूसी, सुस्ती

मातर– मात्र, अनतिविलम्ब, तुरन्त बाद, दे. देरी

मातरिक– मायक नैहर, ममहर, मामाक गाम

मातहती– अधीनता

मातृक– मायक नैहर, ममहर, मामाक गाम

मातृपक्ष– माताक कुलक सम्बन्धी वर्ग

मान-मनौअलि– रूसलकेँ बौसबाक क्रिया

मानी– *अपि* च– आत्मसम्मान रखनिहार, (*मानी मरय मान लय, पेटू मरय पेट लय*)

माबा– काँच दूधक सतहपर जमल चिक्कन गाढ़ अंश, गाभ

मामू– मामा

मार खायब– समानान्तर पाँतीक बीच कोनो असमानान्तर पाँतीक अवरुद्ध भऽ जायब

मारा[1]– *अपि* च– दे. मरबा माछ

मारा[2](**छारब**)– आँखिक एकटा रोग, मोतियाबिन्द

मारिकहुँ/कहूँ– अनावश्यक रूपमे बहुत, अनगनित, अनेरे

माल– *अपि* च– सिमेण्ट-बालु-गिट्टी आदिक गील मिश्रण

मालकिन– दे. मलिकिनी

मालति- *अपि* च- निष्ठुर स्त्री, ममताहीन स्त्री, कृपण स्त्री, इत्तर स्वभावबाली

मालदार- प्रचुर टका-पैसाबला

माला[1]- *अपि* च- उतरी

माला[2] (उठायब)- आयोजनक खर्च उठायब, भोजन-भात करयबाक जिम्मा लेब

मास- अपि च- जमिन्दारक निजी जोता जमीन जाहि हेतु जमिन्दारकेँ फराकसँ सरकारकेँ मालगुजारी नहि लगैत छलैक, जिरात [*क.को. रैयती/ लगानबाला भूमि-गलत अर्थ*]

मास करब- कार्त्तिक/माघमे गंगातटमे पुण्यार्थ वास करब, कल्पवास

मासम(दिन)- तीसम(दिन), मासक अन्तिम दिन

मासा- *अपि* च- त्वचापर उभरल कारी दाग (*घेघपर घेघली तेहिपर मासा*), चोट लगलासँ त्वचापर भेल नील दाग (*लीला-मासा पड़ब*)

मासी- *अपि* च- कार्त्तिक/माघमे गंगातटपर भरि मास कल्पवास कयनिहार

माहेँ- बाटेँ, -होइत, -दऽकऽ, -दने

मिचरा-मिचरा खायब- दे. मिचरायब

मिचरायब- *अपि* च- अनिच्छा/अरुचिसँ मन्द-मन्द चिबा-चिबा कऽ खायब [*क.को. सोआदि-सोआदिकेँ मन्दमन्द खायब -अर्थभ्रम*]

मिञ्झर- मिश्रित, फेँटल

मिट्ठा- 1. गूड़ 2. हफीम

मिट्ठू- सुग्गा द्वारा/सुग्गाकेँ सम्बोधन शब्द

मिठ- मधुर, गूड़/चीनीक स्वाद, तत्सदृश स्वाद

मितबा- मीत, मीतक सम्बोधन रूप

मितिन/मित्तिन- सखी, स्त्री-मित्र

मियादी- दे. मेयादी

मियानी- दे. मेयानी

मिरगा- *अपि* च- मृग, हरीन, (*छठि माइकेँ मिरगा चरिय चरि जाय*)

मिरचैया- मिरचाइक पातसन पातबला एक प्रकारक झाड़

मिलजुमले- सभ मदक जोड़ल (राशि), एकत्रैव, सर्वैकत्वेन

मियाँइनि- मियाँक स्त्री

मीता- मित्र, मीतक सम्बोधन

मीती- मित्रता, दोस्ती (*हमरा तोरा मीती, तँ खेते अँटिया दीती, हम तोँ बिराना, तँ लऽ चल खरिहाना*)

मीना- गहनापर चढ़ाओल गेल रङ्ग

मीनाबजार- मेला/सामाजिक उत्सवक अवसरपर अथवा व्यापारक उद्धेश्यसँ भाँति-भाँतिक प्रदर्शनीय वस्तुक अल्पकालिक बजार

मीलछाँटी- धनकुट्टी मीलक कूटल-छाँटल (चाउर)

मीसर- एक उपाधि, मिश्र

मुखाँड़ी- गाय/बड़द/नेरूकेँ थुथुन ओ सींघमे लटका कऽ पहिरयबाक लेल डोरीसँ फनकी बनाओल फुदना लागल भूषण । क्वचित् हड़ाहि गायकेँ नियन्त्रणार्थ पहिराओल जाइछ। [क.को.- *'मालक मुँहमे लगएबाक जाली जाहिसँ माल फसिलकेँ नोकसान नहि कए सकए'- अर्थ भ्रम। बड़द मात्रकेँ एहि हेतु जाबी पहिराओल जाइछ, मुखाँड़ी नहि*]

मुखियागिरी- मुखियाक काज, मुखिया पदक रोआब

मुखियापति- ग्रामप्रञ्चायतक निर्वाचित महिलामुखियाक पति

मुखियाइन- ग्रामपञ्चायतक निर्वाचित महिला मुखिया, पुरुष मुखियाक पत्नी

मुङठी- मूड़/खेरहीक डाँट

मुङफली- चिनियाँ बदाम

मुचुर-मुचुर- चिम्मड़ खाद्य वस्तुकेँ रुचि पूर्वक चिबा-चिबा कऽ खयबाक ध्वनि

मुजेला/मुजेली-मूजक पथिया/मौनी

मुड़घण्ट- रोहुक मूड़ाक बनाओल विशेष प्रकारक व्यञ्जन

मुड़ब- *अपि* च- गाछक मूड़ी काटब/ खोँटब

मुड़िया (मारब)-मूड़ी धरतीमे अड़ाय उनटब, गुप्त रूपेँ तीव्र गतिसँ चलि देब

मुण्डा- *अपि* च- टूटल छीप/मूड़ीबला (*गाछ/ताड़क गाछ*)

मुत्ती- नेनाक मुतनाइ, नेनाक मूत

मुदालह- प्रतिवादी, आरोपी

मुदै- 1. वादी 2. शत्रु

मुदैया- शत्रु

मुनियाँ- *अपि* च- केराक घौरक सबसँ निचला हत्थाक छिम्मड़ि, केराक पातर छिम्मड़ि

मुन्ना- 1. सीसी इत्यादि पात्रक मुँह बन्द करबाक साधन, ठेकी, मुनना 2. छोट नेनाक दुलारक सम्बोधन/नाम-मुन्ना, मुन्नी, मुन्नू आदि

मुन्ही- 1. अन्नक रोगाह दाना, मिरहिन्नी 2. माल-जालक गरदनि ओ खुट्टाक बन्धनमे फनकी पैसयबा लेल रस्सीक बनल गोली

मुन्ही छिटकायब- माल-जालक बन्धन खोलब, (*ला.*) नियन्त्रण मुक्त करब

मुरखाहा/ही- *अपि* च- मूर्ख, मूर्खक, मूर्ख सदृश, मूर्खसँ सम्बद्ध

मुरछब- *अपि* च- घाओ चोखायब

मुरती- मूर्त्ति, विग्रह

मुरदहिया- मुरदासँ सम्बन्धित, श्मशान

मुरदहुली- श्मशान, मुरदा जरयबाक स्थान

मुरदार- *अपि* च- निस्तेज, श्रीहीन, म्रियमाण, पिलपिलाइत (गाछ), मरदुआर, पिलपिलहा

मुरलाइ- मुरहीकेँ गुड़क पाकमे मिलाय बन्हायल लड्डू

मुरली- 1. धनखेतीमे जनमऽवला एकटा घास जकर गोल-गोल फूल/फड़ होइछ, 2. आँठिया केश

मुरली बटेर- पैघ-पैघ-झोँट अस्तुरासँ कटलाक बाद माथक रूप (*मुरली बटेर, तीन कनमा तेल, झोँटा कटि गेल की करब तेल*)

मुरुछब- दे. मुरछब

मुरुझब/मुरुझायब- मौलायब, मुरझब

मुर्दघट्टी/मुर्दहिया/मुर्दहुली- दे. मुरदहिया/मुरदहुली

मुर्दा- मृतक, शव

मुलगयन/मुलगेन (प्रा.)- किरतनियाँ नाटकक मुख्य गीत-गायक

मुलुक- *अपि* च- उदासीनता/निरपेक्षता/वर्जना-व्यञ्जक अव्यय

मुल्लह- सरल बुद्धिवला धनिक जकरासँ धन ठकल जा सकय

मुल्लहक धन- बिनु श्रमहि ठकि कऽ प्राप्त धन

मुल्ला- मुसलमानक धर्माचार्य

मुष्टण्ड- मोचण्ड, मुस्तण्ड, बलिष्ठ मूढ़

मुसना/मुसनी- घरमे रहैत घरक वस्तु चोरौनिहार/चोरौनिहारि

मुसरा- 1. गाछक मुख्य सीर 2. कटहरक नेढ़ा

मुसहरनी- मुसहरक स्त्री

मुसहरी- *अपि* च- मसहरी

मुस्तकिल- स्थिर निश्चित स्थान, भूमि-नापमे निश्चित निर्धारित बिन्दु यथा- इनार, तिनमेड़ा, चौमेड़ा इत्यादि

मुह घालब- आत्म सम्मान छोड़ि ककरोसँ किछु माङब

मुहछी (मारब)- *अपि* च- वितृष्णा/अरुचि/उदासीनता (होयब)

मुहछुद्दू-निधोख, अनुचित बात बाजि देनिहार

मुहछोहनि (करब)- अनिच्छापूर्वक आग्रह, छुतिया छोड़ायब

मुहझौंसी- झौंसल (*झरकल*) मुहबाली-(*स्त्री द्वारा स्त्रीकँ गारि*)

मुहड़ा- *अपि* च- बैलगाड़ीक जूआवला भाग, रेलगाड़ीक इञ्जिन

मुहड़िया (देब)- मुहनमराय देखब, हुलकी (देब), मुड़ियारी देब

मुहदुस्सा- उल्लू

मुहदेखौअलि- पक्षपात, दिशाश्रय

मुह धरब- खुशामद करब,

मुहपोछनी- 1. मुँह पोछऽबला छोट वस्त्र खण्ड, रुमाल 2. महिलाक शृङ्गार-प्रसाधन-सामग्रीक मञ्जूषा

मुह फूलल- तमसायल, रुष्ट, अप्रसन्न

मुहबजाइ- नववधूक पहिल बेर बजवाक उपलक्ष्यमे देय/देल उपहार

मुहबौआ- मुह बओने रहनिहार, सतत किछु पयबाक आशामे रहनिहार

मुहरिया (देब)- दे. मुहड़िया

मुहसच/मुहसच्च- सङ्कोची, उचितो अवसरपर चुप रहनिहार

मुहा-ठुद्ठी- रोषपूर्ण विवाद, मनमोटाओ

मुहेँमुह- मुह धरि भरल (पात्र), भरिमुह

मुहान/मुहानी- जलधाराक आगमन/निर्गम द्वार (*तिरमुहान, तिरमुहानी, त्रिमुहान, त्रिमुहानी*)

मूठ- उपकरणकेँ ऊपरसँ पकड़बाक डण्टी

मूठि लागब- 1. पहिल दिन खेतमे बीज बाओग कयल जायब, 2. पहिल दिन जजाति काटल जायब (विशेषत: धनकटनी)

मूरुत- मूर्त्ति, प्रतिमा

मेकचोँ- बाधा, ओझरओट

मेथ- उड़ीद सन एक दलिहन

मेदिन- मादा पक्षी, *वि.* नर

मेम- अपि च- दे. मेमिन

मेम साहेब- हाकिमक पत्नीक लेल प्रयुक्त, महिला हाकिम

मेमिन/मेमिनियाँ- अस्पतालक परिचारिका, नर्स

मेँमेँकरब-बकरीक बाजब, मेमियायब, दीनता देखायब

मेयादी- निश्चित अवधिबला एक प्रकारक ज्वर

मेयानी- पयजामामे दुनू पैरक खोलक सन्धि-स्थल

मेलब- गिड़ब, खायब, (*कतओक दैत्य मारि मुख मेललि-विद्यापति*)

मेषसङ्क्रान्ति- वैशाखक सङ्क्रान्ति, शक संवत्‌क पहिल मास, सतुआइन पावनि जकर दोसर दिन जूड़शीतल पावनि होइछ [*क.को.- तिला सकराँति-विस्मयकारक भ्रम]*

मेस (*अं.*)- नियमित रूपसँ मासिक शुल्क दऽ नित्य भोजन कयनिहार सभक भोजनालय

मेहरबान- कृपालु

मेहरबानी- कृपा

मेहरारू- जनाना, स्त्री, पत्नी

मेहिक्का/मेहिक्की- अत्यन्त मेही

मेहिया- दाउनिमे मेह लग जोतल (बड़द), मेह दिससँ पहिल (बड़द)

मैया- 1. माय 2. शक्तिदेवी, भगवती, 3. चेचक 4. आश्चर्य/ हाक्रोशक भाव-व्यञ्जक शब्द

मैयो- अत्यन्त वृद्धा स्त्री, वृद्धा स्त्रीक प्रति आदर सूचक शब्द/ सम्बोधन

मैयो गे- आश्चर्य / शोक व्यञ्जक शब्द

मो- चूड़ा इत्यादि फुलयबाक लेल देल पानिक छिच्चा / आर्द्रता

मोकार- बड़का भूर, पानिक वेगसँ बनल भूर, सेन्ह, मोका, भोँकाँड़/भोकार

मोचब- *अपि* च- कनेक तिरछा कऽ घुसकायब/ठेलब, तिरछाकेँ कनेक ठेलि कऽ सोझ करब

मोचा- 1. कटहरक फड़क आरम्भिक अवस्था 2. मकैक बालिक आरम्भिक अवस्था / मकैक बालिमे बहरायल सूत सन सूँधक गुच्छ

मोची- एक उपाधि

मोछी- दे. मोचा

मोछैल/मोछैला- पैघ-पैघ मोछबला

मोट- *अपि* च- पानिक मोटगर प्रवाह

मोटगर- सामान्यसँ मोट

मोटधना- चओरमे उपजऽबला आ देरीसँ पाकऽबला मोट आकारक धानक प्रकार

मोटा-चोटा- पैघ मोटा ओ तेहने अन्य वस्तु

मोटिया- 1. कपड़ाक मोटा लऽ कऽ घूमि-घूमि बेचनिहार 2. भरल बोरा उभनिहार, पल्लेदार

मोटैनी- शरीर मोट होयबाक लक्षण, शरीर मोटायब

मोटैनी धरब- काजमे आलस्य होयब (उपहासमे)

मोतियाबिन- मोतियाबिन्द, आँखिक एक रोग

मोदरा- (मुद्रा), नगद राशिक सञ्चय

मोदियाइन-मोदीक स्त्री, मिठाइ आदि खाद्य बेचनिहारि स्त्री

मोफतिया/मोफतौआ- मङनीमे प्राप्त, हीन गुणवत्ताबला वस्तु

मोफिल- धनी-सामन्त लोकनिक नाच-गानक गोष्ठी, महफिल

मोबलिग/(संक्षिप्त-मो.)- टकाक कुल राशि

मोबिल (*अं.*)- मोटर आदि स्वचालित यन्त्रमे प्रयुक्त विशेष प्रकारक गाढ़ खनिज तेल

मोम- *अपि* च- पकमानकेँ कोमल बनयबा लेल चिक्कसमे मिलाओल जायबला घी, मेन

मोरङ/मोरङ्ग- वृहत्तर मिथिलाक पूर्वोत्तर क्षेत्र, वर्तमानमे नेपालक एक जिला

मोरा- *अपि* च-हमरा, हमर (*घेघ छल तोरा उछटि लागल मोरा*)

मोलहा- मोल दऽ कऽ कीनल

मोलहै- मूल्य निर्धारण कयनाइ, मोलाइ

मोश्चण्ड- दे. मोचण्ड

मोसबिर्ध- अङ्गमे अकारण बढ़ि गेल मांसक ढेकुरी

मोसल्लम- कुल, सकल, समग्र, सब मिलाओल

मोसाफिरखाना- यात्री/मोसाफिरक विश्रामस्थल

मोस्तकिल- दे. मुस्तकिल

मोस्तयद- तत्पर, सतत सन्नद्ध

मोस्तयदी- तत्परता

मोहनी मन्तर-वशीभूत करबाक सूत्र/विधि, मोहन क्रिया

मोहब्बति- आसक्ति, प्रेम (स्त्री-पुरुषक), परकीया प्रेम

मोहरीर- ओकीलक सहायक किरानी, निबन्धनक अभिलेख लिखनिहार, कातिब

मोहु- महुआक गाछ, महुआक फूल

मौअति- दुर्दशा, दुरगञ्जन, दुर्गति, मरण

मौका- अवसर

मौका-बेमौका- बेर-कुबेर, बेर-बेगरता

मौगति- दे. मौअति

मौगमेहर/मौगिमेहर- मौगी सभक बीच बेसी काल रहनिहार

मौगियन्नी- पशुपक्षीक मादा, मेदिन

मौगिया-'मौगी'क दीर्घ रूप निरादरमे

मौगियानी- दे. मौगियन्नी

मौगियाहा- मौगीसन आचरण कयनिहार पुरुष, भीरु

मौर- *अपि च*- गाछक छीपबला भाग

मौरुसी/मौरूसी- पैतृक सम्पत्ति, उत्तराधिकारमे प्राप्त सम्पत्ति, मरौसी

म्याउँ- बिलाड़िक बजनाइ, बिलाड़ि (म्याउँक मूड़ी के धरय ?)

[र]

रइ- पिडुकियामे भरल जायबला मसल्ला

रओना माइ- छठि व्रतकथामे सुरजापुत(सूर्य)क माय

रकटब- लालायित होइत रहब

रकती (हरदि)- *अपि च*- लाल रङ्गबला हरदि जे निम्न कोटिक होइछ

रकसबा- निष्ठुर/निर्दय/क्रूर/चण्ठ पुरुष

रकसिनियाँ- निष्ठुर/निर्दय/क्रूर/चण्ठिनी स्त्री

रखाँत- खास कऽ राखल/छोड़ल गेल गोचर भूमि, घासक लेल सुरक्षित जमीन

रखेलि/रखेली- उपपत्नी, धौरबी

रगड़पन/नी - रगड़ा करबाक प्रवृत्ति

रगड़ी- बलझगड़ा करैत रहनिहार, जिद्दी

रङब- *अपि च*- तामससँ मुखमण्डलपर लाली आबि जायब, तमसायब

रङरसिया- रसिक, शृङ्गारप्रिय, विलासी

रङ्ग-रभस- शृङ्गाराचरण, रतिचर्या

रङ्गारङ्ग- गीत-नृत्य-नाट्यादिक समवेत प्रदर्शन

रचना रचब- षड्यन्त्र करब, गोलैसी करब

रछच्छा/रछच्छी/रछछनी/रछछबा- (राक्षस), क्रूर, निर्दय, निष्ठुर

रछिया-रक्षा

र-झ-बाताबाती, त्वञ्चाहञ्च, झगड़ा, विवाद [क.को.- *'समझौता/सहमति करब'-उनटा अर्थ अछि। वास्तवमे 'र' सँ रगड़ा 'झ' सँ झगड़ा, अत: रगड़ा-झगड़ा करे संक्षेप 'र-झ'*]

रञ्ज-गञ्ज- प्रयोजनसँ अधिक परिमाणक कारणे अस्तव्यस्त / अव्यवस्थित/दूरि भेल जाइत

रटनी- *अपि च*- मोट डाँटबला राड़ी, मोटका खढ़

रड़धुम्मस- अशिष्ट लोक जकाँ मनोविनोदक हेतु धर-पकड़, कूद-फान, पटकम-पटका करब

रँड़सार- स्त्रीक विधवा/राँड़ भऽ गेलापर देल गेल जिज्ञासाक साड़ी (*एकटा अशुभ गारि सेहो*)

रतबा- सीझल सजमनि/आलूकेँ दही-रैँचीं आदि संग मिलाय बनाओल व्यञ्जन, रैता,

रतिचर- *अपि च*- 1. बादुर, 2. चोर

रतुआ- दे. रतबा

रतुका- रातिबला

रत्ती-मूल्यवान् पाथर ओ सोनक तौलक मानक बटखारा जे करजनीक बीयाक होइछ जकर संस्कृत नाम रक्तिका छैक, गुञ्जा [क.को. क कहल *अर्थ 'घेंचुलक बीया'-असंगत*]

रबना- खाली विस्तृत क्रीड़ा भूमि, खेलक मैदान

रबाड़ब- 1. खेहारब 2. डपटब

रबाड़- खेहारनाइ 2. डँटनाइ, डाँट

रबायब- *अपि च*- रौदमे धानक ताकसँ अधिक सुखा कऽ कड़ा भऽ जायब जाहि कारणे धानकुटबामे चाउर सब टुटि जाइछ

रमझिङ्गुनी/रमझिमनी- एकटा तरकारी, भिण्डी

रमझौआ- मध्यस्थतामे वादी-प्रतिवादीक मध्य झंझटि-विवाद, मध्यस्थताजन्य झंझटि

रमता जोगी- भ्रमणशील साधु, सतत भ्रमण करैत रहनिहार

रमनगर- रमणीय, रोचक, सुन्दर

रमन-चमन- काज-परोजनक क्रियाशीलता, मनोरंजक क्रियाकलाप

रमब- *अपि च*- लीन होयब, मन लागब, अनुकूल बूझि पड़ब

रमरसरा (लागब)- कार्य-सम्पादनमे विलम्बकारक बाधा

रम्भा- *अपि च*- एक अप्सरा

रसकपूर- एकटा रासायनिक द्रव्य

रसगागर- टाभ नेबो

रसनोइ- मोसि, कागतपर लिखबाक रंग

रसमलाइ- दूधक छाल्हीमे लपेटल छेनाक एकटा मिठाइ

रसौती- *अपि च*- जेठक बरखा भेलापर खेत जोति कऽ कयल गेल बाओग

रहठा- राहड़िक डाँट, राहठ

रहबट- पैरेँ चलबाक कारणे बनल बाट, रस्ता

रहरहाँ- यत्र-तत्र, अनायास (प्राप्य)

रहसब- *अपि च*- ढीठ भऽ-कऽ बिहँसैत बाजब

रहीस- गम्भीर स्वभावक,अचञ्चल, विवेकी

राइ-रत्ती- आभ्यन्तरिक छोटसँ छोट गोपनीय बात

राइ-सोहराइ- छिड़िया कऽ नष्ट होइत, राइबाइ

राकसिनी- दे. रकसिनियाँ, राकसक स्त्रीलिंग रूप

राग-भास- गयबाक रीति, लय-सुर

राज-काज- जीवनक सामान्य काज-धन्धा

राजमा- एकटा दलिहन जे सीमक बीया सन होइछ आ जकर उपजा भारतक पश्चिमी प्रान्तमे होइछ

राजी-खुसी- स्वेच्छा,

राँट- भट्ठामे आवश्यकता सँ अधिक ताओ लगने भेल टेढ़/चनकल ईंट

राँड़ी- विधवा, राँड़, राँड़ि

राँड़ी-बेटखौकी-स्त्रीगणक मध्य गारा-गारी सहित झगड़ा [क.को.- *'एक प्रकारक गारि', -वास्तवमे अनेक प्रकारक गारि*]

राढ़ी/राढ़ीभदैया- भदैया आमक एक प्रजाति

राति-बीच- रातुक कोनो समयमे (अकस्मात्)

राधा- कृष्णक प्रेमिका, गोकुलक गोपी सबमे प्रमुख गोपी

रान- जाँघक अगिला भाग, काछ, छागरक पछिला टाङक उपरका भाग

रानामाइ- दे. रओना माइ

राम- 1. रामायणक नायक 2. तौल/वस्तुक गनतीमे पहिल, एक

रामझिङ्गुनी/रामतरोइ/रामतोरइ- दे. रमझिङ्गुनी [क.को. *रामझिमनीक पर्याय 'रामतरोइ'*

कहैछ किन्तु से मूल प्रविष्टिमे नहि अछि]

रामरस- *अपि च*- देबाल ढेउरऽबला एक प्रकारक गाढ़ पिरछोन रंग

रासतीसँ- धैर्यसँ, शान्तिसँ, बिनु बल प्रयोग कयने, आस्ते

रासि- *अपि च*- डिबियाक बरैत टेमी, दीपक शिखा

राह-बाट- रस्ता-पयरा

राहि(*प्रा.*)- राधिका, (*माधव अब न जिउति धनि राही-विद्यापति*)

राही-1. दे. राहि 2. पथिक

राही-बटोही- बाटपर चलनिहार, पथिक जन

राहे-राहे चलब- डरेँ आज्ञा पालन करैत रहब

रितियायब- सुपरिचित बनब, हिलि-मिलि जायब, अनुकूलन होयब

रित्ती-रित्ती-जर्जर रूपमे फाटल (वस्त्र)

रिन्हकी- अल्पमात्रामे राहन्हल (रिन्हल) भात/खिच्चड़ि

रिया-खिया (कऽ)- क्रमशः न्यून ओ क्षीण (भऽकऽ)

रिसाल करब-शिवलिङ्गपर जल अर्पण/चढ़ायब/ढारब

रुखायब- आर्द्रता कम होयब, रुख होयब, घाओ चोखायब

रुतबा-रोब-दाब, प्रभावशालिता

रुदराँच- रुद्राक्ष (*बापक नाओँ लत्ती-फती बेटाक गरा रुदराँच*)

रुन्नीमस्तक- एक आयुर्वेदिक औषधि जकरा छोट बच्चाकेँ सर्दी भेलापर चानिपर तेल मिलाय साटल जाइछ

रुस्सा- सीमेण्ट-बालुक गील मिश्रणक लेप/प्लास्टरक सतहकेँ रगड़ि समतल/चिक्कन करऽबला एक औजार

रुहानी- कान्ति, रोगमुक्त भेलापर शरीरक उत्साहवर्धक परिवर्त्तित स्वरूप

रूपक- *अपि च*- संस्कृत साहित्यक दश नाट्य-प्रकार

रूपा- *अपि च*- टाका, रुपैया

रेजिस- *अपि च*- अत्यन्त तेज धारबला विशेष प्रकारक छोट छूरी, रेजी

रे-टे-अवज्ञा/विरोधमे उद्दण्डतापूर्वक कथित अनादर सूचक रेकारक भाषा-प्रयोग

रेतब- *अपि च*- हाँसू इत्यादि हथियारक धारसँ रगड़ि कऽ काटब

रेलबी (*अं.*)- रेलगाड़ीक रास्ता

रेलबे/रेलबै (*अं.*)- रेलगाड़ीक समस्त संरचनाक व्यवस्थापक-सञ्चालक विभाग

रेला-मेला/भीड़मे एकहि दिशामे लोकक ठेलाइत जायब, रेड़ा

रेस- *अपि च*- तीव्रसँ तीव्रतर वेग/गति

रेसाइ- धातुक भग्न वस्तुकेँ जोड़बाक/भरबाक काज, रेसबाक काजक मजदूरी

रेहा (*प्रा.*)- रेखा

रेहाइ- आपराधिक आरोपसँ मुक्ति

रेहु/रेहुआ- रोहु माछ

रेहुनी (**-कटैया**)- एकटा काँट युक्त औषधीय झाड़, ओहि झाड़क फड़

रेहू- रोहु माछ

रे हे/रे है- स्नेहपूर्ण निरादरक सम्बोधन, हे रै !

रेहोँ-रेहोँ- समय खेपऽक लेल अत्यन्त मन्द गतिसँ (काज करब/होयब)

रै- दे. रइ

रैया- राजा अर्थमे रायक आदरमे प्रयुक्त रूप

रैयानि- राय उपाधिधारीक स्त्री

रोआँ- देहक पातर आ छोट-छोट केश, रोम, रोइयाँ

रोक-छेक-काजमे अवरोधक बाधा, आवागमनमे प्रतिरोध

रोखाह- रोष उत्पन्न करऽबला (बात/काज), रोखसँ भरल

रोगी-टट्टी- चिरकालसँ रोग ग्रस्त, दुर्बल, रोगाह

रोजहा- दैनिक मजदूरीबला जन

रोजिन्ना/रोजीना- प्रतिदिन, हरेक दिन

रोजी-रोटी- जीवन-निर्वाहक साधन, नित्य भोजनक उपाय

रोटिपक्का- रोटी पकबऽबला माटिक छितनार बासन

रोटियाहा एकादशी- एकादशी तिथिकेँ रोटीमात्र (भात नहि) खयबाक व्रत

रोड(*अं.*)- पक्की सड़क

रोदना (पसारब)- रुदन, क्रन्दन

रोपनी-बीज/बिच्चो/बिड़ार रोपबाक काज

रोसनाइ/रोसनै- मोसि, लिखबाक रङ्ग, रसनोइ

रोहिन/रोहिनि- रोहिणी नक्षत्र (*जा रोहिन, घर रोहा नाही*)

रोहिनियाँ- रोहिणी नक्षत्रमे भेनिहार (बरखा, बीया, आम, कटहर आदि)

रोहुआ- रोहु माछ

रोहुआ-बोआर- पैघ-पैघ आकारक रोहु आ बोआरी आदि माछ सब

रौदा- सूर्यक किरण, रौद

रौन (*अं.*)- भ्रमण (अं. राउण्ड)

रौनब- धाङब

[ल]

लओत- 1. तौलमे तराजूक वस्तुबला पलड़ा किछु झुकल (*बनिञाँ तौलय नहि गहिंकी कहय लओत कऽ तौलिहह*) 2. विनम्र

लकसी- दे. नकसी/नकुसी

लकड़दादा- परदादाक बाप [क.को. -*प्रपितामह-अशुद्ध*]

लक्कड़ (-लागब) 1. युक्ति, जोगाड़ 2. बाधा

लगझाड़- संसर्ग, दूरक सम्बन्ध/सम्पर्क

लगनौती- लगन (विवाहादि शुभकार्य)क निमित्त टका/वस्त्र/गहना (टकबा एक मेलौ लगनौती, खन खोंइछा खन पौती)

लगबरपन- छिनरपन, लगबारक आचरण

लगबाहि- स्वकार्य सिद्धि हेतु बेर-बेर प्रयत्न करैत रहब

लगरपन/लगरबाहि- अनुचित काजक बारम्बार आवृत्ति, दे. लगबाहि

लगलगाओ- सम्भाव्य निर्णय (विशेषत: वैवाहिक कथा-वार्त्तामे)

लगाति- लगभग, लगधरि, पर्यन्त

लगान- अपि च- दुइ बिन्दुक सम्बद्धता/ संलग्नताक निमित्त लम्बाइ (धरनि, कड़ी, कोड़ो, बाती, खाम्ह आदिक)

लगा-बझा कऽ कहब- तथ्यकेँ अपना दिससँ जोड़ि-जाड़ि कऽ कहब

लगार- *अपि* च- कोनो काजक सिद्धिमे निरन्तर सन्नद्ध/लागल रहनिहार, लगारी

लगित- उत्पादन/व्यवसायमे लागल पूजी, लागति

लगुन- लगमे

लगेलगे !- साँढ़ इत्यादिकेँ खेहारबाक शब्द, ललकारा देबाक शब्द

लगेलगे ढुँड़- भेँड़ाकेँ ढूहि/ढाही लड़यबाक हेतु उत्तेजक ललकाराक शब्द

लङ- लग, निकटमे, संगमे

लङ्कउजाड़नि- (लङ्का उजाड़निहारि) उग्र स्वभावबाली स्त्री, झगड़ाउ मौगी

लचरब- आर्थिक दृष्टिएँ दुर्बल होयब

लचपच/लचपचिया- बड़ बेसी लचकऽबला

लजाधुर- अति लज्जाशील, अधिक लजयनिहार, लजकोटर

लज्जति- अपि च- संसक्ति, स्निग्धता

लटगेना- अनेक प्रकारक छोट-छोट उपयोगी वस्तु(-क दोकान)

लटछिलकी- कपारपर केशक लट झुलबैत रहनिहारि, सन्दिग्ध चरित्रबाली (निन्दामे)

लटतम-बुड़तम- लटैत-बुड़ैत, जेना-तेना/मन्दगतिएँ/कोनहुना (निर्वाह)

लटपट- *अपि* च- 1. ओझरओट 2. बिना झोरक गील मसल्लामे सानल (तीमन)

लटपटायब- *अपि* च- बुढ़ारीमे मृत्युक सम्भावनाबला रुग्णता होयब, मरणासन्न होयब

लटरा/री-बमरेटिया, बामा हाथसँ काज कयनिहार

लटियायब- मुहमे खायल भोजन लारक अल्पताक कारण घोटबा योग्य गील नहि होयब/लट्ठा जकाँ बनि जायब

लटुरिया(केश)- औंठिया (केश)

लटेरिया- दे. लटरा

लट्ठा- *अपि* च- सादा मोट कपड़ा

लट्ठो- अत्यन्त लुब्ध/आग्रही, मुग्ध भऽ प्राप्तिक उत्कट इच्छुक

लठम-लट्ठा- परस्पर लाठीसँ मारि

लड़ब- अपि च- झगड़ा करब, झगड़ब

लड़ाकिन/नि/नी- झगड़ाउ माउगि

लड़िकम- सेवा-बरदासि, टहल-टिकोरा, दे. गोँहड़ि

लडुआयब- 1. लड्डू सन भऽ जायब, भात गील होयब 2. मौलायब, लटुआयब

लडुब्बा/लडुब्बी- लड्डू सन आकृतिबला आम

लण्ट-घण्ट- पूजापाठक दीर्घ प्रक्रिया/आडम्बर, टण्ट-घण्ट

लण्ठपना/लण्ठपनी- बदमासी, मोचण्डी, जबरदस्ती, बलजोरी

लण्ठहा/लण्ठा/लण्ठाहा-लण्ठ स्वभावक लोक

लण्ठै- दे. लण्ठपनी

लत- रोपबाक लेल अल्हुआक लतीक छोट-छोट खण्ड

लत खसायब- अल्हुआ (-क लत्ती) रोपब

लऽत- (नत), दे. लओत

लते-पते/ लत्ते-पत्ते (पड़ायब/भागब)- तुरन्त/अविलम्ब/तेज गतिसँ (पड़ायब)

लत्ती-फत्ती- लत्ती एवं ओही तरहक छोट-छोट गाछ

लथेड़ब/लथोड़ब- विवश करबाक लेल देहकेँ पकड़ि कऽ घीचब-तीरब, नङो-चङो करब

लऽ दऽ कऽ- 1. सब मिला कऽ, सकलमे- (*लऽदऽकऽ एकटा गाछ फड़ल*) 2. सकल देय सामग्री सहित (*लऽदऽकऽ बेटी-जमायकेँ विदा कयलनि*)

लदनी- जाहिपर लादल जाय (*वैह घोड़ी लदनी, वैह घोड़ी चढ़नी ! हाथी मैयो हथनी, धिया-पुताकेँ लदनी*)

लदमलद/द्द- क्षमतासँ अधिक लादल/बोझल

लदान- 1. लदबाक काज, लदनाइ 2. लादल वस्तुक परिमाण/भार

लदेलदाओ- दे. लदमलद

लद्दी- नदी, नद्दी, धार

लपकान- तेज गतिसँ चलनाइ

लपची- बोआरी माछक बच्चा

लपटब- *अपि* च- तेज गतिसँ बसात बहैत रहब

लपटोर- 1. जिहलाह 2. लम्पट (*हरन बटोर बौआ हरन बटोर, माय लछमिनियाँ बाप*

लपटोर)

लप दऽ- झटसँ लोकबाक/पकड़बाक हेतु हाथक मुद्रा बनबैत

लपलपायब- 1. सोअदगर खाद्य देखि जीहक चंचल होयब 2. लोभवश प्राप्तिक आतुरता होयब

लपसी-चिक्कसक हलुआ (विशेषतः मड़ुआ वा चाउरक)[*क.को.- एक तीमन-अशुद्ध*]

लपाँकि- *अपि* च- कोनो लाभ अलगट्टे लोकि लेनिहार, उचक्का

लपेट- *अपि* च- 1. लपेटल सन आकारक बाँहिक एक गहना 2. सम्बन्ध-सम्पर्क

लपेसब- 1. गील पदार्थ/ गाढ़ द्रवकेँ औंसब 2. अनाड़ी जकाँ लेपब

लपौड़ी- बढ़ा-चढ़ा कऽ कहल फूसि बात

लप्पा-छाहरिमे बेसी बढ़निहार घास [*क.को.- गप हँकनिहार- भ्रामक*]

लफासोँट- पैघ काजक मिथ्या वचन देनिहार, मिथ्या गप हँकनिहार

लफुआ- लफङ्गा, अवारा

लऽब/लबका- नव/नवका

लबज- *अपि* च- ओ शब्द जे लोक बजबामे बेर-बेर प्रयोग करैत अछि, 'मुँहक लबज', सकुनतकिया

लबझायब-ओझरायब, बाझब

लबर-लबर करब/बाजब- आगुए-आगू बाजऽ लागब

लबरी-फुसियाही- फूसि वा महत्त्वहीन गप सब

लबलबी बढ़ब- अग्रवादी होयब

लबा/लबाक-एक पक्षी

लबारिस- उत्तराधिकारी-हीन, लावारिस

लबेजान- 1. पूर मासक गर्भावस्था, 2. पीड़ासँ अवसन्न

लब्बर- बहुत बजनिहार, फचाँड़ि

लयका-नवका

लय लय करब-भूख/उपेक्षासँ नेनाक कनैत रहब

लया-नव, नया

लरम- *अपि* च- बिमारीक उग्रता/ तीव्र पीड़ा पहिनेसँ कम

लर्रा-चरहा धानक नमहरका डाँट, छिपकट्टा धानक अवशिष्ट डाँट/नार

ललकी-लाल रङ्गक

ललछओन/ललछओँह/ललछाँह/ललिछओन/ ललिछओँह/ ललिछाँह- किञ्चित् लाली लेने, लाल सन लगैत

ललना- *अपि* च- सोहर गीतक भास-पूरक शब्द, नवजात पुत्र, दुलारू पुत्र

ललबबुआ- अत्यन्त दुलारेँ अकर्मण्य भेल

ललबोङी- नाङड़ि दिस लालरङ्गबला एकटा चिड़ै, बुलबुल

लला- दुलारू पुत्र (*रामलला*)

लला-छुच्छी- सतत अभावे-अभाव

ललायब- *अपि* च- साङहक अभावमे लत्ती-फत्तीक वृद्धि बाधित होयब

लली-दुलारी पुत्री (*जनक लली*)

लल्ला-छुच्छी- दे. लला-छुच्छी

लल्ली-कण्ठनली, नरेटी

लल्ली चोभब- कण्ठ नलीकेँ दाँतसँ काटब/खण्डित करब

लल्लो-चप्पो- खुसामद, मुहधरी

लवण-नोन

लष्टम-खष्टम/लष्ठम-खष्ठम- पूजा-पाठक विलम्बकारक आडम्बर

लसफसिया- एकटा गाछ जकर फड़ लसफस/लसलस होइत छैक

लसा-लस्सा (*लसा लगा देल बक टिटियाइए*)

लसेर- संसर्ग, सम्पर्क, संक्रामक चर्मरोगक छूतिसँ उत्पन्न

लहजा- बिनु श्रमहि भेटनिहार प्रचुर अनुचित लाभ

लहरक- लयात्मक रीतिसँ लहरि जकाँ कहल जायबला अनियमित यतियुक्त वाचिक काव्य

लहरचुट्टा- बड़की चुट्टी जे अंगमे मुँहसँ पकड़ि लेने जल्दी छोड़ैत नहि छैक

लहरचुट्टी- तीक्ष्ण दंश-पीड़ाबला विशेष प्रजातिक चुट्टी

लहरी-तरङ्ग, लहरि (*'ललना-लहरी'-सुमन; 'गङ्गा-लहरी'-जगन्नाथ*)

लहालोट- रौद/भूख/पियाससँ व्याकुल [*क.का. - आनन्दवश चञ्चल, विमुग्ध- भ्रामक अर्थ, 'लोटपोट'क भ्रम*]

लहुए-लहुआन-रक्तरञ्जित

लहेरिया- *अपि* च-लहरि जकाँ ऊपर-नीचाँ होइत रेखा, वक्ररेखा, लहरिया

लहेरी- लहठी बनौनिहार जाति-विशेष

ला- *अपि* च- सम्प्रदान कारकक विभक्ति, लय, लेल

लाइ-लपटाइ- छल-प्रपञ्च, गूढ़ी-कपटी, प्रच्छन्न दुरभिसन्धि

लाइट(*अं.*)- गैससँ प्रकाश उत्पन्न करऽबला उपकरण, पेट्रोमैक्स,

लाउडस्पीकर (*अं.*)-ध्वनिविस्तारक यन्त्र

लागनि- हरखण्डाक सबसँ निचला भागमे हरकठमे लागल ओ दण्ड जकरा हरबाह पकड़ि कऽ हरकेँ नीचाँ जाँति कऽ ठेलैत अछि

लागि- *अपि* च- निमित्त,-लय, -लेल

लागि देब- सहयोग देब, काजमे संग देब

लागि-भागि-सम्बन्ध, सम्पर्क

लागी- द. लागि

लाट लागल- 1 संग लागल 2. आसन्न मृत्युक स्थिति, मृत्यून्मुखी रुग्णता, अति वृद्धावस्था

लाइ-चाइ- कोनो काजक आरम्भिक चर्चा

लाढ़ि मारब- *अपि* च- कोनो मनोनुकूल उत्तम वस्तु-प्राप्ति हेतु उत्कट इच्छा व्यक्त करब

लाबा-धक्का- लाभक लोभ, प्रयोजन, सम्बन्ध, सम्पर्क

लाबा लोकब- सामान्यो घटना/बातकेँ बहुप्रचारित करब

लाभर-जिभर- लाभक लोभेँ सम्पर्क

लाभी- नाभि, ढोंढ़ी

लाभुक- लाभ पौनिहार, लाभान्वित भेनिहार

लामा- *अपि* च- तिब्बती बौद्ध धर्माचार्य

लारो-बातो- मौलायल, लटुआयल

लालचटनी- कुतरुम जातिक एक गाछ जकर फड़क लाल, गुदगर ओ अमत स्वादबला आवरणक चटनी बनैत अछि [*क.का. एकरा भ्रमसँ कुतरुम कहैछ*]

लालछड़ी- चीनीसँ बनल लाल रंगक बालप्रिय मधुर (*लालछड़ी कड़कड़िया बोलय, धिया-पुताकेर मनुआँ डोलय*)

लाह-बाह- ज्वराधिक्यसँ/अधिक तापसँ भेल व्याकुलता

लाहेब- विनष्ट, दूरि, सर्वनाश, तहस-नहस, छिन्न-भिन्न,

लाहे-लाहे- नहूँ-नहूँ, आस्ते-आस्ते

लिखतम- लिखित दस्तावेज (*लिखतमक आगू बकतम की ?*)

लिखना-सुन्दर अक्षर बनयबाक लेल अभ्यास-लेखन

लिखा-पुरान पत्र-लेख

लिखिया- *अपि* च- कोबर-मड़बा आदिमे चित्र-लेखन, चित्राङ्कन, लोकचित्रक संरचना

लिगरे- लगेमे, निकटे

लिगरो-बिगरो- नङ्गो-चङ्गो

लिज्झड़- झञ्झटिया, हुज्जतिया, देब-लेबमे हुज्जति कयनिहार

लिट्ट-खूब मोटगर रोटी

लिद्द- सड़ि कऽ लिद्दी सन भेल

लिधुर-लिधुरान/लिधुरे-लिधुरान- सोनिते-सोनिताम, रक्तरञ्जित

लिपलिप करब/लिपलिपायब- बाढ़िमे डूबल जजातिक टुरनी सेहो डुबऽ-डुबऽपर देखि पड़ब

लिपित- लिप्त, संलग्न, मगन, प्रसन्न

लिबलिबी- कण्ठक उपरका भागमे लटकल अंग, लबलबी

लिलबरी- नील रंग

लिलोह- निठोहर, वञ्चित, अप्रतिभ, अपरतीब (*नेना लिलोह भऽ गेल*) [क.को. *निर्लोभ, निर्मोही । निर्लोभसँ व्युत्पन्न होइतो मूल अर्थ ग्राह्य नहि*]

लिहो- कुकुरकेँ हुलकयबाक शब्द

लीरी-बीरी- नङ्गो-चङ्गो, अस्त-व्यस्त

लीला-मासा- शरीरमे चोट लगलासँ बनल नीलाभ-कारी दाग

लुचपनी- लुच्चाक वृत्ति/स्वभाव

लुजबुज- शिथिल, अशक्त, ढील-ढाल

लुजबुजायब- लुजबुज होयब

लुजलुज- ढील (बन्धन)

लुजुर-बुजुर- ढील-ढाल, बिनु कसल, तन्नुक

लुञ्ज- नूज, टेढ़-टूढ़ ओ निष्क्रिय भेल हाथ-पैर

लुटकुन-वयस्कक संग लागल नेना, महत्त्वपूर्ण लोकक आप्त सहचर

लुट्टिस- लागल जजातिक सामूहिक रूपसँ लूटि

लुतुर-चुगली

लुतुरलगाओन/लुतरियाह/लुतरियाहि- झगड़ा लगयबाक हेतु चुगली कयनिहार, पिशुन

लुतरी- 1. चुगली 2. लुतरी लगौनिहारि स्त्री

लुबुध- लुब्ध, आकृष्ट, मुग्ध

लुम्हा- अवसर भेटितहि अनुचित लाभ लऽ लेनिहार, लपाँकि

लुरू-खुरू-छोट-छोट हल्लुक काज (*करू बहुरिया लुरू-खुरू*)

लुलकारब- उपेक्षा/अपमान सहित कोनो बात कहब

लुलुआन- जेहन/जते होयबाक चाही ताहिसँ न्यून, अपेक्षाकृत कम, झुझुआन

लुलुआयब (अकर्मक क्रिया)- *अपि च*- इच्छा पूर्त्तिसँ वञ्चित होयब, इच्छा अपूर्ण रहि जायब, अपरतिबायब, अतृप्त रहि जायब

लुल्हबा/लुल्हा/लुल्ही- लुल्ह छैक हाथ जकर, से

लुल्हुआ- पहुँचाक गीरह ओ आङुरक जड़ि धरिक हाथक पृष्ठ भाग [क.को.- *पहुँचा, गट्टा- दुनू अर्थ भ्रामक । मधुश्रावणीमे पहुँचा/गट्टापर टेमी नहि दागल जाइछ । अपितु उपर्युक्त अर्थबला लुल्हुआपर टेमी देल जाइछ*]

लुहकब- कटबाक लेल कुकुरक अकस्मात् दौड़ब

लुहकायब- लुहकबाकलेल उत्तेजित करब (*विशेषत: कुकुरकेँ*), लुहकब क्रियाक प्रेरणार्थक रूप

लुहलुह- तेजीसँ बढ़नुक (*छोट गाछक स्थिति- होनहार गाछक लुहलुह पात*)

लुहलुहायब- छोट गाछक तेजीसँ बढ़ब, लहलहायब

लुहलुहार-बढ़नुक गाछ

लुहे/लुहेलुहे- कुकुरकेँ लुहकयबाक शब्द

लुहेड़ा-अनेरे लुहेलुहे कयनिहार, लफङ्गा, गुण्डा

लूझि- लुझनाइ, अकस्मात् तेजीसँ छीनि लेबाक ओदाउदि

लूरि-बेबहार- गृहकार्य-गृहशिल्प ओ पारम्परिक आचार-विचार

लूरि-भास- गृहकार्य-गृहशिल्प ओ पारम्परिक गीतक गायन-रीति

ले/लेआ/- कनेक निम्न सतह, सामान्यसँ निम्न, ओ दिशा जेमहर पानि बहि कऽ जाय, निचास, (*वि. ऊँच*)

लेआन- विदागरी कराय अननाइ, लेआओन

लेआस- लेआ, निचास

लेओठा- पासीक हाँसू पिजयबाक लेल काठक सोंटा

लेकिन- किन्तु, मुदा

लेखि (*प्रा.*)- लिखबाक वृत्ति कयनिहार, कातिब, एकटा उपाधि

लेटरा- बमरेटिया, लटरा

लेढ़ियायब- 1. स्वार्थ-सिद्धि हेतु बेर-बेर आग्रह करैत रहब, दुराग्रह करब 2. चारू दिससँ गरियायब/गंजन करब [*क.को.- 'लेढ़ायब' करे पर्याय-भ्रान्ति*]

लेथारब- धूसब, भर्त्सना करब

लेपलाह- लेपल-पोतल सन, अस्पष्ट आकृति

लेपायब- रगड़ पड़लासँ आर्द्र रङ्ग/मोसि आदिक पसरि जायब

लेबझायब/लेभजायब/लेभझायब- ओझरायब,

लेभरायब- 1. लेपब (सकर्मक क्रिया) 2. लेपलजायब (अकर्मक क्रिया)

लेभारब- लेपकेँ पसारब, अपटु जकाँ लेपब, [*क.को.मे 'लेधारब'क लेल कहल गेल अछि- See लेभारब। किन्तु ई प्रविष्टिमे नहि अछि। 'लेधारब' एकटा गढ़ल-कल्पित शब्द लगैत अछि*]

लेल- *अपि च*- अबोध, अज्ञ, मन्दबुद्धि

लेलहा/लेलही- 1. दे. लेल 2. जे (व्यक्ति द्वारा) लेल अछि से

लेसनदार (अं.)- कचहरीमे बैसि सरकारी स्टाम्प बेचनिहार, राजकीय मुद्राङ्कक अधिकृत विक्रेता

लेहड़्ड़ा- अबारा, उत्तरदायित्वहीन

लेहारि-लोहारक सबसँ भारी हथौड़ा, घन

लै-पूजी- छोट व्यवसायक सकल साधन (मुद्रा ओ वस्तु)

लोआ-पोआ- अत्यन्त कोमल (अङ/शरीर)

लोक- *अपि च*- स्त्रीक पति, पुरुषक पत्नी

लोकदिन- दुरगमनियाँ कनियाँक संग गेनिहारि खबासनी/महिला, लोकनिन

लोकना- विवाहमे वरक संग-संग जायबला वयसेँ छोट युवक/किशोर/नेना [*क.को.-पहिल बेर सासुर जयबामे नववधूक संग गेनिहार पुरुष*]

लोकनि- बहुवचन बोधक परसर्ग- हमरा लोकनि, बरियाती लोकनि इत्यादि

लोकमन्त- नव परिचित लोकक संग शीघ्र हीलि-मीलि गेनिहार, घरमे आयल कोनहु लोकक प्रति स्नेह-सौहार्दक व्यवहार कयनिहार

लोकव्यवहार- सामान्य जनमे प्रचलित पारम्परिक विधि-विधान

लोकसभा- जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधिक सर्वोच्च राष्ट्रिय संस्था, संसदक मुख्य अङ्ग

लोकाचार- दे. लोकव्यवहार

लोका-लोकी/लोका-लोकौअलि- एकसर वा अनेक व्यक्तिक संग फेकल वस्तुकेँ लोकैत रहबाक खेल

लोकिया-गुप्त रूपेँ चर-चित लेनिहार, गुप्तचर, भेदिया

लोट (*अं.*)- नोट, कागतक मुद्रा

लोटिया- छोटकी लोटा, लोटकी

लोत्थे भारी- लोथ सन बहुत ओजनबला, बहुत भरिगर

लोथमोट- अपङ्ग भेल निष्क्रिय (व्यक्ति),

लोरी- नेनाकेँ सुताबऽ लेल गाओल जायबला गीत, दे. मलारनि

लोलना- नेनाक खेलौना, फुदना

लोल देब- 1. शुचिता नष्ट करब 2. हस्तक्षेप करब

लोल बहकब- बाजब असंयत होयब

लोल मारब- 1. पक्षीक फल आदि खोधब, उच्छिष्ट कऽ देब, 2. लोलसँ आघात करब

लोलियायब- 1. अनेक पक्षी द्वारा शत्रुपर लोलसँ आघात करब 2. अनेक व्यक्ति द्वारा ककरो बुड़ि बनायब, हूथब, घूसब, बघलाउर करब

लोली- अपि च- लोलजकाँ बहकल नोक

लोहजर- लोहक औजार/काँटी आदिसँ शरीर क्षत भेलाक कारणे उत्पन्न ज्वर, सुइ (इंजेक्शन) पड़बाक कारणे भेल ज्वर [*क.को.- लोह पीटब सन भरिगर काज देखि घबराएब- कल्पित अर्थ*]

लोह-ताम (होयब)- क्रोधावेशमे होयब

लोहरचुट्टी- दे. लहरचुट्टी

लोहरटोली- लोहार सभक टोल

लोहरपसरा/लोहरसारि/लोहरसारी- लोहारक कार्यशाला

लोहरा/लोहरबा- लोहार

लोहा- *अपि च*- घोँकचल कपड़ाकेँ सीटि कऽ समतल करबाक उपकरण/प्रक्रिया, इस्तिरी

लोहाइन- लोहियामे अधिक समय धरि रान्हल तरकारी रहि जयबाक कारणे भेल स्वाद-विकृति, लोहराइन

लोहु- लघु, हल्लुक, अल्प श्रमसाध्य (*लोहु काज बोहु करय, धान कुटय मैयां*)

लोहैन/नि- लोहार जातिक महिला

लौकिया- दे. लोकिया

लौटती- आपसी, घुरती, अबैत काल

लौटतीडाक- उत्तर अविलम्ब पठयबाक साधन

लौटायब- घुमायब, घुरायब, आपस करब

लौलीन- देखनुक, सोहनगर, सुन्दर, आकर्षक

[स]

सओँ/सएँ- सँ

संहर्त्ता- नाश कयनिहार

संहारब- नाश करब

सकचुन- चूर-चूर

सकतायब- सुखा कऽ कठोर होयब

सकती- शक्ति, सामर्थ्य, बल

सकपञ्ज- सब दिससँ अवरुद्ध, कोनहु दिस कनेको घुसुक-फुसुक करबासँ रोकल, निरुद्ध, विवश

सकरकन्द- अल्हुआ

सकलात- *अपि च*- सब मिला कऽ, सर्वैकत्वेन

सकसक- बेसी कसल/सिकस्त (पहिरबाक कपड़ा आदि)

सकसीहन- सङ्कीर्णता, असौकर्य, अत्यन्त अभाव, सकबक नहि चलऽबला स्थिति

सकारथ- सार्थक, *वि.* -अकारथ

सखिया- सखी, महिलाक महिला सङ्गी

सऽख- सौख्य, सओख

सग/सऽग- देयाद-बाद, सर-सम्बन्धी (*सऽगक खायल दाम आ कुकुरक चिबाओल चाम, उपर नहि होअय*)

सगरे-सर्वत्र, सब

सगहुआ- सगाइ विधिसँ भेल पति *वि. बिअहुआ*

सगाचिरैता- एक औषधीय वनस्पति

सगीन- मेही सूतसँ घनगर रूपमे बीनल कपड़ा

सगून-सगुन, वर ओ वर पक्षसँ विवाहक स्वीकृति लेबाक विधि-व्यवहार, छेका, सिद्धान्त

सँघरब- बहुत बेसी मात्रामे हबर-हबर खा जायब, हाहुत्ती जकाँ खायब [*क.को.- संगृहीत/संचित होयब- भ्रामक अर्थ*]

सँघारि- अभागल, अलच्छ

सङ पूरब- संग लागल काज करब, सहयोग दऽ कर्त्तव्य पालन करब

सङबहिनी- बहिन जकाँ सतत संग-संग रहनिहारि दुइ किशोरी / युवती

सङ-साथ- सहयोग

सङ-साथी- सहयोगी

सङसोर- संग लागल-लागल

सङिया- *अपि च*- सङ्गी, (*सङ-सङ एलौँ, साग-भात खेलौँ, सङिया मरि गेल, हम भुतलाइ छी*)

सङ्कष्ट- गम्भीर कष्टकारक विपत्ति

सङ्ख लाभी (शङ्ख नाभी)- शङ्खक खपड़ोइयाकेँ खोधिकऽ निकालल सबसँ ऊपरबला लोलसन अंग जकरा बाँहिक पीड़ा-शमन लेल पहिरन जाइछ

सङ्गति- सतत कालक साहचर्य, सङ्गति

सङ्गतिया- सङ्गतिमे बेसी काल रहनिहार व्यक्ति

सजन- *अपि* च- प्रियतम, बालम

सजिआम- लताम

सझिया-साझ-अनेक व्यक्तिक संयुक्त स्वामीत्व

सँझिया- साँझ, सन्ध्या

सञ्चर- *अपि* च- काजक बीचमे आयल अल्पकालिक ओझरओट /बाधा

सञ्जत- अनुशासित, शान्त स्वभावक, संयत

सञ्झा कनराती- (सन्ध्या-काल रात्रि), सन्ध्यादेवी/महारात्रि देवी

सञ्झा-भरली- पूर्ण सन्ध्या

सटकी-छोट छड़ी, छौँकी

सट दऽ- अकस्मात् सटका बजरबाक ध्वनि, अकस्मात् (*सट दऽ जीह घीचि लेब*)

सटोर-स्वार्थें निकट सम्पर्क

सद्ठा- *अपि* च- सामर्थ्य, सक, बल,

सठ- कृपण, इत्तर, अदत्त, शठ

सड़ण्डी- सड़ल, हीन कोटिक, अदद्दी, जीर्ण-शीर्ण

सँढ़दग्गी- वृषोत्सर्ग श्राद्ध, वृषोत्सर्ग श्राद्धमे धीपल लोहक सड़ीसँ बाछाकेँ दगबाक क्रिया

सढ़ुबेटा/बेटी-साढ़ूक बेटा/बेटी, पत्नीक बहिनक बेटा/बेटी, बहिनौत/ बहिनधी

सतकनमा- एक प्रकारक धान

सतघरबा- गोटीसँ खेलयबाक एकटा खेल जाहिमे पक्ष-विपक्षक सात-सात घर रहैछ, सात घरबला खेल

सतनहान- मृत्युक सातम दिन मृतकक परिवारक स्त्रीगण द्वारा कयल जायबला जलाशयमे स्नानादिक कृत्य

सतपुत- सौतिनिक पुत्र, सतौत

सतबढ़ना (बाढ़नि)/सतबन्हना बाढ़नि- साताटा बन्धनबला बाढ़नि, मुर्दाकेँ मुखग्नि देबाक ऊक (*गारि मात्रमे प्रयुक्त*)

सतबत- शपथ, दुइ व्यक्तिक मध्य पारस्परिक वचनवद्धताक शपथ, (सत्यव्रत)

सतमा- सातम, सप्तम

सतमी- 1. सप्तमी तिथि 2. सातम (*स्त्रीवर्ग ओ लघु वस्तुक विशेषण, यथा- सतमी बेटी, सतमी कटोरी*)

सतरिया- एकटा गामकौआ मेही धान, [क.को.क भ्रम निवारणार्थ दे. देसरिया]

सतरहिया- सतरह(दिन)बला

सतुराबैरी- पारस्परिक शत्रुभाव, दुसमनागत

सतोजनी- नीक शील-स्वभावबाली स्त्री, सुशीला

सत्तुर- शत्रु

सदति- सदा, बरोबरि

सदा- *अपि* च- एक उपनाम, सदाय

सदागर-वणिक, व्यापारी, सओदागर

सदाफल- सालो भरि फलयुक्त रहनिहार वृक्ष, सालो भरि फड़ऽबला, बरहमसिया

सदाय- बहुत पूर्वहिसँ, सर्वदा

सद्धी-बद्धी- दे. सधी-बधी

सधना-भोजनाभावसँ दुर्बल

सधान- अनुशासित कयनाइ, सधनाइ

सधी-बधी-देनी-लेनी चुकता/बराबरि

सनक- *अपि* च- समान, सदृश, सन, (*हमरा सनक केओ नहि, हुनका सनक दोसर नहि*)

सनकी- बतहपनी उन्माद

सनपापड़ी- एक प्रकारक मिष्टान्न

सनमान- सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा

सनमुख- सम्मुख, सोझाँ

सनराहट- एक प्रकारक औषधीय पाथर

सनहा- *अपि* च- सनसँ युक्त (*आम, आदि*), सन रहैत छैक जाहिमे से

सनाक/सनाख- शनाख्त/शिनाख्त दे. पहचान-2

सनिक सेख- शुभकर्मक हेतु वर्जित शनिक दिन ओ रातुक अन्तिम दुइ टा (सातम-आठम) अधपहरा

सनिचरा- शनिक ग्रहदशासँ ग्रस्त, शनि दिनक जनमल

सनिचरी- 1. शनि दिन जनमलि कन्याक नाम, 2. पूर्वमे आरम्भिक पाठशालामे प्रत्येक शनिकेँ चटिया द्वारा दक्षिणा रूपमे देल जायबला कैञ्चा/पैसा

सनिबबुरी- शमी वृक्ष, सनि गाछ

सन्तरास- एक प्रकारक नेबो

सन्तोखी/सन्तोषी/सन्तोसी- सबूर रखनिहार, अनुचित महत्त्वाकांक्षासँ विरत रहनिहार

सन्तोसी माइ/माता- एक पुराणेतर देवी जकर पूजा शुक्र दिन होइछ

सन्ना-बद्टा- *अपि* च- गीजि-मथि कऽ बनल मिश्रण

सन्नुक- सन्दूक

सन्मार्ग- उचित पथ, नीक बाट, सत्पथ

सन्हियायब- *अपि* च- सङ्कीर्ण दोगमे बलपूर्वक पैसब, लोकक कसमकस भीड़मे बलात् प्रवेश करब

सपटी लागब- लगातार चिचिअयनाइ/बजनाइ बन्द होयब, दे. सापट

सपरतीब- क्षुब्ध-चकित कऽ देबऽबला ढिठपनी, निर्लज्जता, अनुचित इच्छा-पूर्त्तिक चेष्टा, (सप्रतिभ)

सपरब- *अपि* च- कोनो कार्य करबाक सम्बन्धमे बिचारब, उद्दिष्ट कार्य करबाक निश्चय करब

सपलौर- बिज्जी, सपनौर

सँपुआ/सँपुहा (जोड़ब)- पेटकुनियाँ दऽ कऽ तरहत्थी आ पेटक भरेँ शिशुक आगाँ घुसुकबाक चेष्टा (करब)

सफका/सफकी- जे साफ अछि से

सबक- छात्रकेँ स्वयं अभ्यास करबाक लेल देल गेल पाठ

सब कथुक- सभ वस्तुक

सबकास- पलखति, विराम, विश्राम

सबखा- विश्वास, विश्वसनीयता, साख

सबखाह- विश्वस्त

सबटा- सकल, समग्र

सबठाँ/सबठिन- सर्वत्र

सबसबी- दुखयबाक संग कुड़िऐनी

सबादब- खाद्य वस्तुकेँ खाइत-खाइत स्वादक अन्दाज करब, स्वादक आनन्द लैत नहूँनहूँ खायब

सबारी- *अपि* च- भाड़ा/किराया दऽकऽ वाहन पर चढ़ि यात्रा कयनिहार

सबील- *अपि* च- व्यवस्थित रूप

सबुजदाना/सबुरदाना- एक प्रकारक गाछक उत्पाद जे पथ्य/फलाहारक रूपमे खायल जाइछ

सबेरगर- अत्यन्त सबेर, निर्धारित समयसँ पूर्वहि,

सभागार/सभागृह/सभाभवन- सभा करबाक निमित निर्धारित भवन

सभे- सबहि (*डाला लऽ बहार भेली, बहिनो से सभे बहिनो*)

सभैता- वैवाहिक सभामे गेनिहार

समगम- सब प्रकारेँ समान

समङडाही/समङाडाही- अपन स्वस्थ शरीरकेँ जरौनिहारि, परिवारक समाङ (पुरुष सदस्य)केँ जरौनिहारि (*स्त्रीकेँ स्त्रीक द्वारा देल जायबला गारि*)

समटायब- एकट्ठा कयल जायब

समतुरिया- समान वयसक किशोर/युवा संगी, सङतुरिया, एकतुरिया

समदा-समदी- समादक पारस्परिक आदान-प्रदान

समदाउनि- बेटीक द्विरागमनमे विदाकालक गीत

समदिया- समाद पहुँचौनिहार

समधि मिलान- वरपक्ष ओ कन्यापक्षक समधिकेर परस्पर मिलन-विधि

समधियान/समधियाना- समधिक घर, समधिक गाम

समधी- समधि, पुतहु अथवा जमायक पिता तथा समकक्ष

समपरदा- विभव, सम्पदा, जमीन-जथा

समय-साल- समसामयिक परिस्थिति

समय-सिर- (कृषिक हेतु) उपयुक्त समय (*समय सिर पर होय वर्षा बहुत सञ्चित अन्न-रामायण, चन्दाझा*)

समरथाइ- जुआनी, यौवन

समरस- हिलल-मिलल, समन्वित, समञ्जस

समर्थ-सकर्थ- जुआन आ अर्जनक क्षमतायुक्त

समर्थाइ- दे. समरथाइ

समला- एकटा विशेष आकृतिक पाग जे विशेषत: पमरिया पहिरैत अछि

समसामयिक- समकालीन, एकहि काल खण्डक

समाङ- *अपि* च- स्वास्थ्य, स्वस्थ शरीर (*कहलकै मुसहरनीयाँ-समाङ ने, सगाइ लय तैं मारि होइए*)

समाङ खसब- शारीरिक क्षमता घटब

समुन्दर- समुद्र

समेत- *अपि* च- पर्यन्त, सेहो / तकरो

सम्पोट- छोट कन्तोड़, गहना रखबाक लघु पेटी, मञ्जूषा, सम्पुट

सम्प्रदा- दे. समपरदा

सम्मत- *अपि* च- 1. अनुकूल मति, सामान्य मानसिक स्थिति, सहमत 2. होलिका दहन, होलिका-दहनक लेल लगाओल जारनिक ढेरी

सम्हार/सम्हारब- *अपि* च- प्रसवकालीन परिचर्या (करब)

सम्हारा/सम्हारा भार- नव विवाहिताक चतुर्थीक निमित्त वरपक्ष दिससँ विविध सामग्रीक वृहत् संख्यामे पठाओल जायबला भार-दोर

सरकम्फा- बाँसक कमचीसँ बनल चिड़ै बझयबाक उपकरण

सरङ्गी- एक प्रकारक तन्तुवाद्य, सारङ्गी

सरदर- *अपि* च- अखण्डित, लम्बाइमे बिनु जोड़ल, आदिसँ अन्त धरि सोझ

सरदियायब- 1. सरदी/कफसँ ग्रस्त होयब 2. समसब, आर्द्र होयब

सरधिया- श्राद्ध सम्बन्धी, श्राद्ध, एकटा अशुभ गारि

सरना- धानक एक प्रकारक नव प्रजाति

सरबन- *अपि* च- एकटा पौराणिक पात्र, पितृभक्त पुत्र

सरबा- *अपि* च- 1. सार शब्दक तिर्यक रूप, एकटा गारि, मुहक एकटा लबज 2. काठक डब्बुक/करछु

सरबेटी- सारक बेटी, पत्नीक भतीजी

सरह- *अपि* च- 1. जमीन विक्रयक दर, 2. मालगुजारी

सरि- *अपि* च- अनुशासित, व्यवस्थित

सरियाम- सरियाओल (समतल) भूमि, जे भूमि उभड़-खाभड़ नहि हो [*क.को. 'सार्वजनिक समतल जगह; खुलेआम'-अशुद्ध ओ भ्रामक)*

सरिसो- एक तेलहन, गोट

सरेना (पर)- प्रमुख स्थान, उच्च स्थान, बेसी लोकक जुटानबला स्थान

सर्वनाश- वृहत् स्तरपर अपूरणीय क्षति, विनाश

सर्वसाधारण- सामान्य जनता

सलखी चेरिया- सपता-विपता कथाक दासी-पात्र

सलतनत- 1. सुव्यवस्था/सुव्यवस्थित 2. राज्य

सलसल- अधिक आर्द्रताक कारणे दलदल सन

सलाबी- *अपि* च- आर्द्रता

सलाबी मारब- आर्द्र होयब

सलूकति- मिलान, मेल-मिलाप, प्रेमभाव

ससर-फसर- बिचलन, कोनहु दिस हिल-डोल

ससुरबासि- सासुर बसऽबाली कन्या/युवती

ससुरा/ससुरी- सासु/ससुरवत् (एक गारि)

सस्ता- कम मूल्यमे प्राप्य, कमदामक

सस्तायब- महगी कम होयब, सामान्य भाओ कम होयब

सस्तौआ- सस्त भाओबला, हीन कोटिक माल

सहकायब- बहसायब, कुप्रवृत्ति दिस प्रेरित करब, अधलाह काजमे बेर-बेर प्रोत्साहन देब

सहकिया- (चोर-आदिक) सहायक

सहचेत-सावधान, सचेत, सतर्क

सहचेती- सावधानी, सतर्कता

सहत्त- पाँचसँ अधिक नोकबला बरछी, सहथ

सहता- सस्ता

सहमब- सिरसिरायब, भयसँ संकुचित होयब

सहलब- स्वत: ढहब

सहलोल- अतिशय दुलारेँ बनल अवढङ्ग स्वभावबला नेना/व्यक्ति

सहसबाढ़नि- धूमकेतु

सहस्सर- सहस्र, हजार

सहासति- प्रताड़ना, उत्पीड़न, साँसति [*क.को.- साहस, साहसिकता-भ्रामक*]

सहियारब- *अपि* च 1. सहन करब, भार बहन करब, 2. सैंतब

सहेलिया (लताम)- लतामक एक प्रकार जकर आकार दुर्री लताम सन किन्तु पकलापर गुद्दा गुलाबी रङ्गक ओ स्वाद मधुर होइछ

साकम (*प्रा.*)- पूल, सेतु, सङ्क्रम

साकल- हवन-सामग्री, साकल्य

सागिर्द- पैघ गायकक सहयोगी, शिष्य

साङरही- पातर दस्त होइत रहबाक चिरकालिक रोग, सङ्ग्रहणी [क.को. *सङ्ग्रहणी रोगसँ ग्रस्त- संज्ञामे विशेषणक भ्रम*]

साङह- लत्तीकेँ पसरबा/चतरबाक लेल बाँस/बाती/कड़ची आदिक अवलम्ब/ आश्रय [क.को. *1. घर बनयबाक सामग्री सङ्ग्रह 2. गाछक शाखा-प्रशाखा-अर्थ सन्दिग्ध*]

साङि करब- अनुशासित करब, सैंतब, वशमे राखब/आनब

साङ्कुल- सानुकूल, अनुग्रहोन्मुख, अविमुख

साँच- *अपि* च- साँचपर ठोकि बनाओल गेल एक गोट पकमान/ठकुआ (ठोकुआ)

साँचा- साँच, चित्राकृति युक्त ओ उपकरण जाहिपर गील वस्तु थोपि कऽ चित्राकृतिक अनुकृति बनाओल जाइछ

साजिन्दा- गवैया-नटुआक संग बाजा बजौनिहार

साजिस- षड्यन्त्र

साजी- *अपि* च- 1. आमक गाछीमे मचानक तरमे आम बिछि-बिछि कऽ रखबाक लेल बनाओल गेल खाधि 2. जौरसँ बीनल झोड़ी

साँझ-भतरासि- नवविवाहिता कन्या द्वारा सन्ध्याकालक गौरी-पूजन

साँझ-भरली- पूर्ण सन्ध्या, सञ्झा-भरली

साटि-घाटि- षड्यन्त्रक उद्देश्यसँ ककरो संग गुप्त सम्पर्क/सम्बन्ध

साठा- *अपि* च- साठि वर्षक पहलमान, बेसी बयसहुमे खूब बलवान, (*साठा तँ पाठा*)

साठि (सहब)- *अपि* च- समयक लघुतम अवधि-पल-विपल (*गहुमनक काटल साठि नहि सहऽ दिअय*)

साथब- *अपि* च- अनुशासित करब, ताड़ना देब, वशमे राखब

सान-बाट- फेँट-फाँट

सान्हि- दुइ कोठीक बीच अथवा कोठी ओ भीतक बीचक सङ्कीर्ण जगह

सान्हि-कोन/सान्हि-दोग- घरक सभ देखार-अनदेखार भाग

सापट- दुइ गोट तकथाकेँ जोड़बाक लेल ऊपरसँ ठोकल जायबला तेसर तकथा, फाँक/फाट बन्द करबाकलेल लगाओल तकथा

सापुत- सपूत, सुपुत्र, सत्पुत्र

साफी- *अपि* च- 1. गाँजाक चीलममे नीचाँ लपेटल जायबला रुमाल 2. गन्दा साफ करऽबला पोछना 3. एकटा जातीय उपनाम

साबकास- पलखति

साबल- *अपि* च- 1. लोहाक मोटगर डण्टा जाहिसँ भारी वस्तु अलगाओल/उनटाओल जाइछ 2. काँटी उपाड़बाक उपकरण

साम-चको- **सामा-चकेबाक सम्बोधन** (*साम चको साम चको अबिहऽ हे अबिहऽ हे, कूरखेतमे बैसिहऽहे*)- सामा-चकेबा ओ अन्य पात्रक मूर्त्ति बनाय, भायक निमित्त बहिन द्वारा कयल जाय बला क्रीड़नक-पाबनि जे कार्त्तिक शुक्लपक्षक सप्तमीसँ पूर्णिमा धरि इजोरियामे खेलायल जाइछ

सामरस्य- समञ्जसता, मिलान

सामा- *अपि* च- भादवमे उपजऽबला एक अन्न, साम (सामा-कौनी)

साम्प्रदायिक- पन्थ विशेषक विचारधारासँ सम्बद्ध, सम्प्रदायसँ सम्बन्ध रखनिहार

सायास- यत्नपूर्वक, श्रम सहित

सारुक-सारुख- चर-चाँरमे भेनिहार एक जलीय घासक कन्द [क.को.- *भेटक कन्द...-किन्तु* भेट/मलकीकाक कन्दकेँ कड़हर कहल जाइछ]

साल- *अपि* च- हृदयक चिरकालिक वेदना/व्यथा

सालब- *अपि च*- काठक खण्डके छीलि-छालि ओ रन्दा दऽ कऽ चिक्कन करब

साला- सार, एकटा गारि (*हिन्दीसँ गृहीत*)

साँसी- *अपि च*- श्वास नली

साहपसीन- आमक एक प्रकार

साहर- *अपि च*- दाउनि कालमे धानक खोहपर कयल बड़दक गोबर

साहिलोला- दे. सहलोल

साहोड़- *अपि च*- ठनका ठनकबाक कालमे टोना रूपमे बेर-बेर उच्चारणीय शब्द

सिकसिक करब- काजसँ छीह काटब

सिकमी- *अपि च*- खपड़ैल घरक देबालक मुड़ेरा

सिका चढ़ायब- (शिखा चढ़ायब), अनुचित प्रोत्साहन देब, उचितसँ बेसी दुलार/मान/मोजर देब [*क.को. सीकपर चढ़ाए राखब,– सीकपर वस्तु राखल/टाङल जाइछ, चढ़ाओल नहि*]

सिके- कोनो स्थानक निजगुत बिन्दु; सोझे, निश्चित दिशामे, सोझे-सोझ

सिक्का चढ़ायब- दे. सिका चढ़ायब

सिङ्घिनियाँ- सिंहिनी सन क्रूर स्वभाववाली स्त्री, अलच्छी (एक गारि)

सिङ्घा-धुतहू बाजा

सिङ्घी- एक माछ

सिज्जति- दुर्गति, दुरगञ्जन, कष्ट

सिटसिटायब-जाड़सँ ठिठुरब

सिट्ठ- रसहीन अवशेष, शुष्क, नीरस

सिढ़ही- सोपान

सिताम- देबालक नेओंक चौड़ाइमे देबालसँ बाहरक छोड़ल भाग

सिद्दति- दे. सिज्जति

सिधा-सिधी- सोझे-सोझे, सरल रेखामे

सिपाहा- *अपि च*- बैलगाड़ीक जूआ/मुहड़ाके धरतीसँ ऊपर उठौने रखबालेल प्रयुक्त बाँसक दुइ गोट टोटाक कैँच, सिरपाहि

सिफति- विशेषता, सुन्दरता

सिफला- फैसनक कारणे आवश्यको वस्तु/वस्त्र नहि रखनिहार (*सिफलाक मौगति माघ मास*)

सिमिरताइ- सुनरताइ, शोभा

सिम्मर- एक महावृक्ष जकर फड़मे तूर होइछ

सियरिया- पैरक तरबामे होअऽबला एक प्रकारक घाओ- कहल जाइछ जे सियारक नेड़ी मखलासँ ई भऽ जाइछ

सिरङाह- झोँकाह स्वभावबला, तमसाह, दे. सिरिङ

सिरजनहार- सृष्टिकर्त्ता, जन्मदाता, निर्माता

सिरसिरायब- भयसँ सिहरब/सङ्कुचित होयब, जाड़सँ थरथरायब

सिरिङ (चढ़ब)- उग्र क्रोध, आकस्मिक भेल क्रोध

सिरिङाह- दे. सिरङाह

सिरीठ- एक वृक्ष, सिरीस

सिरीहीन- श्रीहीन, कान्तिरहित

सिरुआ- *अपि च*- मांसक झोर

सिरोलिया/सिरोली/सिरौली- चिड़ैक एक प्रजाति (*मयनाक बच्चा सिरोलिया रे एकटा जामुन खसा*)

सिलाप (*अं*)- सिमेण्ट-बालु-गिट्टी फेँटि कऽ जमाओल चट्टान, स्लैब (Slab)

सिलेटिया पेन्सिल (*अं.*)- सिलेटपर लिखबाक पथलखड़ी

सिलेटी- करिछओन रंग

सिलौटिया- (सिलौट सन) खूब मोटगर (वस्त्र)

सिलौटी- मसल्ला इत्यादि पिसबाक लेल छोट समतल प्रस्तरखण्ड

सिल्ली- *अपि* च- काठक नाम आ मोटगर खण्ड, सिल

सिहकब- *अपि* च- किञ्चित् चनकब

सीख- *अपि* च- इष्टमन्त्रसँ दीक्षित, दीक्षा प्राप्त व्यक्ति, दीक्षागुरुक शिष्य

सीटब- तेना कऽ सैँतब जे देखबामे सुन्दर लागय, केश थकरब, सिङार-पटार करब

सीताफल- एक प्रकारक फल, सरीफा [*क.को. 'सरीफा'क अर्थ सीताफल कहैछ, किन्तु 'सीताफल' प्रवृष्टिमे नहि*]

सीध- सोझ दिशा

सीधा-सीधी- सोझे-सोझ दिशामे, दे. सिधा-सिधी

सीनुर- सिन्दूर

सीफति- दे. सिफति

सीरी- *अपि* च- कान्ति, शोभा, रोहानी

सुइया- *अपि* च- बीजक सुइ सन अँकुरा, डेफा

सुआसिन/नि- सासुरसँ बिदागरी करा कऽ आइलि बेटी

सुकसुक करब- काज करबासँ छिटकैत रहब, छीह कटैत रहब

सुखड़ा- *अपि* च- सुखा कऽ राखल गेल हरियर तरकारी, सुखौँत

सुखन- सुखयलासँ तौलमे भेल कमी

सुख-पाक करब/सुख-पाख करब- मुह चटपटायब, आपराधिक रहस्यक प्रकट होयबाक भयक भाव (मुहपर) व्यक्त होयब

सुखराती- दीपावली (*सुख सुखराती, दीया-बाती, तकरे छबे छठि*)

सुखित/सुखितगर- खूब सुखी, सुखी-सम्पन्न

सुगबा बैर- पैघ प्रजातिक बैर

सुगबुगायब- सूतलमे अङ्ग-सञ्चार होयब, उन्मुख होयब, सक्रियता देखायब, उनमुनायब

सुगबुगी- सक्रियता, अङ्ग-सञ्चार, उन्मुखता

सुगरमुहाँ- सुगरक मुह सन

सुगराहा/सुगराही- सुगर सन चालि-प्रकृतिबला लोक, घृणित

सुग्गी- सुग्गाक मादा

सुचित- शान्त मन, उद्वेग रहित, निश्चिन्त, सुचित्त

सुजब- रोग/चोटसँ अंगक फूलि जायब

सुज्जी- गहूमक दोखड़ा चिक्कस जाहिसँ हलुआ एवं पिड़ुकियाक रै बनैछ

सुट- अत्यन्त पातर ओ नमपोर लोक

सुट दऽ- अकस्मात् लोकक नजरि बचाय देह नमरबैत (पैसि जायब)

सुटबा/सुटहा- पातर देहबला

सुटही/सुटिया- पातर देहबाली

सुटियायब- अत्यन्त सङ्कीर्ण स्थानमे देह नमराय पैसब

सुटुक्की- सटकल, सुटकल, पचकल (*पोन सुटुक्की पेट हाउ, आ रे मङला गीत गाउ*)

सुट्टी- पातर आ नाम देहबाली, पतरसुट्टी

सुट्टी पिल्ली- दुब्बर पिल्ली सन देहबाली, पातर खिनखिन (उपहासमे), (*सुट्टी पिल्ली रमभजुआक माय, डोका तिमन लय घुसकल जाय*)

सुठौरा- परसौतीकेँ देल जायबला सोँठि इत्यादि औषधिकेँ गुड़क संग बनाओल अवलेह/ मेथीक गरदी आ गुड़क बनाओल लड्डू

सुड़कान- पैघ साँससँ सुड़कनाइ

सुड़सुड़-मुड़मुड़- विपरीत धर्मी उभय पक्षीय लाभ

सुड़कब- साँसक वेगसँ तरल पदार्थ नाकक भीतर लऽ जायब/ मुहसँ कण्ठगत करब,

नाकसँ बहैत कफ/पोटाकेँ साँससँ ऊपर घीचब

सुड्क्का- एकहि साँसमे बहुत द्रव पिउनाइ, दे. सुड़कान

सुतान- दीर्घकाल धरिक सुतब

सुदुक- 1. आसान 2. केवल

सुध- 1. निश्छल हृदयबला, 2. एहन माल-जाल जे मरखाह नहि हो

सुधबलेल- छल-प्रपञ्चसँ रहित, सुधङ

सुनरकी- जे सुन्दर अछि से (स्त्री)

सुनरताइ- सुन्दरता

सुनहट- निर्जनता

सुपनेखा/सुपनेखिया- रावणक बहीन सूर्पनखा, दुष्ट स्त्री, चुगलियाहि, (*ई सुपनेखा नगर उजाड़नि प्रथमहि शोधल पीपर, से सुपनेखा आबि रहल अछि हाथमे लेने मूसर*)

सुपबा- पैरक आङुर ओ घुट्ठीक बीचक भाग, पैरक उपरका तल, *वि.* तरबा

सुपाठ- सूपसँ भेल आघात

सुपानय बरखा- मूसलाधार वर्षा

सुबुद- अत्यन्त मृदु (*पाकल सुबुद आम*)

सुबुध- नीक बुद्धिबला, सुबोध

सुबुधि- नीक बुद्धिवाली, बुद्धिमती (*सुन्दरि हे तों हेँ सुबुधि सयानि, मरै छी पियासेँ पानि*)

सुभिस्तगर/सुभिस्ता- सस्ता, सुलभ, सरलतासँ उपलब्ध, सुविधापूर्ण

सुभे-सुभे- शुभ कार्यारम्भ, शुभकार्यक आरम्भमे गेय मङ्गल गीत

सुमझायब- आपस करब, सोँपब, अर्पित करब, प्रत्यर्पण करब, अभिरक्षामे देब

सुमुझब- बुझब, हृदयंगम करब, बुझि-सुझि कऽ आश्वस्त होयब

सुम्हा- *अपि च*- पैघ सूआ

सुरुकिया (मारब)- 1. एक सूरमे तेज गतिसँ गमन/जायब 2. पानिमे डुब्बी मारि एक साँसमे सोझ दिशामे हेलब

सुरुक्का- सोझ दिशामे बहुत दूर धरिक बाट, दे. सुरुकिया

सुरुह/सुरू- आरम्भ

सुरेबगर- सुन्दर आकृतिबला, देखनुक

सुलफा- *अपि च*- चिनगी देल गाँजाक चौलम

सुलेसन (*अं.*)- चाम-रबर आदि सटबाक रासायनिक लस्सा (Solution)

सुसार- छठि पावनिमे अर्घ्य देबाक हेतु पसारल अर्घ्य-सामग्री [*क.को.- सुविधा-अशुद्ध*]

सुहब/सुहबी/सुहबे- सधबा, सोहागिन

सूजन- अङ्गक फुलनाइ

सूजब- दे. सुजब

सूति- हँसुली

सूता- राज ओ कमारक द्वारा सरल रेखा बनयबाक/जँचबाक ताग/सूत

सूर्यमण्डल- अपि च- आङनक पूबे-पछिमे लम्बाइ ओ उतरे-दछिने चौड़ाइक स्थिति

सूर- *अपि* च- झोँक, कोनो काजक प्रति मानसिक वेग, एकचित्तता, सूरि

सूरति- 1. उपाय, हालत 2. रूप, आकृति

सूहब- सधबा (सुधवा)

सेआनि- युवत्व प्राप्त कन्या, सेआनक स्त्रीलिंग रूप

सेज- *अपि* च- दे. खिनहरि

सेजमुतना- ओछाओन पर लग्घी कऽ देबाक सभ्यासी नेना

सेड़र-संवेदन शून्य (अङ्ग, विशेषतः जीह) [*क.को.-ठेला-भ्रामक*]

सेद-माँड़- सेदनाइ ओ तेल-मालिस आदि कयनाइ

सेनियर/सेन्हियर- सेन्ह कटबामे सिद्धहस्त चोर

सेप- मुहमे आयल लेर/थूक जे घोँटा जाइछ

से-बड़े- किएक, से किएक

सेबतिया- सेबाती, स्वाती नक्षत्र

सेरगर- 1. भरिगर, ओजनगर 2. जब्बर, जोरगर, प्रभावशाली

सेली-टोपी- कपड़ा-लत्ता इत्यादि, वैयक्तिक उपयोगक सकल आवश्यक वस्तु

सेहन्तगर- देखबामे तेहन सुन्दर जे मन ललचा जाय/ सेहन्ता भऽ जाय

सेहो-ओहो

सैकड़ा- सय, शत

सैँतन- अनुशासनिक दण्ड

सैयन/सैयनि- कतोक सय

सोआरथ- स्वार्थ, स्वहित

सोइरी- प्रसूतिगृह, परसौती घर

सोखगरि- उदार हृदयबाली, दिलहगरि

सोखता- विशेष विधिसँ बनाओल पानि सोखऽबला कुण्ड/हौज

सोखमे जकाँ- ढीठ जकाँ, घृष्टता पूर्वक

सोगारथ- *अपि* च- द. सोआरथ

सोजहा- सोझाँ

सोझ- *अपि* च- वक्रताहीन, सरल रेखा सदृश

सोझका/सोझौका- जे सोझ अछि से, *वि.-टेढ़का*

सोटियल- डेढ़-दू हाथक डण्टा, छोट मुदा मोट सोँटा

सोड़हि-बारहि- अधिक संख्यामे जनमल धिया-पुता

सोड़हिया- *अपि* च- सोड़हम भाग बोनि देबाक परिपाटी- विशेषत: जजातिक कटनीमे

सोती- कम चाकर नदी, नासी

सोधनमा- नष्ट कयनिहार, नाशी

सोधब- *अपि* च- नष्ट करब, सर्वनाश करब (*सोधि-साधि बैसल हड़मुड़हा*)

सोनिते-सोनिताम- सोनितसँ भरल, सर्वत्र सोनित पसरल, अत्यधिक रक्तस्राव, रक्तमय

सोनी- *अपि* च- सरिसो-राइक भुस्सा

सोन्हायब- *अपि* च- भोजनसँ पहिने सहैत रहब / बिनु खयने रहब/भुखल रहब

सोन्हाओन- विभिन्न वनौषधि ओ औषधिक मिश्रित पेय जे पखेब दिन/दीपावलीक दोसर दिन बड़दकेँ पियाओल जाइछ [*क.को. सोन्हान- 'पशुक खाद्य, औषधीय खाद्य'- किन्तु थिक ई बड़द मात्रक पेय जे पखेबमे देबाक परिपाटी अछि*]

सोन्ही- बीहरि, सोन्हि

सोभगर/सोभनगर- सुन्दर

सोभब- शोभा देब, दर्शनीय लागब, देखबामे सुन्दर लागब, छजब, उपयुक्त होयब

सोमारी- सोमवारी 1. अमावास्या तिथियुक्त सोम तथा ओहि दिनक व्रत 2. साओन मासक प्रत्येक सोमवार जे शिवपूजन हेतु प्रशस्त

सोर- *अपि* च- गाछक मुख्य सीर/सीर सब, जड़ि (*धरमक सोर पताल*)

सोर-पोर- मूल सहित (गाछ), समूल

सोरमडीह- अकल्पित ऊँच ढेरी, नहि निंघटऽबला

सोरहि-बारहि- बहुसंख्यक (सन्ताप)

सोरहो- अति प्रचार, बहुत लोकक जानल, चतुर्दिक चर्चाक बिषय, सोरहा

सोल (*अ.*)- जुत्ताक निचला तल्ला

सोँसि- एकटा जलजीव, डाल्फिन

सोहग्गा- एकटा रासायनिक पदार्थ जे सोनाकेँ गला दैछ, सोहागा

सोहबति- (अधलाह) संगति/संसर्ग, कुसंगति

सोहरायब- *अपि* च- धोती/साड़ी/चद्दरि आदिक लटकल अंशक धरतीपर लेटायब (*घुट्ठी सोहार धोती*)

सोहरि- ओ डोरी जकर एक छोर माल-जालक गरदाम/नाथमे बान्हल रहैछ आ दोसर छोर चरवाहक हाथमे रहैछ/बथानपर खुट्टामे बान्हल जाइछ

सोहरी लागब- पथार लागब, बहुत संख्यामे पसरल रहब, ढील/चुट्टी आदिक सोहरब, सोहरनाइ

सोहाँत-प्रिय, मनोनुकूल, सोहायबला (*विशेषत: नकारात्मक प्रयोग-'हुनका अनकर उन्नति सोहाँत नहि'*) *दि.* अनसोहाँत

सोहायब- *अपि* च- सोहल जायब, जेना मकै सोहाइत छैक

सोहारब- *अपि* च- हाथ/कपड़ासँ बहारब (बहारब-सोहारब)

सोहार- सोहारऽबला, सामासिक शब्दक उत्तर पद- घुट्ठी-सोहार धोती, बहार-सोहार

सोहारन- सोहारलासँ बहरायल अपवस्तु, सामासिक शब्दक उत्तरपद, जेना- बहारन-सोहारन

सौजनी- 1. सौजनमे देल जायबला वस्त्रादि, 2. उपाति

सौजनियाँ- जकरा संग सिद्ध भोजनक व्यवहार चलैत हो

सौतिन काँट- सौतिनिक सन्तान

सौरखी/सौरुखी- जलीय घासक कन्द, छोट आकारक सारुख

सौरी- *अपि* च- छोटका सौरा माछ, सौराठी

सौँसका- बिनु भङलाहा

सौँसे- बिनु भाङल, अखण्डित, सर्वत्र

स्थल- *अपि* च- मठ, साधु-सन्तक समाधि-स्थान

स्निग्धता- छहछही

स्नेहिल- स्नेह युक्त,

स्रोतस्विनी- नदी, सरिता

स्वच्छन्दता- निर्बन्धता, बन्धनहीनता

स्वतन्त्रता- स्वतन्त्र रहबाक भाव, बन्धन रहित स्थिति

स्वाच्छन/स्वाछन- मुक्ति, पलखाति, अल्पावकाश

स्वाधीनता- स्वतन्त्रता

स्वान्त:सुखाय- आत्मतुष्टिक निमित्त, अपना लेल

स्वारथ- अपन लाभ, स्वार्थ, सोआरथ, सोगारथ

स्वारस/स्वारस्य- सहमति, अनुकूलता

[ह]

हऽ हऽ- अनपेक्षित भारसँ मुक्तिक व्यञ्जक शब्द, अप्रसन्नता/असहमति/वर्जनाव्यञ्जक शब्द

हओला- हल्लुक

हकदलिद्दर- एकदम गरीब, नितान्त दरिद्र, नि:स्व

हकड़ब- 1. छोट नेनाक लगातार चिचिया कऽ कनैत रहब, 2. गाय-बड़दक बेर-बेर भोम्हियायब

हकड़ी लागब- निरन्तर हकड़ैत रहनाइ, कोनो वस्तुकलेल वारंवार इच्छा व्यक्त करैत रहब

हकरतिहारि- द. हकरैतिन

हकर-हकर करब- सतत काज करबामे अपसेयाँत रहब

हकरैतिन-हकार पुरनिहारि

हकरोस- शोकसँ चिचिअयनाइ, शोकार्त्त चीत्कार, हाक्रोश, हाहाकार

हकल पेड़ब- काजमे क्षमतासँ अधिक परिश्रम करैत रहब

हकलि डाइनि- गाछ हाँकऽबाली डाइनि (एकटा अन्धविश्वास)

हकहासिल/हकहासिली- पैतृक उत्तराधिकारसँ प्राप्त भूमि

हकहिस्सा- पैतृक उत्तराधिकारसँ सम्पत्तिमे प्राप्त अंश

हकीक- एक प्रकारक पाथर जे अहलदिलीक विमारीमे गरदनिमे पहिरल जाइछ

हकोप्रत्यास/हकोप्रयास- सर्वथा निराश, नाभरोस

हक्कलि डाइनि- दे. हकलि डाइनि

हगनार- बहुत लोकक नित्य मलत्यागक स्थान, हगबाक जग्गह

हगनुआँ- बेसी बेर हगैत रहनिहार नेना

हगामा- अकस्मात् बहुत संख्यामे जुटल (लोक)

हङ्गामा- हल्ला-फसादि

हजमा-नौआ

हजरब- समूहमे चलब

हजरिया- एक हजार टाकाक नोट

हजारी- *अपि* च- एकटा उपनाम

हद्‌ठो घड़ी- सतत क्षण, सदिखन

हड़गर-कठगर- हृष्टपुष्ट

हड़कब- डरसँ पड़ायब

हड़कायब- डर देखाय बैलायब

हड़गोड़बा- हड़ाहि गायक गरदनिक डोरीकेँ पैर लगाय बान्हब जाहिसँ ओ दौड़ि कऽ पड़ाय नहि

हड़पटाह/हड़पटाहि- बदमास (माल-जाल)

हड़मोट/हड़मोठ- मोचण्ड, मोट बुद्धिबला, मोट-डाँट शरीरक लोक

हड़संहारि- अशुभ, अलच्छ, अभागल (स्त्री-पुरुष उभय) [*क.को.-'अलच्छि, अशुभ लक्षणवाली' -अर्थ-अव्याप्ति*]

हड़हट- उकठ, अनट काज

हड़हटपन/नी- उकठ कयनाइ, खुरलुचपन

हड़हट्टी- खुरलुच्ची, उकठाह काज करैत रहनिहार (नेना)

हड़हड़ी बज्जर (खसब)- गर्जन सहित खसल ठनका, बज्रपात (*ला.*) आकस्मिक मृत्युजन्य विपत्ति

हड़होड़/र (उठब/मचब)- उथल-पाथल, हल्ला, अशान्ति (होयब)

हड़होड़(र)ब- हड़होड़/र मचायब

हड़ाठी-फराठी- मोट चालि-व्यवहारक लोक,

हड़ाहि- पड़यबाक स्वभावबाली गाय/महीस/मौगी

हतब- बध करब

हतायब- फड़ऽबला गाछ/लत्तीक फड़ब घटि जायब/रुकि जायब; गाछ/लत्तीक वृद्धि रुकि जायब

हती- छी / थिकहुँ

हतोसयन/हतोसेन- शोकमय परिस्थिति, चिन्तनीय स्थिति

हत्ता- खेत/गाछीक चारू कात बनाओल ऊँच धूर, आड़ा, *वि. खत्ता*

हत्ता कटायब- आड़ा बनबायब

हत्थाजोड़ी- दू गोटे एक दोसराक एकटा हाथ परस्पर पकड़ने रहब

हत्या- बध

हत्यारा- बधिक, खून कयनिहार, खूनी

हथउठाइ- उपेक्षा/दया सहित देल गेल उचित प्राप्यसँ अत्यल्प भाग

हथकट्टी- कृपणतासँ परसनिहारि/बटनिहारि, उचितोसँ कम देनिहारि

हथकुट्टी- उखरि/ढेकीमे धानक कूटल-छाँटल (चाउर)

हथरस- *अपि* च- हाथसँ छू-छा कयने भेल विकृति / मलिनता

हथिबाह- महाउत, फिलमान

हथियासूढ़- एकटा औषधीय झाड़

हथिलबा/बी- हाथी सन विशाल देहबला पुरुष/स्त्री (निन्दामे)

हदरब- डेरायब, घबड़ायब [*क.को.- हदियाएब-अशुद्ध*)

हदास उड़ब- अकस्मात् आतंक-ग्रस्त होयब, पैघ आशंका होयब

हदियायब- अनधैर्य होयब, आतुर होयब, पयबाक हेतु/ लेबाक हेतु अगुतायब [*क.को. हदरब- See 'हदिआएब' । ओतऽ अर्थ अछि 'घबरायब'-से भ्रान्ति*]

हन- आसन्न भूत कालिक क्रियाक सहायिका क्रिया, अछि (*लौकिक प्रयोग- कहलकै हन, गेल छलै हन । भविष्यत् कालिक क्रियाक सहायिका क्रिया- घर चलतै हन कि नहि ?, आइये जेतै हन*)

हनब- *अपि* च- हथियार भाँजब, हथियारसँ प्रहारक चेष्टा करब

हनि- दे. हन

हपकुनियाँ (काटब)- पेटकगरेँ/पट भेल (घुसकब)

हपकौरा- बिनु श्रमहि प्राप्त भोजनी, गृहपतिक अनुपस्थितिमे लेल गेल अनुचित लाभ

हप्ताबारी- सप्ताहे सप्ताहे भेटऽबला मजदूरी, हपता दिनपर भेनिहार, साप्ताहिक

हफब- *अपि* च- बलपूर्वक दखल करब, उचितसँ अधिकपर कबजा करब

हबगब- समय बितयबा लेल पारस्परिक गप-सप

हबन्नक- मूर्ख, मोचण्ड

हबाल- हाल, अवस्था

हबालति- अस्थायी/तात्कालिक रूपमे आरोपीकेँ निरुद्ध रखबाक बन्दीगृह

हबैया लूटब- 1. कोनो बात जल्दी-जल्दी बाजब 2. कोनो वस्तु पयबालेल बाजि-बाजि आतुरता देखायब

हबोढकार/हबोढेकार (कानब)- खूब नोर बहबैत हिचुकि-हिचुकि कानब

हम्हड़ब/हम्हरब- 1. गड़गड़ाहटि सन ध्वनि बहार करब/बहरायब 2. माल-जालक अपन मनोभाव जनयबाक लेल मुँहसँ विशेष प्रकारक गड़गड़ सन ध्वनि बहार करब 3. हिंसक जानवरक गुर्रायब

हयकल- सुति, हँसुली

हरखण्डा/हरखाड़ा- बिन पालोक हर (खेत जोतबाक मुख्य औजार)

हरखित- प्रसन्न, प्रमुदित, उल्लसित (*मन हरखित तैं गाबी गीत, घरखरची तैं सुती निचिन्त*)

हरगिस- एकदम, कथमपि (नहि), अवश्य

हरचन- अनेक रीतिएँ/अनेक प्रकारक (प्रयत्न)

हरजाइ- बदमास स्त्री, निर्लज्जि, बेसरम, व्यभिचारिणी

हरथन-भरथन-पूर्वमे दुर्लभ किन्तु पश्चात् काल सामान्यो वर्गक हेतु बहुसुलभ, महत्त्वहीन, आकर्षणहीन

हरदी-हरदि, हरिद्रा

हरबाही- उपजल खेतसँ हरबाहकेँ प्राप्य कटनीक बोनिक अतिरिक्त भरिगर आँटी, हरबाही आँटी

हरबे-हथियार- सकल प्रकारक अस्त्र-शस्त्र

हरमुनियाँ (अं.)- एक वाद्य यन्त्र, हारमोनियम

हरसट्ठे/हरसट्ठो/हरसठ- बरमहल बिना कारणे (बाधा करब, उत्तेजक काज कऽ बैसब)

हरसी/हरसीकार- ह्रस्व इकारक चिह्न (ि)

हरहर नीम-शुद्ध नीम सन तीत, अक्कत तीत

हरहट्टी-उकट्ठी, खुरलुच्ची, जिद्दी दे. हड़हट्टी

हरही-सुरही- सामान्यहुसँ अति सामान्य

हरिनाकंस- हिरण्यकशिपु, प्रह्लादक पिता

हरिबोलबा- कीर्त्तनमे केवल हरिबोल-हरिबोल कयनिहार, विनोदी

हरिया-गोहरिया- ताक-छेम कयनिहार, सहायक, हितैषी

हरिसट्ठे/हरिसट्ठो- दे. हरसट्ठे

हरिसेँ- ह्रस्व इकार लगौने (*कि-खि-गि इत्यादि*), दे. हरसी

हरीन- मृग, हरिण

हलक- कण्ठनली

हलका- *अपि* च- निर्धारित क्षेत्र विशेष

हलकौर- अहितकर उत्साह/उमंग/उत्तेजना

हलन्त- स्वरहीन व्यञ्जन वर्ण, स्वरक अभाव-सूचक चिह्न, हल् चिह्न (्)

हलफी- जाड़ेँ कँपा देबऽबला तेज बहैत ठण्ढा बसात, जलक तलकेँ स्पर्श करैत बहनाहर शीतल तेज बसात

हलब[1]- *अपि* च- लटब, दुबरायब, पूर्वापेक्षा दुब्बर होयब

हलब[2]- धसब, भोँकब/भोँकायब, भेसब/भेसायब

हलमपच (करब)- लेल ऋण-पैँच/वस्तु पुनः आपस नहि करब/पचा जायब

हलसल-फुलसल/हलसैत-फुलसैत- आनन्द ओ उत्साहसँ भरल

हलहल करब- काज सबमे अनावश्यक उत्साहजन्य कार्यशीलता देखायब

हलहली- 1. अनपेक्षित उत्साह, उत्साहातिरेक 2. संगीतमे स्वरक कम्पन

हलायब- धसायब, दे. हलब[2]

हलुकायब- भार कम होयब, हल्लुक होयब

हलुमानी- *अपि* च- हनुमानक आकृति अङ्कित नेनाक कण्ठाभूषण

हल्ला-हुज्जति- झञ्झ-मञ्झक कोलाहल

हव/हव रे हव- चलैत बड़दकेँ रोकबाक लेल कथ्य शब्द

हवालात- हाजति, दे. हबालति

हसकल- एक दिस फोँफी जकाँ मोड़ल लोहक पट्टी जकरा केबाड़क पल्लामे ठोकि चौकठिक हुकमे लटकाओल जाइछ

हँसखेलुआ- हँसी-ठट्ठाक सम्बन्धबला व्यक्ति, हँसी-ठट्ठाक पात्र, मनोरंजनक पात्र, ठकदरुआ

हँसनी- हँसैत रहनिहारि, हँसनाइ

हँसमुख- सतत हँसि कऽ गप्प कयनिहार, प्रसन्नवदन

हँसुआ फरोस- हाँसूक बलपर जीवनयापन कयनिहार, बोनिहार, भूमिहीन

हसोथ/हँसोत्था/हँसौथा- 1. हँसोथबाक काज, 2. हँसोथि कऽ जमा कयल, 3. अनधिकृत रूपेँ भोग कयल जायबला अनकहु हिस्साक उपजाबारी

हस्तरेखा- हाथक तरहत्थीपर बनल नैसर्गिक डड़ीर जे भाग्य-अभाग्यक संकेतक मानल जाइछ

हस्ती- *अपि* च- 1. क्षेत्र विशेषक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति 2. ओकादि, सामर्थ्य

हहसकाल- हाहाकार, सामूहिक आक्रोश अन्याय-अत्याचारसँ पीड़ित लोकक सराप

हहाइत-फुहाइत/हहायल-फुहायल- व्यग्रता सहित तेज गतिसँ (पहुँचब/आयब/जायब)

हहारो- बहुत लोकक एकहि संग 'हा-हा' ध्वनि करैत हँसब, सामूहिक ठहाका [क.को.- *कोलाहल-अशुद्ध*]

हहास- ककरहु उन्नति देखि ईर्ष्यापूर्वक चर्चा [क.को. *सामूहिक आक्रोश-अशुद्ध*]

हहा-हिही- हँसी-ठट्ठा

हाउ- *अपि* च- 1. मुँहपर लगावऽबला माँटि/काठ/कागत आदिक मुखड़ा / मुखौटा जाहिसँ डेरबुक नेना डेराइत अछि आ निडर नेना खेलाइत अछि, 2. संवेदनाहीन चेहरा, डेराओन चेहरा

हाँउ-हाँउ करब- भोजनादिक प्रति बेसी आतुरता देखायब

हाक-डाक- अकाल मृत्यु/असामयिक मृत्यु [क.को. *हाँक-डाक- मनाही-भ्रान्ति*]

हाजती- हाजतिमे बन्द आरोपी

हाथे-पाथे- अनेक व्यक्ति द्वारा जल्दी-जल्दी अपनहि हाथेँ (कार्य सम्पादन)

हाथ बाट (चलब/होयब)- निर्णयक अधिकार

हाबरगण्डा मेट- खयबेपर भर देनिहारक पेट, खाधुर व्यक्तिक नमरल पेट (*तोरा हाबरगण्डा पेट, तोरा साँयसँ ने भेट*

हार-बिगाड़- हानि, क्षति, अपराध

हारि-दारि(कऽ)- अन्ततः, विवश भऽ, निरुपाय भऽ

हारिल सूगा- सूगाक प्रजाति, लोककथा-गीतक एकटा पक्षी-पात्र

हाल- *अपि* च- वर्तमान समयसँ किछुए पूर्व

हालति- दशा, स्थिति,

हाल-साल- विगत साल/किछुए साल पहिने, बहुत पहिने नहि

हाल-हासिल/हाल-हासिली- मरौसीसँ भिन्न स्वअर्जित भूमि, कीनल जमीन

हाली-जल्दी

हाली-हाली/हाली-हुली- जल्दी-जल्दी (*हाली-हुली बरिसू इन्नरदेवता, पानी बिनु पड़ै छै अकाले हो राम*) [क.को.- *नहूँ-नहूँ- ई सर्वथा विपरीतार्थ*]

हाह-फूह- मन्द बसातक संग रुकि रुकि कऽ हल्लुक फूही पड़नाइ

हाहि काटब- 1. आनक [illegible] गेग्रि डाह करब 2. पैघ लाभ / अवसर चुकि गेलापर अपसोच करब 3. इच्छित वस्तुक लेल उत्कट लालसा करब [क.को. *रोग आदिक कष्टसँ हाएहाए करब- अर्थमे 'काहि काटब' क भ्रम]*

हाही- ग्रीष्म कालमे खूब तेज गतिक बसात बहनाइ

हाही-बेरबादी- प्राकृतिक वा लौकिक कारणे भेनिहार क्षति (विशेषतः उपजा-बारीक)

हिक लागब- वस्तु विशेष/खाद्य विशेषक लेल बेर-बेर इच्छा होइत रहब

हिकाउ- जयबामे लग/जल्दी पहुँचबा योग्य स्थान

हिङ्गुर/हिङ्गुर- एक प्रकारक गाढ़ लाल रंग जाहिसँ लहठी आ काठक खेलौना आदि रङल जाइछ (*लाल हिङ्गुर लाल सिनुर लाल ओढ़ुलक फूल, ताहूसँ जे सुन्नर देखल गौरी माथ सिनूर- मधुश्रावणी मन्त्र*)

हिछनर- हरक पालो/गाड़ीक जूआसँ मुड़ी छीपि लेनिहार बड़द

हिछब-भखब, अशुभ बात बाजब

हिआ- एतऽ, एहि ठाम

हित-अपेक्षित- उपकार कयनिहार मित्र-परिचित-सम्बन्धी इत्यादि

हितकर- उपकारक, अनुकूल (*नहि हितकर मोरा त्रिभुवन राज- विद्यापति*)

हिनछिन- अस्पष्ट रूपेँ अनिच्छा देखौनाइ

हिनस्ताइ- हीनताजन्य निन्दा/खिधांस

हिनहिनायब- घोड़ाक बाजब

हिन्दुत्व- हिन्दू होयबाक भाव

हिपीफुरे/हिफी फुर्रे (*अं.*)- विजयोत्साह सूचक शब्द, खेल खतम होयबाक सूचक शब्द

हिबगर- सहृदय, उदार, साहसी

हिबघट्टू- हिबगरक विपरीत स्वभावबला, अनुदार

हिबा- हृदय, उदारता, साहस

हियायब- *अपि च*- माल-जालकेँ पानि पियायब

हिर्र- सुगरक हेँजकेँ हँकबाक/ रोमबाक शब्द

हिलखी बिलाड़ि- तीतल बिलाड़ि, रोइयाँ उड़ल बिलाड़ि, (*ला.*) दीन/निरीह/ मुँह दुब्बर

हिसारस्ती- हिस्साक अनुपातमे देय/प्राप्य भाग

हिसेदार- जकर हिस्सा होइक, हिस्साक मालिक, अंश भागी

हिस्सक- आदति, लति, लुतुक

हिस्सारस्ती- दे. हिसारस्ती

हिस्सेदार- दे. हिसेदार

हिहियायब- ही-ही-करैत जोरसँ हँसब

ही झरकब- कण्ठ/छातीमे ज्वाला होयब

हीआ- एतऽ, एहि ठाम

हीत- भल चाहनिहार, मित्र, शुभेच्छु

हीत-मीत- मित्रवर्ग

हीती- मित्रता

हीबा- दे. हिबा

हीया- 1. हृदय 2. नेरू/गाय/नेरू सहित गाय (शिशु भाषा)

हीर- *अपि च*- बीजक ओ सूक्ष्म अंश जे अङ्कुर रूपमे जनमैत अछि

हीस-भाग, अंश, हिस्सा, फाँट

हुक (*अं.*)- *अपि च*- आँकुस जकाँ मोड़ल काँटी

हुकमी- तुरन्त प्रभावी (दबाइ)

हुक्का लोली- सुखरातीमे जरा कऽ भँजबालेल कड़चीमे सुपती गाँथि कऽ बनाओल गेल उक्का, उक्का भँजबाक उल्लास-सूचक शब्द

हुचब- हुसब, निसाना चूकब, अवसर छूटि जायब

हुच्ची-फुच्ची- छोट-छोट टहल-टिकोरा

हुड़िया- मुद्रा रूपमे धनक कौलिक सञ्चय, दे. थत्ती/थाती

हुडुक- *अपि च*- विशेष नाम आ पातर दण्डाकार (वस्तु)

हुडुक्का/हुडुक्की- शाखा रूपमे बढ़ल नमहर खोँघ/खोङह

हुथकारब- बेर-बेर प्रेरित करब, हुतकारब, उकसायब

हुथम्मस/हुथान/हुथानी- हुथनाइ, धूसब, फज्जति

हुबगर- बलगर

हुमचब- बल ओ शरीरक भार लगा कऽ ऊपरसँ नीचाँ दिस जोरसँ अकस्मात् दबा देब [*क.को. हुड़कब-अशुद्ध*]

हुमच/हुमच्चा- हुमचनाइ

हुमेचब- दे. हुमचब

हुमेचा-हुमचनाइ [*क.को. ठोकर, मुक्का-अशुद्ध*]

हुम्हड़ब/हुम्हरब- दे. हम्हरब-2

हुरकुचनि/हुरकुच्चनि- हूरसँ दबाय पीड़ा देनाइ, नि:शब्द प्रताड़ना

हुरथुर- यात्रारम्भ कालक धड़फड़ी, मुख्य काजक बेरमे अनेक अन्य काजक उपस्थित भऽ गेलासँ भेल अस्तव्यस्तता

हुरथुरी- हुरथुरक स्थिति

हुरबा- कतोक ग्रामीण दौड़-धूपक खेलमे लक्ष्य रूपमे राखल स्थावर व्यक्ति वा वस्तु

हुरमेचब- धक्का/मुक्का सहित हुमचब/हुमेचब

हुरमेचा- हुरमेचनाइ

हुरियाठ- दे. हुरियाठब

हुरियाठब- 1. लाठी/ठेङाक हरसँ कोंचब/ठेलब 2. अप्रिय रूपमे उत्तेजित करब 3. अक्षमता/ अकर्मण्यताक हेतु भर्त्सना करब

हुरिया लेब/हुरियाहा लेब- 1. माल जालक हूराहुरी करब 2. अकारण झगड़ा करब / बलगरसँ टण्टा करब [क.को. *हुरियालेब- See हूरा लेब-किन्तु 'हूरा लेब'क यथास्थान अभाव*]

हुरियाहा-पखेब दिन होअऽबला पशु-क्रीड़ा जाहिमे सुगरक पाहुड़कें माल सींघक हूर/ नोकसँ प्रहार करैत रहैछ, हूराहुरी, दे. हुरिया लेब

हुर्र होयब- आकस्मिक सभा/मेला/समूहक लोकक अकस्मात् दहोदिस पड़ायब

हुलकी-बुलकी (देब)- नुका कऽ बेर-बेर दोग-दागसँ देखबाक चेष्टा

हुलबुलायब- एकहि संग अनेक/अचानक लाभक अवसर पाबि मोन हौआयब

हुलबुली- हुलबुला गेनाइ

हुले- कूकुरकें हुलकयबाक शब्द

हुले-हुले(करब)- सामूहिक रूपसँ खेहारब, खेहारबा कालक शब्द

हुहुआयब- *अपि च-* जजाति/गाछक तेजीसँ बढ़ब

हूआँ- ओतऽ

हूरा लेब- दे.- हुरियाहा लेब (*गाय-गोरू हूरा लेल, बड़द पखेब लेल– हरिसोँ व्रतकथा*)

हूज (बान्हब)- हेँज, समूह, झुण्ड

हूसब-चूकब

हेँच/हेँचा- सड़कपर बनि गेल खाधि जे गाड़ीक चलबामे बाधक होइछ

हेड़िया- एक हेड़क व्यक्ति

हेम- 1. सोना 2. कपड़ा-सियाइकेर एक प्रकार

हेमत- पार्वतीक पिता, हिमालय (*आइ हेमत ऋषि चिन्तित बैसल भोला भेला भङेरी हे*)

हेमनि- किछुए समय पूर्व, हाल, हेबनि

हेमन्त- पाँचम ऋतु, अगहन-पूसक समय [*क.को.- आसिन-कातिक-अशुद्ध, ई ऋतु शरद् होइछ*]

हेयात- आयु, औरदा

हेयायब- माल-जालकें जलाशयमे लऽ जाय पानि पियायब, नमायब, दे. हियायब

हेरा-फेरी- बैमानीक नीयतसँ कयल गेल अदल-बदल,

हेहरा- हेहर, थेथर (*हेहरा, रे हेहरा कोना रहै छेँ, मारि-गारि खाइ छी, भने रहै छी*)

हेहऽरू- अप्रतिभ, अपरतीब, ही-हरू

हैअय- एतऽ, हे यैह

हैत्रा- नेना द्वारा कोनो काजक प्रयत्न/ कयल काजक प्रति उत्साहवर्धक शब्द, हँ हँ एहिना, एकदम ठीक, बाह बाह

हैबो- गायकें सोर करबाक शब्द

हैया- जोर लगयबाक आह्वानक पूरक सामूहिक शब्द (*लगे जोर- हैया*)

हैया-दैया- परिवारमे घटित आकस्मिक चिन्तनीय घटनाजन्य कोलाहल

होनहार- भविष्णु

होनहारी- 1. भावी, भवितव्यता, होनी 2. कल्याणक योग्यता

होमादि- हवन, होम

होलटक्की- हेरा-फेरीमे (कोनो) वस्तुक अनायास उपलब्धि

होलैया (पढ़ब)- 1. फगुआ/होलीमे गेय अश्लील गीत 2. अश्लील गारि सभ (बजैत रहब)

होलो लोलो- चञ्चल मनसँ अनेक काज एक सङ्ग कऽ लेबाक चेष्टा

हौआ- *अपि* च- दे. हाउ, 'हाउ' शब्दक दीर्घ रूप

हौआयब- *अपि* च- अतिशय ललचायब, आतुर होयब

हौँकब- *अपि* च- छड़ी/छौँकीसँ अनधुन पीटब

हौँड़ब- *अपि* च- मनमे वमनक प्रवृत्ति होयब, जी ओकियायब

हौला- हल्लुक, अल्प भारबला

हौस- उत्साह, साहस

●

सञ्चयकारक सन्दर्भमे

एहि पोथीक निर्माता डा. रामदेवझा मैथिली भाषा-साहित्यक प्रख्यात विद्वान तँ छथिहे प्रत्युत वर्त्तमान समयमे एहि भाषा-साहित्यक पर्याये मानल जा रहलाह अछि । प्राय: मैथिलीक ई एकमात्र एहन विद्वान छथि जे मैथिलीकेँ एकटा शास्त्र जकाँ पढ़ि पुन: मैथिलीक वृत्तिमे अयलाह आ अपन समस्त ऊर्जा एही भाषा-साहित्यक अध्ययन-अन्वेषणमे लगा देलनि । मैथिलीक अतीतक खण्डहरक उत्खनन कऽ कऽ एकसँ एक अनमोल साहित्यिक रत्न ई ताकि-ताकि कऽ बहार करैत रहलाह अछि । तहिना मैथिलीक अलिखित कण्ठ साहित्यकेँ ताकि-हेरि ओकर संकलन-लेखन कऽकऽ अध्येता वर्गक समक्ष उपस्थित करैत रहलाह अछि । शब्द सेहो कोनो भाषाक अमूल्य सम्पदा होइत अछि । कोनहुँ भाषाक अभिव्यक्ति सामर्थ्यक आकलन ओहि भाषाक शब्द-भण्डारक आधारपर कयल जायब सम्भव होइछ । एहि दृष्टिएँ मैथिली सम्पूर्ण आधुनिक आर्य भाषामे सर्वाधिक सम्पन्न अछि । मुदा मैथिलीक एहि शब्द-सागरकेँ कोषबद्ध करब जतबे कठिन अछि ताहिसँ बेसी कठिन अछि ओहि शब्द सभक सटीक अर्थ-निर्वचन करब । ई काज कोनो गहन अन्वेषी, भाषा-मर्मज्ञ ओ गद्य लेखन-सामर्थ्यसँ युक्त विद्वानहिसँ सम्भव अछि । डा. झाक गद्य छटा मैथिली साहित्यक यावन्तो विधामे चमकल छनि । हिनक गद्य लेखन क्षमताक एक नवीन रूपक दर्शन एहि **मैथिली शब्द-सञ्चयमे** होइत अछि । जाहि शब्दक अर्थ लोक स्वयं तँ बुझैत अछि, मुदा ओकरा लिखि कऽ स्पष्ट करब कठिन होइछ तकरा डा. झा अपन एहि शब्द-सञ्चयमे सूत्रात्मक गद्यमे सूक्ष्मताक संग प्रतिपादित कऽ देलनि अछि ।



डा. रामदेवझा

जन्म– 03 मइ 1936

पता– कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-1

रचना संसार

कथा संग्रह : 1. एक खीरा : तीन फाँक-1965, 2.मनुक सन्तान-1966, 3.धरती माता-1985 4. आजी माँ-2009

उपन्यास : 1.इजोती रानी (बाल उपन्यास) -1965, 2.अंगरेजीफूलक चिट्ठी- 2002 3. बहिनाक विरोग- 2002, 4. रामजोड़ी कागतक पाँखिपर- 2002, 5. हँसनी पान : बजन्ता सुपारी (बाल उपन्यास)- 2013

नाटक : 1. पसिझैत पाथर (नाट्य संग्रह)- 1989

अनुसन्धान-आलोचना : 1. शकुन्तला नाटक : एक अध्ययन- 1959, 2. पार्वती परिणय नाटक : एक अध्ययन-1960, 3. मैथिली शैव साहित्य- 1979, 4. उमापति- 1980, 5. मैथिली शैव साहित्यक भूमिका-1982 6. जगत्प्रकाशमल्ल (विनिबन्ध)-1990, 7.जगज्ज्योतिर्मल्ल (विनिबन्ध)-1995, 8. जनार्दनझा जनसीदन (विनिबन्ध)-1998, 9. मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य -2002, 10.सुभद्रझा (विनिबन्ध)-2010

शब्द-सञ्चय-1. मैथिली शब्द-सञ्चय (2014)

सम्पादन : 1. नन्दीपति गीतिमाला-1965, 2. रामविजय नाट ओ वर गीत-1967 3. हरगौरी विवाह नाटक-1970, 4. नेपालक शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत - 1972, 5. कुञ्जविहार नाटक-1976, 6. मैथिली प्राचीन गीतावली-1977, 7. कविवर जीवनझा रचनावली- 1980, 8. मैथिली भाषा सरिता (भाग चारि) -1984, 9. दशावतारनृत्यम् ओ षोडशगीतम्- 1988, 10. मैथिली प्राचीन गीत मञ्जरी-1991, 11. दुर्गाचरित नाटक (म.म.परमेश्वरझा)-1996, 12. कुमार गंगानन्दसिंह रचित मनुष्यक मोल-1998 (सन्धान-2 मे प्रकाशित), 13. रमेश्वरचरित मिथिला रामायण-1999, 14. विद्यापति गीत संचय-1999, 15. मैथिली कथा : शताब्दी संचय 2010, 16. म.म. परमेश्वरझा कृत सीमन्तिनी- आख्यायिका-2011, 17. मुदित कुवलयाश्व नाटक-2013,

अनुवाद : 1. पृथ्वी परिचय (भाग चारि)- 1988, 2. जीव विज्ञान (भाग एक) -1988, 3. वाणभट्ट (अंग्रेजी मोनोग्राफ)-1989, 4. सगाइ-1992